॥ भूमिका ॥

प्रथम उस पारब्रह्म परमेश्वर सर्व शक्ति मान कृपासिन्धु दयानिधान जगदाधार को कोटिशः धन्यवाद देताहूं कि जिसकी कृपाकटाक्ष से मुझ अल्प बुद्धी को यह दूसरी पुस्तक रागरसिक के संग्रह करनेका सुअवसर प्राप्त हुआ जिस समय प्रथम पुस्तक मेरी संग्रहकी हुई "रागपयोनिधि" श्रीवेंकटेश्वर यन्त्रालयमें प्रकाशित होकर मेरे मित्रगणों की दृष्टिगत हुई जिससे अतीव प्रसन्न होकर मेरे मित्रगणों ने एक दूसरी रसिक पुस्तक के संग्रह करनेकी आज्ञा दिया. महाशयो मैंने इस पुस्तकमें उन्ही चीजों का सग्रह किया है जो रशिक गान प्रेमियोंके मुखसे सुना है यद्यपि इस पुस्तकके लिखने में बहुतसी अशुद्धियां रह गई होंगी तथापि आशा है कि सज्जन महाशय उनको सुधारकर क्षमाप्रदान करेंगे अब इस पुस्तक को श्रीमान् सेठ **गजानन्द मोदी** जी की सेवा में भेजताहु यद्यपि यह छोटीसी पुस्तक श्रीमान् की सेवामें भेजने योग्य नहीं है कारण कि (नागरी प्रेसतो) अनेक रत्नों से सुशोभित है यह तो भानुके सामने दीपक कीभी बराबरी नहीं कर सक्ती तथापि इसमें ईश्वर का गुणानुवाद रस भरी तानों से वर्णित है इसलिये श्रीमान् इसका निरादर न कर छापकर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

अबमैं अपने इष्ट मित्र तीसरा "साप्रस मैनाके" जमादार द्वारिकाप्रसाद दुबे व हवल्दार आनंदमोहन त्रिवेदी व नायक बैजनाथ पाडे व नायक सुदर्सन शुक्ल व नायक गगासागर दुबे आदि जिन्होंने इस पुस्तक के संग्रह करने में सहायता दिया है जिनका परिश्रम मैं कभी नहीं भूलसक्ता ॥

इस पुस्तक का सर्व हक्क यंत्राधीशक अर्पण है ।

सज्जनों का किंकर

सुबेदार मन्नालाल मिश्र पिंशीनियर " तीसरा साप्रस मैना "

ग्राम पाली

पोष्ट बिसेन मौ (जिला उन्नाव)

श्रीगणेशायनमः

अथ रागरसीक.

ध्रुपद राग इमन ॥ १ ॥

जाको वेद रटत ब्रह्म रटत शम्भु रटत शेष रटत पावत नहि पार ॥ नारद आदि व्यास रटत प्रह्लाद रटत कुन्तीके सुवन रटत द्रुपद सुता रटत दीनन प्रतिपाल ॥ १ ॥

ध्रुपद राग खमाच ॥ १ ॥

श्यामको चोट गहि रुचिर बनाय आछो जेवर जड़ावदार अतिहि मन भायो है ॥ विविधप्रकार नाना सिंगार सजन रंगमाहि देखि वृखभानुसुता आपुही सिरनायोहै ॥ १ ॥ अतर गुलालकी करत कीच भरन सकल सुगन्ध ब्रज गिरिन बहायोहै ॥ निरखि चरण अम्बुज नम हियेराखि बारम्बार नन्दबालकरि महादेव जसदुलारे गायोहै ॥ २ ॥

ध्रुपद ऐमन ॥ २ ॥

सीस मुकट तिलक भाल श्रवण कुन्डल कंठ माल ॥ सख चक्र गदा पद्म लेत भृकुटी कुटिल अरुण नैन मन्द हसनि मधुर बैन मोहन मुरति राजै ॥ १ ॥ तुलसीदास ऐसो रूप सोभा नखसिख अनूप अंग अंग निरखि रूप मदन कोटि लाजै ॥ २ ॥

चतुरंग ईमन ॥ १ ॥

गुनको गुणकी चर्चा कीजिये ॥ जातैं सभा अनगुणी गुनिनके निगुनिन गुनियनके संग रहिये सतगुरनको मान पावे आवत तिल्लाना तूम तानांनांनांनां ॥ गुणकी चर्चा कीजिये ॥ १ ॥ त्रिक्टि धुम किटिकिट धाधे डिग डिग डिग डिग डिग डिग तादिग डिग तादिग डिग डिग डिग डिग डिग तांना नूम ताना नूम तदीर तदीर तूम तांनां ना नां नां नां ॥ गुणकी चर्चा कीजिये ॥ २ ॥

चतुरंग इमन ॥ २ ॥

कैसी बंसिया प्राण वसि कीनारे ॥ अधर धरन रसिया वृज बसिया गावत सुरनसोरागेर ॥ तानां तानां नाद्रि तानां तूम द्रि-तानां दिर दिर तानां दिर तानां ॥ कैसी बंसिया ॥ १ ॥ कहै फरहत सुलतान कन्हैया खानपान विसरानारे ॥ उठिधाई धमरे दौरीसी नर खोई गति प्रीतम तैसी ॥ कैसी बसिया प्राण वसि किनारे ॥ २ ॥

संगीत ॥ १ ॥

विविध भांति गति नई नई नटवर नांचत संगीत ॥ टुमुकि टुमुकि पग धरत धरनिमें छछूम छछूम छननननननन ॥ तापर धुनि पगनू धुनि बाजे त्रिकिट त्रिकिट तूम किट तूम किट धा धाधिलांग धा धूमकिट धूमकिट धा धा किरकिट धा धा धा किरकिट धा ॥ नटवर नाचत संगीत ॥ १ ॥

सरगम ॥ १ ॥

सारे गम पारे ग ग रसा निधानि पा धमा प धा प सगरे सानीधा निधपा मगरेसा ॥ सारेगम पागम निधानिसा निरारे गरसा निधप मधाधा धरसा गानर सानी धापा मगरे ॥ १ ॥

सरिगम राग खमावच ॥ १ ॥

सशारी गम पधानी निधप धानीसा ॥ निनिधा पापा मामा गा-रेशा निधप निधप गम सगरे मगरे ॥ सशरे सशरे गम पाधापा मगरे सगरे सशरे निधप निधप ॥ १ ॥

ख्याल आसावरी ॥ १ ॥

पहेलवा जागे चोरवा लगइले तोरी घात ॥ अब कहेजैजे हमारी रामनाम चोरवा लगइले तोरीघात ॥ सगरी उमंगहै अपनी उमंगसे चोरवा लगइले तोरीघात ॥ १ ॥

तिल्लाना राग सिन्दूरा ॥ १ ॥

आदि ता नाना नाना दिम ॥ दीर दीर दीर तूम धि तानादिर ताना तूम ताना ता दिग तादिग दिग दिग नकधिलांग धि धिगिन

तिक धा ॥ धकिट धकिट तादिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तनून तनून ताना नानानानानानाना सानीधा सानीधा पामगरे ॥ धापा मागरेशा ॥ १ ॥

ख्याल केदारा ॥ १ ॥

चमेली फूली चंपा और गुलाव गुधिलादे मालिनि और गुंधिलादेने वार ॥ १ ॥

ख्याल आसावरी ॥ २ ॥

तुम मोरी खवरिया नारे ॥ निसुवारे मोरी सुधि विसराई ॥ अखियां तोरी विगड़ रहीहै कोई सखी मधुवा पिलारे ॥ १ ॥

ख्याल राग येमन ॥१ ॥

रामधनी सव नजर वाग तेरे अजव ख्याल हैंरे ॥ मेरे साहेव गरीव नेवाज ॥ काहूको निपट निलज्ज वनायें। काहूको दीन्हें व अधिक लाजरे ॥ काहूको राखत अपनी मौजगे हो न लगे सव सुफल काजरे ॥ १ ॥ काहूको माल मुल्क दक्स दीन्हे व काहूको दीन्हें तख्त ताजरे ॥ काहूको निपट दलिद्र वनायो भरमायो सव द्वार द्वार ॥ तेरे अजव ख्याल हैरे ॥ २ ॥

ख्याल परज ॥ १ ॥

यार सवलिया तैंने मन लीनारे ॥ तेरी संदली सुरति मेरे मनना भाये, चलो चलो कान्ह जोवन रसलीन्हारे ॥ सवलिया ॥ अधर वांसुरी वाजन लागी, सतसुर तीनिग्रामरे ॥ गायन गायन गांयनरे वृजकी नारि सव रहियोरे मगनना ॥ सवलिया ॥ १ ॥

नुकीले ॥ २ ॥ कोर कटाक्ष चपल जनु खंजन, रतनारे सुरमुनि मनरंजन ॥ हरिविलास घनश्याम निरंजन अम्बक परम रसीले ॥ ३ ॥

भजन ॥ १ ॥

कटि कसेतून करगहे चाप लोचन बिसाल रतनारे ॥ खंजन मीन सरोज वारि पुनि विधि बहुभांति निहारे ॥ जटा मुकुट मुनिवरको भेषधरे हैं भूपनके बारे ॥ १ ॥ कोमल बदन सुमिलित भूषन कलन पन्थ मृदु-हारे ॥ देखि रूप सिया रानठ बनके बरन नैन जलधारे ॥ २ ॥ सुन्दर प्राण सीलके सागर कौन सकल कृति तारे ॥ गमन करन पगित यहि तनसे मनमा करत विचारे ॥ ३ ॥ नवपक कुसुम काम दल लो-चन हे दसरथके बारे ॥ तुलसीदासके मिलहि पन्थने पूरण भाग्य हमारे ॥ ४ ॥

भजन ॥ २ ॥

भजन ॥ ४ ॥

सब विधि रामहींको भीर ॥ मोहमाया ममतारे हरहु तनकी पीर ॥ १ ॥ जक्तसिंधु अपार माया भंवर उठत गंभीर ॥ नाव झांझरी गुण पुराना खेयलाओ तीर ॥ २ ॥ अजामील गज गणिका तारेव औरतारेव कीर ॥ सेवरीके फल जूंठेखायो रमापति रणधीर ॥ ३ ॥ दीन जानि विचारि मनमें आयों चरनन तीर ॥ तुलसीदास अब कर्मकी गति मेटिहै रघुवीर ॥ ४ ॥

भजन ॥ ५ ॥

ऊधोरे जाके माथेभाग ॥ आये जोगकी वेलि लगावन काटी प्रेमकी बाग ॥ कुब्जिाको पटरानी कीन्हेव हमें देत वैराग ॥ १ ॥ लौ- डीके घर डौंडा बाजे बाढेव बहुत अनुराग ॥ निलज भये मिलि खेलत दोऊ बारामासी फाग ॥ २ ॥ जोडी भली बनीहै सगनी हंसराज औका ग ॥ सूरदास रसखानि छोडके चतुर चिचोरत आग ॥ ३ ॥

भजन ॥ ६ ॥

[illegible] आलन नेद [illegible] ॥ अपने मुलक मुन तुम देखो ॥ दूध मिलावत पानी ॥ १ ॥ हमरे सिरकी चटक [illegible] ॥ [illegible] सानी ॥ २ ॥ हमरा तुम्हरा कौन [illegible] ॥ है दोनो एक त्यानी ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥

भजन ॥ ८ ॥

रोकत गैलमै कैसे आंव पनियां ॥ मोरमुकट कंचनकी झलकैं ॥ कुन्डल मकर मनोहर हलकैं ॥ चन्दन खवरि माथेपर राजैं॥ उर वैजन्ति माल विराजैं ॥ पीताम्वर कटिकसे चौतनियां ॥ १ ॥ अधर सुधारस वेंन वजावे ॥ ग्वाल वाल संघेलै धावे ॥ कहानमानत नन्दरायको ॥ माखन खात फिरत घरघरके ॥ ऐसी निटुरकी परीहै कुवनियां ॥ २ ॥ कटि किंकिनियां नूपुर वाजैं ॥ झुंझनातपर मुनि मनमोहैं ॥ पगु पैंजनिया ऊठत वाजै ॥ देखिडरै प्रभु दूगिको भागैं ॥ अति चंचल अलवेली चितवनियां ॥ ३ ॥ शिव ब्रह्मा मुनि ध्यान लगावै ॥ सेष गनेस पार नहि पावें ॥ बृन्दावनकी कुंज गलिनमे ॥ निसदिन मगन रहत गोपिनमें ॥ सूरश्याम प्रभु ऐसो रजधनियां ॥ ४ ॥

भजन ॥ ९ ॥

वंसीवाले काहेको डारी मोहनी ॥ दधिकी मटुकी सिरपर धरकै दधि वेंचन ग्वालिन निकरी ॥ और सखी सब दूर निकरिगये चन्द्रावली पाछे निकरी ॥ कान्ह कहैं करलैहौं सवनसे तुमहींसे वोहनी ॥ १ ॥ रोज रोज दधि वेचि जातहो आजजान नहि पाओगे ॥ लेहौं चुकाय कसरि सब दिनकी जो यहि मारग आओगे ॥ नथ दुलरीका न्यारा लेहौं सूरति तेरी छोहनी ॥ २ ॥ सब चतुराई भुलि जांयगे कंसराय सुनि पायेगे ॥ नंद बबाजी मात यशोमति सवको पकरि मंगावेगे ॥ तुमहुं सहित कान्हा ग्वाल तुम्हारे मैया तोरि रूहनी ॥ ३ ॥ गांव बसेरा लालनदासहै बृन्दावन दम कोसवसैं ॥ सांवलि सूरति राधावरकी जिनके हिरदै गांझलसै ॥ जोरम चाहो कान्हा सो रसनाही गोरस पीओ भरि दोहनी ॥ ४ ॥

भजन ॥ १० ॥

पूछत जननी कहां गहिरापारी ॥ किनतोरे भाल तिलक करि दीना । किन तोरी मोतिन मांग सवांरी ॥ १ ॥ खेलत खेलत गई नन्द

ववाघर ॥ उन जसुदा मेरी मांग संवारी ॥ २ ॥ खानेको दीन्हीं माखन मिसिरी ओढनको दई सुन्दर सारी ॥ ३ ॥ मेरो नामवूझ वावाको तेरो नाम बूझि दई गारी ॥ ४ ॥ हमतन चितै चितै ढोटा तन ॥ उन बिधना तनकोंछ फसारी ॥ ५ ॥

भजन ॥ ११ ॥

इनमें कौन राधिका रानी ॥ हंसि पूछत रुक्मिन सखियनसो प्रेम वचन मृदुवानी ॥ १ ॥ नीलाम्बर जाके तनसोहे मुखपर लट लटकानी ॥ सो कहियत मृदुवानी ॥ २ ॥ रसके वसि कीने व मनमोहन सुनियत वृखभान नंदनी प्रेमवचन चतुर सयानी ॥ दरसनविन तरसै दोउ नयना ज्यों मछरी बिनपानी ॥ ३ ॥ शिवब्रह्मा जाको ध्यान धरतुहैं सो राधे नदरानी ॥ सूरदास सन्तनके कारण गिरधर हाथ विकानी ॥४॥

भजन ॥ १२ ॥

राजित राज समाज आजुरी ॥ लसत सिरन सिरताज आजुसन ॥ रघुबंशिन के दुति समाजरी ॥ १ ॥ लखन लाल दहिनें दिसि व्यापित ॥ वाम भरथ भ्राता विराजरी ॥ २ ॥ सत्रुसाल सन्मुख दुति राजित ॥ जाहि विलोकत चन्द्र लाजरी ॥ ३ ॥ श्रीरघुराज काज सव करके ॥ चारु चवर पीछे ढोलारी ॥ ४ ॥

भजन ॥ १३ ॥

देखोरी सखी छवि लखन ललाकी ॥ गोरे गात तिलक दुति राजित ॥ गोल कपोलन अलख झलाकी ॥ १ ॥ तिरछी तकनि हसिन मुख मुसकानि चाल गरूर गयन्द कलाकी ॥ २ ॥ श्रीरघुराज देखि छवि मोहत ॥ ऐसी कौनि नारी मिथुलाकी ॥ ३ ॥

भजन ॥ १४ ॥

मन कौनकी वाट निहारतरो यहां कौनसे प्यार तुम्हारारे ॥ धन धामरहा सब साथ गरा अब सबसे किया किनारारे ॥ मानपिता भगनी दारासुत कोई नहि करत हमारारे ॥ १ ॥ अब भरि भरि नयन [illegible]

करत इहा कौनसे वूझन हाराहै ॥ सोच कीन्हेसे होत काहा कछु दिनकरु और गुजाराहै ॥ २ ॥ तुम देस विदेस फिरो भ्रमत विधना कछु और विचाराहै ॥ देवीसाहाय जिन जलम दियोहै ओई मित्र तुम्हाराहै ॥ ३॥

भजन ॥ १५ ॥

अयोध्या आजु सनाथ भई ॥ रामचंद्रको जन्म भयोहै रतनन भूमि छई ॥ १ ॥ घर घर सखियां मंगल गावे गावत राग सही ॥ सरब सोनेको बनाहै पेलना झूलत रामसही ॥ २ ॥ कंचन महल खडे दसरथके सर्जू निकट वहीं ॥ तुलसीदास प्रभु तुमरे दरसको लेका खबरि भई ॥ ३ ॥

भजन ॥ १६ ॥

करूणां निधान सुनिये कछु करुणां कानमेरी ॥ जुग जुगान पतित तारे व प्रभु गिनत गिनत हारेव ॥ अवकी प्रभु पार लगाओ प्रभु सोवत हे तो जागो ॥ १ ॥ प्रहलादके हितकारि खम्भ फोरि देहधारी ॥ नरसिंह नाम पायो सब सन्तनके मन भायो ॥ २ ॥ मैं बार बार टेरौं प्रभु तुम्हारी बाट हेरौं ॥ महाराज अवध बिहारी जनमाधोदास बलिहारी ॥ ३॥

भजन ॥ १७ ॥

गिरिन परै गिरवर लैके भरा डौरी दौरी फिरे जसोदा मेरा कन्हैया बारा ॥ ग्वाल बाल सब संग लियेहैं तनिक तनिक सब करो सहारा ॥ १ ॥ चले पवनवां उठे सनाका चहुं दिसि बादर घेरा ॥ बाबा नन्दने हुक्म दियाहै गिरपर एको परैन फुहारा ॥ २ बांकेन्हें यों कहे कन्हैया सुन मैय्या मोरी बात ॥ एक इन्द्रकी कौन चलावै कोटिन इन्द्र मोसे पगपगहारा ॥ ३ ॥ एक हाथमें गिरवर लीने मोहन बंसीवाला ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसको लै गिरवर सब लीन उगारा ॥ ४ ॥

भजन ॥ १८ ॥

खेलन श्यामगये बृज खोरी ॥ मोर मुकट पीताम्बर सोहै।

हाय भंवर लीन्हे चकडोरी ॥ १ ॥ औचक आय मिलीतहं राधा ॥ ओढे नीलपट पीत पिछोरी ॥२॥ ओ मुसकाय चली बंसीवट॥ श्यामगही बैयां बरजोरी ॥ ३ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसको ॥ राखो लाज सरन मैं तोरी ॥४॥

भजन ॥ १९ ॥

फिरि फिरि राम्रसिया तन हेरत ॥ त्रखित जानि जल भरन लखन गयो ॥ भुज उठाय ऊंचे सुर टेरत ॥ १ ॥ अवनि कुरङ्ग द्रहिद द्रुम डारन ॥ रूपनिहारी पलकना फेरत ॥ २ ॥ इत लौकिक मग लोग चहूंदिसि ॥ मनहु चकोर चन्द्र महि घेरत ॥ ३ ॥ जेजन भाग्य वचे भूतल थल ॥ तुलसी सहित रामपद जोहत ॥ ४ ॥

भजन ॥ २० ॥

कहै कोई परदेसीकी वात ॥ वही द्रुमलता वही वन कुंजन वही तरवर वरि पात ॥ जबसे बिछरे नन्द सांवरो नांकोई आवत जात॥१॥ मन्दिर अर्ध अवधि निज वधिगये हरि अहार टरि जात ॥ अजया भख अनु सारत नाही कैसेकै दिवस सिरात ॥ २ ॥ ससि रिपु वर्ष भानुरिपु युगसम हररिपु करिगयेघात ॥ वेद नछत्र ग्रह जोरि अर्ध करि सोई घनव भय खात ॥ ३ ॥ मघ पंचक लैगयो सांवरो ताते जिया अकुलात ॥ सूरदास अब व्याकुल विरहिनी करमीजत पछितात ॥ कहै ॥ ४ ॥

भजन ॥ २१ ॥

बावरे मन भजु हरदम पदम ॥ गुनि मुनि के नाम जापत अतिजप ॥ जाके गंग जटासिर बिराजत निरत करत सुन्दर छनऊप ॥ अरधंगी छावे अ पिया गिरिजै सरवांग डमरू डम डम ॥१॥ हरहर करत कटत सब संकट वदत वेद यमवत वग दम ॥ इनी प्रीति भई उरमे छूटिजात सगरे रम रम ॥२॥ तीनि लोक परताप सिद्धि जेहि रटत सकल शिव शिव बंब ॥

कोटिन पतित महा अपराधी नाम लेत तरि जात अधम ॥ ३ ॥ और कष्ट सगरी चतुराई कछु जोग व्रत नेम धरम ॥ होहु दयाल प्रभु दास निजामी राखलियो मेरी लाज सरम ॥ ४ ॥

भजन ॥ २२ ॥

राजन मानहु वचन हमारो, द्रोणी द्रोण कृष्ण अरु भीषम सबमिलि मतो विचारो ॥ पांच गांव पंडवनको दीजे सगरो राज तिहारो ॥ १ ॥ पैठनको हस्तनापुर दीजो पूना और सतारो ॥ नेम धरमको काशी दीजे कनउज मांझ मझारो ॥ २ ॥ सुनि हरि वचन हसेव दुरयोधन बोल्यो वचन गवारो ॥ राजनीति कि मर्म न जानों गैय्यनके चरवारो ॥ ३ ॥ सुमनहीं देव सुईके नाको मैंतो यही विचारौ ॥ छत्री धर्मकी यही रीतिहै कोई जीतै कोई हारौ ॥४॥ अन्धके अन्ध महा दुर्योधन बोलत वचन खभारो ॥ सूरदास प्रभु तुमेर दरसको नाजानी काहरचो करतारो ॥ ५ ॥

भजन ॥ २३ ॥

दल साज आजु औधेस कुंवर लङ्का चढी आयेरे ॥ कहतमंदोदरि सुनु पिया रावण इतना कहामेरा मान सिखावन ॥ संग सिया लैकै उनके चरनन सिरनावोरे ॥ १ ॥ महाबीर रनधीर बखानो बालि सुमन अंगद भयमानो ॥ लछिमन रणपरहै अति प्रचड मेरे मन भायोरे ॥ २ ॥ मुक्ति करनको रारि वढायों रानीजानि महरानी लैआये ॥ आजु समर करिहो उनहिन संग जिनको जस छायोरे ॥ ३ ॥ छिनमें लंक पंक करिडारै कुम्भकरन घन नादेमारे ॥ विश्वनाथ छवि कहांलग बरनैं हरिजस गायोरे ॥ ४ ॥

भजन ॥ २४ ॥

भरोसा मोहि अवध विहारीका ॥ विश्वामित्रकी यज्ञ सुधारी मारेव निसाचर भारीका ॥१॥ येकै बान ताड़का मारेव तारेव गौतम नारीका॥२॥ जनकपुरीमें धनुष उठायो ब्याहेव जनक दुलारीका ॥ ३ ॥

भजन ॥ २५ ॥

जिन रामको नाम सिधारि लियो तिन औरको नाम लियोनलियो॥ जिन गंगाजीको नीर पियो तिन ओरको नीर पीयोनपीयो ॥१॥ जिन साधकी संगति खूब कियो तिन औरेको साथ कियोन कियो ॥ २ ॥ जिन मातपिता गुरु सेवा कियो तिन औरकी सेवा कियोन कियो ॥३॥ कहैं निजामी सुनहु साहजी कपटी मित्र कियोन कियो ॥ ४ ॥

ठुमरी खमावच ॥ १ ॥

ऐसो चंचल छैल छल कीनारे॥बृजराज आज ग्रहकाज लाजताजि मधुरी हँसनि मन लीनारे ॥ कैसी वंसिया वजाइ मन मेरो ललचाई॥ करिको टि उपाई निसु नींदन आई ॥ दिन रैन चैन तजदीनारे॥१॥ ऐसो ढिठ कन्हाई मोसं रारि मचाई ॥ कुच हाथ चलाई॥ मैंतो लाज लजाई ॥ सब देखत लुगाई मोहि राखा लगाई ॥ जगदेव पिय मोहि चीन्हारे ॥ १ ॥

खमावचठुमरी ॥ २ ॥

बांकी लटक लगत मुझे प्यारीरे ॥ नयननकी सौंहनसों मेरोमन मोहिलियो तिर्छी नजर कैसी सौंहै अनियारीरे ॥ थिगकि थिराकि गति लेत पचडूं मधुर मधुर मुसकानरे ॥ बोलत मुखन ताता थेई ताता थेई थेई ताता थेई ताता थेई निरखी दुलारे जावें वारीरे ॥ १ ॥

ठुमरी परज ॥ ३ ॥

बसत सखी हियामा पियाकी मोरे चाल ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुन्डल उर बैजन्तीमाल ॥ १ ॥ नयनफाग दृग मैंहैं कटीली धुंघर वाले बाल ॥ बसत सखी हियमें पियकी मोरेचाल ॥ २ ॥

ठुमरी परज ॥ ४ ॥

मुरलिया वाले तनिक सुनायजयो तान ॥ पांच तन्नकी तोरीरे मुरलिया ॥ बन्सीकी मीठी तान ॥ १ ॥ औरननके संग रमत ॥

हमसे करत गुमान ॥ २ ॥ जबसे सुनी तेरी मधुर मुरलिया ॥ मोहि लियो मेरे प्रान ॥ ३ ॥

ठुमरी खमावच ॥ ५ ॥

पिया तोरी जानतहों चतुराई ॥ मुख देखकी मीठी बतियां ॥ हमसे कहत बनाई ॥ १ ॥ उनसंग जाना हमसे बहाना ॥ हो पिया तुम हर जाई ॥ २ ॥

ठुमरी परज ॥ ६ ॥

तेरी बांकी चाल बिहारीलाल चंचल चल चपल छले ॥ माधुरी हसनि मुसकानि बानि दृग पानि सानि सुखहे रहिये ॥ जिन सत पातक जात चले ॥ १ ॥ आपन करि छोडत नहि कोईहीरा विनैं करैं कर जोरा दोऊ ॥ अवतो नेक संभारे बने ॥ २ ॥

ठुमरी सिन्धू ॥ ७ ॥

बन्सीबट यमुनाके निकट नागर नट लटकि रहे ॥ मुरली अधर धरि मधुर बजावत गावत विरहा प्रेम उपजावत ॥ भावत नाहीं अरु बहुत चहे ॥ १ ॥ लोकलाज कुलकान त्यागि अनुराग जाग चित चरन बसे ॥ हीरा हरिसे लाग कोई काहू कहे ॥ २ ॥

ठुमरी देश ॥ ८ ॥

पड़त तुमबिन जियाकोन चैन ॥ जबसे सुने तेरे मीठे बैन देखि परी सुन्दर छबिन्यारी तारा गाते लगे अति प्यारी ॥ बारबार खडी यो से पुकारैं जबसे लागे तुमसे नैन ॥ पड़त ॥ १ ॥ तुमसे प्रीतिलगी बनवारी तन मन धन सगरो मैंवारी अवतो करेजवामें लागी कारी ॥ तड़पि तड़पि गई बीती रैनि ॥ पड़त ॥ २ ॥

ठुमरी खमावच ॥ ९ ॥

जोगन बन ढूंढौं मैं कोनेदेस ॥ आपुतो जाय विदेसमें छाये ॥ ना पतियां ना संदेस देत ॥ १ ॥ जबसे गये मोरी सुधहु न लीन्हीं ॥ प्रीति करी कुबरीके देस ॥ २ ॥

ठुमरी खमावच ॥ १० ॥

तेरी कुवर कन्हाई चतुराई निठुराई छलबल ढंग नयेनये ॥ कहत कदर सुनु कृष्ण कान्ह बन्सीकी तान मेरे बसत प्रान ॥ अब मेरी कही सुनु मानौ राज छलबल ढंग नयेनये ॥ १ ॥

ठुमरी परज ॥ ११ ॥

छैला चलेत छलत छिन मारीरे ॥ ऐसी द्रिष्टि तरेरि हेरि झटपट चट बसिभई ताहीरे ॥ मुहि रसिकर बसि कुवरी भये लोग कहत हरजाईरे ॥ बृजराज लाज तुम्हैं तनक नाही ऐसे फयल करत जर जाईरे ॥ १ ॥

ठुमरी परज ॥ १२ ॥

तेरी सावली सुरती अरु नेनवा रसीले तन मन तुमपर डारौं वारि वारि ॥ बिनदेखे नहिपड़त चैन अब उनबिन कैसे कटत रैन ॥ मोहि बिरहा अधिक तन दियोहै जारी ॥ १ ॥ दास सराहत चित बिसार तेरे नैनोंमें छवि मोहजाल ॥ कहत भाग यह वारवार ॥ २ ॥

ठुमरी परज ॥ १३ ॥

सगरी रैन सौतिनके जाग पिया अब जनि मोसे बोलो ॥ ना पिया तुमसे नैन मिलाऊं ना गरवा लागूं तेरे ॥ नांकरूं पिया तोसे रसकी बतियां नां घूंघटपट खोलूं ॥ १ ॥

ठुमरी खमावच ॥ १४ ॥

एरी चंचल चाल नागिनसी पाग चितवन चित लैगईरे ॥ द्रिग मृग समान चंचल कठोर उभि अंग अंग रस घोर घोर ॥ बिछुवेंकी झनक पायलकी घोर झुनकारि सुरत दैगईरे ॥ १ ॥ चितवत इतवत खड़ी पसिजसि गले सिलक माल झुक झूम झूमि ॥ मुख चन्द्र अलख रहि घुमि घुमि चन्दा मानो छलिगईरे ॥ २ ॥ लोचन बिसाल सुन्दर कपोल जोबन अमोल देह गोरे गोल ॥ फलतमे मधुर कछु कहिके बोल दोना मानों दैगईरे ॥ ३ ॥

ठुमरी परज ॥ १५ ॥

गोरी तेरे नैनवा करत चतुराईरे ॥ बड़ी बड़ी अखियन कजरा सोहै मो
सोहै मोती मालरे ॥ ओतो बनि ठनिकै सब आईरे मन्दिरमें हमसे का
निठुराईरे ॥ १ ॥ जानि बुझिकै करै चतुराई सनद पिया बड़ेहो भ
यईरे ॥ काहूकी न मानत एक बार तेरे नैनवा करत चतुराईरे ॥ २

ठुमरी खमावच ॥ १६ ॥

सैयां नीरमोहियां गही मोरी बहिया कंगन मेरा करसे करकि गयो
॥ कहि न सकत कछु लाजकी मारीरे ॥ चोली दई मसकाई । जा
नहीं दीना । जोबन रसलीना कमर मेरी पतली लचकि गईरे ॥ १
कहत दुलारे सुनु पिया प्यारेरे ॥ तू बनिठो बेपीर । चुनर मेरी फारी
गैलमें उघारी । हमारा दिल तुमसे छरकि गयोरे ॥ २ ॥

ठुमरी काफी ॥ १७ ॥

कहूं छायेरे पिया नहि आये अबतक ॥ निसु बीतिजात मोही म
निरखत ॥ एकतो अंधेरी घेरि आईहैं झपक दुजे मोर सोर बिजुलि
चमक ॥ यों विधि पिया बिननहीं लागत पलक ॥ कहूं छायेरे ॥ १

ठुमरी देश ॥ १८ ॥

पिया छांडदे मोरी बहियां ॥ बिनती करतहौं परौं तेरी पैय्यां ब
बार बलिजैय्यां ॥ रुनुक झुनुक मोरी पायल बाजे ॥ जागत सासु जि
निश ॥ १ ॥ सनद पिया तोसे अरज करतिहौं ॥ तेरी परत मैं पैय
॥ २ ॥

ठुमरी देश ॥ १९ ॥

बमिरि सैय्यां हमै न सताओ लरिकय्यां ॥ धरत सेज पग छाती धड़
कै ॥ मेरी लचकजात करिहैंय्यां ॥ १ ॥ रसके गांहक तुमहो दुलारे
मतलब अबै नैय्यां ॥ २ ॥

ठुमरी काफी ॥ २० ॥

काहेको मरोरी मोरी गोरी २ बहियां ॥ पतरी कलाई बल खायगई सै यां ॥ मैं दधि बेचन जात बृन्दावन ॥ औचक भेट भई मोरी गुय्यां ॥

ठुमरी पिलू ॥ २१ ॥

जरा झलक सुती दिखलायकर तिरछी मारे नजरका भाला ॥ उस घरीसे न भावे कोई वसाहै दिलमे वो बंसीवाला ॥ १ ॥ बांकी अदा जो देखाके मुझको मनमेरा लेगयो वो बंसीवाला ॥ २ ॥

ठुमरी काफी ॥ २२ ॥

बातेंमें तेरे जादु चितवनोमे हे टोना ॥ कहिते हो करारसे झूठे नाहोना ॥ सिखलाया तुम्हे कोनहे पर औरके सोना ॥ १ ॥ जागेहो सारीरा तिके अखिया रंग रंगीली ॥ चाकूसे गला काटके फिरदेतहो लोना ॥२॥

ठुमरी परज ॥ २३ ॥

डगर चलत बंसीवट टटरो करे । ऐसो नट नागर ढीठ छयल कैसी कैसी करत बात अंखियां नचावेरे ॥ सब्वा संगलीये ग्वाल बाल दधि गोरस भाजन फोरन लग्यो ॥ रसिक दुलारे प्यारे देवे मोहि झकोरे ॥ १ ॥

ठुमरी खमावच ॥ २४ ॥

छेडोजी मोरी नाजुक बहिया करकी कलाई ॥ उनीने जाय बोले जिन जदुआ चलाई ॥ बितार्ड सारी रतिया नैन तरसाय ॥ उगिनि मेरी बारी संग तुम्हे छलिआई ॥ १ ॥ दुलारे तोसे दादरो मूर्नो चितचाय ॥ सौतिन संग चैन करे हमें तरसाय ॥ ॥ २ ॥

ठुमरी पीलु ॥ २५ ॥

जोबन मेरा नाहक येंह बीता जात । सिवर नहि लाल कहो मैं कासे बात ॥ सुलायो नहि बतिया होनाये सेन लाय ॥ नजानो सि मोहनिन दियोहै मोये घात ॥ १ [illegible] नहि [illegible] ॥ दुलारे देखो बतिया उमरि भयो गात ॥ २ ॥

ठुमरी परज ॥ २६ ॥

मन मोहन लाल वडो रसिया सखि जासकी भीति उठावनुहै ॥ तारवहै
नकी तरियां सखि चन्दमें फन्द चलावनुहै ॥ १ ॥ जह पवनन जाय
है सजनी ॥ मुरली धुनि दूती पठावनुहै ॥ २ ॥ सखि घोर कहं
धेहानी वन्यों ॥ कहुं राह लली वाने आवनुहै ॥ ३ ॥

ठुमरी परज ॥ २७ ॥

तलफ विन वालम मेरा जिया ॥ दिनभर तलफै रातिभर तलफै ॥ तलफि
ठफिके भोर किया ॥ १ ॥ नयन थकित भये पन्थ भुलानें ॥ सांइ
रहा मेरी सुधिनालिया ॥ २ ॥ तन मन मेरा राहट असडो ॥ सूनी
न परदेस पिया ॥ ३ ॥ दुलनदासके सांई जग जीवन ॥ सकल दुख
ान दूर किया ॥ ४ ॥

ठुमरी परज ॥ २८ ॥

सुनिये जसुदा विनती हमरी तकसीर सुनों अयनें सुतकी ॥ मैं द
। वेचनके काज आज मग जात हती वंसीबटकी ॥ १ ॥ माखन खा
लुटायदियो मटुकी चट चौहटमें पटकी ॥ २ ॥ देसराज कहै सुरति ह
री घनवारी तुमसन अटकी ॥ ३ ॥

ठुमरी भैरवी ॥ २९ ॥

कोन जगावेरे सैय्यां जागी सारी रैनकी ॥ हांहां करत तोरी पैयां पर
हों । विनती करत मैं तुमसे डरतहूं ॥ सैनोंसे कटारी मारी बर्छी मारी
नका ॥ १ ॥ दूरसे देखा श्यामको चीन्हा ॥ हाथ लकडिया मुखमें बी
। ॥ तेरे कारन सखितीजदीना अपना बेगाना छोडा ॥ गारी देउंगी दे
ारी देऊंगी नींद खोई चैनकी ॥ २ ॥

ठुमरी पीलू ॥ ३० ॥

मानतहो सब गुनन भरेहो मित्र भले कपटीजो बुरेहो ॥ नाकरू मो
रसकी बतियां ॥ काहु सोतनके फन्दे परेहो ॥ मानतहो । १ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३१ ॥

सोवत सोवत सखि पछिली राति एक सपना मैंने देखारी ॥ बैठ पलंग पर दहियां मोरी पकरै प्रीति लगाय रस बतियां कीन्हा ॥ मुखसे अंचल टारि जगावे मुख चुमे अरुगले लगावे ॥ कहांगयो छैल अनोखारी ॥ १ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३२ ॥

घातियां करि कान्ह छुए छतियां दिनमें सकुचैन बचे रतियां ॥ हथियां कर जोर निहारतहैं ॥ कछु औरकी और करै बतियां ॥ १ ॥ सजनी मग घूमत धूम धरे ॥ मुख चूमि गड़ाय गयो दतियां ॥ २ ॥ बलदेव कहै न रहौ बृजमें ॥ निगहो वोहिभांति लहो लतियां ॥ ३ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३३ ॥

सो पिया नहि आये अवध गई बीति ॥ हमसे छल करि इतउत डोलत ॥ भईसौतिन की जीत ॥ १ ॥ सात पांच कर जोड जान तिथि तादिनकी परतीत ॥ तासे अधिक दिन बीतिगये है छोरत है अनरीत ॥ २ ॥ श्याम सुन्दर द्विज सोच न कीजे ॥ कबहुंतो मिलिहैं मीत ॥ ३ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३४ ॥

मोरी कर पकरत गई राज बगुरी ॥ कर पकरत छतिया छुअत पनिया भरत अगुरी ॥ ननद पिया बिच मग मिलगये ॥ लपटि झपटि बरजोरी कीन्ही ॥ मोरी कर पकरत ॥ १ ॥

बार कुंजनमें आवे मधुर मधुर मुर्लीको बजावे ॥ गावे अलवेली अधर तान ॥ १ ॥ दास गनेस मनोहर बतियां कर गहि सखिन लगावत छतियां करत नहीं काहूकी आनि ॥ २ ॥

ठुमरी खम्माच ॥ ३७ ॥

सखी कोई चुरियां लेहो मोल । कहै मनिहार बृज डोल डोल ॥ श्याम बरन सखि वदन सलोना द्रिग चंचल चितवनमें टोना ॥ सुन्दर कपोलहैं गोल गोल ॥ १ ॥ मधुवन आप उतारी झोरी चुनि चुनि जोग धरै चहुंओरी ॥ पहिरावत भेद खोल खोल ॥ २ ॥ नवल नारि बरसाने आई दास गनेस मोहनी डारी । लै चुरियां कर सखिन बिहारी ॥ पहिरावत मृदु बोल बोल ॥ २ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३८ ॥

छोडो छोडो मोरी गोरी बहियां । दुखत मोरी नरम कलाई ॥ कैस तुम कैसे तुम निडर श्याम मग रोंकत पराई ॥ छेडो विन काज आज तुम को न आवे लाज कंसको कठिन राज जाओ भूलि जाओ भूलि सब ठकुराई ॥ १ ॥ मानैना गनेस कान्ह मांगत जोवन दान । लागी सखि मुसक्यान बाराजोरी धाराजोरी गरवा लगाईगई भूलि चतुराई ॥ छोडो छोडो ॥ २ ॥

ठुमरी पर्ज ॥ ३९ ॥

तिहारे सैय्यां घूंघुर वाले बाल ॥ अति भौरासे काले काले ॥ लट नागिनिसी चाल ॥ १ ॥ चितचोर पतित पावन मन भावना । राजा बलिके द्वारे भयो बावना । सारा हिन्द होगया काला । तिहारे जुलफ दीखे मोहासारा बङ्गाला ॥ तिहारे सैय्यां घूंघुर वाले बाल ॥ २ ॥

ठुमरी भैरवी ॥ ४० ॥

तड़पि तड़पि सारी रैन गंवाई करवटिया लेनेदे ॥ नाजुक गोरी नैन ले ॥ कर न धरो मेरी छतियां पिया करवटियां लेनेदे ॥ १ ॥

सोरठ ॥ १ ॥

मधुवनमें ग्वालिन लूटी । कृष्ण कृष्ण कहि छूटी ॥ ग्वाल बाल सब बेर परेहैं बतियां कहै झूठी ॥ ऐसी कहैं चलो श्याम बोलावें दधि माखनकी भूखी ॥१ ॥ अति झिझकोर भई कुंजनमें सिरकी मटुकिया फूटी ॥ लटाफिटकारे एक ग्वालिन रोवै दान दधिका कब छूटी ॥ २ ॥

सोरठ ॥ २ ॥

अकेली मति जैयो राधे जमुना तीर ॥ वंसी वटमे ठग लागतहैं सुन्दर श्याम अहीर ॥ १ ॥ठाढ़ी रहो भरिलाऊं गगरिया मनमे राखो धीर ॥२॥

सोरठ ॥ ३ ॥

मोहि जानि रोकोरे नन्दकिशोर ॥ तोहि उरझनिकी बानि परीहै ॥ सांझ तकत नहिं भोर ॥ १ ॥ देर भई मेरी सासु रिसावे ।तुम्हैं छैल नित रारि सोहावे ॥ इन कुचाल कछु हाथ न आवे ॥ गागरिया दई फोर ॥ २ ॥ तुम अति चंचल ढीठ विहारी ॥ कैसे कोखि रहे महतारी ॥ या मोकोहैं अचरज भारी ॥ घर घर तेरो सोर॥ ३ ॥ नारायण अब क्यों इतरावे । भईसो भई अब बात बढावे । वाहीको तुम आंख दिखावे । जो होवे तेरी ओर ॥ ४ ॥

सोरठ ॥ ४ ॥

ऐसी नहिं चहिये तुम्है चितचोर ॥ नेक समुझिकै रारि करो तुम ॥ सांवरे नन्दकिशोर ॥ १ ॥ प्रथम बोलाय हमें बनमें लई करि मुरलीकी शोर ॥ अब हमसे कहै जाव भवनमें पीतम निपट कठोर ॥ २ ॥ तात मात पति भ्रात जगतमे जहा लगनसे ओर ॥ अब उनसे का काज हमारो हम आपन तृणतोर ॥ ३ ॥ कोटि भांतिसो समुझाओ तुम जियातो तुम्हरी ओर ॥ नारायण अब तुम्हैं त्यागि हम जावें न घरकी ओर ॥ ४॥

मलार ॥ १ ॥

बरसनको आजु आई बदरा ॥ निसु अंधियारी कारी घुघुरी घुम

बिजलुकी उजियारी जिय डरपतुहै उमडि उमडि अरु घुमडि घुमडि कारे मोरवा पुकारे अरु बदनकी लता ॥ [illegible] आजु आई घटा ॥ १ ॥

मलार ॥ २ ॥

घेरि आईरे अंधेरी घटा कारीकारीना ॥ दादुर मोर पपीहा बोलै ॥ बारीबारीना ॥ १ ॥ बिजुली चमके मेरा जियरा लरजे ॥ मोहि नींद आवेना ॥ २ ॥

मलार ॥ ३ ॥

कारी घटा जोरकरै बिजुली डरावे मोको बादरवाने घेरलईरे ॥ चोली मेरी फाटे लागी नथकी झपट लागी ॥ पतलीसे कमर लचकि गईरे सननन सननन पवन चलै पुरवय्या ॥ देखि देखि घटा मैं बेहाल भईरे ॥ २ ॥ छतिया नगारे बाजै बिजुली मसाले जोरे ॥ बुंदियोका सेहरा सीश गुदिलाईरे ॥ ३ ॥ कहै किसुनलाल दूनो नागिनीसी लटा ॥ गोरे गालपै लटकि रहीरे ॥ ४ ॥

मलार ॥ ४ ॥

वर्षता गगन घन गरजि गरजिसुधि आवत श्याम जिया लरजि लरजि॥ कुबिजा ग्रह रहे आप लोभाई वर्षारितु हमैं कछुन सोहाई ॥ मदन मरोरे मोहि तरजि तरजि॥१॥ झिल्ली झींगुर मिलि जिटत राग कृष्ण चरण चित हमरो पाग ॥ सौति निगोड़ी राखे बरजि बरजि ॥ २ ॥ श्याम दुलारेहैं सब लायक रसिक सिरोमणि सबके नायक ॥ उनबिन मेरी सब हराजि हराजि ॥ ३ ॥

झूला ॥ १ ॥

सांवन घन गर्जे घूमि घूमि वर्षत शीतल जल भूमि भूमि ॥ डोलै त्रिविधि पवन पुरवाई ॥सरयु निकट महा छवि छाई ॥ झूलै जनक सुता रघुराई ॥ [illegible] झूमि [illegible] ॥ १ ॥ गावे राग रागिनी भामिनि दमकि रहीं मानो छवि दामिनि ॥ [illegible] गज गामिनि ॥

पायल बाजत छूम छूम ॥ २ ॥ जैजै करत सुमन सुर बर्षत ॥ इन्द्र निसान बजावत हरखत ॥ दास गनेस जुगुल छबि निरखत ॥ छायरहे व सुख झूम झूम ॥ ३ ॥

कजरी ॥ १ ॥

आन बराती अवधपुर जैहैं राघोजीसे करलेब मिलनवा राम ॥ सरहज सारी पियारी श्री राघोजी की तकि तकि मारैं नजरिया राम॥१॥ मिथलापुरकी नारि सयानी भरी जवानी उमरिया राम ॥ चंचल चपल चलत गज गामिन देखेसे आंखि लरिया राम ॥ २ ॥ पाटी पारे मांग संवार पार्टीमे सोहै दमनिया राम ॥ सेंदुरके नीचे बेंदी बिराजै दांतोंमें सोहै बतिसिया राम ॥ ३ ॥ जानकी पसद सरनि सर्युजीके लक्ष्मी निधिकी बहुरिया राम ॥ सिद्धिवर विनवै दोऊ करजोरे होयॅव चरनकी चेरियाराम ॥ ४ ॥

कजरी ॥ २॥

तेरे दांतोंकी बतिसिया जियरा मोर गइलना ॥ सोनेके थारमें जेवनार परोसलीये राज जेवना ॥ जेवनाही देखे मेरा जोबना ॥ १ ॥ पांच पान पच बिरियारे ल्यालीये राज बिरिया चाबे नाही देखे मेरा जोबना ॥ २ ॥

कजरी ॥ ३ ॥

दसरी रामनगरकी कजरी मिर्जापुर सरनाम ॥ रामनगरमें राम बिराजें काशी विश्वेश्वर नाथ ॥ दसरी रामनगरकी कजरी मिर्जापुर सर-नाम ॥ १ ॥

देस ॥ २ ॥

सखी नंद नन्दन गहा मोरी वहिया ॥ जो रस श्याम चहत तुम हम सन ॥ सोरस हिया अबे नाहियां ॥ १ ॥ सरब सोनेकी वनीहै द्वारिका ॥ गोकुलकी छवि नहियां ॥ २ ॥

देस ॥ ३ ॥

मेरा जगायकै जोबन लुटारी ॥ एकतो राधा बारा बर्पकी ॥ हाथ कंगन नहि छुटारी ॥ १ सीसकी बेंदी गिरी पलंगपर ॥ गरेका हरवा टूटारी ॥ मेरा जगायके जोवन लुटारी ॥ २ ॥

देस ॥ ४ ॥

कुवरीने जादु डारा ॥ बसि कीन्हा कन्थ हमारा ॥ पलकन तेग तेजकरि आलम ॥ मारत बान पलक जिया भाला ॥ कुवरीनें ॥ १ ॥ जादुकी पुरिया पढ़ि पढ़ि डारा ॥ का करै वैद बेचारा ॥ कुवरीने ॥ २॥ कुवरी सवतिको दोप नहींहै ॥ ओछा कंथ हमारा ॥ कुवरीनें ॥ ३ ॥

देस ॥ ६ ॥

बताढे सखी स्याम गये कौनी ओर ॥ जबसे गये मोरी सुधहून लीन्हीं ॥ मदन करत अति जोर ॥ १ ॥ राति पिया मोरे सपनेमे आये मैं गई अगनेमें सोय ॥ उडा भंवर्वा सब रस लैगयो येतनेमे होयगयो भोर ॥ २ ॥

देस ॥ ७ ॥

कौनें मुलुक कौनें देस मेघाजल बर्षिरहेवरी ॥ आयेना मेरे देस अन्देसवा लागिरहे ॥ हमका जोगिन बनाय बिरह तन छाय रहेरी ॥ १ ॥ हिआं नहि आये अन्ते कहुं गरजिरहे कुवरी से नेह लगाय पिया कहुं बैलम्भिरहेरी ॥ २ ॥

देस ॥ ८ ॥

काहे क कीन्हेव प्रीति सवलिया थोरे दिननका ॥ तुमतो कहां पिया

मुखहू न बोलो ॥ अब कस गरवा लगायो ॥ सवलिया थोरे दिननका ॥ १ ॥ तुमतो कहा प्रिया प्रीति न छोडब ॥ अबकस जोग पठायो सवलिया थोरे दिननका ॥ २ ॥

बिहाग ॥ १ ॥

पियाबिन बैरन चांदनी रात ॥ जबसे गये मेरी सुधहू ना लीनी कबहू न आये मोरे पास ॥ १ ॥ सूनी सेज मोहि नींद न आवे तलफि तलफि रहि जात ॥ २ ॥

बिहाग ॥ २ ॥

दुखवा मैं कासे कहौं मोरी सजनी ॥ ना जानौं कौनदेस बिलमि रहे प्रमदास ॥ उनबिन हमको तड़पि तड़पि बीति जात घरी पल छिनछिन दुखवा मैं कासे कहौं मोरी सजनी ॥ १ ॥

बिहाग ॥ ३ ॥

श्याम तोरे आसमें रैनगई ॥ उदैके चन्द्रमा बदरेकी ओट भयो ॥ तारेमें गिनत रही ॥ १ ॥ लखि प्रभात चूर चुरैय्यां बोलै ॥ उडगन जोतिभई ॥ २ ॥

बिहाग ॥ ४ ॥

ना लिखेव सैय्या पतिया अवनकी ॥ सावन भादोंकी निसु अंधियरिया ॥ जब सुधि आवे मोहि रंगिजया सुतनकी ॥ १ ॥ पतिया बांचत मोरी छतिया फटतुहै ॥ अंसुआ बहै जैसे नदिया सवनकी ॥ २ ॥

बिहाग ॥ ५ ॥

पतिया बचत छतिया भरि आवे ॥ प्रेमकी आगी कान्ह उजारी ॥ बिरहा बिथाकी बेति लिखावे ॥ १ ॥ सुनु ऊधो मारोकी कुबिजा ॥ हमको पतिया कौन सुनावे ॥ २ ॥

रेखता ॥ १ ॥

स्याम भेष जोगिनका पिय दे हरिणाक्षी ॥ कानन कुन्डल गरे

सेली भसम तनमे रमाऊंगी ॥ बजाके बीन में अपनी अरज पिउको सुनाऊंगी ॥ १ ॥ नही मालुम कुछ मुजको पिया किस देस छाये है ॥ मिलादे पीव सखि मुझको तेरा इनगान गाऊंगी ॥ २ ॥

रेखता ॥ २ ॥

कतल करनेको आशिको निगे तलवार काफीहै ॥ चुभीतीरे मेरे दिल में कि नैनोंकी कटारीहै ॥ किसी आशकके डसनेका मोहन तुमने सवारीहै ॥ १ ॥ न तसबीहै न सिरदारे न मतलबहै किताबीस ॥ दिलोंके कैद करनेको जुल्फ बलदार काफीहै ॥ २ ॥

रेखता ॥ ३ ॥

सुनिये यसोदा कानदे अर्जी यही हमारीहै ॥ हम छोडिजाय वृजका मर्जी यही तुम्हारीहै ॥ नित घाटबाट रोकै जेवर झटाक पटकै ॥ बहिंया मरोरी झटपट छतियां सोहार झटकै ॥ करको पकार कान्हा घूंघट सम्भारि खोलै ॥ ठोडीसे कर लगाकर रसकीसो बात बोलै ॥ हम बारबार तुमसे करती पुकार हारी ॥ १ ॥ तुमने दया हमारी कबहू नही बिसारी ॥ कीजे कृपा अब सीतकी हम गोपकी कुमारी ॥ दिलमे बिचारि देखो कैसो रसिक बिहारी ॥ २ ॥

रेखता ॥ ४ ॥

सुनिले यसोदा रानी तू लालकी बडाई ॥ राम लोकलाज वाने यमुनामें धोय नहाई ॥ हसि हसिके छैल गोसे करबेलि गाठि खोलि ॥ यह छवि निहारि पुलकी अब कासे जाने तोली ॥ निरखै कबहु कजलको कबहुं कुचे ओचोली ॥ मैं तो सकुचगी भारी वासे कछून बोली ॥ पुनि बहिया मोरी पकरी गागरि धरन गिराई ॥ १ ॥ अंगियाके बन्द तोरे चुनरी झटकिके फारी ॥ कुलीके निरखिबेको गल बहिया मोरे डारी ॥ यह सब कुचाल देखि मन टोह तुम्ह नागी ॥ तहुय मेरो नामले लाखन

सुनावे गारी ॥ गुरजनमें मेरीवाने याविधि करी हंसाई ॥ २ ॥ ज्यों ज्यों कहौं मै हटरे त्यों त्यो वा दून अटकै ॥ मुसकाय द्रिग मिलावे भृगुटी मलावे मटकै ॥ कर करसे सैन देनी तनपरसे चीर झटकै ॥ अब और कहा कहौं मै गल वहियां डारि लटकै ॥ एक साथ वाने ऐसी पकरी निर्लज्जताई ॥ ३ ॥ कबहूं कह वा वातरी तूं क्यों अकेले आई ॥ कि घर मे तेरे पतिकी तोसे भई लड़ाई ॥ तूं चल मेरे भवनमें करु मोसे मित्रताई बिधनाने मेरी तेरी जोड़ी मिलाई ॥ नारायण वाकी बाते सुनिके मैं अति लजाई ॥ ४ ॥

केदारा ॥ १ ॥

तुम हरि मोरी सुरति विसराई कैसे धरत जिय धीरारे ॥ आपुजाय छाये मधुवन मे छोड़िन बृजकी भीरारे ॥ कुबरी सवतिको सौतन आई जिन वसि कियो जदुवीरारे ॥ १ ॥ ऐसे निठुर भये मन मोहन ज्यो मनिकानमें हीरारे ॥ कहैं जगदेव श्यामकी बिछुरनि नैन बहत जल नीरारे ॥ २ ॥

केदारा ॥ २ ॥

पियाविन आगि लगी मोरे तनमा डारिगयो कोई टोनारे ॥ अपने पियापर तन मन वारौं जोइयारी सोई होनारे ॥ आव पियारवा गलेसे लागिजा जोवन जगमें थोरारे ॥ १ ॥ चुनि चुनि कंकर महल वनाया लोग कहें घर मेरारे ॥ नाघर तेरा नाघर मेरा चिड़िया रैन बसेरारे ॥ २ ॥ लादि फादिके चलो मुसाफिर कियो मगपर डेरारे ॥ मिलना होयतो मिललेरे प्यारे यही हमारा फेरारे ॥ ३ ॥ ससुरी निंदिया वैरन लागी जोग बिछुरी गयो सगरे । कहे कवीरा सुनो भाइ साधो जिन जागा तिन नागारे ॥ ४ ॥

गौरी ॥ १ ॥

आवत नन्द कुमार अलीरी ॥ उन चरनन मनवा मेरा लीन्हो ॥ कैसो बजावत है मुरलीरी ॥ १ ॥ मोरपंख जोहमान मनोहर ॥ अंग अंग

कींचत अलख बलीरी ॥ २ ॥ श्रीरघुराज लाज भई बेरन ॥ बदन बिलोकत छैल छलीरी ॥ ३ ॥

गौरी ॥ २ ॥

नई बांसुरीकी धुनि सुनिकै प्राणनकी गति कैसी भईरी ॥ मैं यमुन जल भरन जातथी ॥ बीच श्याम मोहिरोकि लईरी ॥ १ ॥ ऐसो हठीलो नंदको सांवरो ॥ बीन बजाय बजाय बावरी कर गयोरी ॥ २ ॥ बृजकी सखी गोदलै बैठी ॥ आखिनकी पुतरी फिरिगईरी ॥ ३ ॥ श्रीरघुराज लाज भई बैरन ॥ माहाराज मिलैतो इलाज यहीरी ॥ ४ ॥

पूर्वी ॥ १ ॥

हमरे पियाने दगादीन आली छोडि चले मझधाररे ॥ अपनें पियाक बनबन ढूंढो ढूंढोमें हाट बजाररे ॥ जासेंमें पूछौं कोईना बतावे कैसी करूं मोरे रामरे ॥ १ ॥ एकतो गठरी भरमकी बाधे दूजे भईहैं सांझरे ॥ ठगवट पार उगरियामें लागै कासेमैं करूं पुकाररे ॥ २ ॥ गहिरी नदिया अगम बहतुहै सूझै बारन पाररे ॥ बिन गुनकी नैय्या पार लगाओ तुम्हरा महमद नामरे ॥ ३ ॥

पूर्वी ॥ २ ॥

डोलिया फदायकै लैचलु साजन नाकोई रोकन हाररे ॥ नातुछ गुन ढंग मा नये जोवना ना मोतियन गले हाररे ॥ हमतो अनारि सैंग्यां चतुर सुनारी कैसेकै होईहैं निवाहरे ॥ १ ॥

पूर्वी ॥ ३ ॥

अबका चेतौ कुमारग ग्रामी काल फांस तन आन फंसीरे ॥ भटक्यो भटकत अन्त न पायो थकित भई सब नरनारी ॥ पारब्रह्मको पहिचान्यों यह अभिलाष रही मनमारे ॥ १ ॥

पूर्वी ॥ ४ ॥

मोरा थरथर कांपे जोबनवा सुरतिया सपनवा देखवना ॥ नामैं पहिरौं मुरुख चुनरिया नामैं पहिरौं गहनवां ॥ ननदीके बोल करेजवामें साले टपके दूनो नैनवां ॥ सुरतिया सपनवां देखबना ॥ १ ॥

पूर्वी ॥ ५ ॥

तुमतो बिदेसवा जातसो मेरा जिया किनका सौंपेजात ॥ सासुकी सहिवे जेठानीकी सहिवे ॥ ननदकेरी बोलिया ना सहिजात ॥ १ ॥ कुंजिताला चदन केवरियां ॥ छतियां जजरियां दिन्हे घात ॥ २ ॥

पूर्वी ॥ ६ ॥

जोबन रसमाती पिया परदेस ॥ जबसे गये मेरी सुधहून लीनी ॥ ना आप आयेन भेजी पाती पिया परदेस ॥ १ ॥ छपर पुरान टटिगई बाती ॥ टपके बूंद चुए मोरीछाती ॥ पिया परदेस ॥ २ ॥

पूर्वी ॥ ७ ॥

सुरति पिया राखेव हमरी ओर ॥ तुमतो कहो पिया बगला छवईवे ॥ खिरकिया राखेया हमरी ओर ॥ १ ॥ तुमतो कहो पिया कुअना बधोवे ॥ जगतिया राखेव हमरी ओर ॥ २ ॥

पूर्वी ॥ ८ ॥

जोबन पिया बारेसे तजिदीन ॥ ब्याहकीन गोना नहि लीना ॥ कौन गुना हम कीन ॥ १ ॥ जबसे गये मोरी सुधि नहि लीनी ॥ किन सौतिन बसिकीन ॥ २ ॥

पूर्वी ॥ ९ ॥

जगायो लागी निदिया हो रामा ॥ सासूजीके पुतवा ननदजीके बिरना ॥ तुतै मोर कोलवाहो रामा ॥ १ ॥ मेरी कहो पिया मानत नाही ॥ जोबन फूल गेंदवाहो रामा ॥ २ ॥

पुर्वी ॥ १० ॥

सैय्यां नीरमोहियाहो रामा ॥ वृन्दावनकी कुंज गलिनमा ॥ गही मोरी बहियांहो रामा ॥ १ ॥ उधोजी मोरे पियाके मिलाओ ॥ परोंगी तोरी पैय्यांहो रामा ॥ २ ॥

लावनी ॥ १ ॥

कृष्णसे करि उधो परनाम सखिनकी कहियो सीताराम ॥ कौन तकसीर तजी बृजबाल ॥ जोग पातीमें लिखत गोपाल ॥ रहे मुख सदा विहारीलाल ॥ करे कुविजाको परम निहाल ॥ दोहा ॥ बृजवासी दासी सदा हरि चरननमें ध्यान ॥ बन्दि विपिन अरु कुंज कदमतरे करे कृष्ण गुणगान ॥ याद उनहिनकी आठो जाम ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ करे हम प्रेम बृजभारी ॥ जानि अति नेह नफादारी ॥ मिले हरि ऐसे ब्यो-हरी ॥ प्रीतिकर प्रेम जमामारी ॥ दोहा ॥ मधुकर साहुकारहैं वो हरि बेपरवाह ॥ मारि मारिमन मारि सखिनको लिखत सवालिया साह ॥ जोग हून्डी गोपिनके नाम ॥कृष्ण॥२॥ देत ऊधो गोपिनको ग्यान॥ कहत हरि निरगुण वेद पुराण ॥ प्रगट जल थल घटघटके मान ॥ भजोसखि परब्रह्म भगवान ॥ दोहा ॥ ऊधो निरगुण ग्यानमें रहो आप लौलीन ॥ हमैंन भावे जोग रैनादिन मन मोहन आधीन ॥ यहां निरगुण मतको क्या काम ॥कृष्ण॥ ३ ॥ कमल लोचन विसाल पलकैं ॥ कुटिल भृगुटी चमकैं अलखैं ॥ वदन छवि छटा छुटि छलकै ॥ श्रवण कुंडल कपोल झलकै ॥ दोहा॥ मोर मुकुट मुरली अधर आभुषण पर अंग ॥ अतिनीको निरगुण ब्रह्म बतावत भई कौन मतिमंद ॥ मुनिन मन रंजन छवि अभिराम ॥कृष्ण॥४॥ करत हरि अपनी मनमानी॥ भई कुविजा जिनकी रानी ॥ गुना क्या गोपिनकी जानी ॥ करी छिन छिन हितकी हानी ॥ दोहा ॥ मधुकर कारे तन जहां तहां कपटकी खानि ॥ मनके देत

व्याकुल यकहु पासंधो में हानि ॥ धही धोखेबनमे मारे दाम ॥कृष्ण ॥५॥
बहेत्र गोपिन अमुवनको नीर ॥ भयो करुणा सागर गंभीर ॥ बहत
उधो आयो हरितीर ॥ कही सब कथा सखिनकी पीर ॥ दोहा ॥
निरत करन उधो लगे निरखि सखिनकी प्रीति ॥ लघु गनेशपरसाद
भनत यस भ्रमर भ्रमरीगीत ॥ मदन मन मोमन बसत मुद्राम कृष्ण॥ ६॥

लावनी ॥ २ ॥

दमवाज यार दमदिया दुबारा तूने ॥ बस जानिगई अब किया
किनारातूने ॥ करलिया मुझे आखोंका सितारा तूने ॥ नजरोंसे दिल
हरलिया हमारा तूने ॥ १ ॥ बेखता गुना सीनेपै कटारी मारा ॥
ऐसादर खीचा गलेपै आरा तूने ॥ २ ॥ मिश्रोंसे मीठे खटकते दिलमें
॥ ताजिदिया मुझे बेगुना यार अबतूने ॥ ३ ॥

लावनी ॥ ३ ॥

टिकोरहा आजकी रैनि किधर जाओगे ॥ हम वही करेंगे यारजो
फरमाओगे ॥ वया विछी मुलायम सेज अकेला यरहै ॥ इस घरके
अन्दर नहीं दूसरा नरहै ॥ १ ॥ गुल चमन चमनका फूल खिल
रहताहै ॥ दिल हरदम तावेदार बना रहताहै ॥ २ ॥ गुलशनमे
माली खड़ा खड़ा रोताहै ॥ गुल सूखिगया फिर हरा नहीं होताहै ॥३॥
क्योंहुए खफा वेवफा जबरदस्तीसे॥हम आपही चलेजावेंग तेरी वस्तीसे॥४॥
माशूक यारपर खफा न होना चहिये ॥ सब गुना माफकर गलेलगाना
चहिये ॥ ५ ॥

लावनी ॥ ४ ॥

तेरे घुंघरवाले बाल हरन आले हैं ॥ तूने पाले नाग हमनेके लिये

पुर्वी ॥ ६० ॥

सैंय्यां नीरमोहियांहो रामा ॥ वृन्दावनकी कुंज गलिनमा ॥ गही मोरी बहियांहो रामा ॥ १ ॥ ऊधोजी मेरे पियाको मिलाओ ॥ परोंगी तोरी पैय्यांहो रामा ॥ २ ॥

लावनी ॥ १ ॥

कृष्णसे करि उधो परनाम सखिनकी कहियो सीताराम ॥ कौन तकसीर तजी वृजबाल ॥ जोग पातीमें लिखत गोपाल ॥ रहें मुख सदा बिहारीलाल ॥ करें कुविजाको परम निहाल ॥ दोहा ॥ वृजवासी दासी सदा हरि चरननमें ध्यान ॥ बन्दि विपिन अरु कुंज कदमतरे करें कृष्ण गुणगान ॥ याद उनहिनकी आठों जाम ॥ कृष्ण ॥ १ ॥ करें हम प्रेम वृजभारी ॥ जानि अति नेह नफादारी ॥ मिले हरि ऐसे न्योहरी ॥ प्रीतिकर प्रेम जमामारी ॥ दोहा ॥ मधुकर साहुकारहैं वो हरि बेपरवाह ॥ मारि मारिमन मारि सखिनको लिखत सवालिया साह ॥ जोग हून्डी गोपिनके नाम ॥कृष्ण॥२॥ दूत ऊधो गोपिनको ग्यान॥ कहत हरि निरगुण वेद पुराण ॥ प्रगट जल थल घटघटके प्रान ॥ भजौसखि परब्रह्म भगवान ॥ दोहा ॥ ऊधो निरगुण ग्यानमे रहौ आप लौलीन ॥ हमैंन भावै जोग रैनादिन मन मोहन आधीन ॥ यहां निरगुण मतको क्या काम ॥कृष्ण॥ ३ ॥ कमल लोचन विसाल पलकैं ॥ कुटिल भृगुटी चमकैं अलखैं ॥ वदन छवि छटा छुटि छलकै ॥ श्रवण कुंडल कपोल झलकै ॥ दोहा॥ मोर मुकुट मुरली अधर आभुषण परअंग ॥ अतिनीको निरगुण ब्रह्म बतावत भई कौन मतिमंद ॥ मुनिन मन रंजन छवि अभिराम ॥कृष्ण॥४॥ करत हरि अपनी मनमानी॥ भई कुविजा जिनकी रानी ॥ गुना क्या गोपिनकी जानी ॥ करी दिन दिन हितकी हानी ॥ दोहा ॥ मधुकर कारे तन जहां तहां कपटकी खानि ॥ मनके देत

ताकत यकहु पासधो मे हानि ॥ भही भोरेवनपे मारे दाम ॥कृष्ण॥९॥
बहेत्र गोपिन अमुवनको नीर ॥ भयो करुणा सागर गंभीर ॥ बहन
उधो आयो हरितीर ॥ कही सब कथा सखिनकी पीर ॥ दोहा ॥
निरत करत उधो लग निरखि सखिनकी प्रीति ॥ लघु गनेशपरसाद
भनत यस भ्रमर भ्रमरीगीत ॥ मदन मन मोमन बसत सुदाम कृष्ण॥ ६॥

लावनी ॥ २ ॥

दमबाज यार दमदिया दुबारा तूने ॥ बस जानिगई अब किया
किनारातूने ॥ करलिया मुझे आखोंका सितारा तुने ॥ नजरौसे दिल
हरलिया हमारा तूने ॥ १ ॥ बेखता गुना सीनेपै कटारी मारा ॥
ऐसादर खीचा गलेपै आरा तूने ॥ २ ॥ मिर्झासे मीठे खटकते दिलमें
॥ ताजिदिया मुझे बेगुना यार अबतूने ॥ ३ ॥

लावनी ॥ ३ ॥

टिकीरहो आजकी रैनि किधर जाओगे ॥ हम वही करैंगे यारजो
फरमाओगे ॥ क्या बिछी मुलायम सेज अकेला वरहै ॥ इस घरके
अन्दर नहीं दुसरा नरहै ॥ १ ॥ गुल चमन चमनका फूल खिल
रहिताहै ॥ दिल हरदम ताबेदार बना रहताहै ॥ २ ॥ गुलशनमें
माली खड़ा खड़ा रोताहै ॥ गुल सूखिगया फिर हरा नहीं होताहै ॥३॥
क्योंहुए खफा बेवफा जबरदस्तीसे॥हम आपही चलेजावेंग तेरी बस्तीसे॥४॥
माशूक यारपर खफा न होना चहिये ॥ सब गुना माफकर गलेलगाना
चहिये ॥ ५ ॥

लावनी ॥ ४ ॥

तेरे घूघुरवाले बाल बहुत आलेहै ॥ तूने पाले नाग डसनेके लिये

कालेहैं ॥ मुखड़ेकी झलकसे चटक चादनी छाई ॥ निकलाजो पसीना और चमक दिखलाई ॥ कानेके पाससे लट छुटकर बलखाई ॥ वाम्बीसे नागिनी ओस चाटने आई ॥ क्या गोरे गालपर बाल पेंच खातेहैं ॥ १ ॥ बिच्छुका जोड़ा भौंह नाग लटकाली ॥ क्या लहर लहरकर चाल चले मतवाली ॥ घूंघुटपटझटपट खोल जोलट छिटकाली॥ निकलाहै कालानाग केंचुली डारी ॥ सब देखि देखिकै उसको घवडातेहैं ॥ २ ॥ मुखडेपर छाई घूमि रहीं अलखैहैं ॥ क्या झूमि झूमिकर लटकि रही लटकैहैं ॥ झुकि झुकिकैं प्यारी ओंठ चुमि रहि पलकैं ॥ मलमल हाथ फरहत हम रहि जातेहैं ॥ ३ ॥

गजल ॥ १ ॥

हरिनाम कहिनेका मजा जिसकी जबांपर आगया ॥ वो मुक्त जीवन होगया च्यारूं पदारथ पागया ॥ थी खटिक सेवरी जातिकी जिसवक्त सुमिरन वो किया ॥ परमातमां घर आय उसके बेर जुठे खागया ॥१॥ चक्खी मजा प्रहलादने जिस नामके परतापसे ॥ नरसिंह होकर औतरे त्रैलोकमें जस छागया ॥ २ ॥ कलिकालमें जो भक्तहैं तिनके बडेहैं मरतबे ॥ नरसिहकी हुन्डीजोथी ओतो सांवरो सकरा गया ॥ ३ ॥ छारही कीरतहै विमल जिस नामके परतापसे ॥ आपके मानिन्द तुलसी रामरस वर्षागया ॥ ४ ॥

गजल ॥ २ ॥

रोते रोते हमको उधो एक जमाना होगया ॥ ख्वाबमें श्रीकृष्णका तसरीफ लाना होगया ॥ वाह तेरी मुहब्बतकी ये सजा कैसी मिली ॥ इसके बदले मे हमें आंसू बहाना होगया ॥ १ ॥ नामतकभी हमसबोंका उनको याद आता नही ॥ इसतरे कुबरीसे उनसे दोस्ताना होगया॥२॥ हम वियोगिनको भला जोगिन बनाने आये तुम ॥ क्योंरे उधो तू जई

फीमे दिवाना होगया ॥ ३ ॥ रहेमकर अब वृन्दमे आवेंगे कभी बनवारी लाल ॥ वरना सबका जान जानेका ठिकाना होगया ॥ ४ ॥

गज़ल ॥ ३ ॥

अब कहां छिपगये वंसीके बजाने वाले ॥ भक्त प्रह्लादको गोदी मे खिलाने वाले ॥ दुसासन नादान मेरा चीर हरेलेताहै ॥ रखले सर्म रंज गमके मिटानेव ले ॥ १ ॥ पांचो खाविन्दहै बैठे किये सिर नीचेको॥ कोई होते नही अब मेरे बचानेवाले ॥ तुम्हीने गजको बचायाहै लडते ग्राहके साथ ॥ तुम्हीं वसुदेवके हो कैदछोडानेवाले ॥ तुम्ही रावणको पछाडाहै जाके मैदामे ॥ तुम्हीं मारीच पूतनाके मिटानेवाले ॥ जने गोतम व अजामीलको तारा तुमने ॥ तुम्हीं विदुरके घरहो शाकके खानेवाले ॥ राजा इन्द्रने किया गुस्साथा वृजके ऊपर ॥ तुम्हीहो गिरको छिगुनिया पैउठानेवाले ॥ चारो तर्फोसे तमासे की तरह लोग खडे ॥ दीजे दरसन मुझे अब लाज छिपानेवाले ॥ भक्तकी टेरको सुनकर हुये हाजर उसदम ॥ होगये चीरके गोपाल वढानेवाले ॥ खींचतेहै बले घटता नहींहै चीर कभी ॥ हाथ मचमलके रहे शोर मचानेवाले॥ द्रोपदीकीहै गजल कोलयह गंगाप्रसाद ॥ कीजिये मुझपै दया कालीके मनाने वाले ॥ १ ॥

गजल ॥ ४ ॥

कृष्णजी मोर मुकुट माथेपे धारा तुमने ॥ ध्यान मुनियोंका वाजबेन बिसारा तुमने ॥ १ ॥ बाल लीलाओ करीहोसकै किससे बर्नन ॥ छिनमें अभिमान सभी इन्द्रका मारा तुमने ॥ २ ॥ शेष शिव विष्णु गिरा पार न तेरापावे ॥ खेलहीं खेल असुर कन्स संहारा तुमने ॥ ३ ॥ खल बकासुरको हता मारे जरासन्ध चाणूर ॥ पूतना स्वर्ग सिधारी हस्ति पछारा तुमने ॥ ४ ॥ भक्त रक्षक यह हुआ नाम तुम्हारा स्वामी ॥ द्रोपदी चीरा कैया जबसे अपारा तुमने ॥ ५ ॥ लाजरख आजमेरी विनती करै बालमुकुन्द ॥ लाज गज राखज्यों ग्राहको है विदारा तुमने ॥ ६ ॥

वसन्त ॥ १ ॥

बौरे आंब झुकि डारडार। पिक भौर मोर नाचत चकोर कोयल बन बोलत बारबार ॥ पल्लव नवीन सरसोंकी भूम छवि छाये जगल रहे झूमि झूमि ॥ कचनार कुन्द बहुविधि अनेक टेसुआ फूले मानो बन अंगार ॥ १ ॥ छवि सिंगार भयो धनुपवान गतिसहित चल्यो बाजत निसान ॥ सैनापति मदन दुलारे भयो रितुराज चंद्रव गावत बहार ॥ २ ॥

वसन्त ॥ २ ॥

आये नहीं अजहु हमारे कन्थ बन विहरन लागेरी वसन्त ॥ अम्बा बौरिरहे झूमिझूमि झूकि लतन लेत मुख चुमिचुमि ॥ अति भमर भ्रमत गुंजत अपार रसलेत फिरत सब डारडार ॥ १ ॥ कोकिल सुनि हिआ डहत मोर तापर हमारी करत शोर ॥ यह देखिरहे कहो कौन धीर जेहि विरहा विथाकी कठिन पीर ॥ २ ॥ कोईजाय पथिक जोवहि विदेस सिवदयाल कहे तासो सन्देस ॥ परदेस छाय सुधि भूलिगई रितुराज गये का करिहो आय ॥ ३ ॥

वसन्त ॥ ३ ॥

छलबल करै छलिया छैलछली ॥ छिन छिन छिपि छिपि छांह फ्करकै छाय छाय छवि छोरि छोरि ॥ छलकि छछकि मुख मोरमली ॥ १ ॥ अच्छर रुचिर अनूप सोहायो सोई बरनि दुलारे गायो ॥ राधामाधो निरखि विमल जस गाय गुनीरहे गली गली ॥ २ ॥

होरी ॥ १ ॥

सांवरेसे कहियो मेरी ॥ निसुदिन व्याकुल फिरत राधिका विरहा विथा तनघेरी ॥ ढूंढत श्याम तुम्हे कुंजनमें सीसघटा गहिलोरी ॥ लौ हरि होगही होरी ॥ १ ॥ सीस नवाय चरण गहिलीन्हे व विनती

करियो वहोरी ॥ इतनी चूक कहां परिमोसे प्रीति पाछिली तोरी ॥ सूरति क्योन लीनहि मोरी ॥ २ ॥ भूषण वसन सबै हमत्यागे पानखान विसरोरी ॥ विभूति रमाय जोगिन बन बैठी तेरो ध्यान धरोरी ॥ वेगि क्योंन आये किसोरी ॥ ३ ॥ रूमरूम विरह छायरहे वेह मदमेरा वैर परोरी ॥ वोर करेजा जलाय दियोहै अवमैं कैसी करौंरी ॥ धीरनहीं जात धरोरी ॥ ४ ॥ सूरश्यामसे योंजाय कहियो अवध आसरहो थोरी ॥ प्राणदान दीजे। यदुनन्दन गाऊं मै कीरति तोरी ॥ सुरति लागी नन्द किसोरी ॥ ५ ॥

होरी ॥ २ ॥

लालभयो नंदलाल श्यामता रंगगयोहै ॥ लाल मुकुट सिर लाल पितम्बर लाल गरे वनमाल ॥ अलक लाल कुंन्डल दोऊ लालै अद्भुत रूप विसाल ॥ ढंग यह आजु नयोहै ॥ १ ॥ लोचन लाल छदन मृद लालै लाल छटा मुसकान ॥ दूजोलाल एक ओर सोहावे मन मोहै सोई लाल ॥ भालविच रोरी दियोहै ॥ २ ॥ ग्वालवाल बृजवाल लालहैं कुंजलता वनलाल ॥ वीन मृदंग झांझ डफु लालै यमुना जलभयो लाल ॥ अनोखो फागु भयोहै ॥ ३ ॥ गगन लाल छिति दिसि सब लालै लालभयो द्रिगपाल ॥ राधे रंग सुधा सम वर्षे व ब्रह्मादिकन मेहाल ॥ दुलार अंग लयोहै ॥ ४ ॥

होरी ॥ ३ ॥

नछुटै सैयां प्रीति तुमारी ॥ नगरीके लोगवा हमही देतहैं तुमहीं लगाइके गारी ॥ घर बाहरके लोग हंसतहैं कुअनां हसे पनिहारी ॥ मरतुहौं लाजकी मारी ॥ १ ॥ हमरी तुम्हरी प्रीति छुटनको जादुकरै नरनारी ॥ दाग करेजवामें लागीगयोहै चुभिगई प्रेम कटारी ॥ भिजै अमुवनसे सारी ॥ २ ॥

होरी ॥ ४ ॥

पिया तुमहो हरजाई तुमसे प्रीति लगाई ॥ तुमसे प्रीति लगायके

मोहन फिर पीछे पछिताइ ॥ कबहुंतो मिलिहो अकेलेरे मोहन लेहौं कसर मिटाई ॥ पिया तुमहो हरजाई ॥ १ ॥ नांहोरी खेलों न खेलन देऊंगी लाख करो चतुराई ॥ पांव पलंगपर धरनें न देऊंगी लेहौं मुचलका लिखाई ॥ पिया तुमहो हरजाई ॥ २ ॥

होरी ॥ ५ ॥

केसरिया रंगिलाव रंगाऊंमें सारी चुनरिया जोकोइ पिचकारी भरि भरि देवे ॥ रंगके फुहारे उडाऊं ॥ रंगाऊं मैं सारी चुनरिया॥१॥ अबिर गुलाल लाल हाथोसे ॥ मुखमे मोहनके लगाऊ रंगाऊ मै सारी चुनरिया ॥ २ ॥ जोरंग रसमे भीजें अचोला ॥ श्याम सुंदरको रिझाऊं रगाऊ मै सारी चुनरिया ॥ ३ ॥ होरी खेलनेके वहानेमे या बादुल ॥ हिरदे बसै सोई पाऊं रंगाऊंमें सारी चुनरिया ॥ ४ ॥

होरी ॥ ६ ॥

पालागूं करजोरी श्याम मोसे खेलो न होरी ॥ पनिया भरनको मै निकरीहूं सास ननदकी चोरी ॥ सगरी चुनर मेरी रंगमे न बोरो इतनी अरज सुनो मोरी॥ श्याम मोसे खेलो न होरी॥१॥छीन झपट मोरे हाथसा गागर जोरसे बहियां मरोरी ॥ दिल धडकतुहै सांस चलतुहै देहिया कंपत गोरीगोरी॥ श्याम मोसे खेलो न होरी ॥२॥ होरी खेलिके हमसन मोहन कागति कीनेव मोरी ॥ सासु हजारन गारी देईगी आई पियाकी चोरी ॥ श्याम मोसे खेलोन होरी ॥ ३ ॥

होरीपर्ज ॥ ७ ॥

हटो श्याम मेरी छोडो गैल नाही चुभि जव जावेगे नैननमे ॥ अबिरा गुलाल रग केसरी ॥ मेरे मतिडारो जोबनमे ॥ १ ॥ जोतेरे मनमें होरी खेलनकी ॥ तो लेचलु कुंजनमे ॥ २ ॥

होरीपर्ज ॥ ८ ॥

श्याम सुन्दर बृजराज कुंवरजीसे लागीहै प्रीति नई ॥ बृन्दावनकी

त गलिनमां ॥ बचत लालदही ॥ १ ॥ हांहां करतिहो पय्यां परितहौं भवता भईसो भई ॥ २ ॥

होरीदेस ॥ ९ ॥

आगि लगै होरी जरिबरि जाय बिनपिया होरी हमैन सोहाय ॥
भरि रंग चलतहै चहुंदिसि ॥ मेरे लेखे जैसे पानीनहाय ॥ १ ॥
बिर गुलाल उड़तहै चहुंदिसि ॥ मेरे लेखे जैसे धुरि उड़ाय ॥ २ ॥

होरीदेस ॥ १० ॥

होरी मचि रहीहै नन्द नन्दनजीके द्वार ॥ आवो सबैमिलि होरखिली फागुन दिनचार ॥ खेलत फाग उमंगभरे वृखभान सुता नंदलालसु लसो ॥ रंग अबीर भरे दोऊ ओरन एकहि एकमें फेंकत जालसों ॥ खत गंगाप्रसाद त्रियाके हनी पिचकारी कुच ऊपर हालसो ॥ धायपिया मे लैगुलाल भजी हंसिकै मलि लालके गालमो ॥ १ ॥

होरीदेस ॥ ११ ॥

घूंघट कौनकरै मैंतो मदसे भरी मतवार॥ भरि भार मदुवा मोहूको पिलावै देखतहै संसार ॥ १ ॥ सनद पिया तोसे होरी न खेलौं चोली दई री फार ॥ २ ॥

होरीदेस ॥ १२ ॥

चुनरीमें दाग लग्यो अनारीसे काम पड़ो ॥ ये मतवलवा मेरी मानत नाहीं ॥ जियरामें बैर परो अनारीसे काम परो ॥ १ ॥

होरीबृजकी ॥ १३ ॥

नन्दमहरजीको बारो छैला कारो मोपै बाराजरी कर रंग डारोरी ॥ रजिरही बरज्योनही मानै ॥ कहूं बृज रहौंही न रहौंगी ॥ १ ॥ भरि

पिचकारी मेरे छातीविच मारी ॥ अबिरा गुलाल मोपे डारीरी ॥ २ ॥

होरीबृजकी ॥ १४ ॥

पनियांभरन कैसे जावरी गुय्यां आजु यमुना बजिरही बंसीरी ॥ गोकुल बजिरही बृन्दावन बजिरही ॥ हूक उठीमेरी पसुरीरी ॥ १ ॥ अबिरा गुलालको धूम मचीहै ॥ चलै पिचकारी गली सगरीरी ॥ २ ॥

होरीदादरा ॥१५॥

ऐसी होरीमें करें वरजोरी किसोरीके साजना ॥ कोई पकरि रंग ऊपर डारें ॥ कोई मलै मुख रोरी ॥ किसोरीके साजना ॥ १ ॥ देरभई घर जानेदे मोहन ॥ आई पियाकी चोरी ॥ किसोरीके साजना ॥ २ ॥

बनिजारा ॥ १ ॥

मनमोहन करै थिनगाना कहा पनिघट कैसे जाना ॥ कहै सखी मुनै पनिहारी ॥चलो पनिघट मिलकर सारी ॥ नीर निरमल भरि भरि लाना ॥ १ ॥ नारि निकरी अपने घरसे ॥ सब पहिर अंग जेवरसे नाक सों बेसरि सोना ॥ २ ॥ जाय कुयेंपें चंचल ठाढ़ी ॥ जल भरन लगी मत वारी ॥ सब सखियां गावें गाना ॥ ३ ॥ क्या पतली कमर लचकावे देखि आसिक हुवा दिवाना ॥ ४ ॥

रागकाफी ॥ १ ॥

अदा तेरीका दिवानाहूं मैंतो मिस्ले परवानाहूं ॥ बागो विच ड पड़ेहोते ॥ पलंग डोरीसे खिचे होते ॥ उसीपर साजन पड़ेहोते ॥ गले गला मिले होते ॥ अदा तेरीका ॥ १ ॥ सुनो तुमअहीरकी लड़की सीसधर गोरसकी मटकी ॥ पहिरी तुम अंगिया कसमसकी ॥ कि आसिकने धरि मसकी ॥ अदातेरीका दिवानाहूं मैंतो मिस्ले ... हूं ॥ २ ॥

रागकाफी ॥ २ ॥

पिया परदेसां नां जायो सोपिया प्यारे हमहूं चलवे साथ ॥ नौकरी साहेबकी करवै ॥ रुपैया कुछभी हम पैवे ॥ गढइवे लटकन ओ झुमका ॥ सो रुचि रुचि पहिरइवे तुमका ॥ न पाहिरां लटकन ओ झुमका ॥ नजाने देहौं पिया तुमका ॥ १ ॥

राग दादारा । ॥ १ ॥

आली सियावर कैसा शलोनारी ॥ कोटि मदन मूरति की नेछावरि ॥ करिडारें वाल ढिटोनारी ॥ १ ॥ मिथलापुरकी सखियां सयानी ॥ कोई सखी पढ़िडारें न टोनारी ॥ २ ॥ जनकपुरीमें कहर मचीहै ॥ छूटेव खान पान अरु सोनारी ॥ ३ ॥ श्रीरघुराज मुकटवालेपर ॥ अवतो मोही फकिरनी होनारी ॥ ४ ॥

दादरा ॥ २ ॥

प्रानप्यारे चलन अब चाहेते॥अवध नगरसे पाती आई ॥ ताते राजकुंवर नहि रहोते ॥ १ ॥ श्रीअौघप सन्त हितकारी ॥ ताते राम बनेजा काहेते ॥ २ ॥ श्रीरघुराज दरस विनदीखे ॥ ताते नयननसे जल वहोते ॥ ३ ॥

दादरा ॥ ३ ॥

गयो यार कभीतो करो फेरा ॥ सर्जू निकट कीनमें डेरा ॥ जुल्फै अलख मोहनी मुखपर ॥ रतनारे द्रिग तेराहैं तेरा ॥ १ ॥ निसुदिन आऊं मैं तुम्हरी खातिर ॥ गनत वखत नहि बेरा अबेरा ॥ २ ॥ श्रीरघुराज मुकुट वाले पे ॥ जियरा नेछावरी मेरा दासमें तेरा ॥ ३ ॥

दादरा ॥ ४ ॥

छोडिदे श्याम गहौ जनि वहियां ॥ हमरी तुम्हरी जाति कुल एकै ॥ काभयो श्याम तोरे दस गैय्यां ॥ १ ॥ हमरे संगकी दूरि निकासि गई ॥ मैं तो ठाढ़ी कदमकी छैंया ॥ २ ॥ गोरस चाहै तो पीलेरे मोहन

॥ जोरस चाहत सोरस नय्यां ॥ ३ ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरसको ॥ आजु मेरी पति राखे गुसैय्यां ॥ ४ ॥

दादरा ॥ ५ ॥

श्यामहो मोरी वहियां गहोना ॥ जो तुम श्याम मोरी वहियां गहोगे ॥ नैन लगाय मेरा जिया हरोना ॥ १ ॥ मैं तो नारी पराये घरकी ॥ मेरे भरोसे गोपाल रहोना ॥ २ ॥

दादरा ॥ ६ ॥

छोडिदे वहिया मोतिन लर टूटी ॥ मोतीके वदले मोती मंगादेऊं ॥ लाग सनेउहा कहो के हि विधि छूटी ॥ १ ॥ जाय कहौंगी नन्द महिरिसो ॥ तेरो लाल मेरो सवरस लूटी ॥ २ ॥

दादरा ॥ ७ ॥

श्याम तोरी वतियानां मानैरे ॥ राति कहेव पिया चुनरी मगायदेव ॥ भाभिन्सार भूलिगई वतिया ना मानैरे ॥ १ ॥ तुमतो प्यारे अपनी गरजके ॥ हमैन जगाओ नींदभरी अखिआं ना मानैरे ॥ २ ॥ कहत दुलारे पिया एसीन चहिय ॥ अवना श्याम छुओ मेरी छतियां नामानैरे॥

दादरा ॥ ८ ॥

फन्दमें पड़गई जालिमके ॥ मैं तो निकरी सीसधरि झारी ॥ मैं तो पनिघट राह सिधारी ॥ मोहि देखिके दीना गारी ॥ नजरि भरि मारी जालिमने ॥ १ ॥ मैं तो निकरी अंग सवारी ॥ मोहि वीच मिलो गिरधारी ॥ मेरी झपटिके पकरी सारी ॥ छरी मेरे मारी जालिमने ॥२॥

दादरा ॥ ९ ॥

सजन मेरे कूचेमें एकवेर आना ॥ आना भेष छिपाना ॥ सावलि मुरति मदभरी अखियां ॥ मोहनी रूप दिखाना ॥ १ ॥ वरसानेकी सांकरि गलियां हुओ मोरा रहना कहां नहां जाना ॥ सजन मोरे कूंचेमे एकवेर आना ॥ २ ॥

दादरा ॥ १० ॥

विनपिया रतिया हमारी कटैना ॥ सासु जेठानी मोरी जनमकी वैरनि ॥ दुजे ननदियासे हमसे पटैना ॥ १ ॥ सनद पियासे यों जाय कहियौ ॥ बोलै पपीहाको पिउ पिउ रटैना ॥ २ ॥

दादरा ॥ ११ ॥

सैय्यां तुमको विदेसवा न जायदेबे ॥ हमरी कही कछु मानत नहीं ॥ बहियां पकरी तुम्हे गरवा न लगाय लेबे ॥ १ ॥ जो तुम सैय्यां विने सवाको जैहो ॥ करिकै जदुआ बसिमा कराय लेबे ॥ २ ॥

दादरा ॥ १२ ॥

पढि जादु मोपर डारी किधर गयो रसिया ॥ गोकल ढूंढी ॥ ब्रिंद्रावन ढूंढी मथुरामें ढूंढीआई झारी किधर गयो रसिया ॥ १ ॥ याहि मगन छवि देखि दुलारे ॥ तनमन धन हमवारी किधर गयो रसिया ॥ २ ॥

दादरा ॥ १३ ॥

प्यारी बोली प्रगट श्याम वालो॥पिया मिलनको चली गूजरी बन बन डोलैं ॥ कासीमे ढूंढेव और गयारे पायन परेहैं फफोले ॥ प्रगट श्याम वालो ॥ १ ॥

दादर ॥ १४ ॥

सखी नंदलाला आवन नहिं पावे ॥ भीतर चरन धरन मति दीजो ॥ चाहे तेता ललचावे आवन नहिं पावें ॥ १ ॥ ऐसेनको विश्वास कहाहै ॥ कपटकी बात बनावे आवन नहिं पावे ॥ २ ॥ एकतो नरायन मेरे भवन बिन ॥ अन्ते चहे तहां जावे आवन नहिं पावें ॥ ३ ॥

दादरा ॥ १५ ॥

ना जाने वेरी दगाल्या मेरा श्याम सुन्दर बन्सीवाल्या ॥ मोर मुकुट

पीताम्बर सोहै ।।कानोंमे कुण्डल वाला सो मेरी जान ना जावै वैरी बंगाला ।। १ ।। कासीके शिवशंकर वासी ।। बृजमे बसे नंदलाला सो मेरी जान ना जावै बैरी बंगाला ।। २।। यमुना अस्नान करे ठाकुर ध्यानकरे ।। बैठे जपो मोहनमाला सो मेरी जान ना जावै बैरी बंगाला ।। ३ ।।

दादरा ।। १८ ।।

श्याम बजैहो मै तोरे संग बंसिया ।। तेरे अभूषण मे पहिरैंगी ।। आपनि मुरली पहिरईहों मे तोरे संग बंसिया ।। १ ।। तुम बैठो बृखभान सुताहोय ।। मै नंदलाल कहईहों तोरे संग बंसिया ।। २ ।।

खेमटा ।। १ ।।

राह ना जानी चलब हम कैसे ।। उस नगरीका नाम न जानो।।हमतो फिरब भुलानी चलब हम कैसे ।। १ ।। कोऊ चतुराईमे पूछिन लीना।। देखौ मेरी नदानी चलब हम कैसे ।। २ ।।

खेमटा ।। २ ।।

चमेली बन छायरहे राजामोरे ।। जोमै जनती चमेली बनछैहै ।। नईहर चलीजाती राजामोरे ।। १ ।। जबसेगये मोरी सुधि नहिलीनी धड़कै मोरीछाती राजामोरे चमेली बनछायरहे ।। २ ।।

भजन रगत दादरा ।। १ ।।

तेरी बनिजेहै गोविंद गुन गायेसे ।। सबरीकी बनिगई कुबरीकी बनगई गनिकाकी बनिगई सुआके पढ़ायेसे ।। १ ।। अजामील गज गीधकी बनिगई ।। मीराकी बनिगई जहर विष खायेसे ।। २ ।। खरदूषण अरु बालिकी बनिगई ।। बनी दसकन्धर वैरके बढ़ायेसे ।।३।। श्रीरघुराज कहत करजोरे ।। तेरी बनि जायगी सरनि तेरी आयेसे ।। ४ ।।

।। कालगड ।। १ ।।

सासु ननद रहि ताके बालमजी हाथ छतियान डारोरे ।। रसराज सैय्यां पैय्यां तोरी लागौ जगिजैये ऐसी प्रीति बलम कछु पैबान भालोर ।। १ ।।

चौमासा ॥ १ ॥

सांवरे मोहन गिरधारी हमरी सुरति विसारिके मोहन भई कुवजा प्यारी ॥ असाढ़ मास मोरा जिया डरपत है देखि घटाकारी ॥ पापी मोर पपीहा बोलें झींगुर झनकारी । सांवरे मोहन गिरधारी ॥ १ ॥ सांवन आस लगीहै हरिकी अईहै बनवारी ॥ नाहीतो जोगिन रूप बनैबे सबमिल बृजनारी । सांवरे मोहन गिरधारी ॥ २ ॥ भादों भवन सून हरिकेगे दूना दुखभारी ॥ माखन चाखन छोड़िके मोहन कुविजा पर वारी । सावरे मोहन गिरधारी ॥ ३ ॥ क्वार करम लिखी सोई होई हरिइच्छा न्यारी ॥ हीरादास कहे करजोरे आये बनवारी । सांवरे मोहन गिरधारी ॥ ४ ॥

चौमासा ॥ २ ॥

सखी मदनकी आमद बदन उमिरहै वारी ॥ बरसाथ नहीं बरसात गुजरगई सारी ॥ आये असाढ़ घन घटा फलकमे छाई ॥ दामिन दमकै डरलगै चलै पुरवाई ॥ वन बोलत हंस चकोर मोर दुखदाई ॥ चश्मोसे जारी अश्क झड़ी झरिलाई ॥ दिनरैन चैन नहिंपड़े रंज हरवारी ॥ बरसाथ नहीं बरसात गुजरगई सारी ॥ १ ॥ सांवन सजनी परदेस मेरा वालमहै ॥ सब करैं तीज त्योहार हमैं यहां गमहै ॥ घर घर झूलें गुलवदन खुशी आलमहै ॥ हमदम हमसे क्योंकरी मोहब्बत कमहै ॥ मैं बैठिरही मनमार मदनकी मारी ॥ बरसाथ नहीं बरसात गुजरगई सारी ॥ २ ॥ भादोंमें सूनी सेज नींद नहिं आती ॥ हरदम कोयलकी कूक हमैंना भाती ॥ बेवफा खफा होगये न भेजी पाती ॥ इस गमसे हमरी धड़करहीहै छाती ॥ मनमें आवै मरजाऊं मार कटारी ॥ बरसाथ नहीं बरसात गुजरगई सारी ॥ ३ ॥ जबलगा क्वार मिलगये परीके पिया ॥ करप्यार पलंगपर लगा गलेसे लिया ॥ गोरी सोई पियाके पास खुशीहै जिया ॥ यह लेखराज फर्जन्द छन्द कहदिया ॥

रंगत गनेशप्रसाद कथनहै प्यारी ॥ बरसात नहीं बरसात गुजरगई सारी ॥ ४ ॥

बारामासी ॥ १ ॥

महाराज वृजराज तेरी आस लगी है सब मिलके बोलो आज निरंकारकी जै जै ॥ चैत रामनौमी को जन्म लिया है ॥ देवन के काज असुरन को नाश किया है ॥ जिन जाय जनकपुरमें उन ब्याही सियाहै॥ रावन को मार राज भभीपन को दिया है ॥ वृजराज ॥ १ ॥ बैसाख में हिरनाक्ष चला पृथ्वी उठायके ॥ सोया पताल जाय और तकिया लगायकै ॥ बाराह रूप धैके मारा है जाय के ॥ पृथ्वी उठाय लाया दातों दवायकै ॥ महाराज ॥ २ ॥ जेट मे देवने जाय सिन्धु कोमथा ॥ समुझाय कहे व अचला फिरे उसमें डूबता ॥ कच्छरूप धरि के पान पीठि पैधरा ॥ तातै निकारि लियो रत्न या विधि चौदा ॥ महाराज ॥ ३ ॥ असाढ के महीना श्रीबोध रूपका ॥ सिच्छा जो कभी भोजन चाउर अनूपका ॥ जिन जाय दरस किया अगर उसरूपका ॥ डरता जो नही आग औ यम के दूतका ॥ महाराज ॥ ४ ॥ सावन के महीना में भगो चीर मुरारी ॥ द्रोपदी सभामे बैठिके वो दिल पुकारी ॥ दुष्ट दुसासनने मेरी अपति बिचारी ॥ श्री द्वारका के नाथ वखर लेव हमारी ॥ महाराज ॥ ५ ॥ भादों के महीनेमे भयो कृष्ण विहारी ॥ फिर गऊ रूप धरिके पृथ्वी जाय पुकारी ॥ करनाहै कंस नाश मेरा पातक भारी ॥ व्याकुल फिरौ मै निसदिन वा पापकी मारी॥ महारज ॥ ६ ॥ कारके महीनामे इन्द्र पुकारा ॥ लेता है बलि लोक लाज छीनि हमारा ॥ तुम सहाय नाथ मेरा करौ उबारा ॥ बावन कै रूप धरि के दरस दीन भुइंहरा ॥ महाराज ॥ ७ ॥ कातिक के महीनेमे परसुराम तनधरा ॥ अरुज्ञान रूप धरि के सहसबाहु कोमारा ॥ बोल्याकि हर नाथमे है दास तुम्हारा ॥ निश्चर को सफर एकईसमे करौ संहारा ॥ महाराज ॥ ८ ॥ अगहनमे हर्नाकुसने प्रह्लादको

बांधा ॥ पूछा की तेरा राम कहां खर्ग उठाया ॥ मुझमे अरु तुझमें खर्ग खम्भ के भीतर ॥ सांची निगाह देखिये प्रहलाद के ऊपर ॥ महाराज ॥ ९ ॥ पुरा वेदहरन संखासुरने कीन्हा ॥ ब्रम्हा पुकार जाय कै तब हरि सो कीन्हा ॥ धरि मच्छ रूप जाय उसको मरदन कीन्हा ॥ वेद लाय चार आनि ब्रह्माको दीन्हा ॥ महाराज ॥ १० ॥ माह के महीना औतार कलंकी ॥ संभर के देस बाजे उनकी डन्की ॥ व्है कलयुगके राजासिर छत्र धरेंगे ॥ पापको संघारि पुन्य प्रगट करेंगे ॥ महाराज ॥ ११ ॥ फागुन के महीनेमे प्रभुके नाम बताया ॥ औतार दस की कथा गैने गाय सुनाया ॥ पढै सुनै कोई यमके द्वार नजावे ॥ सूरदास कहितेवो वैकुंठ को पावे ॥महराज॥१२॥

बारहमासी ॥ २ ॥

चैत चकित चहुं ओर चितै मैं हारी ॥ वैसाख न लागत आंख विना गिरधारी ॥ २ ॥ जेठ तपै दिन रैन मदन तन जारी ॥ असाढ़ वन बोलत मोर शोर भई भारी ॥ ४ ॥ सावन बरसत नीर विपिन हरियारी ॥ लागत भादौं मास रैन अंधियारी ॥ ६ ॥ क्वार करार हजार किये गिरधारी ॥ कातिक नहिं आये श्याम सवति के यारी ॥ ८ ॥ अगहन अग्र सनेह देह दैडारी ॥ पूसै अब परत तुसार दुखै दुख भारी ॥ १० ॥ माह मिले बन श्याम वाम दुखहारी ॥ फागुन भये पूरन काम मिले गिरधारी ॥ १२ ॥

बारहमासी श्री राधिकाजीका विरह ॥ ३ ॥

श्री राधा गोपी त्यागि करी घरवारी कुविजासी ॥ प्रथम महीना अषाढ़ लाग्यो वर्षा ऋतु आई ॥ पीतम हमरे श्याम सलोनें पाती भेजवाई ॥ कहो ने कैसे नहि आये ॥ ऐसे चतुर सुजान श्याम को चेरी वेलमाये ॥ डारी गले जादू की फांसी ॥ श्री राधा ॥ १ ॥ सावन में मनभावन हमतो दावन सो लागी ॥ जबतो तिलतिल प्रीति बढ़ी अब हरि काहे त्यागी ॥ सुनो तुम ऊधो मेरीसों ॥ लाज शरम

कित गई प्रीति जब कीन्ही चेरीसे ।। यही मोहि आवति है हांसी ।। श्री राधा ।। २ ।। भादों रैनि अंधियारी सो बोली पीतम की प्यारी ।। अन्न न भावे नींद न आवे सदे गर्म न्यारी ।। मिटावे संकट को ऊधो ।। ऐसे कुटिल कुजाति श्याम को जानितहै सूधो ।। मारि गये विरहा की गांसी ।। श्रीराधा ।। ३ ।। लागत क्वार कनागत आये सब कोई धर्म करै ।। हमतो धर्म करेंगें जबही पीतम नजरि ।। पर मिलावे है कोई ऐसा ।। लै अक्रूर गये मथुरा को करियेरी कैसा ।। बुधिवाकी कौने अभिनासी ।। श्री राधा ।। ४ ।। कातिक कौतुक कियो कृष्णने सब काहू जानी ।। आखिर जाति अहीर श्याम के कुविजा मनमानी ।। कंस की है आखिर चेरी ।। याही से दिन रैन आंख मेरी फरकत है डेरी ।। लागी मेरे जिया को चौरासी ।। श्री राधा ।। ५ ।। अगहन मे मन चमकन लागो धडकत है छाती ।। ऊधो हाथ सन्देसा भेजे न बांचोरी पाती ।। लिखो तुम कुछौभी बालम को ।। जो न मिलोगे वेगि जियत नहि पावोगे हमको ।। हमारे जियाके सुख रासी ।। श्री राधा ।। ६ ।। पोषमासेमे चले गये मेरे प्रीतम से प्यारे ।। कानन लगे दूल कियो मेरे नयननसे न्यारे ।। मोहिं यहमदन सतावत है ।। जिया के जारन काज सन्देसा ऊधो लावत है ।। खबरि मेरी लीजे बृजवासी ।। श्री राधा ।। ७ ।। माहनेहके डाह पिया तुम छोड़ी हम जानी ।। उठत कराह कराह बातसब ऊधोने जानी ।। ज्ञान की बातें दरसाईं ।। ऊधोजीने आय सकल सब गोपी समझाईं ।। खबरि मेरी लिजे अभिनासी ।। श्रीराधा ।।८।।फागुन फीको लागरैन दिन भोयरही विषमें ।। पाती बॅाचत खेमसखी यक यों बोली रिसमे ।। लगे अब साह करन चोरी ।। हमरे जियत कन्थ खेलै अवचेरी संग होरी ।। हमारे जियाके सुख रासी ।। श्री०।।९ ।। चैत चित्तमे जरो मरोमें गिरती कुइयोंमें ।। कहियो मदन गोपाल संग कुविजा को लइ आवें ।। कछु इन बातन को डर नाहीं ।। हम गोपी दरशन की प्यासी और नहीं चहना

॥ खबर मेरी लिजें केलागी ॥ श्री० ॥ १० ॥ लागनहीं वैशाख सखा सबहीके घर आये ॥ ऊधोजीने जाय कृष्ण को ऐसे समझाये ॥ पैज तुम हकनाहक रोपी ॥ हाड़ मास गलि गयो बावरी होगई सब गोपी ॥ लेयगे करवट जाय काशी ॥ श्री० ॥ ११ ॥ जेठमासमें मिले कृष्ण जब राधा गोपी सों॥ बृजवासी आनन्द भये सब छूटे बन्धनसों ॥ कृष्ण कि यह बारामासी ॥ गाय कहे वैकुंठ जाय छूटै जमकी फॉसी ॥ सांचि यह मेरे मन भासी ॥ श्री० ॥ १२ ॥

(बारहमासी)

पिया बिन ऊठी बिरह कीपीर ॥ रहि मैं तरस ना आये तीर॥ टेक॥ लगा जब से अषाढ़ आली ॥ घटा छाई काली काली ॥ पिया परदेश उमर बाली ॥ महल बिच पड़ीसेज खाली ॥ दोहा ॥ उमड़ि घुमड़ि गर्जन लगे घन घुमन्ड चहुं ओर ॥ दादुरहंस चकोर कोकिला मोर मचावें शोर ॥ झिमिकि झर लगा वर्षने नीर ॥ रहीमै तरसि नाआये तीर ॥ १ ॥ सुरू जबसे सजनी सावन ॥ लगे पिया परदेसी आवन ॥ खफा हो हमसे मन भावन ॥ दस्तसे छोडा गये दावन ॥ दोहा ॥ घर घरमे झूलें सखी करैं तीज त्योहार ॥ दमिकि रही दामिनसी कामिन करि सोलहासिंगार ॥ बदनमेपहिर कुसुम्बी चीर ॥ रहीमें तरसिना आये तीर ॥ २ ॥ सखी भादोंमें चस्म नमकी॥ लगी हर घड़ी झड़ी गमकी ॥ खता क्या हमदम की हमकी ॥ मुहब्बत क्यों हमसे कमकी ॥ दोहा ॥ तरसावें आवे नहीं कर सौतनसे प्रीत ॥ रुखशतभा दोंहुआपिया बिन वेर यहां कीरीत ॥ मेरा गमगया कलेजे चीर ॥ रहिमै तरसिना आये तीर ॥ ३ ॥ भई आसोज विकल भामिन ॥ करैं रंजिस कमान कामिन ॥ गगन गर्जे दमकै दामिन ॥ कटै कैसे गमकी जामिन ॥ दोहा ॥ पावसमैं पाई नहीं परदेशी की बात ॥ मनकी मनमे रही पलंगपर नासोई वर्षात॥करी है क्या हमने तकसीर॥रहीमै तरसि ना आये तीर ॥ ४ ॥ लगा कातिक विदेश पिया ॥

गये जिया ॥ उमर बालीमें ब्याह किया ॥ छोड मोहि बेकसूर दिया ॥ दोहा ॥ अजब गजब दिलमें सखी दीया सनम ने दाग ॥ घर नरोग होर. हि दिवाली रोशन हुआ चिराग ॥ मेरा इस गममें दिल दिलगीर ॥ रहीमें तरसि ना आये तीर ॥ ५ ॥ लगा मगशिर मैंने जाना ॥ करें पिया अपना मन माना ॥ ओ कासीद विदेश जाना ॥ मेरे हम दम को समझाना ॥ दोहा॥ लडकाई ब्याही गई रही जवानी छाय ॥ उमगा जोबन जाय हमारा फिर का करिहो आय ॥ बदन परहै जोबनकी भीर ॥रहीमें तरसि ना आये तीर ॥६॥ पूस प्रीतम कीयाद आती जुदाई सही नहीं जाती ॥ न भेजा लिखि हम कोपाती ॥ जलै हरदम गमसे छाती ॥ दोहा ॥ मन मलीन तन छीन अति विपति सही ना जाय॥ है कोई ऐसा चतुर सखीरी पिया मिलावे आय ॥ दिखावे हम दम की तसवीर॥ रहीमें तरसिना आये तीर ॥ ७ ॥ माहमें रितु बसन्त आवे ॥ पिया बिन हमैं नही भावे ॥ कोई मालिन कोसमझावे ॥ नमेरे घर बसन्त लावे॥ दोहा॥विनाकन्थ कामिन कहे लखि रूखन अंगार॥ चलो सखी जलमरैं पियाबिन चढ़ि पलास की डार॥ मदन तन तकि तकि मारैं तीर॥ रहीमैं तरसिना आये तीर ॥ ८ ॥ लगाफागुन आई होरी ॥ उडै भरि भरि गुलाल झोरी ॥ इतर चोया चन्दनरोरी ॥ सजनके बदन मलैं गोरी॥ दोहा॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ धुनि सितार मुरचंग॥ रतन जडित कंचन पिचकारी भरिभरि मारत अंग ॥ कुमकुमावर्षत उडत अबीर ॥ रहीमैं तरसि ना आयेतीर ॥ ९ ॥ चैतमें कर जोगनका भेष ॥ सखीमें चली पियाके देस ॥ हमैं कोई बतलावे सन्देश ॥ डगर में ढाढ़ी खोले केस ॥ दोहा ॥ राहघाट जानै नहीं चलत मुसाफिर पाय ॥ सबसे पुछैं खबर पियाकी कर मल मल पछिताय ॥ करैं सौ सौ दिलमें तदबीर ॥ रहीमें तरसि ना आये तीर ॥ १० ॥ गरज बैशाख मास आया ॥ सखीनें पीया अपनापाया ॥ पलंग डोरीसे

खिंच वाया ॥ फर्स फूलोंसे विछवाया ॥ दोहा ॥ करि सिंगार सोला सखी पड़ी पियके पास ॥ लूट लूट जोबन गोरी का सजन गवांईरात ॥ हमारी फिर्री आज तकदीर ॥ रही मैं तरसि नाआये तीर ॥ ११ ॥ जेठ हासिल मुराद ईजाद ॥ खुदाने किया पलंग आबाद ॥ शाअली कमलापती उस्ताद ॥ मनीराम रहै फरुखाबाद ॥ दोहा ॥ कुचासालिकराम है पुलिस तिकोना पास ॥ लेख राज फर्मन्द छन्द सपूरण बारह मास ॥ करी वन्दिस गनेश गंभीर ॥ रहीमैं तरसि ना आये तीर ॥ १२ ॥

प्रभाती ॥ १ ॥

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया । किलक किलक उठति धाय गिरत भूम्मि लटपटाय ॥ धाय मातु गोद लेत दसरथकी रानियां ॥ १ ॥ अंचल रज अंग झारि विविधि भांतिसे दुलारि ॥ तन मन धन वारि वारि कहत मृदु वचनियां ॥ २ ॥ मेवा मोदक रसाल मन भावे सो लेहु लाल ॥ और लेहु रुचिर पांणि कंचन घुन घुनियां ॥ ३ ॥

प्रभाती॥२ ॥

प्रात समय रघुवरहि जगावे कौशिल्या महतारी ॥ उठहु लाल जी भोर भयो है सुरनर मुनि हितकारी ॥ बन्दी जन गन्धर्व गुन गावे नाचै दै दै तारी ॥ १ ॥ सन सहित शिव आप खड़े हैं होत कोलाहल भारी ॥ मुनिप्रिय वचन उठ रघुनन्दन ननन पलक सवांरी ॥ २ ॥ भरत सत्रुहन चंवर छत्र लिये जनक सुतालिहे झारी ॥ मेवा पान लिहे कर लछिमन भरि कंचनकी थारी ॥ ३ ॥

प्रभावती ॥ ३॥

मेरे तो गिरधर गोपाल लाल दूसरा ना कोई ॥ जाके सिर मोर मकुट मेरा पति सोई ॥ संख चक्र गदा पदुम कंठ माल सोई ॥ १ ॥ मैं पियाको देखि हंसी जक्त जानि रोई ॥ असुअन जल सींच सींच प्रेम बीज

वोई ॥ २ ॥ सन्तन ढिग वैठि वैठि लोक लाज खोई ॥ अब तो बात फैल गई जानें सब कोई ॥ ३ ॥ जक्त लाज छोड़ि दई का करेगा कोई ॥ मीरा हरि लगन लगी होनी होय सो होई ॥ ४ ॥

रासकेपद ॥ २ ॥

चलौ सखी देखन चलिये नवल अनन्दा ॥ रचो श्रीविन्दावन रहस गोविन्दा ॥ यमुना किनारे वहै सीतल सुगन्धा ॥ त्रिविधि बयारि डोले औरगति मन्दा ॥ १ ॥ तबला औ सारंगी बाजे ढोलक मृदंगा ॥ वेण औ उपंग मुरली औ मुचंगा ॥ २ ॥ ग्वाल सखा तारदित होत बहुरंगा ॥ राहस गोपिनाचैं गोकुलचन्दा ॥ ३ ॥

भजन ॥ १ ॥

मोहि लैचलौ बृजकी गलियनमें वंशी वालेसे मेरा दिल बसि गयेरे ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै सांवली सुरती जिया वासि गयेरे ॥ १ ॥ वॅशी वाजिरही कुंजनमें तन मन मेरा साराडसि गयेरे ॥ २ ॥

ठुमरी खम्माच ॥१५॥

अबकी केदरस देखायजा मुरारी तलफत हैं सगरी बृजनारी ॥ तुम्हरे रांगके सखा सब तलफैं नन्द बबा यसुमति महतारी ॥ १ ॥ नखपर गिरवर धरयो है गोवरधन करत फिरत बृज कि रखवारी ॥ २ ॥

ठुमरी पर्ज ॥१६॥

जो जननी दगा बाजहै कान्हा । प्रीतिन करतीमैं करती वहाना ॥ मोहन रसिया अपनी गरजके पैय्यांपरि परि मोहि मनाना ॥ गरज निकारि गई तुम्हरीरे मोहना फिर पाछे मोहि राह बताना ॥ १ ॥ हमसे न बोलना लुकि छिपिरहिना सौतनके संगकेलि मचाना ॥ जानि-गई पिया हो हरजाई फिर क्या तुमसे प्रीती लगाना ॥ २ ॥

देश ॥ ४ ॥

रहिना भयो देश बिराना ॥ ये संसार ओस को बुन्दा ॥ चलत

पवनैं दुरि जाना । रहिना भयो देश विराना ॥१ ॥ ये संसार कागदकी नैय्यां ॥ बूंदपरे गलि जाना । रहिना भयो देश विराना ॥२ ॥

ठुमरी देश ॥ ५ ॥

मेरा पियासे मिलनवा कैसे होय ॥ जबसे गये मेरी सुधि नहि लीनी । पिया विन रहिना कैसे होय ॥ १ ॥ सनद पियासे यो जाय कहियो ॥ तुम विन जियनां कैसे होय ॥ २ ॥

सोरठा ॥ १ ॥

अरे दइमारे बोलत मोरा ॥ नहिं पिया घर मोरा ॥ सूनीसेज पिया घर नाहीं विरहा करत अति जोरा ॥ निसु अंधियारी कारी विजुली चमकै मदन करत झक झोरा ॥ ४ ॥ मेरे पिछवारे मोर चुगत हैं किन्नें चढाया रोरा ॥ रोराके लागे मोर मरि जैहैं विछुरि जात मेरा जोरा ॥ २ ॥

ठुमरी पील्लू ॥ १७ ॥

सगरी रैन वीती पिया नहि आयेरी ॥ जबसे गये मेरी सुधि नहिंलीनी ॥ सूनी सेज पिया हमैं तरसायेरी ॥ १ ॥ दिन नहि चैन राति नहि-नीदा ॥ किन सौतन मेरा पिया वेल मायेरी॥ २ ॥

भजन नार्दी ॥ १७ ॥

चदरिया ओढ़े गोरिया पियाघर जाई ॥ छीन लीयो है सुरुख चुनरीया ॥ उपर सफेद ओढ़ाई ॥ १ ॥ पांच पचीस बराती आये ॥ वैठे सवसिर नाई ॥ २ ॥

भजन सोरठा ॥ १ ॥

तेरी वंगीने मेरो मनहरि लीना ॥ वस्तर छोड़ि पहिर लई धोती घेर घांघरा तजि दिना ॥ गहिनेंकी छवि कहां लग वर्नों वेंदी छोड़ि तिलकदीना ॥ १ ॥ कानन कुण्डल पहिर लई सेली तनमें भसम सब मलि लीना ॥ मृग छालापर वैठी सखीरी सुखकी सेज हम ताजि दिना ॥ २ ॥

ठुमरी खम्माच ॥ १८ ॥

जाओ जाओरे कान्हाई गोंवे गागि क्यों मचाईरे ॥ जानिगई तुम्हरी चतुराई कुवरि सबतिसे आंखि लगाई ॥ लपटि झपटि मोर सिरकी मटकिया पकरि कलाई अब दियो ढरकाईरे ॥ १ ॥

ठुमरी खम्माच ॥ १९ ॥

चलो हटि जाओ ना सताओ मोहि सय्यारे । देखो देखो मुरुकि जात मोरी नहियारे ॥ खाय सेगंध नजीर कहति हैं । नयन लगावत तुमसे डेरत हौं । ओछिकी प्रीतिको ऐसे सुनति हैं ॥ ज्यों तरवर की छहियारे ॥ १ ॥

ठूमरी, खम्माच ॥ २० ॥

करत नदानी हठ कीन्हीं मोरासय्यारे ॥ पय्या परतु हौं विनति करतहूं ॥ येतनी अरज मेरी मानो अब सय्यारे ॥ १ ॥ लाख कही पिया मानत नाही ॥ धरि बहिया नमुआयो मोरी गुय्यारे ॥ २ ॥

ठूमरी खम्माच ॥ २१ ॥

भँवरय्या फंसी मोरी नय्या उमड़ि घुमड़ि । केवट अनारी जिया होय धक धक ॥ असरफ पिया अबपार लगाओ ॥ ऐसे समयमे तुमही खेवय्या उमड़ि घुमड़ि ॥ १ ॥

ठूमरी पर्ज ॥ २२ ॥

सखीरी मैतो पनिया भरन कैसे जाव । बैर परो हटि नदको छैल देखो ॥ गगरी गहत पाटिपर पटकत ॥ कहा लगि यह गम खाव ॥१॥ हाहा खाय रही विनती करत करजोरे परि पाव ॥ श्याम दुलारे मन बसत हमारे तासे तजौं नहि गाव ॥ २ ॥

ठूमरी पीलू ॥ २३ ॥

अबही मंगाय विष खाय मरोंगी साची कहिदे नहितो बलमा ॥ छाप गरदन दग मावत । अजन कपोलन अतिसर सावत ॥

अंग तुम्हारे सबरंग बतावत । किन सौतन संग रैन गवाई । साची कहीदे नाही तो बलमा ॥ १ ॥

वधाई ॥ १ ॥

बाजेरे बाधय्या गोकुलमे ॥ देवकीके गृह पुत्र भयोहै ॥ यसुदा गोद खेलय्या गोकुलमे ॥ १ ॥ घरघर सखियां मंगल गावे ॥ दधिकी कीच मचय्या गोकुलमे ॥ २ ॥ कोई गावे कोई बीन बजावे ॥ कोई करै ताथेय्या गोकुलमे ॥ ३ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसको प्रगट भयोहै कन्हैय्या गोकुलमे ॥ ४ ॥

सोहर खम्माच ॥ १ ॥

नृप दशरथ गृह काज आज आओ गावो सबै मिलि सोहरा ॥ करि सिंगार सखिया मिलि सारी । लै रोचना फूल फलथारी ॥ पवरि जाय दसरथ नृप ठाढ़ी ॥ घेर रही यो बादरा आवो गावो सब मिलि सोहरा ॥ १ ॥ जानि समय गन्धर्व गुन गावत बन्दी जन बंछित फल-पावत ॥ सब भपन सिरजात आज आवो गावो सबै मिली सोहरा ॥ २ ॥

बनरा खम्माच ॥ १ ॥

बनरारसील्या बनरीके गृह जाई । मालिनिया गुंधिलाव हरवा ॥ मेंहदी रंगीली सेहरा सोहै अन बेलरा ॥ देखि दुलारे जिया अति हुलसाई मालिनिया गुंधिलाव हरवा ॥ १ ॥

बनरा पर्ज ॥ २ ॥

गुंधि लावरी मालिनिया सेहरा बनेको गुंधिलाव ॥ सेहरा गुंधाई क्यात ल्हे ॥ सेहरे कामोल चुकावरी मलिनिया ॥ १ ॥ पांच रुपया और असरफी ॥ दुजे गरेको हाररी मलिनिया ॥ २ ॥

दादरा ॥ १ ॥

अब ना जीवे कमर मोरी कसके ॥ कहरत परी पलंगके ऊपर ॥

सय्यां वेदरदी नेक नहिं टस्कै ॥ १ ॥ जाय कहेव मेरे लहुरे देवरसे ॥ रहि रहि मेरे जोवन दोऊ फरकें ॥ २ ॥ वैद वोलाओ नारी देखाओ ॥ नाहिं पछितइहो हाथमल्मलकै ॥ ३ ॥

दादरा पीलू ॥ २ ॥

करपकरि कलाई मुरकाई छैला । रही हाथ रसरि गिरि गयो धैला ॥ नित उठि मोहन रारिमचावत ॥ कैसे चलव ये कठिन गैला ॥ १ ॥ श्यामदुलारे रस गाहक नायक ॥ वृजसगरेमें सोर भैला ॥ २ ॥

दादरा चेतावनी ॥ ३ ॥

जन्म कैसे सुधरी विना हरिनाम ॥ नाहोइ है सिर पेचा वांधे ॥ नाहिं रंगेसे चाम ॥ १ ॥ राम नामको लेश छूवत नहि ॥ करत अधमके काम ॥ २ ॥ चतुराई तेरी वात विगारै ॥ तूभूले घर दाम ॥ ३ ॥ भूलतराह वतावें दुलारे ॥ सीतापति सुख धाम ॥ जन्म कैसे सुधरी विना हरि नाम ॥ ४ ॥

दादरा ॥ ४ ॥

अवध विहारी लगी तुमसेयारी ॥ तुम सुरझालो उराझि गईं अखियां सुरझत नहियां जतन करि हारी ॥ जबसे देखि लई वह सूरतिमो अखियन से टरतना टारी ॥ सिंह जुझार कल हाय पड़ेना तलफत मीनमनो वनवारी ॥ ५ ॥

कव्वाली ॥ १ ॥

वृन्दावन वासी व्यास गुरू गोलोककी राहलखा देना ॥ किस रंगमें है वो हमारा हरी उस्का सव भेद वता देना ॥ दिन रैन सभी हरि विन वीते ॥ सव रंग रहे उन विन रीते ॥ घनश्याम विना कल नाहिं पडे ॥ जरामाधुरी मूरति दिखा देना ॥ आये चले युग वीतिगये ॥ पिछले इकरारको भूलगये ॥ अव हम तो तेरे अधीन भये ॥ कृष्णा मेरी वातवनादेना ॥ नाव झांझरी भंवर कठिन ॥ दरियाव अगम डरपा वतहै ॥ तुम केवट सिंह जुझार के हौ ॥ भवसागर पारलगा देना ॥

॥ गजल ॥ १ ॥

लैलाको पार किसने मजनू बनाके मारा ॥ ऐसे शिकस्ता दिलको दरदर फिराके मारा ॥ यह जांगई बलासे कुछ गमनहीं है इस्का ॥ कर शुक्र उसने अपना अंदाबना के मारा॥ क्यायार तेरेपां पर नये रंगियां बयां हो ॥ बुत बन के तूने मुझको फिर बनाके मारा ॥ पत्थर पै सर पटकना फरहाद का भटकना ॥ शीरीके गममें किसने कोहेसितं पैमारा ॥ १ ॥

॥ गजल ॥ २ ॥

हमनेदर परदा तुझे माहे जबी देख लिया ॥ अब नकर परदा किऐ परदे नसी देख लिया ॥ जिसके जिलवेपै हुये तौरके मूसा तालिब ॥ हमने दर परदा उसे दिलके कुरीं देख लिया ॥ तेरे दीदार की रहे तीहै तमन्ना सबको ॥ लोग देखेगे वहां हमने यहीं देख लिया ॥ हम नजर बाजों से तुम छिप न सके जानजहां ॥ तूंजहांजाके छिपा हमने वहीं देख लिया ॥ एक दिनभी नाकिया वश्लसे दिलशादमुझे ॥ तेरे वादेको बुते माहे जबी देख लिया ॥ २ ॥

गजल ॥ ३ ॥

फुरकत तुम्हारी प्यारी मुझको रुलारहीहै । और याद दिलमें तेरी नस्तर लगा रहीहै ॥ अब तोहै तंगहालत बीमारकी तुम्हारे ॥ सूरत जरा दिखादे जा लबपै आरहीहै ॥ हरचंद तुझको ढूंढा तेरा निशां न पाया ॥ अफसोस बद नसीबीदर दर फिरा रही है ॥ ऐ रहेमतेदो आलम बेड़ाहो पारमेरा ॥ बार गुनहसे किश्ती अवडगमगारही है ॥ आमाल बदको अपने रोऊं कहां तलकमैं ॥ चारों तर्फसे स्याही असियों कि छारहीहै ॥ गुल्शनको मेरे लूटागुलचींके हाथ बांधे ॥ मातमजदों कि सूरत कुमरी बनारहीहै ॥ पूंछेन पूंछे कोई इसका तो गमनहींहै ॥ रहेमत रजाखुदा कि मुझको बुलारहीहै ॥ १ ॥

गजल॥ ४ ॥

कहेतेहैं जिसे इस दिलोजां तुम्ही तोहो ॥ चरचर मे ग्राम ग्राम वियावां तुम्ही तोहो ॥ अनादिहो अखंड निराकार निर्विकार ॥ दुष्टोंके मारनेको पहलवां तुम्ही तोहो ॥ है कौन ऐसी चीजकि जिसमे नही शरीक ॥ व्यापकहो रोम रोममे तांवां तुम्ही तोहो ॥ गंगाप्रसादकी है यही अर्जशवोरोज ॥ मेरेतो सिर्फ एक मेहरवां तुम्ही तोहो ॥

गजल ॥ ५ ॥

जो मेरी होनीथी हालत होगई ॥ सब इसी दिल्की वदौलत हो गई ॥ खाते खाते गम किसी के इश्कमे ॥ हमको गम खाने की आदत होगई ॥ छुटती है कब किसीके छोड़से ॥ होगई जिससे मोहब्वत होगई ॥ दफन करके सब अजीजोंने कहा अब मरीजे गमको सेहत होगई ॥ पहेलेथा फुरकत मे दिल्को अज़ तुराब ॥ दिल लगानेकी न सीहत होगई ॥ १ ॥

गजल ॥ ६ ॥

दिलमे आशिकके तसव्वरसे खटक होतीहै ॥ इन हसीनोंके गजब नोके पलक होतीहै ॥ इस वहानेसे बहाये सरे महिफिल आसू ॥ कह दिया उनसे की आंखोंमे खटक होतीहै ॥ दर्दे फुरकत का इलाही नादगा देजाये ॥ आज थम थमके मेरे दिलमे कसक होतीहै ॥ किस नजाकत से अब कहतहो सुने क्यो फरयाद ॥ गुंचा चिटके तो कहा सिरमे धमक होतीहै ॥ सहेमे जाते हैं डरे जाते है वो आशकसे ॥ कमसिनी है अभी इससिनमें झझक होतीहै ॥ परत लज्जत कभी आलम नही पाते है उरूज ॥ कायदा है कि जमी जेर फलक होती है ॥ १ ॥

॥ ठुमरी ॥ २४ ॥

कन्हाई मोरी गुइयां लीन्ही बहियां गहे लाज ॥ पनियां भरन पनि घट जनि जावो सखी तुमसे कहत मै जाय पाछिनाई ॥ मोरी गुइयां ॥

कोऊ पनिहारी निबहन नहिं पावत डगरिया लपटि झपटि हठकरे अशरफ बोतो अपनी कहत नहि सुनत पराई ॥ मोरी गुइयां लीन्ही॥१॥

॥ ठुमरी ॥ २५ ॥

पियासो संदेसा मोरा कहियो जाय । कागा जाव जावरे जाव ॥ याद आवत है उनकी बतिया बिन देखे कलना पड़त जिया जायरे ॥ पिया सो संदेसा ॥ १ ॥

ठुमरी ॥ २६॥

सॉवली सलोनी सुगनयानी बोप्यारी नार जिया चाहे करूं तो प्यार ॥ झिझकत झमकत आवत झुकत है इश्क निबाहन मन समुझावन चाद कहत मिलि जावरे जाउं बलिहारी ॥ सॉवली ॥ १ ॥

(॥ ठुमरी ॥)

चतुर सुघड़ सुन्दर प्यारी अनोखी नई नार ॥ चाल चलत झमकत बार बार ॥ ऐसो निठुराई हरजाई लोगाई चबाई मोंसे कहत इन्दर नैना बरछिये चार ॥ १ ॥

रामकली॥ १ ॥

तुम अबना जगावो प्यारे ॥ मैं कहि लागल अंखियाभोर ॥ नेक पलक झपकी निशुसारी जागी जगाई ॥ तुम अबना ॥ आनंदहो अनत भोर गर लागे छतिया तरनकी अबकी बेर फिरि जावो॥तुम अबना॥१॥

रामकली॥ २ ॥

छैला जनि छुवो मोरी बहियारे ॥ हमदार बार जिया डार डार अचानक आनके जगाई करके गई ॥ छैला जनि ॥ इन बोलियन मोरा जिया डेरतु है ऐसी दया कीन्ही हमको छोड़रंग रसकी बतिया अपनी गरज तुम परत हो पंया ॥ छैला जनि छुवो ॥ १ ॥

॥ ख्याल भूपाली ॥ १ ॥

ऐरी आज सखीरी तोसे दया कहूं अपने जिय की बात ॥ ऐरी अ

मोरी गाने सखीरी प्यारेकी मूरत देखो वेखो घरिपल छिन दिनरात ॥ येरी आज सखी ॥ १ ॥

॥ ख्याल दरवारी ॥ १ ॥

गहरी गहरी नदिया और वहतु है और वहतु पुरवइयारी दइया ॥ गहेरी नदिया नेवरिया नालगे केवट वाके छोहरा कौने गुन उतरेंगे पार मोरी दइया ॥ १ ॥

॥ असावरी ताल धम्मार ॥ १ ॥

ललना कांधे कमरिया हाथ लकुटिया नट गांवको छैल चिकनियां ना छू मटकी फोर ॥ तुम हमरा दधिना छुवो होत काह चाखते हूं राजाकी ग्वालिन लेहो दधिका दान ॥ १ ॥

॥ कव्वाली ॥ २ ॥

आंखे जरा मिलालो चाहेना मुंहसे बोलो ॥ हम इश्कमें तुम्हारे ॥ फिरते है मारे मारे ॥ दिलका गुवार धोलो ॥ चाहे ॥ क्याहै कसूर मेरा ॥ क्यों दिल खफाहै तेरा ॥ कुछ तो जबांसे बोलो । चाहेना ॥ क्याहै गरूर तनका ॥ येहुश्न चार दिनका ॥ एक दिन तो पास सोलो ॥ चाहेना ॥ गंगाप्रसाद दीजे ॥ खैरात कुछ भी कीजे ॥ नेकीका बीज बोलो ॥ चाहेना मुंहसे बोलो ॥ १ ॥

॥ कव्वाली ॥ ३ ॥

सूरत गोविन्दजीकी दिलमें बसीहमारे ॥ सिरमोर मुकुट बिराजे ॥ कुंडल कपोल छाजें ॥ चमकैं अजब सितारे ॥ सूरत ॥ हैं वाल घूंघर वाले ॥ नागिनसे काले काले ॥ मोतिनके माल डारे ॥ सूरत ॥ ओढे पिताम्बर आला ॥ ऊपर पड़ा दुशाला ॥ वसी अधरपै धारे ॥ सूरत ॥ गंगाप्रसाद भाषै ॥ नितध्यान हरिको राखैं ॥ यशुदाके प्राण प्यारे ॥ सूरत ॥ १ ॥

सोहनी ॥ १ ॥

कौनतुम्हें यह छेंड सिखाई ॥ गलेलाग चोली मोरी मसकाई ॥ पिइत तेरी जानदे मोहन इतनी करतहो हमसे ढिठाई ॥ १ ॥

बाट चलत मोरी बहियां क्यों गहतुहो ॥ जानंद्यर मोरी माम्रु रिसाई ॥ २ ॥ करसोंकर गहे डाले गलबाही ॥ नंदके द्वार जाके दूंगी दोहाई ॥ ३ ॥ तेरो लंगर नित राग करतेहे ॥ करो बेन बिन्द्रा बुजेस लगाइ ॥ ४ ॥

दादरा ॥ २ ॥

मजा देतेहे क्याचार तेरे बाल घूंघर वाले ॥ और जफाकार तेने क्यों खींची तलवार ॥ तेरी अबरुये ग्वमदार ॥ तिर्छी चितवनके मतवाले ॥ १ ॥ पहिलेथी तुझसे तकरार ॥ अबतू करतोहे क्यो प्यार ॥ तेरी तरफसेयार ॥ मेरे दिलमे पडगये छाले ॥ २ ॥ मेरे दिलसे निकली आह ॥ इक दिन जाता रकेसाह ॥ देखा दुश्मनके हमराह ॥ दोनो हाथ गले मे डाले ॥ मजादेते है ॥ ३ ॥

दादरा ॥ ३ ॥

जानमन जो नजारा न होगा ॥ शेर ॥ किस्मत मे अगरयोही गरी बुलबतनी है । देंगे जान हमभी यही दिलमे ठनी है ॥ दर्द फुरकत गवारा ना होगा ॥ जान मन ॥ जादू भरा हुवा है रंगीली निगाहमे ॥ हम मरगये अ रकेकमर तेरी चाहमे ॥ देख कबतक इशा रा नहोगा ॥ जानमन ॥ खिलवतमे अगर आप मेरे घर जो आयेंगे ॥ तोदिलका कुछ खूब गलेसे लगायेंगे ॥ उम्र भरफिर कनारा ना होगा ॥ जानमन ॥ इक दिन हमारी आह नदागा छिवायेगी ॥ दिलकी कशिश हमारी उन्हे खींच लायेगी ॥ फिर किसीका इजारा ना होगा ॥ जान मन जो नजारा ना होगा ॥ १ ॥

॥ गजल ॥ ३ ॥

सोजगम जब तेने लागर को जलाने आये ॥ अश्क रंबू दिलकी लगी आगबुझाने आये ॥ दामने दश्त मे गुलदस्ते कफन याद फना ॥

हर वगला मेरी मैय्यतको उठाने आये ॥ बेकशी रोयेगी तुरवत पै मेरे वादफना ॥ जल्द कोई खबर ये मौत सुनाने आये ॥ १ ॥

॥ गजल ॥ ८ ॥

गैर भी मेरी तरह करते हैं आह क्यों कर ॥ हम भी देखेंगे पलटती है निगाह क्यों कर ॥ शरमसे आंख उठाते नहीं देखा उनको ॥ पार होती है कलेजेसे निगाह क्यों कर ॥ बचपनकी वो हया और वो जवानीका गरूर ॥ आंख उठती नहीं हो चार निगाह क्यों कर ॥ जेरो दीवार जरा झांकके तुम देख तो लो ॥ नातवां करते हैं दिल थामके आहें क्यों कर ॥ १ ॥

॥ गजल ॥ ९ ॥

आशिकको भी अल्लाहना लाये मेरे आगे ॥ लाये तो भला मुंहको छिपाये मेरे आगे । बिछुड़े हुये माशूक मिले सबके इलाही ॥ यारब मेरा माशूक भी आये मेरे आगे ॥ परवानये गर नख्तपे उसके नीचे महिफिल ॥ शमअके भी आंसू निकल आये मेरे आगे ॥ १ ॥

गजल ॥ १० ॥

कहने देती नहीं कुछ मूंसे मोहव्वत तेरी ॥ लबपे रह जाति है आ आके शिकायत तेरी ॥ अब तेराए दिले बे ताब खुदा हाफिज है ॥ कर चुके हम तो मोहव्वत मे हिफाजत तेरी ॥ अदम आबाद को जाते हैं बगर खाली हाथ ॥ मुझको है दारकी ले जाऊंगा हसरत तेरी ॥ पूंछते है वोह मेरा हाल तो यो पूंछते है॥ कहते हैं कोन है तू क्या है हकीकत तेरी ॥ १ ॥

गजल ॥ ११ ॥

अपना मजार मुत्तसिले दर बनायेंगे ॥ घर भी तुम्हारे दरके बराबर बनायेंगे ॥ हम खून आरजूका जो मुस्तर बनायेंगे ॥ तुमको गवाह ऐ दिले मुजतर बनायेंगे ॥ फर्मा, है वो हसरपे मुवादिला

पूंछकर ॥ हमनीमचांको तोड़के खंजर बनायेंगे ॥ उफताडार हने दे भी रहे दिलके इस लिये ॥ उम्मेद हे कि आपयहां घर बनायेंगे ॥ छल्ला ये अपने हांथका दे दीजिये हुजूर ॥ दिलके जहाजका उसे लंगर बनायेंगे ॥ १ ॥

गजल ॥ १२ ॥

मुझसा न दे जमानेको परवरदिगार दिल ॥ आशेफता दिल फरे फतादिल बेकरार दिल ॥ होता हे बेकरार हसीनोंको देखकर ॥ ऐसा दिया था क्यों मुझे परवरदिगार दिल ॥ पहले पहलकी चाहका कीजे नाइन्तहां ॥ आना तो सीखले अभी दोचार बारदिल ॥ मशहूर हे शिकंदरो जमके निशानिया ॥ एदाग छोड जांयगे हमयादगार दिल ॥ १ ॥

गजल ॥ १३ ॥

कैसे जानूं कि तुम्हे याद हमारी आई ॥ ऐजम हेशर तलक खबरना तुम्हारी पाई ॥ हम तो मरते रहे जानी तुम्हारे गममे ॥ तुम्हें येकरोज मोहव्वतना हमारी आई ॥ बोसा गैरोंने लिया गालियां हमने खाई ॥ क्या मेरे हिस्सामें वजिल्लते ख्वारी आई ॥ कहिये फस्साहसे न स्तरको जरा तेजरक्खे ॥ क्या मेरे मारनेको तीर कटारी आई ॥ १ ॥

गजल ॥ १४ ॥

हुश्न इंशापे जव आया तो अदाभी आई ॥ नाजो अंदाज जव आया तो जफा भी आई ॥ शमां माहिफिलमें जव आई तो हवाभी आई ॥ रूह कालिवमे जव आई तो फनाभी आई ॥ बाद मुद्दतके मुरादे यह हुई हें हांसिल ॥ यारवाली पे जब आया तो कजाभी आई ॥ यों तो हर रोज लड़ाते हे सेर बाम आंखे । आज पहेलूमें जव आया तो हयाभी आई ॥ १ ॥

गजल ॥ १५ ॥

क्या कहूं अश्क जो फुरकतमे मजा देते हैं ॥ दिल सोजांसे लगी आग बुझा देते हैं ॥ खूब चमकाते है अगियाके सितारे योवन। यह भडके तो गजब आग लगा देते हैं ॥ कुछ जरूरत नहीं जोड़ा परीजादोकी । एक दो बातोने दीवाना बना देते हैं ॥ कुछ गरज नहीं पहलूसे उठा देते है । यहीं दामन बांह अंगूठेसे दबा देते हैं ॥१॥

गजल ॥ १६ ॥

मेरी तरह नऐ दिल अब्रे बहार रोया । वह एकबार रोया मै लाख बार रोया ॥ मजनूंसे मैने पूछा अहेवाल वेखुदीका । कुछ कहे सका मुंहसे पर जार जाररोया ॥ आवाज दे रहेहै मकतलमे जख्म बिस्मिल खंदा हुआ जो पहिले अंजामकार रोया ॥ एक हाल बेकसीका मजार पर है । जो आगया वो बनकर गमये मजार रोया ॥ पूंछी अमी से कल मैने जो दिलकी हालत । सीने पैहांथ रखकर बेअखितयार रोया ॥ १ ॥

गजल ॥ १७ ॥

मै वोकल्ब बेमुजतरिब हुं जिसे कल कल न आये । वो [illegible] बेसमर हूं जो फलूंतो फलना आये ॥ मुझे जोगसे जनूंमे जो खयाल तो यह है ॥ मेरा हालजार सुनकर कहीं वह निकलना आये ॥ वह जाक इश्कही क्या जोकि एकही तरफहो । मेरीजा मजातो जबहै कि तुम्हेभी कलना आये ॥ अदब जनूंये वेहशत कि वह मुझसे कहे रहै । मेरी आबरू बचाना कहीं इसमे बलना आये ॥ न मिलो तुम इनसे मुजतर किये बुतहै चंदरोजा । तुम उस खुदाको पूजो किजिसे अजल ना आये ॥ १ ॥

गजल ॥ १८ ॥

वाइसे वहेशत हुईहै येतनाई आपकी । तिनके चुनवाने लगी

हमसे जुदाई आपकी ॥ आपकी जाने बला क्यों कर कटी फुरकतकी शब । दिल तड़पकर रह गया जबयाद आई आपकी ॥ आपकी बातोंका रहेताहै मुझे हरदम खयाल । जब कोई बोला सदाकानोंमें आई आपकी ॥ खुद गला काटूं अगर खंजर इनायत कीजिये । देखिये दुखजायगी नाजुक कलाई आपकी ॥ १ ॥

गजल ॥ १९ ॥

सूरत अपनी मुझे क्यों दिखाई । तुम्है मंजूरथी गर जुदाई ॥ तेरे गेसूहैं पुर पेच काले डसे देते मोहब्बतके डाले ॥ तूही तूही बसाहै नजरमें । तूही रहेहै जानो जिगरमें ॥ तुम्है लाजिम नहीं ऐसी प्यारे । नीम बिस्मिल जो करके सिधारे ॥ ऐसे जीनेसे मरनाहै बेहतर । लाखों सदमे गुजरतेहै दिलपर ॥ १ ॥

गजल ॥ २० ॥

जाके गुलजारसे सैयाद फिर आया उल्टा । क्या नसीबाहै तेरा बुलबुले शैदा उल्टा ॥ तने उरियानी से बेहतर नहीं दुनियां मे लिबास । यह वह जामा है कि जिसका नहीसीधाउल्टा ॥ अपनी बर गिश्तगी किसमतसे ये होताहै यकीन । मेरी तकदीरका लिक्खा है न विस्तर उल्टा ॥ कुछ कशीदासा शबे वस्लजो सोया वह शोख । बादये शुम्भना मुंहपरसे दुपट्टा उल्टा ॥ नाला करनेसे मेरा यार खफा होताहै । रहेमकी जा उसे आजाता है गुस्सा उल्टा ॥

गजल ॥ २१ ॥

हुश्न है चंद रोज सनम आखिर खिजां हो जायगा । रंजदेनेसे तुम्हे कुछ भी मजा मिल जायगा ॥ दौल्ते योवन जो तुमने एक पाया है अजब । यह मुसाफिर है सरांका पासना रहे जायगा॥ चांद सा मुखड़ा जो तेरा देखलेगा वह सनम । जान उसकी जायगी जो दाममें फस

जायगा ॥ बाम पे नंगे ना बैठो माहताबी गुलबदन । चांदनी छिप जायगी मैला बदन हो जायगा ॥

गजल ॥ २२ ॥

मुहब्बतमें असर सच है कि पैदा होइ जाता है ॥ तड़पनेसे मेरे उस बुतको सदमा होइ जाता है ॥ अगर आपी चले आते तो कुछ बेहर्दी न छुट जाती । इन्हीं बातोंसे दिल अपना पराया होइ जाता है॥ खफा क्यों होगये मुझसे खता क्या मेरे दिलकी है । तुम्हें जो देख लेता है वह शैदा होइ जाता है ॥ नशेमें ले लिया बोसा खफा क्यों होगये मुझसे । चलो मिल जाव जाने दो कि ऐसा होइ जाता है ॥ नहीं छिपती है यह शोखी अहदे तिफली हसीनोंकी । जवानी आते ही हुस्न दूना होइ जाता है ॥ नहीं कुछ माहेपर मौकूफ देखो अपनी सूरतको । खुदा जब हुस्न देता है तो सोहरा होइ जाता है ॥ खबर मरनेकी सुनकर हम बहुत हैरान होते हैं । जवाना मुर्ग मरनेका अब कभी होइ जाता है ॥ शर्मीमें उस कि शोर आलमको जब मैं याद करताहूं । मदीनाके सफरकाभी इरादा होइ जाता है ॥

गजल ॥ २३ ॥

कूचये जानामें जाना होगया ॥ वे ठिकानोंका ठिकाना होगया ॥ फिर कहाथा कब मिलोगे ए हुजूर । हंसके बोले वह जमाना होगया ॥ हाय दिल जिसको ये पाला नाजसे । तीर मिजगांका निशाना होगया ॥ मुझको जंगलमें अकेला छोडकर । काफिले सुजतर रवाना होगया ॥

गजल ॥ २४ ॥

या पंचतन बचाना जब जान तनसे निकली । आवेगा मेरा गौना बाजेगी तनकी मुरली ॥ वही मेरा कन्हैया जो बनके बनसे निकली । आवारगीने तेरी मातम मुझे दिखाया ॥ मेलासा येक लगाथा जब जान तनसे निकली । देखो उसी चमनसे आवाज गमसे निकली ॥

गजल ॥ २५ ॥

पहिनलो जिस रंग कि चाहो तुमभी जानी चूडियां॥ पर तुम्हारे रग पै खिलती हैं धानी चूडियां ॥ मैंने देखा यह परी ओ तेरे दीवानेकी कब्र । जब कड़ा खोला गया निकलीं निशानी चूडियां ॥ आपसे मैंने कहां हंसनेको बस कीजेगा माफ । तुम कलाईथामते हमको बचानी चूडियां ॥ तख्तकी राय ताय जागे बख्त भाय सब सुहाय । हांथ मेरे जब लगीं तेरी सहानी चूडियां ॥ आरजू अब दिलमें मेरे इतनी बाकी रहगई । सुर्ख जोड़ाहो गलेमें और गुलाबी चूडियां ॥ ऐ दुवागोतुम दुवा करते रहो हकमें मेरे । पर सलामत यारहैं तो अल्लाह रक्खे चूडियां ॥

गजल ॥ २६ ॥

नतौर देखे न रंग बरते गजबमे आया हूं दिल लगाकेवगर न देता है दिल जमाना यह आजमाके वह आजमाके॥न छेडो जाहिर कि वक्त मौका यह दिलगीका नहीं है साहब । सवार जाता है वोह शराबी मैं हाजिर उसकी रकाबमें हूं॥ इलाही कासिद किखैर कीजै कि आज कूचेसे फितनागरके । मवा निकलती है लड़खड़ाती यह आजमाके वह आजमाके ॥

गजल ॥ २७ ॥

तडप रहा है दिल बेकरार बिनतेरे । नहींहै चैन मुझे जिनदार बिन तेरे ॥ तेरेही वास्ते फिरताहूं दर बदर मुजतर । हुआ हूं वहो तहीं जारो निजार बिनतेरे ॥ मुहया गरचे है सामान ऐशो अशरतके।वले है दिलको मेरे इतग्मार बिनतेरे ॥ गुमानथा मुझे जिन जिनका वह तो भाग गये । तबीने तांबगिकेवो करार बिनतेरे ॥ फिराकमें तेरे लबपर है आह गामो पग । मल्कुल मौतका है इंतजार बिनतेरे ॥ "शरूर" क्याहो खुशी क्या हो खुरमी हो क्या । है मुझको मुल्ककी बजाये खुमार बिनतेरे ॥ १ ॥

गजल ॥ २८ ॥

किस चांदके खयालने हैरां बना दिया । गाह हंसा दिया मुझे गाह रुला दिया ॥ महबूबकी त्रिरियाको खुदाने जो इश्क था । नामे नबीको नामसे अपने मिला दिया ॥ महबूबकी त्रिरियांको जो देखा जमालने हूरोंनेशोर सल्ले अलाका मचा दिया ॥ रूहुल अमीन गोशये अबरूपे आपकी । कावासमझके अपना वहीं सर झुका दिया ॥ १ ॥

गजल ॥ २९ ॥

शोजे फिराक जाना तनमन जला रहाहै । मिस्ले शमा वो जलकर दिलको घुलारहाहै । दिखला दे तू तजल्ली मूसा नहीं डरूं मैं । क्यों लंतराने अबतक मुझको सुना रहा है ॥ वहेदतकी मैं जो पी है अब हालहै येमेरा । आंखोंमें तेरा जिलवा मेरे समा रहा है ॥ ढूंढूं कहां मैं तुझको बतलादे मुझको जालिम । अब इश्क तेरा वेहद मुझको सतारहा है ॥ देखो उरूज दिलका तुम अपना सिर झुकाकर । इस आइने में कोई सूरत दिखा रहा है ॥ १ ॥

गजल ॥ ३० ॥

कहां ले जाऊं दिल दोनो जहांमें सख्त मुशकिल है । यहां परियों का मजमाहै वहां हूरोंकी महफिल है ॥ इलाही कैसी कैसी सूरतें तूने बनाई हैं । किहर सूरत कलेजे से लगा लेनेके काबिलहै ॥ मेरा दिलके शीसेकी तरह पत्थर पेदे मारा । मैं कहता रह गया जालिम मेरा दिल है मेरा दिल है ॥ जो दिल मचला सनमको देखकर हम न्नयों बोल उठी । ठहर ओ बे अदब ये बजम गुस्ताखोंके काबिलहै ॥ जो देखा अक्श आइने में अपना बोले झुन्झुलाकर । अरे तू कौन है हट सामने से क्यूं मुकाबिल है ॥ मेरी तुरबतमें एक ठोकर लगाई और यह फरमाया । कयामत आगई उठ्ठो न वाले कैसा गाफिलहै ॥ हजारों दिल मसलके पांऊंमे झुंझुलाकेयों बोले । पहचानो तुम्हारा इन

दीलोंमें कौनसा दिलहै ॥ सवाले वोसेपर क्यूं झिड़कियां देतेहो "अकबर" को । फलातन हर कलाम अल्लाहमे अजबहेरे सायलहै ॥

॥ गजल ॥ ३१ ॥

मुनसफी दुनियांसे सारी उठगई । अय बुतो ईमानदारी उठगई॥ दिलसे वो वेइख्तियारी उठगई।अब तमन्नाही तुह्मारी उठगई॥ क्या दुश्मन हो गया सारा जहां । हाय रिसमे दोस्तदारी उठगई ॥ रहगये लाखोंकलेजा थामकर । आंख जिस जानिब तुह्मारी उठगई ॥ जब हुआ सिजिदेमे उस बुतका खयाल । खुद बखुद गरदन हमारी उठगई ॥ किससे देखिये " दाग " चश्मे दोस्ती । उठ गई यारोंसे यारी उठगई ॥

॥ गज़ल ॥ ३२ ॥

ये कैसे वाल बिखरे हैं यह सूरत क्यूं बनी गमकी । तुह्मारे दुश्मनों को क्या पड़ी है मेरे मातमकी ॥ मुझे इसमें ही आता है नमक छिड़को नमक छिड़को । कसम लेल्लो नहीं आदत मेरे जखमोंको मल्हमकी ॥ शिकायत किससे क्या कीजे हाय क्या उलटा जमानाहै । बढाया प्यार जब हमने मोहब्बत आपने कमकी ॥ न मिलियेगा न मिलियेगा कोई हम मर न जायेंगे । खुदाका शुक्र है पहले मोहब्बत आपने कमकी ॥ खुदा जाने तुम्हें भी रहम आता है गरीबोंपर । पसि दरदे भी तो मोहलत नहीं मिलती कोई दमकी ॥ कहा जाता है थम थम करचलो ऐसी भी क्याजल्दी । खुदा रक्खे तुह्मी तुमहो नजर पडती हैं आलमकी ॥

गजल ॥ ३३ ॥

ले गए दिलको हया नाजो अदासे पहले । मार डाला मुझे वे मौत कजासे पहले ॥ क्यों न हो जाव सजा मुझको सजासे पहले । शरबते वस्ल पिला दे जो दवासे पहले ॥ फुरकते यार का सदमा नहीं देखाजाता । मौत आतीहै तो आजाय कजासे पहले ॥ रोजकरतेहै वह मरने का तकाजा मुझपर । क्या गला घोंटके मरजाऊं कजा से पहले

॥ हाथ पहुंचा भी न था जुल्फ गिरह गीर तलक । हथकड़ी डाल्द जालिमने खतासे पहले ॥ताकने भी न दिया ठीक कि लगता दिलपर कर गया तीर खता हाय खतासे पहले ॥ अबतो दिल खोलके सीने लगा लेताहूं । मुझसे खुल जाते हैं वह बन्दे कबा से पहले ॥ उनके पापोश मुने दुज्द हिनाके ताने । हाथ वह धोये तो खून मंहदासे पहले ॥ क्या कयामत है कि तुम चाल कयामतकी चले । हश्र वरपा करे रोज जुजासे पहले ॥ झिडकियां बादको दीजो तुम्हें आरिज की कसम । मांगता क्या है यह पूछोतो गदासे पहले । ताहिरे तोबा शिकन छोड़ बुतोंकी पूजा । अरे कुछ कहके भी आया है खुदासे पहले ॥

गजल ॥ ३४ ॥

तिरछी नजर की तूने बरछी लगा के मारा । जलवेका मुन्त जिरथा झपकी दिखाके मारा ॥ ख्वाबे अदम मे हम तो चुपचाप सो रहेथे । यह किसकी शोखियांथी किसने जगा के मारा ॥ अय राजदां बतादे यह भेदहै तो क्या है । क्यो मारकर जिलाया और क्यों जिलाके मारा ॥ यह शोखियां है किसकी चलताहै कौन चौल । किसने हंसाके मारा किसने रुलाके मारा ॥ मंसूरने अनाहक हक बातपर किया था । जब हक पै थातो नाहक सूली चढाके मारा ॥ शद्दादने बनाई जिनत तो क्या बनाई । दोजख मे उस को कैसा जिलाके मारा ॥ फरजन्द नूह हक से नाहक हुआ जो ताहर । फिर देखलो कि कैसा उसको डुबाके मारा ॥

गजल ॥ ३५ ॥

किसी माशूक कमसिनकी शरारत होने वाली है । हमारे दिलपै अब गमकी हुकूमत होने वाली है ॥ किसी से हम से दर परदह मोहब्बत होने वाली है । हमारे इश्क की दुनियां मे शोहरत होने वाली

दम से बिस्मिलकी शहादत होने वाली है ॥ चलो ना चाल अठिलाके तुम अब दरबार मकतलमे । तुम्हारी चालपे बरपा कयामत होने वाली है ॥ चढ़ाकर आशतीं मकतल मे बोला यों बुत काफिर । किसीको आज इन हाथों से जन्नत होने वाली है ॥

गजल ॥ ३६ ॥

न दिलजोई कि बातें हैं नसमझाने की बातें है । जो बाते है बुते काफिर बस तडफाने की बातें हैं ॥ हमारे जीतेजी साहब रहो तुम पास गैरोंके । हम अपनी आंखसे देखैं ये मर जाने की बातें है ॥ सितम है एक बोसेपर हजारों गालियां देना । जो चाहो जान मन कहलो दिल आजाने की बातें है । ये हम से चश्म रूये औ गैरसे प्यारकी बातें । यही तो जानमन दिल मे मलाल आनेकी बातें हैं । तरफसानी रकीबों से अरफसानी मेरे आगे । यही तो जानमन दिलको बस तड़फाने की बाते हैं ॥

गजल ॥ ३७ ॥

जो मेरी होनी थी हालत हो गई । सब इसी दिलकी बदौलत हो गई॥ खूब रुसवाये जमानाहो लिये । दिल लगाने की नसीहत होगई ॥ अब कहां पहले से वह राजो नयाज । मिल गये साहब सलामत होगई ॥ खाते खाते गम किसीके इश्क में । हमको गमखाने कि आदत होगई ॥ दफन करके सब अजीजोंने कहा । अब मरीजे गमको सेहत होगई ॥

गजल ॥ ३८ ॥

दिले नदांको हम समुझाये जांयगे । हिज्रमे जिनके जानचली है न वह अहेले सितम बुलावाये जांयगे ॥

सख्त पत्थरसे जीयादह है तेरा दिल कातिल । हुई आशान नाजो बाजकी मुश्किल कातिल ॥ उर्फ बेदर्द सितम पेश वो जाहिल कातिल ॥ नाकिया जिबह गया छोडके बिसमिल कातिल ॥ दहने जख्मे पुकारा

किया कातिल कातिल । किसे जखमे जिगर के यह चरके दिखाये जाय गे ॥ १ ॥ दिले नादां को ॥

गजल ॥ ३९. ॥

तोरी छल बलहै प्यारी तोरी कलबल है न्यारी ॥ करो बातें न मोसे सांवरियां जान । तेरी जुल्फ़े हैं काली । तेरे गालो पै लाली । तेरे नैना कीलागे कटरिया जान । जावो जावो नादान मोह न बनावो जान । नैनोसे नैना मिलावो गोरीजान । एजी छोडोजी हाथ करो औरों से घात । नही होगी यह बात । ऐजी वाह. वाह, वाह, वाह, वाह, ॥१॥ तोरी ॥

गजल ॥ ४० ॥

जावो जी जावो किस नादान को फुसलाने आये । किसको वह काने आये किसको वहलाने आये । बातो मे लाने आये घातो में पाने आये । पूरेनादान अपनी नादानी दिखलाने आये ॥ जावोजी ॥ आगे उस्तादके उस्तादी करके आना कैसा । दरिया मे डालेन दो जाम पानी जाना कैसा । फिरते हो घेरेघेरे करते हो हेरे फेरे।आते हो मेरे डेरे जाते हो बनके चेरे । जाये वन्दे ऐसे फन्दे गोरखधन्धे देखे चन्दे। क्याहम को सिखलाने आये ॥ १ ॥ जावोजी ॥

जो पिया आये ना मोसे सहा दुख जायना । जिया जाये जराये सताये हिया ॥ पिया आयेना ॥ मुझको मालूम न था पहले लगाना दिल का । मेरे पहेलूमें हमेशा था ठिकाना दिलका । याद आता है खुशीका वह जमाना दिलका ॥ अब तो मुशकिल है मेरे काबूमे आना दिलका । जानले जाता है कमबख्त यह जाना दिलका । सुख पायेना जायेना कुछ भायेना ॥ १ ॥ पिया॥

तुम्हे दूंगा मैं बाकी खबरिया जान मुझे देदो ये प्यारी सुन्दरी जान प्यारी चंचल हय न्यारी छल वल ।अय जारे मुवे चल चलन गुलामका

कामरूं । अकसर काम करूंगा खुश अंजाम करूंगा । बस कुछ काम नही जा चल चोर कहीका चुपन काम कहीं तूं वदनाम नहीं तूं हैं नोकर वरतर अफसर तुझपर वद्तर अजखर हमपर ॥ १ ॥ तुम्हे ॥

काफी ॥

छोडो छोडो मोरी मिरुकि वहियां दुखत है नरम कलैयां ॥ कैसे तुम कैसे तुम निडर निगम डगर चलत मग रोंकत पडैयां ॥ १ ॥ छोडो ॥ छोडो छोडो हे काज तुम्हें आवे नहिं लाज कंसको कठिन राज भूलोजाय भूलोजाय सब चतुरैयां ॥ २ ॥

काफी

कैसी चाल चतल मस्तानी छोटी न जानो वडी है सयानी । येरी जानी येरी जानी क्यो न हो मस्तानी तेरे योवन हैं दिवानी ॥

काफी

चलो हटो छोडो डगर कान्ह ठठोली कर रार क्यों मचाई । घर जावो घर जावो नंदके कन्हाई मोसे करो न ढिठाई ॥ १ ॥ वाट चलन मोरी वहियां क्यों गहतुहो । मांगत दान दधि नाहीं जानो नाहीं जानो कंसको राज और पकड़ बुलावे ॥ २ ॥ कहत ललन तुम्हे लाज नहिं आवे ॥ वन छेंडत सखिन तुम चले जावो चले जावो अपने धाम केह देत सुमझाई ॥ ३ ॥ चलो हटो ॥

सोहनी

छवि दिखलाय जा वांके सवलिया ध्यान लगा मोरा तोसे । तिरछी चितवन नैन रसीले चाल चलत मत वालीरे ॥ काहरी करूं कित जाऊं सखीरीना माने जिया मोरारे ॥ १ ॥

पील्

छाय रहे कौने देश बिराने । तुम विनना मोहिं चैन वेदरदी ॥ लिख पतियां हम बहोत पठाईरे । तुम मोरी सुध ना लईरे वेदरदी ॥ विरहा

जिया मारे डारे नित दिनेर । दूजे सतावत मैन बेदरदी ॥ जो गत .. डसासो हमरीरे । अब मोरे प्राण न चैन बेदरदी ॥ १ ॥

सोहनी ॥

येरी यशोदा तोसे लडूंगी लड़ाई । तेरे कुंवरने तो धूम मचाई ॥ काहूके सरसे मटकिया उतारे काहूके सिरसे गगर ढरकाई ॥ . . तोको यह छेड़ सिखाई लाग गले मेरी चोली मसकाई ॥ एक ना . मेरी रामदुहाई कैसे बसेंगी बिन्दा बृजमें लुगाई ॥ बीच डगर . कीन्हीं बरजोरी चांद हंसत सब बृजकी लुगाई ॥

सोहनी ॥

आवो गले लग जावो बिहारी । काहेको तुमने या. बिसारी । आठो पहर ध्यानसे मेरे नाहीं भूलतहै याद तुम्हारी ॥ १ ॥ विनती करतहों पैयां पड़त हों करदो खता अब माफ हमारी ॥ २ ॥ ऐसा पिया की अरज यही है अब तो लेवो खबरिया हमारी ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ १ ॥

घर तजौं बन तजौं नागर नगर तजौं बंशीवटतट तजौं काहू पै न लजैहौं ॥ देह तजो गेह तजो नेह कहो कैसे तजों, आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयो है लोक कहत मोको बावरी कहेते मैं काहूना बरजत हों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया तजों, पै कन्हैयों नहिं तजहों ॥

कवित्त ॥ २॥

तौंक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो, गाढ़े बंधन बंधावो औ खिचावो काची खाल सों ॥ विष ले पिलावो तापै मूठ भी चलाओ, मांझधार में बहाओ बांध पत्थर कमाल सों ॥ बिच्छू ले बिछावो तापै मोहि लै सुतावो फेर, आग भी लगावो बांध कापर दुशाल सों ॥ गिरि से गिरावो काली नागसे डसावो हाहा, प्रीत न छुडावो गिरधारी नंदलालसों॥

कवित्त ॥ ३ ॥

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै बृंदावन विथिन विहारी बंसीवट पै ॥ छिति पै छत्रानन पै छाजत छत्रानन पै ललीत लतानन पै लाडिली की लट पै ॥ कहै पद्माकर अखंड रास मंडल पै मंडत उमंड महा कालिंदी के तट पै ॥ कैसी छवि छाई आज सरद जुन्हाई आली जैसी छवि छाई या कन्हाई के मुकट पै ॥

कवित्त ॥ ४ ॥

बृंदावन धामानीको व्रज को विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम नीको मंदि अनंद के ॥ कालीदह न्हान नीको यमुना को नीर नीको रेणुका को खान नीको स्वादनी को कंद को ॥ राधाकृष्ण कुंड नीको संतन को संग नीको गोर श्याम रंग नीको अंग युग चंद को ॥ नील पीत पट नीको बंसीवट तट नीको ललित किशोरी नीकी नट नीको नंद को ॥

गजल

लगा है इश्क तुम सेती निबाहोगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुसन चश्मोंके प्यालेभर पिलाओगे तो क्या होगा । चमन विच आनकर मुखड़ा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ मुझे है चाह ॥ भरम धर्ता है कुल आलम हंसाओगे तो क्या होगा । सजन तुम विन तडफताजी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मुझे है चाह ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुरा कर दिल परायेका दिलाओगे तो क्या होगा ॥ जिगरके दर्दकी दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ मुझे है ॥ रसिक गोविन्द सीनेसे लगाओगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥

कवित्त ॥ ५ ॥

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अङ्ग, कौन काज महाराज त्रिया वेष कीयो है ॥ नाकहुमें नत्थ हस्थ चूरिनभरे हैं लाल, कानन में

कर्ण फूल वेंदी भाल दीयो है ॥ चन्द्रहार उरराजे चम्पकली कण्ठ साजे, मुकुट उतार ओढ़ चूनरी कोलियो है ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख खिल खिल हंस राधे पट मुख दीयो है ॥

कवित्त ॥ ६ ॥

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो, धाय क मारी नारी निठुर मुरारि हैं ॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मार अन मिल हूं तो मारी जो मिलि है ताहि मारि हैं ॥ सुनरी ए चेरी तेरी सौंह मै कहत वे तो, हरि सरस नयन आंसहू न ढारिहै ॥ वडे हैं शिकारी पर इन्हें न संभारी नारी, मारवे को नवल कन्हैय तलवारि है ॥

कवित्त ॥ ७ ॥

याही कुंज तर वह गुंजत भंवर भीर याही कुंज तर अव गिरत धुनत हैं ॥ याही रसना ते करी रसकी रसीली वात, याही रसना ते अव गुणन गनत हैं ॥ आलम विहारी विन हृदय अचेत भये, एहो दई हित कहे कैसे कै वनत है ॥ जेही कान्ह नयन के तारे हुते निशिदिन तेही कान्ह कानन कहानी सी सुनत हैं ॥

कवित्त ॥ ८ ॥

आयो आयो भयो ऊधो अव ब्रज मंडलमे, रागमे कुराय योग रीतको सुनायो है ॥ झोली झंडा गुदडी ओभस्म मुद्रा काननमें, हाथनमें खप्पर ये स्वांगले दिखायो है॥ समय नियम ध्यान धारणा दृढासन हो, ब्रह्मको प्रकाश रसरास दरसायो है ॥ कूवरी पै पढ आयो वेदको भुलाय आयो, रथ चढ आयो अनरथ गढ लायो है ॥

कवित्त ॥ ९ ॥

योगी तजे जग हम जग योग दोऊ तजे, योगी लावे छार हम रहके मटि हैं ॥ योगी वेधें कान हम हिये अरुप्राणा वेधें, योगी करै

नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं॥योगी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे, हमारे सिर केश बहु योगी शिर जटि है ॥ जानके अजान आज ये कहा भये ऊधोजी, योगीकी जुगत सो वियोगी कहा घटि है ॥

कवित्त ॥ १० ॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन, आठो यामऊधो हमैं श्याम ही सो काम है ॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये आंधे, कीसी लाकडी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्याम ही है प्राणपति श्याम सुखदाई सो भलाई शोभाधाम हैं ॥ ऊधो तुम भये बौरे पाती लैकै आये दौरे योग कहां राखें यहां रोम रोम श्याम है ॥

कवित्त ॥ ११ ॥

योग देन गयो हौं वियोग वारि वारिधिमें, बूडत बच्यो हौं नाथनारी नैन यूं बहे ॥ गङ्गा हू सहस्र धारा अधिक सुधारा जान, बरखा न होय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल भूमिन समाये कहूं वारिधि में, मुनी पै न अच्यो जात कान खोल हौं कहे ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बांधो नाहिं वटके वटूक पात सांवले भले रहे ॥

कवित्त ॥ १२ ॥

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीन वन्धु, दीनं ह्वै कै द्रुपद दुलारी यों पुकारी है ॥ आपनो सवल छांड़ ठाढ़े पति पारथ से, भीम महा भीम ग्रीवा नीचे कर डारी है ॥ अंवर लौं अंवर पहाड कीनो शेष कवि भीषम करण द्रोण सभी यों विचारी है ॥ सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि, सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥

कवित्त ॥ १३ ॥

बांसुरी बजैतो व्रज हम न वसैंगी वीर बांसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये ॥ जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये ॥ तानके तिरीछे बान लागत हैं मोहि आन

श्रवणन सुनत जाय बनमे बसीजिये ॥ वंशीको छोड़ो श्याम विनय करत व्रजकी वाग ऐसी कीनी। सूर प्रभु ऐसी हूं न कीजिये ॥

कवित्त ॥ १४ ॥

जा दिनते वंशी अवतंसी यहि गोकुलमे ता दिनते कीन्हो श्याम अधर निवासुरी ॥ कुंज कुंज डोलैं याहि संगमो किलोल किये लीन्हो सौति राग भाग सुखसों विलासुरी ॥ वंशीदीन दीन है रहीहैं हम मोहन विन एक छिन पावत न बोलियो सुपासुरी ॥ बांसुरी सुनत नैन आंसु आय जात पीर पांसुरी समात औ पिरात गांसु बांसुरी ॥

कवित्त ॥ १५ ॥

नीर विन मीन दुखी क्षीर विन शिशु जैसे पीरकी औषध विन कैसे रह्यो जातहै ॥ चातक ज्यों स्वाति बूंद चंदको चकोर जैसे चंदन की चाहकर सर्प अकुलात है ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामिनीको कंत चाहे ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहातहै ॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे तहां नेम कैसे सुंदर कहत यह प्रेमहीकी वात है ॥

भजन ॥ १ ॥

हंस पूछैं जनकपुर की नार नाथ कैसे गजके फंद छुड़ाये । तिहारे यही अचरज मन भाये ॥ गज औ ग्राह लरै जलभीतर दारुण द्वन्द्व मचाये । गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड़ छोड़ उठ धाये ॥ तिहारे यही ॥ १ ॥ भिलनी के वेर सुदामाके तन्दुल रुचि रुचि भोग लगाये। दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर पाये ॥ तिहारे यही ॥ २ ॥ इन्द्रने कोप कियो व्रज ऊपर छिनमे वारि वहाये । गोवर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इन्द्रको मान घटाये ॥ तिहारे यही ॥ ३ ॥ अर्जुन के स्वारथ रथ हांक्यो महभारतमें गाये । भारत मे भरुही के अंडा घंटा तोड़ बचाये ॥ तिहारे ॥ ४ ॥ ले प्रहलाद खंभ से बांध्यो राजन त्रास दिखाये । जन अपने की प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये ॥ तिहारे

यही ॥ ५ ॥ छोरे न छूटै सियाजी को कंगना कैसे चाप चढाये । कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ तिहारे यही ॥ ६ ॥ जंह जंह भीर परी संतन पर तंह तंह होत सहाये । तुलसीदास सेवक रघुनन्दन आनंद मङ्गल गाये ॥ तिहारे यही ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ १६ ॥

द्वारकाके विच पांसा खेलैं हरि रुकमिनि वाही समै भीर जानी पूर्ण भगवंतजी ॥ डारेदल श्यामजीने कह्यो मुख अर्थ खर्व रुकमिनि पूछे यह दाव क्याहै कंतजी ॥ द्रौपदी है भक्त प्यारी दुशासन दुख दीन भारी समै भीर जान देतहों पटंतरी ॥ कहै मयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो वढाये पीर सहै नाहि संतकी ॥

कवित्त ॥ १७ ॥

संतन सहाय सदाशंख चक्र धारे गदा पद्म लिये हाथ प्रभु पूरण गोपालजू ॥ भईहों निरास साथरहा है न कोई मेरे पाऊं पर्रों नाथहरि दीननदयालजू॥ पाऊं दुखभारी हामुरारी सुनो विनै मेरी केशो गिरधारी लज्जा राखो नंदलालजू ॥ कहै मयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीरतो वढाये कहूं पीरे कहू लालजू ॥

कवित्त ॥ १८ ॥

फूलन चंदोआ तने फूलन फरश विछे फूलन की सेज औ फूलन छवि छै रही ॥ फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल फूलन को टीको मांग फूलन भरे रही ॥ फूलनके वस्त्र औ शृंगार सव फूलन के विक्रमें मृगेश मन उपमा वने रही ॥ फूली फुलवारी जामें वैठी प्राणप्यारी आज देखत वसन्त या वसन्त ऋतु है रही ॥

कवित्त ॥ १९ ॥

कोउ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूं ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैंतो, लीनो है

लोक लोकन ते न्यारी हूं ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरुजन जाओ. जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूं ॥ वृन्दावन वारी गिरधारी के मुकुट वारी, पीत पट वारी वाकी मूरति पै वारी हूं ॥

कवित्त ॥ २० ॥

टेढी कलाचंद्रकी सकल जग वन्दित है, टेढी तान मोहत है मन्मथके जालकी ॥ टेढी कमान बान लागतही बेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढी करवालकी ॥ टेढी लकड़ीको कोऊ वन मे न काटि सकै टेढी काशीपुरी जामें शंका नहीं काल की ॥ टेढ़ी जरकसभाल टेढी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढी मूरत गोपालकी ॥

कवित्त ॥ २१ ॥

टेढे सुन्दर नयन टेढे मुख कहत बैन टेढो मुकुट बात टेढी कछु कह गयो ॥ टेढे घुंघुरारे बाल टेढी गल फूल माल टेढो बुलाक मेरे चित्तमें वसै गयो ॥ टेढे पग ऊपर नूपुर झनकार करै बांसुरी बजाय मेरे चित्तको चुरै गयो ॥ ऐसी तेरी टेढी को ध्यान धरै मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लै गयो ॥

कवित्त ॥ २२ ॥

सुन्दर सुजान कान्ह सुन्दरही पगिया शीश सुंदरसे नयन अधर सुंदर बांसुरियां । सुंदर भ्रुकुटी कमान सुंदर पलकनके बान सुंदर मुसकान मंद चितवन चित हरिया ॥ सुंदर बाजू विराजे सुंदर वनमाल साजैं सुंदर गल हार मोती जामा जो केशरिया । सुंदर कंकन अमोल सुंदर कुंडल कपोल सुंदर नारायण बोल दीन दरद हरिया ॥

लावनी ॥

उठो अब मान तजो गोरी । रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदासों तुम मनकी भोरी । कहूं मैं शपथ खाय तोरी ॥

दोहा ॥ औरन के बहकावते, करि बैठत हो रोप ॥ झूठ सांच

परखत नही, व्रथा देतहो दोष ॥ यही मोहि अचरज है भारी ॥उठो॥ तनक हंस चितवो सुकुमारी ॥ शशि मुख पै हों वलिहारी॥ दोहा ॥ अपनी ओर निहारिके, देहु, अभय वरदान ॥ क्षमा करो सब चूक अब, जो कछु भई अजान ॥ इतनी विनती मानों मोरी ॥ उठो ॥ तिहारे गुण नित प्रति गाऊं। विना आज्ञा न कहूं जाऊं ॥ दोहा ॥ ताहूपै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी लेत चढ़ाय ॥ जोरा वर सों निवलकी, काहू विधि न वसाय ॥ हारे हू हार जीते हूंहार ॥ उठो ॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी। सोई अति कपटी व्रजनारी ॥ ॥ दोहा ॥ हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात ॥

नारायण तुमने करी खरी न्यावकी वात ॥ भले पर डंड, बुरे पै प्यार ॥ उठो ॥

कवित्त ॥ २३ ॥

हाहारी हठीली हठ छांडदे छवीली आली भुले हू कान्ह आज पान हू न खात हे ॥ तेरी चितवन के चाहत गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोहींमें वसात ॥ है मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तूं अटारी वे ठाढे वनवारी अव देर क्यों लगातहै ॥ कर कर श्रृंगार तू उतारित है वार वार तू तो इतरात उत रात वीती जात हैं ॥

कवित्त ॥ २४ ॥

अत ते न आयो याही गांवरे को जायो माई वापरी जिवायो प्याय दूध दधि वारे को ॥ सोतो रसखान तज वैठो पहिचान जान लोचन नचवता नचैया द्वार द्वारेको ॥ भैयाकी सौ सोच कछु मटकी उतारे कोन गोरसके ढारेको न चीर चीर डारेको ॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे गपार वगर हमारे को ॥

लावनी ॥

सांवरे शरणागत तेरी। इंद्रने आय व्रज घेरी ॥ देखोजी यह वादर मिल आये। दामिनी दमकत भरलाये ॥ मेघ भरलोका वरसावें ॥

भाग अब कहो कितको जावें ॥ दो० ॥ कहोजी अब कैसे बने इन्द्रसों वैर । कोप्यो है पृथ्वीको पालक होगी किस विधि खैर जुगत हम वहुतेरी हेरी ॥ सांवरे ॥ १ ॥ कही हम तुम्हरी मानी । भेंट गिरवर की मन ठानी ॥ इन्द्र की झूंठ सभी जानी । लखी हम तुम्हरी नादानी ॥ दो० ॥ गोकुल राजा नन्दजू घर कुंवर कन्हाय । वृथा वचन अब होत तिहारे जनकी करो सहाय यतन मे नहिं लाओ देरी ॥ सांवरे ॥ २ ॥ कहत हम तुम्हरे गु भारी । पूतना वालकपन मारी ॥ दुष्टनी माया विस्तारी । वनी अ सुंदर नारी ॥ दो० ॥ कुचमें जहर लगाय के दियो कृष्ण मुख मा एक मास को रूप तिहारो जवित छोड़ी नाहिं ॥ मार कर मारगमे ॥ सांवरे ॥ ३ ॥ जों निर्मल जल यमुना को कीयो । तुरतहि दावानल पीयो ॥ अभय व्रजवासिन को कर दीयो । खैंच कर मन सबको ह लीयो ॥ दो० ॥ व्रज तेरीको सांवरे करै इन्द्र वेहाल । अबके सहा करो नन्दनन्दन करुणासिंध गोपाल ॥ शरण यह व्रजमंडल तेरी । सांवरे ॥ ४ ॥ अधर हरि आपन मुस्काये । वचन यह गुस्वते व कहो तुम यहां कैसे आये । सभी मिल गिरिवर पै धाये ॥ दो० । नख पर गिरवर धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्धन के शीश पर दिये सुदर्शन मेल ॥ अधर धर बंसी को टेरी ॥ सांवरे ॥ ५ ॥ सोहै चीं पचरंगी चीरा । लगे मुख पानन को वीरा ॥ गले मोतिनकि मा हीरा । सोहैं कटि पीतांवर पीरा ॥ दो० ॥ सात कोस के वीच में गोवर्ध विस्तार । सात वर्षका रूप हरीको लीनो पुष्प समान ॥ असीशां देरह व्रज सारी ॥ सांवरे ॥ ६ ॥ इन्द्र कर कोप कोप गरजे । नहीं गिरवर पर वरसे ॥ दामिनी घनघन में चमके । कि मूसलधार फी बरसे ॥ दो० ॥ वर्ष वर्ष के हारयो सुरपति तव जान्यो जगदीश । दोनो हाथ पसारके धर्यो चरण में शीश ॥ मेरी बुधि मायाने फेरी ॥ सांवरे ॥ ७ ॥ अचंभव याको कछु नाहीं । इन्द्र तो लाख कोटि ताईं ॥

बनावत पल छिनके माहीं । विगारत देरकछु नाहीं ॥ दो०॥ उत्पति परलै जगतकी बनवारीको खेल । गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावें इन्द्र विचारो कौन॥ नामते काटो यम बेरी ॥ सांवरे ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ २५ ॥

धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके नंदके ललैया मोरे अंगनामें आउरे ॥ दही दूध बहुत प्याऊं माखन घनो सो लाऊं मीठीमीठी तान नेक गायकै सुनाउरे ॥ नंदजूके कीशोर मेरे चित्तहूके चोर नेकतो अधर धर बांसुरी बजाउरे ॥ या छवि ऊपर कोट काम वारि डारौं दया सखी प्रेमवश हियमें समाउरे ॥

कवित्त ॥ २६ ॥

आया कर सांवरे इन गलियों में रूम झून सांझ और सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर ॥ जायाकर यमुना के तट रोज रोज प्यारे बांसुरी अनोखी इक लहजा तो सुनाया कर ॥ कादर कहै छायाकर नयनों विच मेरे आय रूखा सुखा थार हम गरीबों का पाया कर ॥ खाय कर माखन मलाई दधि लूट लूट कर हाव भाव मेरे हियमें समाया कर ॥

कवित्त ॥ २७ ॥

चीरा की चटक औ लटक नव कुंडल की भौंहकी मटक मोहि आंखिन दिखाउरे ॥ जा दिना सुजान गुण रूप के निधान कान्ह बांसुरी बजाय तनु तपन सिराउरे ॥ एहो बनवारी बलिहारी जाऊं तेरी आज मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउरे ॥ नंदके किशोर चित्त चोर मोर पंखवारे सांवरे पियारे इत आउरे ॥

कवित्त ॥ २८ ॥

कोऊ कहै मेरे आगे नेक तू नाच लाला लोन मिली छाछ दूंगी आछीसी धुंगार के ॥ भोर भयो वाके गयो वासों मेरो वैर भयो धींगी सी गुजरियाने आन लियो धाय के ॥ खिरका सब तोर डारे वासन सब फोर डारे दूध ढकाय दियो बंदरा बुलाय के ॥ नंददरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी सूर श्याम उलभा लियो शीश पै चढाय

कवित्त ॥ २९ ॥

जलकी न घट भरैं मगकी न पग धरै घरकी न कछु करैं बैठी सांसुरी ॥ एकै सुन लोट गई एकै लोट पोट भई एकन के दृगन आवे आंसुरी ॥ कहै रस नायक सो व्रज वनितन वीथ व.धिक हाय हुई कुल हांसुरी ॥ करिये उपाय वांस डारिये कटाय नाहिं गो वांस नाहिं वाजै फेरि वांसुरी ॥

पूर्वी

जात नगरिया मै भूली डगरिया अव सुधिलेव मोरे रामरे ॥ तो गठरी भरमकी भारी दुजे भई मोहि शामरे । ठग वट पार डगरि में लागै ईश्वर आवो तो कामरे ॥ मोरारी वोलैं कोयलिया कूकें पियत मोरा जामरे । मधुकारे माता पपिहा जो वोले लेत पिया तोर नामरे ॥ गहरी नदिया अगम वहुत है नामोरी गांठमें दामरे । गुनकी नैया पार लगावो तुम्हरा मुहम्मद नामरे ॥ १ ॥

ठूमरी ॥

कोयलिया कूक सुनावे । सखीरी मोंहि विरहा सतावे ॥ निसु अंधियारी कारी बिजुली चमक जियरा डर पावे ॥ १ ॥ इतनी विनती मोरी उनसे कहियो जाय । तुम विन जिया मोरा निकसो जावै । उनके योवन पर वारी जाऊं सैयां मोरा घरना आवे ॥ २ ॥

श्रीहरिः ।

छन्दोबद्ध

जयपुर विहार ।

जिसे

"छन्दोबद्ध अँगरेजी-हिन्दी वल्लभकोष" आदि के रचयिता,

सासनी निवासी, सनाढ्यवंशोद्भव

पण्डित व्रजवल्लभ मिश्र

(उपनाम वल्लभ कवि)

ने

निर्माण किया ।

ऐप्रिल, सन् १९०२ ई० ।

☞ अशुद्धपत्र अन्त में देखिये । मूल्य ।) चार आने

ग्रन्थ रचयिता

पं० ब्रजवल्लभ मिश्र—उपनाम वल्लभ कवि

सासिनो निवासी।

॥ श्रीहरिः ॥

समर्पण

श्रीमहामान्यवर सनाढ्यवंशावतंस, विविध-विद्या-विशारद, बहुगुणसम्पन्न, पण्डिताग्रगण्य, विद्वज्जनमण्डलीमण्डित, डूगलास-निवासी, पण्डित श्रीनथारामजी (प्रेमी) महोदय, सहकारी डिपुटी इन्स्पेक्टर मदारिस, ज़िला अलीगढ, के पदाम्बुजों में करजोड़ सविनय निवेदनमिदम् :—

प्रेमी !

श्रीमान् ने निज विद्यानुरागिता, काव्यरसिकता, नम्रता, शिष्टता, सभ्यता, मृदुभाषण और शीलस्वभावादि सद्गुणजनित अतुल और अलौकिक प्रेम-शीलता से सर्वसाधारण को मोह लिया और यथा गुण तथा नाम "प्रेमी" पाकर मुझे भी निज प्रेमपात्र बना परम अनुग्रहीत किया है। आज मैं आपके उस अतुलनीय प्रेम का अकिञ्चन उपहार "छन्दोबद्ध जयपुर विहार" नामक इस क्षुद्र पुस्तक के कतिपय पत्र श्रीमान् के कोमल करकमलों में प्रेम से समर्पित करता हूं। पत्रपुष्पातिरिक्त मेरे पास और है ही क्या, जो अब और आगे आप बडों के समीप भेंट करूं। ये पत्र भले हैं वा बुरे, आप ही के तो हैं, अतः मुझ निज प्रेमी के तुच्छ प्रेमोपहार को प्रेम से अपनाइये।

भवदीय प्रेमक्रीत,

'वल्लभ'.

श्रीहरिः।

भूमिका।

यह साधारण नियम है कि अद्भुत, दर्शनीय और सुन्दर वस्तु या नगर के देखने की इच्छा प्रायः सब को ही हुआ करती है। सवाई जयपुर अपनी बनावट, सजावट और दिखावटमें, अपने सडक, बाज़ार और गलियोंको समकोन बनाती हुई एक सीध समता और सुन्दरतामें, दुकान, मकान और किवाडोंके रङ्ग, ढङ्ग की एकता में अनूठा और अनूप होनेसे दर्शनीय है। इसके आस पास सुरस जलयुक्त टैवी झरनोंकी छवि, कृत्रिम तडाग, बागोंकी बहार और हरियाली, पहाडो की घटा की छटा; घाट का ठाट, महलों की रचना और शोभा, अद्भुत और मनोहर वस्तुओं की शिल्प, गैस और जलकल कार्य्यालयादि देखने के योग्य होने से प्रायः प्रतिदिन अनेक यूरोपियन और भारतवर्षीय दर्शकगण वहां आया जाया करते हैं।

यद्यपि इसकी कविता काव्य के सब गुणों से हीन है तथापि इसका मुझे शोच नहीं, क्योंकि "छन्दोबद्ध जयपुरविहार" नामक यह क्षुद्र ग्रन्थ मैंने अपनी कविता प्रगट और कवियों को प्रसन्न करने को नहीं लिखा है किन्तु उपर्युक्त दर्शनीय नगर के दर्शकों के हितार्थ संकेतमात्र रूप से प्रदर्शक या पथदर्शक का कार्य्य देनेके अभिप्रायसे लिखा है। जिन महाशयों के चित्त में जयपुर देखने की लालसा लगी रहती है परन्तु अवकाशाभावात् वहां जा नहीं सक्ते, वे इसे एक वार पढकरके देखने का सा आनन्द पा सक्ते है! दर्शकों को चाहिये कि वे किसी मेले की मिती पर जयपुर जाते, उसके भिन्न २ दर्शनीय स्थान देखते, या सुन्दर वस्तु क्रय करते समय इस पुस्तक को ओर भी निहारलें।

मैने यह पुस्तक अति संक्षेप मे इस हेतु लिखी है कि पाठक का चित्त पढने मे व्यथित न हो जावे।

मै अपने मित्रवर विविध-विद्या-विशारद श्रीयुत् माननीय पं० जगन्नाथ चतुर्वेदी, वैद्यराजजी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने कृपाकर इस पुस्तक के शोधने में मुझे सहायता दी है।

ब्रजवल्लभ मिश्र।

EDITED AND PUBLISHED BY THE AUTHOR,
13, NARAYAN PRASAD'S LANE, BARABAZAR, CALCUTTA

PRINTED BY RASIK LAL PAN,
AT THE NARAYAN PRESS, 75, COTTON STREET, CALCUTTA

श्रीहरिः

वल्लभ वंश वर्णन—दोहा।

पास हाथरस सासिनी, जाट सुदृढ गढ़ जान।
पहुपसिंह राजा भए, जानें सकल जहान॥
जल मीठौ, शीतल बडौ, पाचक हलकौ जान।
है जु स्वास्थ्यकर सबन कौ, अस न लखौ कहुं आन॥
भारद्वाजो गोत्र के, इहि मधि नगर ललाम।
वल्लभ पुरुषा बास किय, मिश्र बंश अभिराम॥
उदयराम जी कौ उदय, जानों जाति महान।
तिनके वंशीधर सुअन, गुनआकर मतिमान॥
वैद्य, पुराणी, ज्योतिषी, पिता, पितामह जान।
पुरजन,परिजन,जातिजन, कियौ बडौ सम्मान॥
पिता फारसी हू पढे, जिहि साधे भल काज।
सुतन पढायौ हित सहित, भाषा इँगलिश राज॥
वंशी वंशीधरहि की, सबसूं बजी अलग्ग।
पिरिवन्धी, परपंच में, नहिं पाछें का अग्ग॥
विद्या ही में रत सदा, मितभाषी गम्भीर।
इह विधि वितये तीन पन, त्यागौ सुखौ शरीर॥
वंशीधरके हम अछत, तीन तनय अभिराम।
जेठे छीतरमल चतुर, मझले आशाराम॥
ज्येष्ठ श्रेष्ट जग अनुभवी, पौराणिक मतिमान।
उर्दू, इँगलिश, नागरी, मझले पढे सुजान॥
छितरावें अमृत—वचन, तस हृदय जो आय।
तातें छीतरमल्ल अस, नाम कहत सति भाय॥

आशा ही को जानिये, जग जीवन को मूल।
ताते आशाराम हू, तजत न आशा भूल॥
सबसे छोटो मन्दमति, हौं व्रजवल्लभ नाम।
हूं बावन तोग्यौ चहौं, उच्च पेड के आम॥
व्रज अन्तर्गत सामिनी, व्रजरुट ग्राम सु पास।
व्रजवल्लभ व्रजवास है, व्रजवल्लभ को दास॥
नाम मात्र वल्लभ कियौ, संग्रह तीन जबान।
मतिगतियतिनहिंकाव्यमें, छोट खोट बहु जान॥
पुस्तक पाठकहित रची, नहिं कविता के लच्छ।
दर्शक च्चमि है वल्लभ हिं, देखि भूल परतच्छ॥

कवित्त।

भारद्वाज ऋषि के सुगोत्र विषैं हू सनाढ्य,
वेद यजु शाखा माध्यंदिनी ही बखानिये
यज्ञउपवीत मध्य राजत प्रवर तीन,
सत है सुपथ अत्र विर्थरे सुमानिये
शुभ कुलदेवी पर्णबासिनी विचित्रा चैत्र,
आश्विन की पूर्णिमा में पूजन प्रमानिये
सासन बगड़हट्ट पदवी है मिश्रजी की,
परिचै हमारी आप याही विधि जानिये।
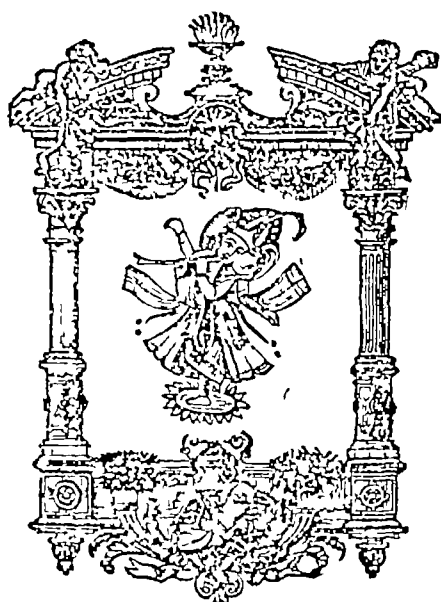
श्रीहरिः।
छन्दोबद्ध
जयपुर विहार।
श्री-व्रजवल्लभ जुगल छवि, प्रीति रीति दरसाय।
हिय में जिय में बसि रहौ, रोम रोम में छाय॥
प्यारो-प्रीतम छवि निरखु, पावै सुकवि नवीन।
व्रज धाम ते ह्वै चलि, भगवत रस-लीन॥
कर मुरली, कटि काछनी, सीस मुकुट, उर माल।
वल्लभ मन वल्लभ बसौ, इह बानिक गोपाल॥
सिद्धादेवी पदकमल, राम रमापति पाय।
वन्दि गणेश, महेश पद, गुरुपद वल्लभ ध्याय॥
राधा राधारमन पद, रज हिय मुकुर सुधार।
वरनै वल्लभ मन्द मति, जयपुर चारु विहार॥

* पुरछवि वर्णन—दोहा *

जयपुर नगर सुरम्य छवि, लखि चित बढत अनन्द।
मानो श्रीजयशाह को, उग्यो विजय यश चन्द॥
श्री जयसिंह नरेश ने, ऐसौ रच्यौ निवास।
व्रज तजि श्री गोविन्दजो, आय कियौ तहं वास॥
जयपुर सुरपुर सरिस के, निर्माता जयसिंह।
रामसिंह बर्द्धक भये, शोधक माधवसिंह॥
जयसिँह कल्पद्रुम जहां, सुरपुर सो पुर सोह।
झरत सुनिर्झर जल प्रभा, मन्दाकिनि सम जोह॥
जयपुर जयसिँह नृपतिवर, बनवायौ अति सुच्छ।
चकित भयौ पुरहूत हू, लखि अमरावति तुच्छ॥
श्री जयशाह नरेश ने, बनवायौ जयपूर।
इहिं लखि परपुर लखनकी, इच्छा होय न भूर॥

* ग्रन्थ प्रयोजन—दोहा। *

जो जयपुर नहिं जा सके, जिनको घर गरहार।
सो सुनि पढि आनँद लहै, जयपुर नगर विहार॥

* देश वर्णन – दोहा। *

है ढुंढाढ वह देश जहँ, जयपुर नगर प्रधान।
नगर सवाई कहत है, जयपुर सकल सुजान॥

* सोरठा। *

अस न अवनि पर दीस, जस जुलूस जयपुरहि महँ।
वरनत याहि कवीस, जनु फुनूस यह जगतको॥

कोट वर्णन—सोरठा।

कोट चहूं मजबूत, लांघि सकै नहिं कोटि अरि।
आवे जे रिपु दूत, कूतत होत सु ऊत सम॥

भुजंग प्रयात।

बनी है बुर्जैं सुजामे घनेरी। चढी तोप तामे सुसोहै सुनेरी॥
सुजामें दरें मारकी ह्न बनी है। अनी ह्न अरी की जुताते हनीहै॥
कगूरे लसे कोट पै यो सुरूरे। जमूरे चढे है तिन्हों पै सुभूरे॥
कभी शत्रु के वृन्द आके जुघूरे। परें छिन्न में छिन्न भिन्नै ज़रूरें॥

पुरद्वार वर्णन—दोहा।

चांदपोल, सूरजपवल, अजमेरी, आमेर।
घाटरु गंगापोल जहँ, सांगानेर, सुहेर॥
सात द्वार दीरघ लसें, चौदह लघुतिहि ठोर।
वर जयपुर के द्वार ये, राजत है चहुं ओर॥
जयपुर के पुरद्वार में, लोहनि जडे किवार।
तिनपर असर न करसकै, गोलन ह्न की मार॥
इन्द्र अश्व से अश्व बहु, ऐरावत गज जूह।
जयपुर के चहुं फेर में, राजत चमूं समूह॥
तोडन कों सुलगाय कें, घोडन के असवार।
जयपुर की रक्षा करे, द्वार द्वार पुरद्वार॥

पुररचना वर्णन—दोहा।

सत्रैसौ चौरासि मधि, सम्वत् विक्रम जान।
भीतर पक्के कोट के, जयपुर हुअ निर्मान॥

लम्बाई ता कोट की, तीन मील अनुमान।
चौडाई पुनि जानिये, डेढ मील परमान॥
सथिया से ससकोन है, गली, सडक, बाजार।
सीध सीध में सब रचे, अद्भुत टेढ बजार॥
ऐसे ही बर नगर के, तुल्य तुल्य छै भाग।
रुचिर चारु चौकोर है, चौपड तीन विभाग॥
इक सौ ग्यारह फ़ीट है, चौडाई बाजार।
गली अठाइस फ़ीट है, चौडी सरलाकार॥
रँगी गुलाबी रंग से, सब बजार इक रंग।
इक ही रंग किवाड की, है दुकान इक ढंग॥

भुजंग प्रयात।

सही सूत ते ना दुकाने बढी है। मनों कामसिल्पी बनाके गढी है॥
अजब चौहटे चारु बाजार सोहै। गली औ गली चौपडे चित्त मोहै॥
अटा ह्वां घटाकी छटासी बिमोहै। बियद्गग की धारसी सुभ्र सोहै॥
जिन्हों में बनी पुत्तली पचरंगी। मनो नृत्य कर्त्ती जु लैलै सरंगी॥

दोहा।

गली दर गली भांति इमि, जिमि बृच्छन की शाख।
शाख शाख में शाख है, शाख शाख मे शाख॥
सुधालेप तस भित्ति में, तहां गृहन की भाति।
मानहु यह जानी परै, शुक्ल पच्छ की राति॥
लसे गोख जह अटनि सधि, बांधि कतार हजार।
तहां बैठि देखे शहर, जे लजवन्ती नार॥
जयपुर की सुअटानि पै, तानै लसैं बितान।
मनिगन जुत दीपन सहित, मानहु अहै बिमान॥

जयपुर के चहुं पथन में, दीपत दीप उदोत।
नितही तंहं जानी परै, दीपमालिका होत॥
मनिगन की माला मनौं, जयपुर हृदय हमेस।
करत प्रकाश अकाश लौं, जहां सुउज्वल गैस* ॥
लसै गैस* को रोशनी, सडकन पै चहुं पास।
मनु तारापति आय महिं, चहुं दिशि करत उजास॥

* कुण्डलिया। *

परगट निशिकर करत है, उडुगन की छवि छीन।
जयपुर की गैसावली, तिहिं की करत मलीन॥
तिहिको करत मलीन, दीनह्वै इमि तब भाखै।
यह नित रहै अछीन, छीन करि हमको राखै॥
यह व्यभिचार विचार, सीतकर ह्वै रह्यो सर्गट।
हाय हाय करि हाय, धस्यो जलनिधि में परगट॥

* दोहा। *

चौपड सांगानेर की, अरु अजमेरी जान।
लसै फुहारे मध्यमें, स्रावण भादों मान॥
द्वार द्वार नम्बर लगे, बीथिन बीथिन मांहि।
तिहि लखिकर निज२ घरहिं, नरनारी सब जांहि॥
बीच सडकके पथ चलैं, गज, बाजी, रथ, बाह।
तिनकी रक्षा कारनहित, राखे नृपति सिपाह॥
दुहं ओर पटरीन पै, नर, तिय चलैं हमेश।
जाते रथ, गाडीन के, भय को रहत न लेश॥
वर जयपुर से शहर की, को कहि सकै बहार।
जह गुलाब के आब सों, सीचैं चोक बजार॥

---

* Gas गैस (वाप्य, भाफ, धूआं) की रोशनी।

भुजंग प्रयात ।

गली की गली मे पडी चौपडे है। जहां देखिये ह्वां तहां चौपडें है॥
गुलाबी सिंचोसी गली ओ गली हैं। सुगन्धि चहू घां उडे त्यों भली है॥
हवेली वहां एक सों एक सोहै। भली शुभ्र कैलास सी चित्त मोहै॥
मनों कीर्त्ति जैशाहकी है जु फैली। लसै गन्ध बेला, जुही औ चमेली॥

चौपाई ।

गुनकी खानी जयपुर पानी। शीतल, मन्द पवन महकानी॥
सदैव दर्शक रहै निरोगी। सैर देख कर हो सुख भोगी॥
पूरब, पश्चिम, उत्तर ओरा। घिरी पहाडो से सब ठौरा॥
जिन पर शोभित लगातार गढ। वल्लभ दिव्य सुदृढ देखहु चढ॥
नाहर, जय, गणेश, रघुनाथा। इन सब के आमागढ साथा॥
दक्षिण में मोती, हथरोई। लसत गढीं शत्रूकुल खोई॥

सोरठा ।

नाहरगढ जु विशेश, जयपुर को किलो लसै।
अरि को रखै न लेश, जंग करन आवे कोई॥

दोहा ।

नाहरगढ महलों तले, लिखा "वेल्कम"* शब्द।
होत दर्शनी रोशनी, कई बार प्रति अब्द॥

जलकल वर्णन—दोहा ।

जल जंत्रन की जन्त्रिका, जयपुर मांहि सुहाय।
जो जन जब जह ही चहै, तहं ही प्यास बुझाय॥

---

* Welcome—शुभागमन।

गली घली बिच जलनली, दई अनेक लगाइ।
टोंटी खोलत मोल बिन, जल अतोल मिल जाइ॥
इक जलकल इक प्याउ है, जलसागर के झुंड।
वाटर वर्कस* लखहु मनु, सुजल सुधा को कुंड॥

* सर्गासूली (ईश्वर लाट) वर्णन—दोहा। *

सर्गासूली नाम को, पुर बिच थम्भ अचम्भ।
निराधार सुरलोक लखि, जनु यह दयो अलम्भ†॥
करन मंत्रना हेतु यह, बिरच्यौ थम्भ एकन्त।
सुरगुरु सह नृप बैठि इहि, बूझत मंत्र अनन्त॥

* कवित्त। *

जैपुर बजार मांहि थम्भ है अचम्भ एक,
ताको लखि करै तर्क वल्लभ महान है॥
कोऊ कहै सूरज की मध्यसंध्या दिन ही की,
करिवेकों बन्यो यह उच्च अति थान है॥
सप्त दीप नव खण्ड देखन को कोऊ कहै,
कोऊ स्वर्ग जायवे को शुभग बिमान है॥
सर्गासूली मेरे जानि मानहु कैलाश तापै,
सूलले त्रिसूली करै जैपुर को त्रान है॥

* दोहा। *

सर्गासूली स्वर्ग की, सीढी बनी महान।
तापै चढि वढि इन्द्रसंग, बैठे जाय विमान॥

* Water Works जलकल कार्य्यालय। † अवलम्ब।

बरवा।

सुरपुर के सुरगनवां, इहि पर आय।
जयपुरछवि मनहरवां, लखत लुभाय॥

जौंहरी बाज़ार वर्णन—भुजंग प्रयात।

सवाई महाराज मों पाय माने। लसै जौहरी चौक मे जे महाने॥
धरे सामने है जवाहिर्घनेरे। कई जाति के भांति के वे सुहेरे॥
भरी हीर मोतीनकी ह्वां दुकाने। कई भांति के रंग है मानसाने॥
सुमुक्तारु माणिक्यकी रूख सोहै। जडे इन्द्र, नीलादि सो चित्त मोहै॥
महानील, बज्रादि तें जे जडाऊ। किरीटांगदाद्यै रत्नकार राऊ॥
मिलै ह्वां तुरन्तै जबै जोड चाहै। सभी वस्तु ससार सारा वहां है॥
अलङ्कार सोनेन के ह्वां जुचाहै। जडाऊ गडाऊ, जबै जो बिसाहै॥
जिन्हें पैन्हिके अंगना अंग सोहैं। तिन्हें देव की अंगना देखि मोहै॥

दोहा।

चौकिन की श्रेणी लसैं, सेठ दुकाननि अग्ग।
तिहिं जनु बैठी लच्छिमी, मनिगन पैन्हि समग्ग॥
तिहिं मधि मणिगनको भरी, किस्ती इमि प्रतिभाति।
श्री जनु आय सिंहासनहि, बैठी तहां बिभाति॥

कालिजविद्यार्थी गमन, हटौ, बचौ आवाज।
बैठक बाजारीन कौ, व्यवसायी कौ काज॥
भीड़ खरीदारान की, हाट, बाट इकसार।
फिरनौ रँगरेज़ान कौ, दर्शकगण भरमार॥
अद्भुत छवि वल्लभ लखौ, लखि जौहरि बज़ार।
प्रतिसंध्या अस ही लसै, है व्यापार अपार॥

※ अन्य अन्य बाज़ार वर्णन—भुजंग प्रयात। ※

सराफों कि दुकान में द्रव्य राजे। रुपेया अशर्फीन के ढेर गाजे॥
गढ़े है सुनारें सुभूषा घनेरे। कई भांति के धातु के है सुनेरे॥
बजाजे जहां जाबजा ह्वां सुराजें। जरी, बाफ़ता, तासमुकेस साजें॥
रुमी मख्मले, कीमखापें सुसोहै। बुनी कश्मिरी सौर सारी बिमोहै॥
ठठेरानि की है दुकानें विशेषे। सबै धातु के पात्र सोहैं अशेषें॥
बनावें जहां सूरते सन्तरासे। मनों मुक्ख ते बोलती वे सुभासे॥
लखेरा गढ़े लाख की चूरिया है। सुनैरी, हरी, लाल औ धौरियां हैं॥
पनाकी बनी-हीर, मोती जडी है। घनी कांच की कांचनों से मढ़ी है॥

※ दोहा। ※

चीज़ें बहु गजदन्त की, बनी मिलें रँग रंग।
चूरा, चूरी, गंजफ़ा, अरु गोटी, सतरंग॥
पसारी दुकान में, संसारी सब बस्तु।
धरी खरी-सब सोधकें, एला लवंग समस्तु॥

※ भुजंग प्रयात। ※

गिरी, किश्मिसें औ मुनक्का भरे है। छुहारा, बदामोरु पिस्ता धरे है॥
मखाना, सिहाड़ा, चिरौंजी, सुमिश्री। चिकन्नी सुपारी कि राजै शुभश्री॥
रँगें रंगरेजा रंगीले सुरंगें। कुसुम्भी, सुही, चूनरी, चीर रंगें॥
खबीरी, उदी, सोसनी, पंच रंगी। गुलाबी, गुलैनार, रंगी, नरंगी॥
रुमालो, डुपट्टा जहां जांय छापें। छपाये छपैंगे कहो वे सुकापे॥
छपे घाघरा, ओढनी, छीट, सारी। चलैं पैन्हि कें झूमती ताहि नारी॥
धरी फूल से साजि के है चंगेरे। चहूं ह्वां चमन्से मनो फूल हेरे॥
चमेली, जुही, मोतिया, राय बेलै। खड़ी मालिनी मालती माल लैलै॥
सुनारें, लुहारें, कुम्हारें, घनेरे। कठेरे, कसेरे, चितेरे, सुहेरे॥

सभी हैं वहां की मजीली सुजैसी। कहूं हिन्द में नाहिं होवै सुतैसी।
लसै चित्र को गेह है चौक सांमें। बनै विश्व की वस्तु ह्व सर्व तामें।
उहां स्वर्ग मे एकही विश्वकर्म्मा। इहां एक तें एक हैं तुल्य धर्म्मा।

* दोहा। *

चित्रकार चित्रैं जहां, करैं जु चित्र विचित्र।
तिहिं लखतहिं नरभित्तिके, होत चित्र से चित्र॥
विश्वकार के तुल्य बहु, राजैं जहां कुम्हार।
वह इक जग को करत हैं, यह जग रचे अपार॥
गढ लुहार हथियार वर, जयपुर में रंग रग।
तिहिं कों नृप वर बांधिकैं, जीतैं जंग उमंग॥
कमनीगर कम्मान जहँ, रचैं जु अजगव तुल्य।
बिना धनी शौकीन के, देय सकै को मुल्य॥

* भुजंग प्रयात। *

पकी चीज़ के ह्वां बनाने जु वाले। लसैं एकसीं एक आले निराले॥
कलाकन्द, वर्फी, सुखुर्मा घनेरे। वडे ढौर लड्डून के सोह ढेरे॥
पुड़ी औ पकौड़ीनकी को चलावे। मलाई रु खोवा सुपूआ मुलावे॥
जलेबी, इमिर्ती, बतासारु क्केनी। पगे चारु खाजा, सुपेडारु फैनी॥
दुकानें सुगुप्चुप्किती ह्वां भरी हैं। किती तस्तरी में जु आगे धरी हैं॥
बनावें मिठाई गिनावे जु को है। सुचाहै जुई सोइ सोई सुहोहै॥

* दोहा। *

वथुआ, मैंथी, लहालरी, चौराई, चुक जोय।
सोआ, पालक, सरिस हूं, मूली, लूणी, होय॥
अरई, गोभी, कोहडा, कद्दू, आलू जानि।
कटहर, बढ़हर, बाकलस, भिंडी, काँदा मानि॥

खरबूज हु तरबूज हु, सूरन काकड़ी, केलि।
खिंखस, कुंदरू, करइला, ग्वारफली, सुरबेलि॥
सतपुतिया, निनुआ, सिमी, बैगन और पिंडार।
सलग़म औ ढिंडसान् के, साक अनेक प्रकार॥
साक अनेक प्रकार के, लसैं ढेर के ढेर।
सब ऋतु के सब काल के, मिलि जहां चहुं फेर॥

* भुजंग प्रयात। *

तमोली तमामैं तहां जो बिराजैं। लवंगादि एलानि के साज साजैं॥
कतर्के कतनींन सों स्वच्छ जो है। भले स्वर्ण के पर्ण से पान सोहै॥
हरे जो रहे सो भये स्वर्ण सेरे। लसैं शुभ्र वे रोज़ के हेर फेरे॥
सिंचे केतकीके, बड़ाके जलों से। लगी बीड़ियां है सुपुंगी फलों से॥

* दोहा। *

सांची, वँगला, पूरवी, मघी, महोवे पान।
जयपुर के बाज़ार में, भले मिलें सब आन॥
चून, सुपारी, लवंग जुत, एला, खैर समेत।
जयपुर में नर वरन के, करन वीडिका देत॥

* भुजंग प्रयात। *

अँगूरैं, अनारैं रु लीची घनेरी। सरीफ़ा, अमरूद की हैं बतेरी॥
जमीरी, महत्तावियां, वेल, वेरी। भले काकदी नारकेली बिजेरी॥
जलों के भरे नर्यरी की सु ढेरे। पपीता पके औ हरे भी घनेरे॥
अनानास, खिन्नी नरगी सुर्दखी। किती काकनज्जून द्राक्षी सुदीखी॥
गुलाजामुनों की सुकिस्ती धरी हैं। विना बीजके जामुनोंकी भरी हैं॥
अँजीरों सकत्तालु औ आमकी हैं। पिश्वन्दीरु बीजू महद्दाम की है॥

दोहा।

खात्मुल, खैरक वम्बई, पैवन्दिन को पांति।
मालदह्हो, लॅगडेन को, श्रासन को वहु भांति॥

भुजंग प्रयात।

बनी हैं सडक् ह्वां सुऐसो जु चौडी। जहां वग्गियां सैकडों जायँ दौडी॥
जुती घोडियां गाडियां चित्त मोहै। भली जोडियां वग्गियां ह्वं जुमोहै॥
पडे पोस तापै ज़री के घने है। सुतापै लसें कुम्भ ह्व स्वर्ण के हैं॥
मढ़े बाघ के चाम के है सुहाते। लगी बाघं के चिन्ह के है पताके॥
नगौरी जुते रत्थ में बैल सोहै। चलें पल्थ में घर्घराने सुसोहै॥
झुलें झूल तापै सुमोतीन के है। बुनें कश्मिरी, काबुली, चीनके है॥
लसें नौड़ तापै सुश्रापै कसे है। मनों देव के ये विमानें बसे है॥
किते मखमली बेलबूटे निकारे। कितेको मखावी लसे दाम भारे॥

दोहा।

घोड़ा पै जोड़ा पहिरि, कोड़ा लैलै हाथ।
नाच नचावत जातजन, तिहिं जयपुर के पाथ॥

भुजंग प्रयात।

चलें ज्वान बांधे सबै सीस चीरा। टके है सुतामे पने, लाल, हीरा॥
चलें हैं किते बांधिकें सीस फेंठे। मनों काम के बानते वे सुऐंठे॥
पगखीं, श्रँगखीं लसै सीस फेंटे। कटी को तटी मे दुपट्टा लपेटे॥
रुमालें, दुसालें सुश्रोढे श्रमोले। रँगो पागपै जाडिया बांधि डोलैं॥
श्रबा श्रौ कबा पैन्हिके पायजामा। चलै ह्वा मिया बांधिकेहै श्रमामा॥
भलों को करैं देखते ही सलामे। कहै है ललामे, मुलामें कलामें॥

---

* नारिन का बस्त्रादि वर्णन—दोहा। *

स्वर्ण रचित, कुन्दन खचित, पन्नन जटित सुहार।
पहिरि पहिरि उमँगी फिरैं, वर जयपुर की नार॥

* भुजंग प्रयात। *

किती नागरी आगरी बांधि गोलैं। चली जात है राह मे कै कलोलैं॥
किती ताफ़ता, बाफ़ता पैन्हि डोलैं। सही राग औ तानकी खान खोलैं॥
रणनूपरों की रणत्कार रूरी। झनत्कार भूषानि की होत पूरी॥
सुरंगी दुरंगी चलैं पैन्हि सारी। जिन्हें देखिकें देवहू हों सुखारी॥

* महल (भवन) वर्णन—दोहा। *

वर जयपुर के बीचमें, महल लसैं एक सूत।
बरनत बरनि सकै न कोउ, है ऐसौ अजगूत॥
हवा महल, बादल महल, रंग महल अरु चित्र।
सीस महल अरु मणिमहल, सोहैं चित्र विचित्र॥
हवा महल में आय कें, हवा करै नित बास।
शीतल, मन्द, सुगन्धयुत, फैली रहै सुबास॥
सुन्दर सकल सुरंग में, सोहैं गोख अनेक।
जिन में बैठि सुरानियां, देखैं सुपुर विवेक॥
छविनिवास की छवि लखौ, शोभा शोभनिवास।
शुभनिवास सब शुभकहै, खास दिवान सुखास॥
चन्द्रमहल चन्दै लजै, मौजमहल की मौज।
मोतिमहल मोती लजै, कपटद्वार की औज॥
निवास—प्रीतम प्रिय लसै, शुभ दीवानैआम।
पुरै निवास सु माधवहु, माधव के सब काम॥
खातिपुरा मधि लसत है, राजकीय महलात।
जल महलों की शोभ से, सागर—मान सुहात॥

छत्रिन के गृह जहं लसैं, दूजे मनहु सुमेर।
तिहिं में छत्री इमि बसैं, जनु गिरि कन्दर शेर॥

* श्रीगोविन्द देवजी के मन्दिर का वर्णन—दोहा। *

मन्दिर गोविंददेव को, राजै महलन मांहि।
भूतल में गोलोक सो, तिहिं सम जगमें नांहि॥
तहं श्रीगोविँददेव की, झांकी लखैं जहान।
ऐसी मूरत मोहनी, त्रिभुवन लखो न आन॥
श्री गुविन्द के दरसहित, आवैं जन बंगाल।
भक्ती से यात्रा करैं, धनी और कंगाल॥

* भुजंग प्रयात। *

तहां दीपराजी बिराजै घनेरी। उजेरी दिवासी चहूं ओर हेरी॥
वहीं सामने राज के द्वार राजै। तिन्हें देखिकें विश्वको शोभ लाजै॥
तहां शोभ साजे लसैं यों बगीचे। सुगन्धोदकों के फुहारों सु सींचे॥
चमत्कार तामें सुऐसे बने है। कई भांति के फूल फूलें घने हैं॥
चमन्को सड़क्में दुतर्फ़ा फुहारे। छुटें ते झरे हैं सुमुक्ता हज़ारे॥
इसी तौर से ह्वां लसैं बाग सारे। जिन्हें देखिकें मेघ के वृन्द हारे॥

* सवैया। *

बिकसे कचनार अनार कहूं, शुभ सोभ सजे बरजूथिन में।
गुल लाल गुलाब गुलालन की, निकसीं कलियां निजतीथिन में॥
बर वल्लभ मंजरि मंजुल पै, गुनगावत भृंग सुगोथिन में।
कुसुमायुध सेन समेत अहो, ऋतुराज लसैं बनवीथिन में॥

* दोहा। *

तामें एक तलाब है, वामें परो सु नाव।
फिरि हिरि खेलें भायसब, रानी करि बहु भाव॥

* मस्तहाथी-युद्ध वर्णन—दोहा। *

भवनन के एक ओर में, है चौनी को बुर्ज।
युद्ध लखें हाथीन को, राजा बैठि सुतर्ज॥
सांट मार जब सांटतें, मार करें गज तत्त।
हिरिफिरिकरिफिरिफिरिलड़ैं, दोनों करि उन्मत्त॥
दन्त दन्त की ठोकरनि, होय शब्द खटखट्ट।
तिनतें किरचें उडि चलें, चटाचट्ट चटचट्ट॥
भिरत दांत से दांत जब, शब्द खटाखट आन।
तिनतें परतें उड़िपरत, परत पियाज समान॥
दड़ दड दड़ दड दौडिकें, करि करि ऊंची सुंड।
दुहूं ओर तें लडि रहैं, मत्त मदन्ध बितुंड॥
भडाभडी करि दन्ततें, सुंडनि तें धरि सुंड।
झूमि घूमि रँगभूमि में, भिड़िभिडिलड़तबितुंड॥
मेघमाल जिमि इन्द्र कों, देंइ गरज उल्लास॥
मस्त हस्तियुध देत तिमि, राजन चित्त बिलास॥

* तोप दगन वर्णन—दोहा। *

सलग तोप की दगत निशि, नव बाजतहि अमन्द।
पुनि ग्यारह की सलग सुनि, फाटक होत सु बन्द॥
प्रात दश्न गोला दगै, फाटक खुलत सुक्षिप्र।
यह शोभा जयपुर हि में, देखी वल्लभ विप्र॥

* घंटाघर मीनार वर्णन—दोहा। *

भवन किनारे लसत है, घंटाघर मीनार।
जो जन जब अहँ हो चहै, लेवै समय निहार॥

टनटन कर बोलत रहत, पौआ, आधौ, पौन।
मधुर शब्द घंटा करै, श्रोता धारैं मौन॥
घंटाघर सुन्दर लसै, कथिवे समय प्रमान।
ताही के अनुसार नर, करै काम अनुमान॥

* श्रीमहाराजा साहिब की कोठी का वर्णन—दोहा। *

चहूं घां लसै कांचनी भूमि ह्वां की। लखी मेरु ह्व पै न ताके समाकी॥
परे पांवडे मखमली है सुजामें। धरे पांवकें गुल्फ लौं गर्क तामें॥
बिछीं चांदनी चन्द की चांदनी सी। वितानैं तनी इन्दुकी भामिनी सी॥
लसैं ह्वां लगी चौखटैं स्वर्ण की है। खचो रेख तामैं कई वर्ण की हैं॥
बडे चन्दनों के किवाडें अनूठे। जडे हीर, मोतीन के जाल बूटे॥
बिलौरी, हलब्बी लगे चारु सीसे। जुरै औ खुलै ह्व सबै वस्तु दीसै॥
चिकें चारु मोतीगुथी हार सोहैं। तिन्हैं देखिकें देवताह्व विमोहैं॥
मनों हार नक्षत्रमाला बिराजै। जिन्हैं देखिकें विश्वकी शोभ लाजै॥
नटी सी नचैं पुत्तली ह्व सुतामैं। मनों मुक्ख सौं बोलती है सुनामैं॥
बड़ी सुन्दरी चुन्दरी साजि सोहै। तिन्हैं देखिकें चित्त काकेन मोहै॥

* रामनिवास बाग का वर्णन—दोहा। *

रामसिंह नरनाह ने, बनवायो वर बाग।
स्वच्छ बृच्छ तट रिच्छह्व, बनमानुष हरि नाग॥
कहु गैंडा ऐंडात बहु, कहु नाहर गुन्नात।
काह्व मत्त गज चिक्करत, कह्व कीस किलकात॥
कहूं झरना झर झर झरत, कह्व सिंह की गर्ज।
कहूं रिच्छ बर बृच्छ कहूं, कह्व मेघ संतर्ज॥
कहू झांख घुडरोज कहु, कहु हिरनन की गोल।

कहुं अरना भैंसा प्रबल, जिन सन बाघ न बोल॥
पियपिय पपिहा जहँ करत, बोलत मधुर मयूर।
बुलबुल अरु मुनियान को, शब्द रह्यौ भरपूर॥
चमन चारु बिच चातुरी, को कहि सक कवि जोय।
ऐसी कोउ न वस्तु जग, जो यामें नहिं होय॥

* कवित्त। *

जाके चहुं ओर बनघन को घनेरो घेरो,
बीच गृह हेरो जनु सोहत सुमेरो है।
वल्लभ तडाग जामें मीन बहुरंग राजें,
जानि द्वमि परे जनु उदधि चचेरो है॥
क्यारी चहुंधारी अति सोहत सुप्यारी तहां,
कीनों जनु आयकें बसन्त निज डेरो है।
शोभित सवाई रामसिंह को बिशालबाग़,
हेर्यो तब जान्यो जाको नन्दन हु चेरो है॥

* दोहा। *

रामसिंह नृप रचित बन, ऐसो रामनिवास
नन्दन हूं को छोडि कें, देव करै तहँ बास॥
विद्यार्थी व्यायाम को, दृढ़ सुन्दर सामान।
बीच बाटिका लसत है, गेंद खेल के थान॥
* बेंड थान बिच बाग है, उच्च रु गोलाकार।
सबहित भल बाजाबजै, सन्ध्या चन्दरबार॥
फब्बारे नहरें जहां, रूखं बेल गुलदार।
लसै अनूठो † फ़र्नघर, जनु शिमला है यार॥

* Bend अंगरेजी बाजा। † Fern पत्ती व फूलदार अंगरेजी पौधा।

अजबघर (Museum म्यूज़ियम)

अद्भुत और दुर्लभ वस्तु संग्रहालय ।

दोहा ।

रामनिवास अराम बिच, शोभै अद्भुत थान ।
दर्शनीय मनहर बनो, ताहि म्यूजियम जान ॥
*युवराज हि निज हस्तसे, थापी जिहिं की नीम ।
कवि नहिं है या जगत मधि, कहि सक शोभा सीम ॥
स्मारक चिन्ह सु जासुकी, कहै ऐलबर्ट† हाल ।
दर्शन योग्य प्रदर्शनी, निर्मित बिरली चाल ॥
प्रथम द्वार मधि घुसतही, कमरा एक विशाल ।
जहँ अनुपम चित्रें लसें, चित खींचत तत्काल ॥
जयपुर अरु आमेर के, भे महराजा वीर ।
तिन की निज२ डील सम, कढ़ वल्लभ तस्वीर ॥
खुली चांदनी लसत है, भवनहि के दुहुं ओर ।
लसें फुवारे तिनहि मधि, बरसत मेह अथोर ॥
रंगित पत्थर खम्भ पर, खोदे बूटे बेल ।
सहजहि नहिं दीखत पड़ें, जहँ तहँ पच्ची मेल ॥
जा कमरा बिच होत है, कौतुक अरु दरबार ।
जलसा अरु महती सभा, अवसर के अनुसार ॥
बहु रँग कांचन की बनीं, मूरति सूरज, चन्द ।
खिड़की ऊपर जे लसें, दर्शन देत अनन्द ॥

---

* Prince of Wales प्रिंस आफ़ वेल्स, जो वर्त्तमान राजराजेश्वर, सप्तम ऐडवर्ड है । † Albert Hall ऐल्बर्ट हाल ।

महाराज युवराज की, दर्शनीय तस्वीर।
कमरा बिच सुन्दर लसै, वाना धारे वीर॥
तीन ढाल अद्भुत जहां, निर्मित सातों धात।
देव कथा जिनपर खुदीं, देखत चित्त लुभात॥
† यूनीवर्सिटि कालकता, और इलाहाबाद।
तिन सम्बन्धी परीक्षा, ऐफ़े, ऐंट्रेन्साद॥
इह कमरा बिच होतहै, प्रति वर्षहि इक बार।
संस्कृत, अर्बी, फ़ारसी, सकल परीक्षा चार॥

चौपाई।

वरनि न जाइ अजबघर शोभा। होत मगन दर्शक मन लोभा॥
वस्तु बनावट मान निराला। लसै साज जिनको सुविशाला॥
रहति न त्रुटि पुनि कोऊ अंशा। ध्यान बहिर्गत जान प्रशंशा॥
देखत ही बनि आवै शोभा। लखतहि जनु बिरंचि मन लोभा॥
अद्वितीय जस जान अजबघर। संग्रह तस पुनि ताकौ मनहर॥
"अवशि देखिये देखन जोगू"। पाठक गण अवसर संजोगू॥
दर्शक लेउ प्रदर्शक संगा। लखौ म्यूज़ियम अनुपम ढंगा॥
सुना न दीख अजबघर ऐसा। वल्लभ देखा जयपुर जैसा॥

दोहा।

बीच अजबघर लसत है, कमरे खन रु सुरंग।
लसै कांच अल्मारि मधि, वस्तू रंग बरंग॥
नानादेश विदेश की, अद्भुत चारु अलभ्य।
सकल वस्तु संग्रह करीं, परबँधकर्त्ता सभ्य॥

: Prince of Wales (प्रिंस आफ वेल्स) वर्त्तमान राज-राजेश्वर, एडवर्ड सप्तम। † University राज ह

* म्यूज़ियम संग्रह सरस, वर्णन अति विस्तार।
वरने वल्लभ मिश्र किमि, चाहत अधिक विचार॥
बहिर्म्यूजियम चहुं तरफ़, दीवारों पर चित्र।
बहुत भांति बहु रंग के, सुन्दर सकल विचित्र॥
चन्द्रवार सन्ध्या समय, †बैंड बजत जिहि काल।
‡गैसझाड प्रजुलित भये, शोभा होइ विशाल॥
सांझ समय ऊपर चढी, लखौ सैर जयपूर।
भली दृश्य, छवि चहुतरफ़, इच्छा कर भरपूर॥

---

* मेयो अस्पताल वर्णन—दोहा। *

§ मेयो होस्पीटल भली, अद्भुत देखन जोग।
विज्ञ डाक्टर दाइयां, खोवैं रोगी रोग॥
घंटाघर ऊपर लसै, सत्य निरूपै काल।
¶ लार्ड मेयो मूरतिखडी, पूरी सहित हवाल॥

---

* Public Library पब्लिक लाइब्रेरी। *

* पुस्तकालय वर्णन चौपाई। *

त्रिपोलिया अरु पुस्तकशाला। अन्मुख सन्मुख लसैं विशाला॥
श्रुति, साहित्य, चारु इतिहासा। भूगोलक, काव्योपन्यासा॥
धर्म्मशास्त्र, ज्ञाना, विज्ञाना। इनकी पुस्तक रखी महाना॥
कोष, शिल्प, गणितालंकारा। इन सम्बन्धी ग्रन्थ अपारा॥

---

* Museum अजबघर। † Band अगरेज़ी बाजा। ‡ Gas गैस रोशनी।
§ Mayo Hospital ¶ Lord Mayo मेयो लाट साहिब।

ज्योतिष, न्याय, तत्त्व अरु कल्पा। शास्त्र पुस्तकें पढहु अनल्पा॥
वनस्पती, प्राकृति अरु नीती। छन्द, व्याकरन, दर्शन, रीती॥
डाक्टरी अरु इल्म रसायन। महाभारत रु वेद, रमायन॥
वैष्णव, मुसल्मान, ईसाई। सब मत की पुस्तकें सुहाई॥
नौवैल, यात्रा और चरित्र। इनकी पुस्तकें लसैं विचित्र॥
सब भाषा का संग्रह सुन्दर। बीच कांच अल्मारी मनहर॥
पुस्तक है उपरोक्त विषय के। सब भाषा मे सब ही मत के॥
बहुत रिसाले अरु अखबार। बीच मेज़ पर धरे संभार॥
द्वादश सहस जिल्द अनुमाना। सब भाषा में किय निर्माना॥
सख्या जिल्द बढै प्रति बर्षा। पाठक आवें बहुत सहर्षा॥
रामसिंह जी जयपुर ईसा। सनठारहसौ अडसठ ईसा॥
पुस्तकशाला खोलो सुन्दर। परजा अरु दर्शक जन मनहर॥
वल्लभ देखो पुस्तकशाला। खुलती सन्ध्या प्रातःकाला॥
दर्शनीय है पुस्तकशाला। है बनाव का ढंग निराला॥

* स्कूल आफ़ आर्ट्स School of Arts *

* शिल्पविद्यालय—चौपाई। *

लखो शिल्पशाला गुनमाला। सुन्दर ऊँची बनी विशाला॥
शिल्पी बहुत हस्त कौशल के। भले निपुण गुण, विद्या, कल के॥
शिल्पक, ज्ञाता श्रेष्ठ हुनर के। चारु कारु गुरु कारीगर के॥
शिल्पकार सम विश्वकार के। मनहुं राशि निज गुण अपार के॥
मृतिका वामन चित्तरकारी। मनहुं देव निर्मित मनहारी॥
तास्त्र खुदाई अरु पीतल की। है नहिं कहीं यहां से भल की॥
पत्थर मूरति, खाती कामा। शिल्पशाल जिनसे सरनामा॥
सोने अरु लोहे को कामा। जस उत्तम है तस बढ दामा॥

कोफतगीरी अरु नक्काशी। तस ही अनुपम संगतराशी॥
सोना चांदी काम मिलाऊ। सब धातु की वस्तु जडाऊ॥
खराद गिल्टी काम दिखाऊ। अंगरेज़ों के मन अति भाऊ॥
इत यहां के सूरति तच्छक। असही चतुर प्रदर्शनि रच्छक॥

॰ दोहा। ॰

विद्यार्थी जहँ पढ़त हैं, शिल्प विषय उपयुक्त।
विख्याता शिल्पी जहां, है उस्ताद नियुक्त॥
शिल्पशाल वल्लभ लखी, आनँद भयौ महान।
सबहित साधारण सुखद, पाठक देखौ आन॥

Maharaja's, Oriental and Sanskrit Colleges.

महाराजा, ओरिएंटल् और संस्कृत कालेजों का बर्णन—दोहा।

महाराज कालिजहु की, शोभा देखन जोग।
अति विचित्र शालासुघर, देखि सराहत लोग॥

॰ छप्पय। ॰

जयपुर कालिज बीच छात्रगण पढत निरन्तर।
ऐमे, बीए, फ़र्स्ट आर्ट, ऐंट्रैन्स पास कर॥
सरस एक से एक राज दर्बार बिमण्डन।
अवनि सुयश बिस्तरत पाय बहुमान अखण्डन॥
इह भांति राजसेवा करत सुखसे बितवत दिवसनिशि।
आधीन जीविका तिनहिं के वल्लभ देखी चतुर्दिशि॥

* दोहा। *

ओरिएटल कालिज अपर, पारस विद्याखान।
पढि मुंशी, आलिम बहुरि, फ़ाजिल होत सुजान॥
आगे चलि अब संस्कृत, कालिज देखहु नेक।
तहां पढ़ावत देवगुरु, शिक्षक रूप अनेक॥

* दोवै छन्द। *

प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री अरु आचार्य परीक्षा होवै।
पढिकर निकसत छात्र विलक्षण सुयश अवनिपर बोवै॥
काशी अरु पंजाब विश्वविद्यालय की जु परिच्छा।
सहजहि *पास करत पाठीगण जैसी जाकी इच्छा॥
वैद्यकविद्या पास* करन की चर्चा सुनी न काना।
सो जाही संस्कृत कालिज से निकसत वैद्य महाना॥
आयुर्वेद उधारण कारण वल्लभ देखि सिंहानी।
पण्डित सकल धुरन्धर जयपुर काशी दूसर जानी॥

---

* ज्योतिष यंत्रशाला († Observatory) वर्णन। *

* भुजग प्रयात। *

लखो है भली ज्योतिषी यंत्रशाला। बनी दर्शनी उच्च स्वच्छं विशाला॥
महाराज जैसिंह ने है बनाई। मथूरा, दिल्ली, काशि, उज्जैन मांई॥
सबो से बनी आगरो पै यहां की। तरै आंखि आवै न कोई जहां की॥
मनो नाक भारत्त की उच्च सोहै। किधों आसमांसे करै बात कोहै॥
किते दल्ल बादल्ल के टकरावैं। न आगे बढै बीच में बर्सजावैं॥
कवीकी गती है किती याहि बर्नें। भला वल्लभै से कहूं पार पर्नें॥

---

* उत्तीर्ण, परीक्षासिद्धिः। † औब्ज़र्वेटरी।

रामप्रकाश नाटकघर (* Theatre) दोहा।

दर्शनीय अनुपम लसै, नाटक रामप्रकाश।
नाटककर्त्ता मण्डली, तिन के हाव विकाश॥
चित्ताकर्षक भेष जिन, अरु शब्दानुप्राम।
दर्शकगण के चित्तको, दें आश्चर्य हुलास॥
सूचक हर्ष रु शोक के, होवें स्वांग रु खेल।
शीतकाल मधि होत है, वा जब लागै मेल॥

जलेव चौक वर्णन—दोहा।

बीच जलेब हि चौक के, सब न्यायालय राज।
अरु विशाल कोसिल†लसै, शोभाह्व हिय लाज॥
रुचिर चारु चौकोर अरु, मनहर चौक जलेव।
दर्शक पावै पार नहिं, आनंद उदधि अखेव॥

प्रसिद्ध दर्शनीय मन्दिर नामानि—दोहा।

मन्दिर श्री गोविन्दजी, ब्रजनिधि अरु गोपाल।
सुन्दर लसत विशाल ये, पधराए भूपाल॥
श्रीशराजराजेश्वर हि, गगा गोपीनाथ।
श्रीराधादामोदर हि, पूजत होत सनाथ॥
चन्द्रबिहारी, लाडिली, बाला जी हनुमान।
दर्शनीय मन्दिर लसैं, मूरत श्रेष्ठ महान॥
विश्वेश्वर, भैरवमहा, श्रीजी, बालानन्द।
ऊचे मन्दिर शोभते, दर्शन देइँ अनन्द॥

---

*थिएटर। †Council राजकीय सर्वोपरि न्यायालय विचार महासभा।

रामचन्द्र, ब्रजराज जी, सूरज, सीताराम।
रूप चतुर्भुजदेव को, दर्शनीय रुरनाम॥
रामलखन का देवरा, नवल बन्यो दिख्यात।
आनंदकृष्णविहारि को, मन्दिर भरा प्रतिभात॥
दर्शनीय अति पूज्य हैं, मन्दिर—राज पुनीत।
जिनमधिप्रतिदिनहोतहैं, कथा सुमंगल गीत॥
अस मन्दिर बहु लसतहैं, जस वल्लभ उपरुक्त।
मन्दिर दर्शन से करहु, दर्शक निज को मुक्त॥
बहु मन्दिर सधि होतहैं, राजकीय शुभ पुन्य।
वृन्दावन सम जयपुरहि, देवालय से गुन्य॥

* भुजंग प्रयात। *

घनी मन्दिरोंको जु राजी बिराजे। घनश्श्याम श्यामा सु ता मध्य राजें॥
सदा मन्दिरो में मृदंगें ठनंकें। घडी झांझ ह्र की सुहोवैं झनंकें॥
घनी ब्राह्मणों की हवेली बिराजें। जहां वेद के गान की तान गाजें॥
जटा श्रीघनन्ती चहुं वेदपाठी। तिन्हीं के पढ़ाए घने हैं प्रपाठी॥

---

* प्रसिद्ध वस्तु वर्णन—दोहा। *

चूडे, गट्टे, लाख के, जूती सुन्दर जाति।
वगरू, सांगानेर के, छपे वस्त्र बहु भांति॥
कलाकन्द अति स्वादकी, भलौ जड़ाऊ काम।
महल मसाला श्रेष्ठ से, पायो जयपुर नाम॥
अँगुल चार आसार पर, मंजिल सात मवान।
भले मसाले से बने, पाटक देखो आण॥
गोमवान, नीलाड, रँग, जयपुर के विख्यात।
चवामा, नमदा, मलवने, घणी जाति सुहात॥

मँगमूसा. संगमरमरहि, तिन दी सुन्दर काम।
सुघड बनावट मूर्तिकी, जयपुर की सरनाम॥
चूना खाने की भलो, भलो सफेदा जान।
नौशादर कलमी भलो, भलो महोबा पान॥
चूर्ण खटाई को भलो, भलो केवडा अर्क।
व्यापारी जु खरीदकर, लेजावें बिन तर्क॥
काशीसे अतिही सरिस, मीनारी को काम।
देशी कागज़ बनन से, परसिध जयपुर धाम॥
वर्त्तन चीनी मांटि के, सूती, रेजी वस्त्र।
दृढ सुन्दर बनते जहां, अस्त्र सुख्यकर शस्त्र॥
भल कुचराई काम को, बीच सुपारी देख।
तामडे रु बिल्लौर के, भल आभूषण पेख॥
वस्त्र रँगाई ख्यात है, अनुपम आदरनीय।
चुँदरी, पगड़ी, लहरिया, रँग से हों कमनीय॥
खालिस मुहर, अशर्फियां, जयपुर की टकसाल।
ढालति है दो जातिकी, नई पुरानी चाल॥
कांसा भूषण कृषिकहित, बुधहित सुन्दर चित्र॥
क्रयकर दर्शक वस्तु ये, सुन्दर सकल विचित्र।

---

* निकटवर्त्ती दर्शनीय स्थान नामावली :— *

---

* प्राचीन घाट वर्णन—दोहा। *

दक्षिण पूरब में लसत, मील दोय पर घाट।
दो गिरि बिच रमणीयहै, सुगम ढलाऊ बाट॥

दुहूं ओर मनहर बनीं, भल श्रेणी बागात।
नन्दन सम दीखें हरे, कारण जल, जलजात॥
जस अनुपम यह घाटहै, तस न और चहुं ओर।
रूपनिवास सुबाग़ को, अद्भुत मनहर ठोर॥
बाग़नबिच तालाव मधि, दर्शक न्हांई सहर्ष।
वल्लभ जन गोठें करे, प्रतिदिन बीच हि वर्ष॥
असवस चलिकें देखिये, देखन जोगू घाट।
वल्लभ अनुपम लसत है, गिरि को दैवी ठाट॥

नवीन घाट वर्णन—दोहा।

नये घाट को ठाट लखि, को नहिं होत प्रसन्न।
दैवी झरने जहं झरैं, है जल पाचक—अन्न॥
क्या रमणीय सुघाट यह, वाह वाह अरु वाह।
विहृत थान बहलाव को, मन को देइ उछाह॥
शिमला को लज्जित करें, कल्पित रूप पहाड।
सोते बहुत सुहात हैं, बलुए टीले झाड॥
चमन चारु बिच चातुरी, चारु पुष्प बहु रंग।
तोड, मोड नालान की, रखै निराला ढंग॥
मिलत पाकशाला सहित, वर बर्त्तन सामान।
हर्षित जन गोठें करें, जल विहार, कल गान॥
हुक्म राज से पाइकर, बहुरि अरंभ्यो काम।
ट्रान्सपोर्ट अध्यक्ष ने, घाट कियौ सरनाम॥
घाट घाट को बनरह्यो, हुइ है शीघ्र समाप।
द्विगुणित छवि पुनि होयगी, वल्लभ भाखे आप॥

झालाना (झरना) वर्णन—दोहा।

झालाना झरना झरे, दक्षिण दिशि रमनीय।
रम्यस्थान विहार का, मनभावन कमनीय॥
वल्लभ मित्र सुकाल विच, बहु मिलि श्रावण मास।
गोठ करे विनोद हित, पावे परम हुलास॥

गेटोर (राजकीय श्मशान) वर्णन—दोहा।

जयपुर सन इक मील पर, पूरब उत्तर ओर।
मनहर नाहरगढ तलै, है घाटी गेटोर॥
भूतपूर्व राजन का, है विशाल सम्मान।
दर्शनीय बहु द्रव्य से, छतरी बनीं महान॥

प्राचीन राजधानी आमेर (अम्बेर) वर्णन—दोहा।

बीच पहाड़िन के लसै, रजधानी प्राचीन।
दाडिम सी आमेर है, दूर कोस पर तीन॥

चौपाई।

गिरि पर भवन बने है सुन्दर। राजत छवि अनुपम अति मनहर॥
लसत भवन बिच सिलादेवी। राजसमाज प्रजाजन सेवी॥
नवरात्री बिच होवे मेला। दर्शकगण की पेलम पेला॥
मेला छठि आसोज सुदी का। जयपुर जन की बहुत खुशी का॥
जैनी मन्दिर काम सुनहरी। है मन्दिर नरसिंह सुलहरी॥
कुंद है उत्तम एक विशाला। मन्दिर जगत शिरोमणि आला॥
मन्दिर भैरव, मात बराई। कुंजन बीच पुनीत सुहाई॥
स्वादित होत मिठाई गूंझी। वल्लभ दर्शक स्वाद अबूझी॥

* दोहा। *

वल्लभ दुर्ग न अस लखे, जस जयगढ़, आमेर।
शेर शत्रु आवे जिन्हे, क्षण मे करे सुढेर॥
दर्शक लखि जसमन्दिरहि, जस गावे जयसिंह।
जय मन्दिर तिन जय कहे, भयौ भूप मधि सिंह॥
सुखनिवास का सुखलहौ, छवि दीवाने आम।
दिलाराम पुनि बागको, सैरहु देत अराम॥
फोटोग्राफर* लेत है, खींच महल तस्वीर।
सुन्दर घाटी, गिरिम की, वेचें मोल गहीर॥

---

* गलताघाटी वर्णन—दोहा। *

गालव ऋषि का थान यह, जयपुर तें दिशि पूर्व।
ऐसौ तीरथ जगत में, देखौ नहीं अपूर्व॥
गलता घाटी कहत है, आचारिन का थान।
सीताराम, गोपाल को, झांकीं जहां महान॥
गलता के विख्यात हैं, बरगिरि अरु तालाब।
सुन्दर सर जहँ लसत हैं, झरना झरता आब॥
हिण्डोले कौ होतु है, मेला श्रावण मास।
पयआहारी रहतु हो, योगी किसनादास॥

---

* सांगानेर वर्णन—दोहा। *

जयपुर के निकटहि बसै, अन्तर मीलहि सात।
सांगाजी के नाम से, सांगानेर सुहात॥

---

* Photographer छाया चित्रकार।

वल्लभ सांगानेर के, सुन्दर महल मकान।
होत अधिकता से जहां, श्रेष्ठ केवडा जान॥
जैनो मन्दिर ख्यात है, बहुरि छपाई वस्त्र।
वल्लभ मूरति लसत है, सांगा बाबा अत्र॥
जगन्नाथ महराज का, रथ निकलै प्रति वर्ष।
नौमी शुदो अषाढ की, मेला देवै हर्ष॥
भडल्या नौमी का यही, मेला जात पुकार।
जयपुर जन गोठैं करें, अच्छी होइ बहार॥
बहुत वृच्छ बहु भांति के, श्रेष्ठ वाटिका पुंज।
शीतल छाया पथिक हित, शोभत जनु ब्रज कुंज॥
सकल बाग़ सींचा करै, नला अमानीशाह।
लखत नहर की लहरको, मन में बढ़ै उछाह॥

---

* प्रसिद्ध दर्शनीय मेला (उत्सवावली) वर्णन :— *

* (चैत) गणगौर मेला—दोहा। *

तीज चौथ शुदि चैत मधि, दो मेला गनगौर।
धूम धाम से होत है, बर जयपुर के ठौर॥
गौरि सवारी लसत है, सहित सुहावन साज।
चोनी बुर्जहि से लखैं, माधौसिंह महराज॥
गौरी पूजा करति हैं, रनबासन की नार।
सुन्दर बादल महल में, जुरै राजदरबार॥

---

* रामनौमी मेला—दोहा। *

रामनौमि मेला लसै, जन्म महोत्सव राम।
रहै चैत शुदि नौमिको, पूरि राम को नाम॥

रामगंज गलता निकट, जुरत गंवरदल, ग्राम।
सब मिलि गावैं हर्षसे, रामनाम, गुन, धाम॥

* (वैशाख) मेला श्रीवद्रीनाथ जी—दोहा। *

अखय तीज वैशाख को, मेला वद्रीनाथ।
दर्शक आवैं हर्ष से, पूजैं आदर साथ॥

* (आषाढ़) श्रीजगन्नाथजी रथयात्रा मेला—दोहा। *

मेलाषाढो दशहरा, शुदि आषाढो दोज।
रथयात्रा जगदीश को, रखै दर्शनो श्रोज॥
शुभ सवारि महराज की, जाइ पास टकसाल।
राजसमाज सुसाज से, अनुपम शोभ विशाल॥
शोभै सांगानेर को, भडल्या नौमी मेल।
रथयात्रा जगनाथ से, जन को पेलम पेल॥
जयपुरेश शोभित करें, सांगानेर सुथान।
शुदि अषाढ़ नौमी भली, रथयात्रा दिन जान॥

* मेला गौरी तीज—दोहा। *

श्रावण शुक्ला तीज दिन, गौरी मेला तीज।
दर्शन, ठाठ रु साज से, दर्शक जावैं रीज॥
चौनी बुर्जहि से लखैं, माधवसिंह नरेश।
हर्षित सब धारन करत, लाल वस्त्र का भेश॥

(श्रावण) मेला नाग पंचिमी—दोहा।

श्रावण शुक्ला पंचिमी, नाग पंचिमी जान।
जेल पास मेला जुरै, होइ नाग सन्मान॥
श्रावण के प्रति चन्द्र को, वन मेला नर नार।
गलता, घाट, अमेर मधि, अरु झालाना चार॥

(भाद्रपद) श्रीमहाराजासाहिब जन्मोत्सवसवारी— दोहा।

भादों कृष्णा अष्टमी, कृष्णजन्म जग जान।
श्रीमाधवसिंह हु जनम, याही तिथि परमान॥
भवन ख़ास दरबार विच, नज़र करें सरदार।
माधवसिंह नरेश को, होइ सवारी चार॥
"चिरंजीव महराज हों," कहहुं मुबारिकबाद।
बढे कीर्त्ति श्रीकृष्ण सी, वल्लभ आशिर्वाद॥

मेला श्रीगणेशजी—दोहा।

भादों शुक्ला चौथको, गणपति जन्म सुमान।
मोती डुँगरी पै अहै, मनहर मेला जान॥
गणेशगढ मेला जुरै, दिवस पंचिमी चार।
जन्म सुफल दर्शक करें, देवगणेश निहार॥

मेला श्रीभरत मिलाप—दोहा।

भादों शुक्ला नौमि को, होवै भरत मिलाप।
राम, लखन के दरसतें, मिटै पाप सन्ताप॥

राम, लखन को देवरा, भरत मिलन से ख्यात ।
गामपौटि मन्दिर तलक, मेला भला सुहात ॥

(क्वार) विजयदशैहरा मेला— दोहा ।

क्वारशुदी छठि को जुरै, भल मेला आमेर ।
सिलादेवी दरसहित, आवैं दर्शक ढेर ॥
क्वारशुदी दशमी भली, विजय दशहरा जान ।
धूम धाम, सज धज, भली, शोभित राज महान ॥
सब लवाजमा राज को, रथहु, अश्व, गज, यान ।
रतनजटित, सुवरनखचित, तिन के सब सामान ॥
माणिक,मरकत,लशुनियां, मूंगा अरु पुखराज ।
हीरा, मोती, रत्न से, सजे यान वर साज ॥
इन्द्रअश्व सम अश्व बहु, ऐरावत सम नाग ।
शिविका शुभग सुहावनी, बहु बाजन अरु राग ॥
दुहू ओर पटरीन पै, सारी सेना राज ।
खडी क्वाइद देत भल, धारे वर्दी साज ॥
सब की छटा विलोकि कें, दर्शक जावें फूल ।
अनुपम शोभा लखत हो, मन विरंचि के भूल ॥

चौपाई ।

हाट, बाट, मन्दिर, सुरवासा । जाँइ सँवारि सवारी पासा ॥
राजभवन की शोभा जैसी । हाट, बाट, गृह देखिय तैसी ॥
ध्वज, पताक, पट, चमर सुहावें । चेला संग खवास-हु [illegible] ॥
बहु गहगहे बाजने बाजें । सब कोइ रूप मनो

हने निशान दुन्दुभी बाजें। तोप दगन धुनि हय, गज गाजें॥
तोपे घन सम गरजें घोरा। बोलें चातुर दादुर, मोरा॥
लखि साथ सरदार सवारी। शोभे उच्च गाज दरबारी॥
बहु दर्शक नहिं पेलम पेला। पुलिस बचावे ठेलम ठेला॥
माधवसिंह सवारी मोहै। शोभा देखि मदन मन मोहै॥
जो जयपुर इहि दिवस निहारे। तिहिं लघु लगें नगर जग सारे॥
दर्शनीय यह मेला जानी। वल्लभ छवि नहिं जाय बखानी॥
पाठक देखो देखन जोगू। लखें आइ परदेशी लोगू॥

* दोहा। *

उत्तम मेला दशहरा, मध्यम है गनगौर।
वल्लभ मेला बहु लखे, अस नहिं काहू ठौर॥

---

* मेला सांझी—दोहा। *

कनागतों के अन्त को, रात्रि चार हैं तीन।
जिन मधि सांझी ठौर बहु, रचत मनुष्य प्रवीन॥
बनति खिलौननु कदलिको, पातनु रंग बरंग।
पाठक लखहु प्रदर्शिनी, अति ही बिरले ढंग॥

---

* (कार्त्तिक) मेला दीपमालिका व शरदपूर्णिमा— *

* दोहा। *

दीपमालिका नगर बिच, कस्मेरे, अत्तार।
नाहरगढ़ सुपहाड़ पर, होई दर्शनो चार॥

पून्यौ शरद सुहावनी, अन्नकूट की भीर।
देव दरस कर खांई जन, छत्तिस व्यंजन खीर॥

* (माघ) सवारी बसन्त पंचिमी—दोहा। *

भूप अछत खेलत सरस, श्रीपांचें दिन फाग।
महाराज सरदार सब, शोभित ऊपर नाग॥

* सूर्य्य रथयात्रा—दोहा। *

माघ शुदी सातें भलो, कहै सप्तमी भान।
गलता के रथसूर्य्य को, राजा करते मान॥
सवारि माधवसिंह की, शोभै रथ संग आइ।
सूरज की पूजा करैं, राजा माथ नवाइ॥

* होली की सवारी—दोहा। *

माधवसिंह नरेश की, फाग सवारी चार।
होली के दिन हस्ति पर, पाटक लीड निहार॥

* फुटकर मेला—दोहा। *

धूम सहित निकरत सदा, उच्च ताजिये जान।
राज ताजिया रजत को, राजत अति ही शान॥
जौहोरी बाजार पर, बीचहि रामनिवास।
मेला सो प्रति सांझ को, दर्शक करैं प्रकास॥

मेला शीतल अष्टमी, चैत्र कृष्ण मधु मास।
पुष्प प्रदर्शनि मार्च मे, शोभै रासनिवास॥

श्रीमहामान्य महाराजाधिराज राजराजेन्द्र श्री १०८ श्री सर सवाई माधवसिंहजी बहादुर, जयपुर वर्त्तमान नरेश जी. सी. ऐस. आई., के. जी. सी. आई. ई., इत्यादि।

G. C. S. I., K. G. C. I. E., &. &. &.

दोहा।

मुनि त्रय नँद भू वर्ष महँ, भौ नृप माधवसिंह।
भाग्यशील महिषी सुप्रिय, हरिपद पदम सुभृंग॥
दाता है द्विजजनन के, पाता जान प्रजान।
घाता है शत्रून के, माधवसिंह महान॥
श्रुति मारग ही तें चलैं, प्रतिदिन सुनैं पुरान।
धर्म्म, कर्म्म नितही करैं, माधवसिंह सुजान॥
माधवसिंह—निशान है, पचरंग जय जंग।
तिहिँलखिकरअरिबरनको, होत बदन बदरंग॥
दै परजा हि अकाल बिच, अन्न, धाम, आराम।
प्राणदान दैकर तिन्हैं, विमल कियौ निजनाम॥
माधवसिंह के दरस तें, गिरैं वस्तु यह तीन।
शस्त्र अरिनके, कविन दुख, कटि बन्धन नारीन॥
श्रीमाधव नरनाह अब, वर्त्तमान जग जान।
जिन वृन्दावन बिच रच्यौ, मन्दिर स्वर्ग समान॥

मथुरा वृन्दावनहि मधि, तीन कोस को बीच।
मन्दिर विचरचि माधवहि, करो दुहन नगीच॥
रतन रचित,सुवरन खचित, मन्दिर सुभग कुहाल।
राधा सह राधेश तिहिँ, सोहत श्यामल गात॥
अरु बरसाने ग्राम मधि, मन्दिर रच्यो महान।
तहं नृपवर वर लाड़िली, मूरत थापी आन॥

* कवित्त। *

वर बरसानै गांम ताके ढिंग नंद गांव,
कलित ललित वरदायक भलो को है।
कहै सिय वल्लभ ह्वां सांकरी गली पै एक,
शिखर अनूप चन्द्रशेखर बलो को है॥
माधौसिंह भूपति सवाई जयपुर जू ने,
मन्दिर बनायौ मेरु मंदिर थली को है।
चम्पक दलीको छविचन्दकी छलीको शुभ,
राजेरूप तामें तह्वां लाड़िली ललीको है॥

* सवैया। *

आयु मृकण्डि के सूनु सो होय, बढै नितही ध्रुव लोमस को सो।
वल्लभ ज्योति तिहारो बढै नित, ज्यों वृष सूर्य्य मरीचि मई सो॥
शत्रु तिहारे पिरैं नितही नित, तैलिक जंत्रहि ज्यों तिल तोसो।
कीर्ति तिहारो दिगन्तहि धाय, चढ़ै सुर लोकहिँ स्वर्ग नदी सो॥

कवित्त ।

राजन के राज महाराजन के महाराज,

माधोसिंह सवाई की साहिबी ठनी रहै ।

वल्लभ के पालक औ घालक अवल्लभ के,

दान अभिलाषा छाया तो चित घनी रहै ॥

होय सुख मानस मनोरथ अखिल राज,

राज व्रजराज के सनेहनि सनो रहै ।

अवनि अकास ध्रुव मंडल विराजे जौलों,

तौलों तुव गद्दो देवगद्दी सो वनो रहै ॥

॥ इति ।

* दर्शक प्रति चेतावनी—दोहा। *

राजपुताना मालवा, रेल जगतही ख्याति।
याही छोटी लैन पर, जयपुर चौकी भाति॥
श्री पुष्कर, अजमेर अरु, देखी जयपुर राज।
कर यात्रा श्रीनाथ की, एक पंथ बहु काज॥
साहिब * रेजीडेंट को, और † सिक्रत्तर राज।
चिट्ठी लिखिये रख टिकट, पास ‡ मंगावन काज॥
वा पहुँचत जयपुरहि में, लिख चिट्ठी मय श्रान।
राज महल देखन रजा, मिलै पासही आन॥
चिट्ठी मे लिखिये यही, जयपुर अरु आमेर।
देखन चाहत महल इन, घाट रु सांगानेर॥
पास राखिये पास § को, दीजे ढलैत हाथ।
नौकर महल, ढलैत इ, महल दिखावें साथ॥
घोडागाडी, रथ, बहल, इक्का इ मिलजांय।
जानि लेउ महसूल को, चुंगी घर पर आय॥
दोय धर्मशाला बनीं, जयपुर चोकी पास।
दर्शक तहँ विश्राम कर, पावत सुख रु हुलास॥

---

* The Resident, Jeypore State

† The Private Secretary, To H H The Maharaja of Jeypore ‡ Pass हुक्म, आज्ञा। § Pass

विशेष द्रष्टव्य ।

निम्नलिखित स्वरचित पुस्तकें मेरे पास मिलती हैं :—

1 "छन्दोबद्ध जयपुर विहार"

2 "Grammatical Terms in English-Hindi-Urdu"
"अंगरेज़ी-हिन्दी-उर्दू व्याकरण सम्बन्धिनी पारिभाषिक शब्दावली"

3 "An English-Urdu Vocabulary in Verse"
"लुग़त मन्ज़ूमह् अंगरेज़ी-उर्दू"

4 "An English-Hindi Vocabulary in Verse"
"छन्दोबद्ध अंगरेज़ी-हिन्दी शब्दकोष"।

इस पुस्तक में एक एक जाति की शब्दावली भिन्न भिन्न निज सम्बन्धी कई अध्यायों में वर्णित है। यथा :—

Family ties (Affinity) सम्बन्ध और कुटुम्बिता ।

☞ छन्द पढ़ने का ढंग नीचे देखिये :—

Father	फ़ादर	बाप,	mother	मदर	है	माई।
Sister	सिस्टर	बहिन,	brother	ब्रदर	है	भाई॥
Daughter	डाटर	बेटी,	son	सन	है	बेटा।
Younger	यंगर	छोटा,	elder	ऐल्डर		जेठा॥

फ़ादर बाप मदर है माई।
सिस्टर बहिन ब्रदर है भाई॥

मिलाकर पोते समय तक ही इसकी सुगन्धि मुंहमें रहे सो ही नहीं है किन्तु १ घण्टा पोछे तक भी इसकी सुगन्धि और सुस्वादु मुंह के जाइके को बनाये रखता है।

मस्तक में तरावट पहुंचाता है; बलवर्द्धक है, खांसी को हर्ता है, और दांतोंको मजबूत करता है। १ डिबिया का मूल्य।≈) आना।

वी, पी, डाकमसूल, पैकिंग १ डिबीयासे १२ का।≈) आना।

५) रुपया से ज़ियादह का माल मंगानेवाले को १२॥) रुपया सैकड़ा के हिसाब से कमीशन दिया जायगा।

पण्डित चम्पाराम जैनी।

३, वासतला ष्ट्रीट, बड़ाबाज़ार, कलकत्ता।

विज्ञापन।

इस पुस्तक के ४८ वें पृष्ठ मे मुद्रित मेरी प्रणीत पुस्तकों को जो महाशय कमीशन एजेंट हो बेचना, कमीशन पर थोक मोल लेना अथवा अपनी पुस्तको के परिवर्त्तन मे लेना चाहे वे मुझ से पत्र-व्यवहार करें। ब्रजवल्लभ मिश्र।

पुस्तको के मिलने का पता :—

१—पण्डित ब्रजवल्लभ मिश्र,
   १३, नारायणप्रसाद बाबू की लेन, बडाबाजार, कलकत्ता।
२—श्रीमान् पण्डित छीतरमल ब्रजवल्लभ मिश्रजी,
   सासनी डाकखाना, जिला अलीगढ, N W P
३—श्रीयुत् पण्डित रामप्रताप जी साहिब
   मास्टर, महाराजा कालेज, जयपुर—राजपूताना।

अन्य अन्य नगरस्थ पुस्तक विक्रेताओ और मास्टरो के पास भी ये पुस्तकें मिलेंगी।

अशुद्ध पत्र।

अशुद्धियों को पहिले शुद्ध करके तब पढिये :—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०	है	है
,,	१३	अजब	अजब्
१६	४,५	जौहरो	जौहरी
,,	८	इन्द्र, नोलादि	इन्द्रनीलादि
,,	२२	जौहरि	जौहरी
४२	२०	[illegible]	[illegible]

भारतका उपहार ।

युवक शिक्षा.

श्रीनन्दकुमारदेव शर्मा.

वन्देमातरम्।

युवकशिक्षा।

(एक शिक्षाप्रद निबन्ध)

स्वदेशबन्धु, आर्यमित्र, बिहारबन्धु प्रभृति समाचार पत्रोंके

भूतपूर्व सम्पादक—

पं० नन्दकुमारदेव शर्मा द्वारा लिखित

जिसको

सेठ गजानन्द मोदीने

—:O:—

निज "नागरी प्रेस" बम्बईमें छपाकर प्रकाशित किया।

मूल्य ।=)

प्रथम संस्करण १०००

निवेदन

हिन्दी भाषामें ऐसी पुस्तकोंका अभाव है। जिनको पढ़कर युवकगण अपने विचारोंको सुधारें और युवावस्थामें आनेवाले तूफानोंसे वचकर अपने कर्त्तव्यको पहिचानकर मनुष्य जीवनका जो पवित्र उद्देश्य है। उसमे सफलता प्राप्त करें। इस पुस्तकमें यही वतलानेका प्रयत्न किया गया है। इस प्रयत्नमें कहांतक सफलता हुई है। इसमें वहुत भारी सन्देह है। क्योंकि प्रथम तो "युवक शिक्षा" यह विषय ऐसा है कि, इसपर एक बड़ी पोथी लिखी जासकती है। किन्तु जो कुछ इस पुस्तकमें लिखा गया है वह तो केवल सङ्केत मात्र है। दूसरे यह पुस्तक वहुत शीघ्रतामें केवल ५—६ दिनमें ही उस समय लिखी गयी है जिस समय मेरी शारीरिक और मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। यों तो मुझको मानसिक वेदना सदैव सतातीही रहती है परन्तु इस पुस्तकके लिखते समय मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। केवल श्रीयुक्त सेठ गजानन्द मोदीजीके अनुरोधसे बीमारीमेंही पुस्तक लिखनी पड़ी है। इन दिक्कतोंके अतिरिक्त एक अड़चन यहभी हुई है कि इस पुस्तकके लिखेहुए विषयोंके देखने तकका दूसरी वार समय नहीं मिला है। जव जो विषय याद आ-गया है उसका वहीं समावेश कर दिया गया है। जिससे क्रम विरुद्धता और असम्बद्धता आगयी है। साथही दुर्भाग्यवश एक और दिक्कत यह हुई है कि मैंने इस पुस्तकका फ तक नहीं देखा है। सो प्रेसके कर्मचारियोंकी कृपासे अनेक त्रुटियोंके होजानेकी विशेष सम्भावना है। आशा है कि पाठक गण ऐसी त्रुटियोंके लिये क्षमा करेंगे। जैसे "तिलाञ्जलि" के स्थानमें "तिलाञ्जुलि" "उपेक्षा" के स्थानमें "अपेक्षा" "निश्वास" के स्थानमें "विश्वास" "सौन्दर्यता" "किसोर" दीर्घ ह्रस्व अक्षरोंकी जैसे 'परीक्षा' के स्थानमें परिक्षा,

गयीं है या औरभी कोई ऐसी भारी भूल हुईहो । क्योंकि जिन कारणों से त्रुटियॉ होगयीं है वे ऊपर लिखी जाचुकी है । तिस परभी जो कोई भूल वतलायी जावेगी । वह केवल धन्यवाद पूर्वक स्वीकारही नहीं की जावेगी । वल्कि दूसरे सस्करणमें सॅशोधनभी करदिया जावेगा । हॉ अलवत्ता जो लोग हठ और दुराग्रहवश पुस्तककी आलोचना न करके मेरे शरीरकी आलोचना करेंगे । उसपर ध्यान नहीं दिया जावेगा । प्रायः देखाजाता है कि, आजकल कुछ हिन्दी लेखकोंने समालोचनाके साधु उद्देश्यको भ्रष्ट कर रखा है । जब वे किसीसे प्रसन्न होते है । तवतो वे उसकी खूव तारीफ कियाकरते हैं । और जब उनका उससे कुछ मतलव नहीं निकलता है । अथवा उनकी कोई भूल वतलायी जाती है । तवतो वे गालियॉ देना अखवारोंमें शुरू करदेते हैं । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मुझको कई वार मिलचुका है । गत वर्ष जव मैं विहार बन्धुका सम्पादन करता-था । उस समय एक साप्ताहिक पत्रने पहले तो मेरे सम्पादन कार्य की खूब प्रशंसा की । परन्तु जव उसके सम्पादक की रचीहुई पुस्तक की त्रुटियां वतलायीं गयीं तवतो उसने खूव गालियॉ दी । ऐसाही उक्त साप्ताहिक पत्रके पड़ोसी ‘सर्वोपयोगी मासिक पत्र’ ने कियाथा । इस मासिक पत्रके एक लेखकी डकैती वतलायी गयी । उसने डकैतीका कलङ्क अपने मत्थेसे न हटाकर गालियां देकरही अपने दिलके फफोले निकालेथे । कहनेका सारॉश यह है कि, पुस्तककी आलोचना पर अवश्य ध्यान दिया जावेगा । परन्तु अश्लील निकम्मी थोथी वातें जो मेरे सम्बन्धमें लिखी जावेंगी । उनका उत्तर नहीं दिया जावेगा ।

युवकोंके ऊपरही सव देशोंकी भलाई बुराई निर्भर होती है । जिस देशके युवक कर्त्तव्यपरायण नहीं होते हैं । उस देशका शीघ्रही अधःपतन होता है । यह सोचकर करीव तीन वर्ष मथुराके एक साप्ताहिक पत्रमें (जो अव बन्द हो गया है)

पर दो तीन लेख लिखेथे । और तबसे युवकोंके सुधार सम्बन्धी विचार मेरे हृदयमें हिलोड़ रहे हैं । लेकिन प्रकट करनेका सुबीता न होने से अबतक मेरे हृदय की सामग्री बनेहुए हैं । यदि हिन्दी रसिकों ने इस पुस्तक को उचित समझा तो शीघ्रही उनकी सेवामें इस विषय पर एक बड़ी पोथी अर्पण करूंगा । जिसके अध्ययनसे युवकोंको अपने कर्त्तव्यकी चेतावनी मिलेगी, और वे अपनी भलाई करनेके साथही साथ अपने देशकी सेवा करने को भी समर्थ हो सकेंगे ।

इस पुस्तकके लिखनेमें स्वामी विवेकानन्दके व्याख्यान, स्वामी रामतीर्थके उपदेश, लाला लाजपतरायका व्याख्यान (जो कि गुरुकुल कॉगडीमें सन १९०८ में हुआ था) सर जान लबककी दोनों पुस्तकें, उर्दूके मासिकपत्र "इन्द्र" के एक लेख कामशास्त्र, सत्यार्थ प्रकाश जीवदयादि पुस्तकोंसे कहीं नाम मात्र सहायता ग्रहण कीगयी है । अतएव तबभी मैं इन सबका कृतज्ञहूं ।

उपसहारमें श्रीयुक्त प० गौरीशङ्करजी पाठकको अनेक धन्यवाद हैं जिन्होंने पुस्तकके सङ्कलन कार्यमें बहुत सहायता दी है. यदि उनकी सहायता प्राप्त न होती तो सन्देह है कि, इतनी जल्दी यह पुस्तक लिखीभी जाती या नहीं । यहांपर मैं अपने प्यारे मित्र होनहार नवयुवा पं. बालक राम नागर [Medical student आगरा] कोभी धन्यवाद दिये बिना नहीं रहसकता । जिन्होंने भी कहीं कहीं अपनी सम्मति प्रदानकी है।

होली दरवाजा मथुरा
आश्विन शुक्ला १० स १९६६ वि

नन्दकुमारदेव शर्मा

श्रीः ।

युवक शिक्षा ।

बालकोंका लालन पालन ।

किसी विद्वान्‌का कथन है कि बालकोंका हृदय मिट्टीके कच्चे घड़ेके समान होता है। जैसे कुम्हार अपनी इच्छानुसार घड़ेको बनाता है। ठीक वैसेही बालकोंके कोमल हृदयपर भले या बुरे विचारोंका असर होता है। जो विचार उस अवस्थामें बालकोंके हृदयपटलपर अङ्कित हो जाते हैं वह उनके जन्म पर्य्यन्त नही छूटते हैं। इस लिये कहा जाता है कि बालकोंके स्वभावपर विशेष ध्यान देनेका प्रयोजन है। क्योंकि उस समय तनिक उपेक्षा करनेसे जन्मभर दुःख उठाना पड़ता है। संसारके अनेक सुखोंमेंसे सन्तानका सुपात्र होना भी एक सुख कहा गया है। अनेक लोगोंका मत है कि सन्तानको कुपात्र या सुपात्र बनाना माता पितापर—विशेषतः मातापरही निर्भर है। डाक्टर और वैद्योंका तो यहां तक कहना है कि माताके स्वभाव और विचारोंका गर्भस्थ बालकपर भी प्रभाव होता है। और माता जैसी सन्तान उत्पन्न करना चाहे वैसी उत्पन्न कर सकती है। परन्तु दुःखकी बात है कि हमारे यहां न तो मातायें गर्भस्थ बालकोंके विचारों के सुधार करनेकी चेष्टा करती हैं न बालकोंके जन्म धारण करनेपर उनके विचारोंके सुधार करनेकी चेष्टा की जाती है। इस उपेक्षा करनेका जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसके कहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है। वह सब पर भली भांति विदित ही है। अतएव इस विषयपर कुछ न कह कर बालकोंके लालन पालन करनेमें जो त्रुटियां हो जाती हैं, उनके विषयमें ही कुछ कहते है।

पुत्र जन्मपर दरिद्र और धनाढ्य सबको समान हर्ष होता है। हिन्दुओंमे तो पुत्रका जन्म होना परम सौभाग्य समझा जाता है। पर

परम सौभाग्य समझनेपर भी पुत्र या कन्या दोनोंके लालन पालन करनेमे इतनी त्रुटियां होजाती है कि या तो वे निर्लज्ज और ढीठ हो जाते हे या वे इतने डरपोक हो जाते हे कि वे अपने माता पिताके सम्मुख उचित उत्तर देनेमे संकुचित होते हैं। यह दोनोंही बातें बुरी है। बालकोंका जितना निर्लज्ज और ढीट होना भद्दा है, उतनाही उनका डरपोक होना और प्रत्येक बातमें हिचकना भी अच्छा नहीं है। " अति सर्वत्र वर्जयेत् " इस न्यायके अनुसार बालकोंका लालन पालन ऐसे ढङ्गसे होना चाहिये कि न तो वे ऐसे ढीठ होजावें कि माता पिताकी कुछ परवाह न करें और न वे ऐसे लज्जाशील होजावें कि माता पिताके सामने उचित बात कहनेकी हिम्मत न हो। बालकके लाड़ करते समय इस बातका खूब ध्यान रखना चाहिये कि जीवन भरके कार्य्योंकी उत्तमता उसकी इस अवस्थामें दी हुई शिक्षापरही निर्भर है। जो बालक हठी और जिद्दी होते है, उनके हठी और जिद्दी होनेके कारण उनके अभिभावक (*Guardians*) ही हैं। जन्मसे पांच वर्षकी अवस्था तक बालक बिलकुल अज्ञान होता है। इस अवस्था तक उसको कोई भी सांसारिक रहस्य ज्ञात नहीं होता है। इस अवस्थातक बालकोंके स्वतःही इतने शुद्ध, जीवन और इतने पवित्र भाव होते हैं कि जिस जीवनकी और पवित्र विचारोंकी योगीजन भी आकांक्षा किया करते हैं किन्तु खेदके साथ कहना पड़ता है कि इस अवस्थामें लालन पालनकी ठीक व्यवस्था न होनेसे बच्चोंके हृदय पर कुसंस्कारोंका प्रभाव पड़जाता है जिससे जन्मभर उनको दुःख उठाने पड़ते हैं।

प्रायः देखा गया है कि नन्हे नन्हे बच्चोंको जब वे किसी कारणसे रोते हैं तो उनको " हऊआ " " लूलू " प्रभृत्ति बनावटी शब्दोंसे डराया जाता है। इन बनावटी शब्दोंका असर उनके हृदय

से बड़ी [illegible] होनेवाली [illegible] किया नहीं है । हमारे पाठकोंमेंसे
अनेक लोगोंने इस बातका अनुभव किया होगा कि छोटे बच्चोंको जब
वह अकेले कहीं जाते है या घरके भीतर ही अन्धेरेमें इधर उधर फिर-
ने लग जाते है तो प्रायः मातायें कह दिया करती है कि उधर मत
जाना वहांपर भूत बैठा हुआ है । इस भूतका डर लड़कोंके कच्चे हृदय
पर ऐसा बैठजाता है कि वृद्धावस्थामेंभी उनको भूतही भूत दिखलायी
पड़ता है । अनेक मातायें अपने बालकोंको खिलाते समय यह भी
किया करती है कि ज्योंही वह अपने पैरोसे चलने लगता है
उसके हाथमे लकड़ी दे देती है । वह उस लकड़ीके एक छोरको हाथमें
पकड़कर घोड़ेके समान उसपर सवारी करता है । उसके हाथमें एक
चाबुक दीजाती है । वह उस चाबुकसे घोड़ेको मारता है । इस तरहसे
बच्चोंके खिलानेमें दो प्रकारकी हानि है । प्रथम बाततो यह है कि
वार वार लकड़ीके चाबुक मारनेसे बच्चोका हाथ छूट जाता है अर्थात्
वह सबको मारने लग जाते हैं । दूसरी हानि यह है कि लकड़ी जो
घोड़ा बनायी गयी है उसके न चलनेसे बालक जिद्दी हो जाते है ।
अनेक लोग छोटे बच्चोंको अपनी गोदीमे बिठलाकर मूंछें पकड़वाया करते
है । मानो उनको उस उम्रमें ही धृष्टताकी शिक्षा दीजाती है । बहुत
लोग यह भी किया करते है कि बालकोंसे गाली दिलवाया करते हैं ।
उस समय तो उनके तोतले मुहसे गाली अच्छी लगती है पर पीछे
उसका बड़ा खोटा परिणाम होता है । बहुत लोग छोटे छोटे बालकोंके
हाथमें कोई चीज छीन लेते है । जैसे उनके सिरसे टोपी उतार
लेना या हाथमेंसे रूमाल छीन लेना । बच्चोंका छीनी हुई चीजोंको
लेनेके लिये मचलना और प्रयत्न करना तिसपर भी उनको न देना ।
उनको हठी करना है । बहुधा मातायें बालकोंके कोमल [illegible]
गालोंपर चपतें लगाया करती है । इससे बालक [illegible]
ना सीख जाते हैं । इस लिये उचित तो यही है कि बालकोंसे [illegible]

गालियां दिलवावे न उनसे चीजें छीनें न उनको मारना सिखावें। जिससे वह इस कुटेवसे बचते रहें। बालकोंके स्वभावकी तुलना कुआ की आवाजसे की जाती है, जिसतरहसे कुंआके ऊपर खडे होकर जो आवा, दी जाती है वही आवाज कुआके तलेसे आती है। ठीक यही दशा बच्चोंकी है। जैसा उनसे कहा जाता है, वैसाही वे उत्तर देते हैं। यदि उनसे प्रीतिसे सभ्य भाषामें बातें कीजावें तो वे भी सभ्यता पूर्वक उत्तर देंगे। बालकोंको शिष्टता (तहज़ीब) सिखलानेके लिये इससे बढकर दूसरा और कोई उपाय नहीं है कि उनके साथ शिष्टता पूर्वक वर्ताव किया जावे। बालकोंका स्वभाव अनुकरण करनेका होता है वह जैसे कार्य अपने माता पितादिको करते हुए देखते है, ठीक वैसीही नक़ल करने लग जाते हैं। यह देखनेमें आता है कि अनेक अबोध बालक जसा अपने माता पिता-को हसी ठट्टा या जोकुछ कृत्य करते हुए देख लेते हैं। ठीक वैसे ही आपसमें करने लग जाते हैं। कहनेका सरांश यह है कि माता पिताको बालकोंके स्वभावकी ओर ध्यान देते हुए अपनी चाल ढालकी भी सावधानी रखनी चाहिये। क्योंकि माता पिताकी चाल ढालका भी बहुत असर होता है। लाड़ प्यार करते समय इस बातका विचार रखना भी अत्यावश्यक है कि लाड़ प्यार उतनाही किया जावें जितना आगेके लिये दुःख दायी न हो। सात आठ वर्षकी अवस्थासे १३, १४ वर्षकी आयुतक विशेष सावधानीका प्रयोजन है। इस अवस्था में बड़ी विषम समस्या उपस्थित होती है। बालकोंका यही लाड़ प्यारका समय होता है। यही उनके पढानेका समय होता है। यहांपर यही विचार रखना चाहिये कि जिससे बालकका सुख और शान्तिके साथ जीवन व्यतीत हो, वही लाड़ और प्यार है। थोड़े दिनोंका लाड़ प्यार अच्छा नही होता है। सारी उम्रका लाड़ प्यारही अच्छा है। अनेक मातायें पढ़नेके समय लडकोंका अनुचित्त पक्ष लिया

रती हैं। जब बालकोंको अपना पाठ याद नहीं होता है, तब तो
दरसेको जाना नहीं चाहते हैं। क्योंकि उनको भय होता है कि कहीं
स्टर सबक याद न करने पर मारें नहीं। प्रायः मातायें भी स्नेहवश
डकोंको पाठ याद न होनेपर पाठशाला नहीं जाने देती है। इसका बुरा
ल होता है। माताके स्नेहवश लड़के कुछ पढते लिखते नहीं है। यह
णिक स्नेह जन्मभर बालकोंको मूर्ख रखता है। अतएव ऐसा अनुचित
ड प्यार कदापि न करना चाहिये कि जिससे लडकोंके पढने लिखनेमें
धा हो। लडकोंको बहुत पैसा भी नहीं देना चाहिये, पैसा पानेपर
डके फ़जूल खर्च करने लग जाते है। बडे होनेपर पैसा पानेकी चाट
नी होजाती है कि बहुत लोग कर्ज करने लग जाते है। लड़कोंको
टी उम्रमें पैसा देनेका यह भी फल देखनेमें आया है कि बड़ी उम्र
निपर उनका खर्च बढ़ जाता है। जितना उनका खर्च होता है, उतने
से उनको नहीं मिलते है। तब तो लाचार होकर उनको कर्ज लेना
ड़ता है। फिर तो कर्ज़ लेनेका चसका इतना बढ़ जाता है कि बंड
नेपर वे तबाह हो जाते है। बड़े वडे धनाढ्योंपर जो कर्ज़ देखा
ाता है, उसका मूल कारण यही है कि बचपनसे ही वह फज़ूल खर्ची
ते है। यह अनुभवसे कहा जासकता है कि लड़कोंको पैसा देना
ो उनको बिगाड़ना है। ७-८ वर्षकी अवस्था से १३-१४
र्ष तककी उम्र वाले लड़कोंके लिये पैसा देनेका ऐसा नियम
र लेना चाहिये कि न तो वे बहुत पैसा पानेसे फजूल खर्ची हो
वें न ऐसा होना चाहिये कि पैसा न मिलनेसे वे अपनी ज़रूरत
ी पूरी न कर सकें। जैसे लड़कोंको बहुत पैसा देना अनर्थ है।
वैसे ही उनको बिलकुल पैसा न देना भी अन्याय है। बिलकुल पैसा
न पानेसे लडकोंको अपनी जरूरत पूरी करनेके लिये चोरी करनी
ड़ती है। बिलकुल पैसा न पानेसे अनेक लड़के घरमेंसे कुछ न कुछ
ीज चुरालेजाते है और उन चीजोंको सस्ती बेंचकर अपनी जरूरत

रफा करते हैं। जिस तरहसे लड़कोंको वहुत पैसा देना फजूल खर्चा वनाना है, ठीक वैसेही लड़कोंको कुछ भी पैसा नदेना चोरी करना सिखलाना है। वस वालकोंको पैसा देनेमें दो वातेका विचार रखना चाहिये कि एक तो उनके हाथमें इतना पैसा न पहुंचे जिससे वे फजूल खर्चा होजावें, दूसरे ऐसा भी न होना चाहिये कि उनको कुछ भी पैसा न मिलें, जिससे उनको चोरी करनी पड़े।

लड़कोंको ताड़ना करते समय भी इस वातका ख्याल करना चाहिये कि लड़कोंको मारना नही चाहिये। वहुत मारनेमे उनकी आदत विगड़ जाती है! वे समझने लगते है कि मारसे आगे और कोई सजा नहीं है। ताड़ना करते समय केवल ऐसी घड़की देनी चाहिये कि जिससे उनका बुरे कार्य्योंके करनेके लिये हौसिला न वढ़ने पावे। जो लोग लड़कोंको ताड़ना करते समय निष्ठुरतासे पीटते है, वे लड़कोंको शारीरिक हानिके साथ ही साथ मानासिक विचारोंको भी विशेष धक्का पंहुचोत हैं। छोटे वच्चोंको वेंतसे कभी नहीं मारना चाहिये। छोटे वच्चोंको पीटनेकी अपेक्षा घुड़की देनाही अच्छा है। वडे लडकोंको पीटना उनको गुस्ताख वनाना है। ताड़ना करते समय वालक गुस्ताखनहोने पावें शारीरिक हानि न पहुंचे एवम् उनके मानसिक विचारों की क्षति न होवे। इन सब वातोंका ध्यान रखना वहुत जरूरीहै। प्राय. लोगोंकी आदत हुआ करतीहै कि वच्चोंसे तानाजनी क्रिया करतेहै। इसका फल भी अच्छ नहीं होताहै। इस तानाजनींसे वालकोंको मानासिक वेदना विशेष होतीहै। मेरे इस कथनसे कोई यह मतलव न निकालें कि मै वालकोंके ताड़ना करनेके विरुद्धहुं। नहीं नहीं कदापि नहीं। मेरे कहनेका तात्पर्य्य यहहै कि ताड़ना वह होनी चाहिये कि वालकोंको लाभदायक हो नकि उलटी हानि पहुँचानेवाली।

योंतो वैद्यक सिद्धान्तके अनुसार वालकोकी प्रारंभिक शिक्षा माताके गर्भमें आनेसेही आरम्भ होजातीहै। परन्तु प्रत्यक्षमे तीन वर्षसे आठ

वर्षकी अवस्था तक प्रारम्भिक शिक्षाका समय होताहै आठ वर्षसे ऊपर उच्च शिक्षाका समय होताहै। प्रारम्भिक शिक्षा (Primary Education) माता परही निर्भरहै। क्योंकि उस अवस्थामें बालक माताकेही पास रहताहै। दुःखकी बातहै कि हमारेदेशमें प्रारम्भिक शिक्षाका यथेष्ट साधन नहीं है। अगर प्रारम्भिक शिक्षाका कुछ भी साधन होतातो इस देशके अनेक होनहार बालकोंका जीवन नष्ट कदापि न होता। अमेरिका, इंगलेण्ड प्रभृति उन्नत अवस्थावाले देशोंमें खेल कूदमें ही प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है। यह सर्व तन्त्र स्वतन्त्र सिद्धान्त है कि पुस्तकोंका तोतेकी भांति रट लेनाही शिक्षा नहीं कहलाती है, किन्तु शिक्षा वह है जिससे मानसिक विचार परिकृत हों। इंगलण्ड अमेरिका वाले इस सिद्धान्तको ही लक्ष्य करके खेल कूदमें ही अपने बालकोंको अपने धर्म सम्बन्धी देश सम्बन्धी बातोंका ज्ञान करा देते हैं। इंगलण्डमें दाईयाँ बच्चोंको खेलाते समय कहा करती है कि "बाबा रोमत, बौना आता है" दाईयोंका इस कथनसे यही तात्पर्य होता है कि नेपोलियन बोनापार्ट तुह्मारे देशका दुश्मन है। सुना जाता है कि इंगलण्डमे अनेक दाईयाँ बच्चोंको खेलाते समय कहा करती है की "बाबा हिन्दुस्थानका वाइसराय होगा" अर्थात् हिन्दुस्थान हमारे आधीन है। जापानके बारेमें सुना जाता है कि वहांपर मातायें बच्चोंसे कहा करती है कि तू जापान यानी देशके लिये पैदा हुआ है, अपने देशकी सेवा कर रोवे मत। हिंदुस्थानमें भी एक समय था कि बच्चोंको धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। अब भी कहीं कहीं पुराने ढंगके लोगोंमें उस शिक्षा की प्रथा प्रचलित है। जो लोग हिन्दुस्थानियोंको असभ्य बतलाते हैं। यदि वे लोग आंखे खोलकर देखें तो उनको ज्ञात हो जावेगा कि समय था जब यहाँपर भी बालकोंको डेढ़ दो वर्षकी अवस्थासे पांच वर्षकी अवस्था तकही ऐसी सुगम और सुन्दर रीतिसे शिक्षादी

जाती थी कि बालकोंको लौकिक, पारलौकिक विषयोंका भली भांति ज्ञान प्राप्त हो जाता था। चाहे आज कलके बाबू लोग उस समयकी बात भलेही गंवारपन बतलावें। पर इन शिष्टता सभ्यताके दम भरने वाले बाबुओंसे हमारे बच्चोंको शिष्टता और सभ्यता अच्छी सिखलायी जाती। पाठकोंने देखा होगा और अनेक पाठकोंने अनुभव भी किया होगा कि भारतवर्षमें बीस पचीस वर्ष पहलेही यह प्रथा प्रचलित थी कि प्रातःकालमें बालकोंके जागतेही दो चार श्लोक कंठस्थ करा दिये जाते थे। बालक सुबह उठते ही उन श्लोकोंका पाठ किया करते थे। माता दादी प्रभृत्ति या और जो कोई वृद्ध व्यक्ति घरमें होता था, वह बालकोंको धार्म्मिक कथा सुनाया करता था। यह तो एक साधारण नियम था कि सांयकाल और प्रातःकाल होते ही बालक घरमें जितने उनसे बड़े आदमी होते थे, उनके हाथ जोडकर पैर छूकर प्रणाम करते थे। इस साधारण नियमका कोई गहरा मर्म न समझें तो यह बात जुदी है, परन्तु इस नियमके अन्तर्गत बड़ोंका अदब करना है। शोकका स्थल है कि भारतवर्षके अनेक स्थानोंमेंसे यह नियम उठ गया है और अनेक स्थानोंमेंसे यह नियम उठता जाता है। ऐसी ऐसी बातोंकी ओर ध्यान न देकर हमारे यहाँ बालकोंको जेवर (गहने) से लाद देते हैं। जिससे उनके प्राणभी सङ्कटमें रहते है। अगणित बालकोंकी हत्या गहने पहनानेकी कुरीतिके कारण हुई है। यदि मातायें बच्चोंको गहने न पहना कर वात्सल्य, दया प्रेम और धर्मकी शिक्षा देती रहें, तो कितना भारी उपकार वह अपने बच्चोंका कर सकती है।

माता पिता तथा अन्य अभिभावकोंका यह भी एक पवित्र कर्त्तव्य है कि जहाँ तक होसके बालकोंको कुसंगतिसे बचावें। जो अभिभावक अपने बालकों पर नौकरोंको "सन्तरी" नियत कर देतेहै। वे भी गहरी भूल करतेहैं। दुष्ट स्वभाव वाले नौकरोंके साथ रहनेसे बालक बिगड़

। कितनेही दुष्ट स्वभावके नौकर नन्हे नन्हे बच्चोंको चिड़चिड़ा
तेहैं । वे बालकोंको नित्य नित्य नयी चीजें खरीदनेकी चाट लगा
। यों बचपनमे उनके स्वभावको चिडचिडा करके ८—९ वर्ष से
—१४ वर्षकी अवस्थामें उनके साथ अपनी पाप वासना पूरी
हैं । फिर युवावस्थामें उनको भोग विलासका चसका लगा देतेहै ।
अनेक पाठकोने इस बातका अनुभव किया होगा कि जिन बातोंसे अभि-
क लोग बच्चोंको बचाना चाहतेहैं या जिन कार्य्योंके करनेके लिये
करतेहैं । दुष्ट स्वभावके नौकर उन्हीं कार्य्योंके लिये बालकोंको उत्ते-
किया करतेहैं और अभिभावकोंसे छिपकर बालकोंको उन कार्य्योंमें
यता देतेहैं । छोटी उम्रमें बालकोंको सिगरेट पीनेकी आदत यह
र लोगही लगा देतेहैं । क्योंकि बालकोंके सिगरेट पीनेसे इनको भी
जातीहै । बालक सिगरेट पीनेसे क्या हानि क्या लाभ है ?
नहीं समझतेहैं । मुँहसे धुआँ निकालनेके चावमें सिगार पीतेहैं ।
उस समयही बच्चोंको जो सिगार पीनेसे हानियाँ होतीहैं, बतला
ा जावें तो सम्भवहै कि आज विलायतसे जो इतनी सिगारेट आरहीहैं
के रुपये बचजाते । जब जब लड़के मदरसे नहीं जाना चाहते हैं, तबतो
नौकरही खेलनेके लिये इधर उधर लेजाते हैं । ऐसे नमक हराम
करोंके भरोसे बालकोंको छोड़ना, उनके जीवन नष्ट करनेके
तिरिक्त और कुछ नहीं है । कहनेका सारांश यह है कि जहाँतक
सके बालकोंको नौकरोंके भरोसे कदापि नहीं छोड़ना चाहिये ।
ोंकि नौकरोंकी सङ्गतिमें बालक सुधरते नहीं है बल्कि बिगड़
ते हैं ।

अब बालकों की शिक्षा प्रणालीके विषयमें कहना चाहते हैं, ।
पर अपने यहाँ की पुरानी शिक्षा शैलीकी अमेरिका, इंगलेण्ड
भृति देशोंकी नवीन शिक्षा प्रणालीके साथ तुलना कीगयी है ।

उसको पढ़कर पाठकोंने अवश्य सोचा होगा कि बालकोंको किस ढङ्गसे शिक्षा देनी चाहिये। अब पाठकोंका ध्यान जापान इंगलैण्डादि देशोंकी किण्डरगार्टेन शिक्षा प्रणालीकी ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं। किण्डरगार्टेनकी शिक्षा बालकोंको खेलही खेलमें अनेक ऐसी बातोंका बोध करा देती है कि जिससे भविष्यमें उनको विशेष सहायता प्राप्त होती है। बालकोंको खेल कूदमें ही अपनी मातृ भाषाके अक्षरोंका बोध करा देते हैं। वहाँ खिलोनोंके ऊपर अक्षर अङ्कित होते है। जब बालक खिलौनोंके लिये मचलते हैं तब तो उनको वही अक्षर दिये जाते हैं, जिससे बालकोंको सुगमता पूर्वक अक्षरोंका ज्ञान हो जाता है। हमारे देशमें ऐसी बातोंकी ओर लोगोंका ध्यान बहुत कम जाता है। इस देशमें कहीं कहीं किण्डर गार्टेनकी शिक्षा प्रणालीका प्रचार तो होगयाहै, परन्तु उसका समुचित उपयोग नहीं किया जाता है। हमने विदेशियोंके बहुत अवगुण सीखे हैं, अगर एक यही गुण सीखलें तो सम्भव है कि हम अपने बच्चोंको विशेष शिक्षित दीक्षित करसकेंगे।

विलायतमें खेल कूद भी ऐसे होते हैं कि जिनसे बालकोंकी शारीरिक शक्तियाँ पुष्ट होती हैं और मानसिक विचार स्फुरित होते हैं। हमारे देशमें इस बातका बिलकुल अभाव है। बालक स्वभावत ही खेलनेके प्रेमी होते है। उनके चित्तकी वृत्तियाँ जितनी खेलकी ओर झुकी होती है, उतनी किसी और नहीं होती है। अतएव बालकोंके खेलकी भी ऐसीही व्यवस्था होनी आवश्यक है कि जिससे उनकी शारीरिक शक्तियाँ पुष्टहों और मानसिक विचार स्फुरितहों। बालकोंके खानपानकी व्यवस्था होना अत्यन्त प्रयोजनीय है। बालकोंका भोजन ऐसा होना चाहिये कि जिससे उनको शारीरिक कष्ट सहना न पड़े। स्वास्थ्यका अच्छा या बुरा होना भोजनपरही निर्भर है। बालकोंके लिये हलके और जल्दी पचने वाले भोजनकी व्यवस्था करनी चाहिये।

बालकोंके लालन पालन करनेके विषयमें जितनी बातें कही गयी हैं।
नमें से एक आज्ञापालनकाभी ढङ्ग बिगडा हुआ है । आजकल
न्तान आज्ञाकारी क्यों नहीं होतीहै । इसका कारण ढूंढा जावे तो
ल दोषी हमहीहैं । हमारी असावधानीके कारणही हमारी सन्तान आज्ञा
लन करने वाली नहीं होती है । यदि हम यह चाहें कि हमारी
न्तान हमारे कहनेके मुआफिक चलें तो पहले हमको मोह ममता
निक कम करनी पड़ेगी । बालकोंके प्रति हृदयसे मोह होना चाहिये ।
ह ममता ऐसी होनी चाहिये कि बालक कदापि यह न समझे कि
मारे अभिभावकोंका हमारे प्रति इतना मोह है कि हम जो चाहें
करें, हमारे अभिभावक हमसे कुछ नहीं कहेंगे । ऊपर कहा
ा चुकाहै कि बालकोंको पीटना नहीं चाहिये । वास्तवमें देखा जायतो
ाज्ञापालनमें भी बालकोंको मारने पीटनेकी दरकार नहीं है।
ालकको आज्ञाकारी बनानेके लिये तनिक कड़ाई करना यथेष्ट है ।
ह कड़ाई ऐसी हो, जिसको बालक सहन करसकें । कड़ाई और
ाज्ञापालनके विषयमें पाठकोंको एकही उदाहरण बतलाताहूं ।
जिससे पाठक अनुमान करलेंगे कि बालकोंको किस ढङ्गसे आज्ञाकारी
ब नाना चाहिये । क्या कहें ? वर्त्तमान सभ्यताके आगे हमारे यहांकी
बहुत प्राचीन रीतियाँ उठती चली जाती हैं । जिसके कारण यह
ना पड़ता है। नहीं तो पहले समयमें जब वर्त्तमान सभ्यताके
अनुसार बेंतोंकी सजा प्रचलित नहीं हुईथी । तब तो नन्हे नन्हे
ालकोंके लिये केवल एकही ऐसी सज़ा थी जिसमें आज्ञापालन,
ाड़ना और कड़ाई तीनों बातें आजाती थी । कोई कोई उस नियमको
अब भी काममें लाते हैं, पर बहुत कम । वह नियम यह है कि पहले
जब बालक कोई ऐसा काम कर डालते थे जिसमें कुछ बुराई समझी
जाती थी । तब तो बालकोंको सिर्फ यह सज़ा दीजाती थी
उनसे उन्हींके दोनों कान अपने हाथसेही पकड़नेको कहे

उनके हाथसेही उनके कान पकड़वा कर उनको उठाया बैठाया जाताथा। यह ऐसी हल्की सजाहै, जिसमें कड़ाई और ताड़ना दोनों होजाती थी, और उनको विशेप कष्ट भी नहीं होताथा। वल्कि एक तरहसे कसरत होतीथी। जिससे उनके स्वास्थ्यको लाभ पहुँचताथा। एक वार मेरेएक मित्रने मुझको जापानमें बालकोंको आज्ञाकारी वनानेका अत्युत्तम उदाहरण वतलायाथा। वे कहतेथे कि वहां पर जब वालक झूंठ वोलताहै, तब तो उनके अभिभावक साबुनसे जीभ धोडालते हैं। जीभ धोकर वालकोंसे कहतेहैं कि "हँ, तुमने झूंठ वोलीहै, इससे तुम्हारी जीभ गन्दी होगयीहै आगेसे ऐसा न करना"। वास्तवमें वालकोंके प्रति ऐसा व्यवहार होना उनको सदाचारी बनाना है। हमारे यहाँ उल्टा वालकोंके शील विगाड़नेकी चेष्टायें कीजाती है। मथुराके चौबोंको देखियेगा कि वालक तनिक भी होश सम्हालने नहीं पाते हैं कि उनको भांग पिलाना शुरु करदेते हैं। जो जातियाँ शराब पीनेकी शिकार वनी हुई हैं, वह अपने वालकोंको अज्ञानावस्थासेही शरावका चसका लगादेती हैं। होली जैसे त्यौहारों पर मर्द, औरतोंका वेहियाई जामा पहन कर नाचना और कुराफात वाहियात वकना भी वालकोंके शीलका विगाड़ना है। अथवा जो लोग वालकोंको अपने साथ तवायफोंके नाचको देखाने लेजाते हैं। वह भी मानों भविष्यमें अपने वालकोंके चरित्रके कलुषित करनेकी नींव अपने हाथोंसे रखते हैं। जब वालकोंके प्रति हमारा ऐसा वेहूदा व्यवहार है। तव तो बालक कैसे सदाचारी और आज्ञाकारी होंगे? इसके न्यायका भारमें पाठकोंकोही सौंपताहूं। वे स्वयंही विचारें, विशेषता वह लोग जो ऊपर कहा हुआ वर्त्ताव अपनी सन्तानके प्रति कर रहेहैं कि, उनकी सन्तान उनका, अपना, देशका, समाजका, और धर्मका कितना उपकार करेंगी। जिन नासमझ बच्चोंकी बचपनसे ऐसी आदत होरहीहैं, वे भविष्यमें कैसे होंगे? ऊपर लिखे लक्षणोंके कहे हुए अभि

भावकोंको समाज जितना दण्ड दें, उतनाही थोड़ा है। राजा ऐसे अभिभावकोंका जितना अपमान करें उतनाही कम है। भला जो बच्चे हमारे समाज, देश, और धर्मकी आशायें हैं। उनके साथ ऐसा निष्ठुर बर्त्ताव करनेका इन अभिभावकोंको क्या अधिकार है? ऐसे लोगोंका जातिसे बहिष्कार होनाही अच्छा है। नशीले पदार्थोंके व्यवहार करने तथा तवायफोंके नाचसे यह देश कितना गारत हो रहा है? इसका विवेचन अन्यत्र किया गयाहै। अस्तु अब बच्चोंके पहिनावके विषयमें इतना लिखदेना जरूरीहै, कि बच्चोंको जो कपड़े पहनाये जावें वह न तो बहुत तंग हों। नबहुत ढीलेहों बच्चों के कपड़े चुस्त दुरस्त होने चाहिये, जिससे बालकोंको आराम मिले। कपड़े साफ और सुथरे होने चाहिये। मैले कुचैले कपडे कदापि नहीं पहिराना चाहिये। मैले कुचैले कपड़ों में जूं पड़जातीहै। वह बालकोंका खून पीतीहै। फोड़े फुन्सी वगैरहः जितने बालकोंको होतेहै। वह गन्दगीके कारणही होजातेहैं।

इस "युवकशिक्षा" पुस्तकके आरंभमें जो कुछ बालकोंके विषयमें लिखा गयाहै, वह केवल भूमिका (Introduction) मात्र है। इस विषयपर एक बड़ी पोथी लिखी जा सकती है। अङ्गरेजीमें एक कहावत है की "child is the father of man" अर्थात् बच्चेसेही बड़ा मनुष्य होताहै। सो बालकोंके लालन पालनकी उचित व्यवस्था होनेसे युवावस्थाकी कठिनाइयाँ भी सुगम होजातीहैं।

* किसोरावस्था ।

वाल्यावस्थाको अज्ञानावस्था वतलाया जाताहै । वालकोंको अबोध अज्ञान कहा जाता है । परन्तु विचार पूर्व्वक देखा जाय तो वाल्यावस्था अज्ञानावस्था नहीं है । अज्ञानावस्थाका प्रारम्भ यौवनके प्रादुर्भाव होनेसे होता है । १८ वर्षकी अवस्थासे २५ वर्षकी आयु तक मनुष्य बिलकुल अज्ञानी होताहै । उसकी इस अज्ञानावस्थाका प्रारम्भ चौदह वर्षकी आयुसे होताहै । १४ वर्षसे १८ वर्ष तक यह प्रारम्भिक अज्ञानावस्था है। १८ से २५ वर्ष तक, कहीं ३० कहीं ३५ वर्ष तक इस अज्ञानावस्थाका पूरा जोर होताहै । इस अज्ञानावस्थाके आरम्भ होतेही मनुष्य विवेक शून्य होजाता है । उसको अपने आगे पीछेका कुछ ख्याल नहीं रहताहै । जितने अन्याय, अनर्थ और कुकर्म किये जाते हैं । उनका सब आरम्भ इस अवस्थासेही होजाता है । १४ से १८ वर्ष तकका समय नवयुवकोंके लिये बड़ाही नाजुक होताहै । अतएव १४ से १८ वर्ष तक अभिभावकोंको चाहिये कि वह लड़कोंकी संगति पर कड़ी निगाह रखें । इस समय इस बातकी विशेष सावधानी रखनी चाहिये कि लड़के कैसी संगति में रहते है? उनके मिलने वालोंके कैसे आचरण हैं? वे कहां आते जाते है? जिन लोगोंके साथ वे रहते हैं, वे किस स्वभावके हैं ? उनके रहन सहनका कैसा ढङ्ग है ? लड़कोंको जितना होसके, उतना इस समय बुराईसे बचाना जरूरी है । पाठकोंने इसका अनुभव किया होगा कि अनेक लड़के बाल्यावस्थामें कुसाग्र बुद्धि होते हैं । उनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है । वे बहुत सीधे होते हैं । किसी प्रकारका छल प्रपञ्च

---

* दस वर्षसे पन्द्रह वर्ष तककी अवस्थाको भी किशोरावस्था कहते हैं । परन्तु यहा पर किशोरावस्थासे तात्पर्य युवावस्थाके आरम्भसे है । अर्थात १४–१५ वर्षकी अवस्थामे १८–१९ वर्षकी आयु तक—लेखक.

वे नहीं करना जानते है। उनका निष्कपट व्यवहार होताहै। किन्तु आगे चलकर उनके स्वभावमें उच्छृङ्खलता आजाती है। इसका असली कारण यह है कि उनकी सोहबत बिगड़ जाती है। जैसे लोगोंके साथ उनका उठना बैठना रहता है। वैसेही उनके विचार होजाते है। स्मरण रहे कि सहवासका विचारोंसे घनिष्ट सम्बन्ध होताहै। जैसी सोहबत मनुष्य करेगा वैसे उसके विचार हुए बिना कदापि नहीं रहेंगे। एक कवि कहता है:—"संगति कीजै साधकी, हरै और की व्याधि, ओछी सगति नीचकी आठों पहर उपाधि"। अतएव जहांतक होसके १४ से १८ वर्षतक लड़कोंको अच्छी सोहबतमें बैठाना चाहिये। १४ वर्षसे तरुणावस्थाका आरम्भ होजाता है। तरुणावस्थामें सौन्दर्य्यना अपनी अनुपम छटा दिखलाती है। मुखकी कान्ति खिल उठती है। चाहें जैसा कुरूपव्यक्ति क्यों न हो? किन्तु इस अवस्थामें उस पर स्वभाविक सौन्दर्य्यता कुछ न कुछ अपना अधिकार करही लेती है। बुद्धिके स्फुरित और विचारके परिपक्व होनेका यही समय होता है। लड़कोंके रूप रङ्ग, विद्या बुद्धिबल और साहसके विकाशका यही समय होताहै। अत्युच्च ज्ञानके सम्पादन करनेकी यही अवस्था है। शारीरिक शक्तिके पुष्ट होनेका भी यही समय होताहै। अतएव इस अवस्थामें नवयुवाओंकी संगति की उपेक्षा करना, अपनेही हाथोंसे अपनी सन्तानका गला घोटना है। प्रकृतिका यह नियम है कि १४ वर्षसे १८ वर्षतक जो कि तरुणावस्थाका प्रारम्भ है, उसमें नवीन इच्छा नवीन आकांक्षा नवीन आशा और नवीन उत्साह स्वतःही उत्पन्न होते हैं। क्योंकि चौदह वर्षकी आयुतक बालक अपने अभिभावकोंके आधीन होते है। किन्तु इस अवस्थामें नवयुवक पूरे स्वतन्त्र होजाते हैं। इस किशोरावस्थामें इस बातका ध्यान रखनेकी विशेष आवश्यकता है कि नवयुवकों की नवीन इच्छा, नवीन आकाँक्षा, नवीन आशा और नवीन उत्साहका दुरुपयोग न होने पावें। हिन्दुस्थानमें पहले

१४ वर्षसे १८ वर्षकी उम्रतक नवयुवकोंके विगड़नेका इतना भय नहीं था, जितना कि अब होता है। उसके दो कारण थे। प्रथम कारण यह था कि बच्चेपनसे चौदह वर्षकी अवस्थातक शिक्षा ऐसी अत्युत्तम दीजाती थी कि आगे किशोरावस्थाके आनेवाले तूफानोंसे स्वयँ अपनी रक्षा करनेमें समर्थ होजाते थे। उस समय रहन सहनकी कुछ ऐसी अवस्था थी कि वह वहुत सादेपनसे रहते थे। जिसको आजकल गँवारपन कहा जाता है, वह उस समय सीधापन कहलाया जाता था। दूसरा कारण उस समय यह भी था कि होश सम्हालतेही अर्थात् ७—८ वर्षसे २५ वर्षतक अपने गुरुओंके यहां रहतेथे। जहां बालकोंका उपनयन संस्कार हुआ कि वे अपने गुरु, आचार्योंको सौंप दिये जातेथे। गुरु, आचार्योंके निकटही ७—८ वर्षकी अवस्थासे यौवनावस्था तक विद्याध्ययन करतेथे। विद्याध्ययनकी समाप्ति तक उनको ब्रह्मचर्य्यसे रहना पड़ताथा। आजकल विद्याध्ययनकी परिपाटी और उस समयकी विद्या पढानेकी व्यवस्थामें वड़ा अन्तर है। उस समय जहां गुरु, आचार्य्योंका रहना होता था, वहां कभी कदापि कोई साँसारिक रहस्य नवयुवकोंको डांवाडोल नहीं करता था। गुरुजी जंगलमें रहतेथे। हरियाली घासका फर्श होताथा। झोपड़े बने होते थे, जिनमें गुरु और छात्रोंका निवास होताथा, आचार्य और छात्रोंमें पिता पुत्रसे बढ़कर सम्बन्ध होता था। गुरु अपने छात्रोंको पुत्रसे भी बढ़कर समझते थे। छात्रगणभी अपने गुरुकी पितासे बढ़कर सेवा शुश्रूषा करते थे। आचार्यगण अपने छात्रोंको अत्युच्च ज्ञान सम्पादन कराते थे उनको नैत्तिक, धार्मिक शिक्षायें प्राप्त होजाती थी। आजकलके विद्यार्थीयों और अध्यापकोंमें जैसा परस्पर सम्बन्ध होता है। और उस समयके छात्र गण और आचार्योंमें जैसा सम्बन्ध होताथा। उसके विचारमात्रसेही हृदयमें ठेस लगती है। उस समय

विद्यार्थियोंकी रहन सहन ऐसी होती थी कि कदापि उनका चारित्र कलुषित नहीं होता था। आजकल की भाँति वह कदापि कुसंगतिमें नहीं पड़ने पाते थे। इसका एक विषेश कारण यहभी था कि उनके सभी साथियोंको विद्याध्ययनके अतिरिक्त और कुछ काम नहीं होता था। दूसरे आजकलकी भाँति वह फैशनके शिकार नही बने हुए थे। जैसे सीधे सादे निष्कपट व्यवहार करनेवाले गुरुलोग होते थे। वैसे ही गुरुओंकी रहनसहनको आदर्शमानकर विद्यार्थी रहते थे। उस समय जिस ढङ्गसे विद्यार्थी रहते थे, वह आजकल शिष्टताके विरुद्ध समझा-जावगा। वह नङ्ग धड़ङ्ग कौपीन लपेटें रहतेथे। शिर मुंडा हुआ रहता था। शरीरपर मट्टीलिपटी हुई होती थी। उनको अपने पढने और गुरुके काम करनेके अतिरिक्त दूसरा कोई कर्म ही नहीं रहता था। अब वर्तमान समयको देखियेगा कि जबसे लड़के स्कूल जाते है, तब हीसे उनके चारित्रके कलुषित होजाने की नींव पड़जाती हैं। फिर १२ वर्षसे १६ वर्षकी अवस्थातक जैसे उनके घृणित चरित्र हो जाते हैं। उसके विचारमात्रसेही हार्दिक वेदना होती है। एकतो बाल्यावस्था और किशोरावस्थामें सौन्दर्य स्वाभाविक ही अपना अधिकार कर लेता है। दुसरे उनकी रहन सहन ऐसी होजाती है कि पापी लोगोंको अपनी पाप वासना पुरी करनेकी लौ लग जाती है। शिरपर एलवर्ट फैशनके घुंघराले वाल लहराये हुए नज़र आते हैं। कपड़े ऐसे काँट छाँट करके पहने जाते हैं कि देखनेवालोंकी नजर अपनेआप उधर खींच जाती है। जाकटकी पाकटमें घड़ी अपनी निराली मनोहर छटा दिखलाती है। पानोंकी लाली ओठोंपर निराली शोभा ला देती है। इस ढङ्गका फैशन उनके सौन्दर्यमें अग्निमे घी डालनेका काम कर जाता है। जिसका अत्यन्त भयङ्कर परिणाम होता है। पहले प्रकरणमें कहा-गया है कि बालकोंको नौकरोंके सुपर्द कदापि नहीं करना चाहिये। किशोरावस्थामें नवयुवकोंको नौकरोंके भरोसे छोड़ना और भी बहुत बुरा है। नौकर लोग इनके रूप रङ्गपर मोहित होकर इनके साथ अपनी

पाप वासना पूरी करते हैं। आजकल पाठशालोंमें लड़कोंके चरित्रकी सावधानीका कोई प्रबल उपाय नहीं होता है। कहीं २ देखा जाता है कि अनेक स्कूल मास्तरोंके भी हृदयमें कलुषित, दुष्ट पाप वासना भरी होती है। वे भी लड़कोंको फुसलाकर अपनी जघन्य, घृणित और कलुषित लालसा उनके साथ पूरी करते है। वे लड़के जो समाज, देश और धर्मकी भावी आशायें हैं। जिनके चरित्रके संगठन होनेपर समाज, देश और धर्मके विशेष उपकारकी बाट जो रहे हैं। उनका चरित्र यों मिट्टीमें मिलाया जाता है। हाय! जो नवयुवक आगे जाकर शूरवीर कर्म्मवीर, धर्म्मवीर होते। उनकी प्रतिभाका यों नाश किया जाता है। उनके मर्द होते हुए भी उनसे स्त्रीका काम लियाजाता है। यही कारण है कि आज हम जिनवच्चोंकी चमत्कारिणी बुद्धि देख रहे हैं। किशोरावस्थामें उनकी निकम्मी बुद्धि होजातीहै। वे मूर्ख रहजाते है। उनका मन पढने लिखनेमें विलकुल नहीं लगताहै। ऐसे पापी जनोंकी पापवासनाको पूरी करते समय नवयुवकोंको एक औरभी कुटेव पडजाती है। अर्थात् अपनेही हाथ अपने जीवनाधार वीर्य्यको नष्ट कर देतेहैं। यों सृष्टिके नियमके विरुद्ध कार्य्य करनेसे नवयुवकोंकी बड़ी भयानक स्थिति होजाती है। जिस अवस्थामें सौन्दर्यका विकाश होना था, उस अवस्थामें वह कुरुप होजाते हैं सृष्टिके नियमके विरुद्ध पाप कर्म करनेसे उनके चेहरेकी कान्ति भ्रष्ट होजाती है। उनके गाल पिचकजाते है। आँखोंकी रोशनी बिगड़ जाती है। स्मरण शक्तिका ह्रास होजाता है। नपुसकता घेरलेती है। आलस्यता और कायरता अपना अधिकार करलेती है। वे सन्तानोत्पत्ति करनेके योग्य नहीं रहते हैं। सृष्टिके नियमके अनुकूल चलनेवाला ६०–७०वर्षका बूढाभी सृष्टिके नियमके विपरीति चलनेवाले नवयुवकोंसे कहीं अच्छा होताहै। सृष्टिके नियमके विपरीति चलनेके कारण नवयुवकोंकी हिम्मत टूट जाती है। उनको अपना जीवन एक प्रकारसे बोझा प्रतीत होता है। वीर्यको हाथद्वारा निकालना जीतेजी अपनी

आत्मघात करनाहै। किसीबातसे दुःखितहोकर जो लोग अपनी आत्म-हत्या करडालते है। वह कुछकालके लिये अपने उनदुःखोंसे छुटकारा तो पाभीजाते है परन्तु जीतेजी इस आत्मघातिनी कुटेवसे नवयुवकोंका साराजीवन निकम्मा होजाताहै। जब इसकुटेवका परिणाम उनको ज्ञात होताहै। तवतो वह खूव पश्चाताप करते हैं। और अपनी खोई हुई ताकतको प्राप्तकरनेकी पूरी चेष्टा करते हैं। पर शोकका स्थल है कि प्रथमतो स्वाभाविक शक्तिमें और औषधियोंके प्रयोगकरनेसे प्राप्त की हुई शक्तिमें वड़ाअन्तर होताहै। दूसरी वात यह है कि इस खोई हुई शक्तिको प्रदान करनेवाली औषधियां कठिनाइसे मिलती हैं। नवयुवकगण अपनी खोयी हुई शक्तिके प्राप्त करनेकी धुनिमें व्यर्थ यथेष्ट धन भी व्यय करते हैं। तीसरी वात यह भी है कि वे यथेष्ट धनका व्यय करकेभी अनेक रोग अपने शरीरमें लगालेते हैं। क्योंकि जिन औषधि-योंका धोखेमें आकर वे प्रयोग करते हैं। उन औषधियोंमें अनेक धूर्त्त नामधारी वैद्य ऐसी ऐसी चीजें मिलादेते हैं। जो लाभ पहुँचानेके बदले उलटी हानि करती हैं। सच पूंछोतो इस कुटेवमें पड़कर स्वा-स्थ्य और धन दोनों खोते हैं। उनका वल, वीर्य, शौर्य, तेज सवही नष्ट होजाताहै। चेहरेपर झुरझियॉं पड़जाती है। आंखेंभीतर धसक-जातीहैं। कलेजा धड़का करता है। नवयुवक गण अज्ञानवश इस कुटेवमें पड़कर अपने जीवनपर कुठार चलालेते हैं। उनके अभिभावक गण इन सव वातोंका परिचय न पाकर उनकी शादी करते हैं। देखा गया है कि अनेक अभिभावकोंका विश्वास होता है कि वोर्डिङ्गहाऊ-सोंमें रहनेसे लड़कोंका चरित्र नहीं विगड़ता है। वे अपने लडकोंको वोर्डिङ्गहाऊसमें रखकर निश्चिन्त होजाते हैं। परन्तु नहीं वोर्डिङ्गहाऊसमें नवयुवाओंकाजितना चरित्र विगड़ताहै। उतना और कहीं नहीं विगड़ता है। इस निबन्धके लेखककी यह देखी हुई वातहै, क्योंकि नववद्युक्त प्रदेशके

एक ऐसे शहरमें एक साप्ताहिक पत्रका सम्पादक था। जिसमें दो तीन कॉलेजेज, कई स्कूलें तथा दसबारह बोर्डिंगहाऊस हैं। वहॉपर बोर्डिंगहाऊसके रहनेवाले नवयुवाओंकी जो भयानक स्थिति देखी है। उसके विचार मात्रसे हृदय कम्पायमान होता है। शिक्षा विभाग एज्यूकेशनल डिपार्टमेण्ट, के बहुत कड़े नियम बनादेनेपरभी, बोर्डिंगहाऊसके नवयुवाओंपर कड़ी नज़र रखनेपर भी उनका चरित्र विगड़ही जाताहै। प्राय बोर्डिंगहाऊसके नवयुवकगणमें फी सैकड़ा पांच ही मुश्किलसे मिलेंग। कि जो किसी कुटेवमें नहों। नहीं तो प्रायः कलुषित चरित्रके होते हैं नवयुवा छात्र-गण बोर्डिंगहाऊसके सुपरिण्टण्डेण्टको भी कुछ नहीं समझते है। विचारा सुपरिण्टेण्डेण्टभी इन नवयुवाओकी करतूतोको जानता हुआ भी, उपेक्षा-करके अपनी इज्जत बचाताहै। मेरे एक मित्र जो कि तीनचार वर्ष बराबर बोर्डिंगहाऊसमें रहेहै। उन्होंने जैसा मुझको बोर्डिंगहाऊसोंके विषयमें सुनायाहै। उससे ज्ञात होता है कि चाहे जैसा सुशील नवयुवा बोर्डिंगहाऊसमें क्यौनभेजा जावे? किन्तु उसका चरित्र कलुषित हुए विना कदापि नहीं रहेगा। बोर्डिंगहाऊसके नवयुवकोंकी करतूतका यहांपर उल्लेख नहीं किया जासकता है। उन अश्लील बातोंके लिखते समय लज्जा आड़े आजातीहै। अस्तु इस विषयमें विशेष न लिखकर पाठकोंसे केवल इतनाही कहनाहै कि उनको चाहिये कि नवयुवकोंको इन आनेवाली आपत्तियोंसे खूब सावधान करदें। अभिभावकोको इस विषयमें तनिक भी लज्जानहीं करना चाहिये। तनिक सङ्कोच करनेसे भयानक स्थिति उपस्थित होजाती है। बोर्डिंगहाऊसमें लड़कोंको दाखिल कराके यह न समझें कि उनका अबजीवन सुधर जायगा। किन्तु उन कुटेवोंकी बात नवयुवकोंको जहांतक बने समझादें, ताकिवे इन जहरीली कुटेवोंसे। साव-धान रहैं। यहांपर मै एकबात और कहेदेताहूं कि कोई यह न समझें कि मेरा खास आक्षेपशिक्षित नवयुवाओंपर अथवा बोर्डींगहाऊसके रहनेवाले विद्यार्थीयोंपर हैं। नहीं नहीं जो बोर्डिंगहाऊसमें भी कभी नहीं गये हैं। स्कूलोंकी शकल भी नहीं देखी है वेतो बहूत ही ज्यादे विगड़े हुए

होते हैं। उनकी दशा इन नवयुवाओंसे कहीं विशेष भयङ्कर होती है। उसका कारण यह है कि प्रथम तो उन्होंने शिक्षा नहीं पायी हैं। दूसरे उनकी संगति भी खराब रही हैं। अतएव जिन्होंने शिक्षा नहीं प्राप्त की हैं। और कुसंगतिमें भी रहेहै। अगर उनका चारित्र बिगड़ा होतो कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु क्षोभतो इस बातकाहै कि जिनकी शिक्षाके लिये अगणित व्यय किया जाताहै। और शिक्षाका जो उद्देश्य है वह पूरा नहीं होता है। इस उद्देश्यके पूरे न होनेका कारण यहहै। कि उनको शिक्षातो प्राप्त हो जातीहै। परन्तु उनकी संगति ठीक नहीं होतीहै। स्मरण रखना चाहिये कि शिक्षा विचार सुधार सकती है, बुद्धिको तीव्र करसकतीहै। पर स्वभावको नहीं मिटा सकती है स्वभाव सुधारनेका उपाय संगतिसे बढ़कर और दुसरा नहीं है। अनुभवसे यह बात सिद्ध होती है कि चाहे जितना विद्वान् कोई क्यों न हो? यदि उसकी संगति ठीक नहीं है, तो कदापि वह नहीं सुधर सकता है। अनुभवसे यह भी साबित होताहै कि संगतिके प्रभावसे विद्वानोंका चरित्र कलुषित होजाताहै। संगतिके कारण मूर्ख सच्चारित्र बना रहता है। गाँवोंमें जहां वर्त्तमान सभ्यताका सब्जकदम नहीं पहुँचा है। वहांके नवयुवाओंमें ऐसे घृणितभाव नहीं पैदा होते है। बस इसीलिये ऊपर लिखागयाहै कि किशोरावस्थामें बालकोंकी संगतिपर विशेष ध्यान देनेका प्रयोजन है। जैसी उनकी संगति होगी वैसेही उनके विचार संगठन होंग। सुतराम् अपनी सन्तानसे अपना, उसका, समाजका देशका और धर्मका भला चाहते होंतो किशोरावस्थामें उनकी संगतिकी विशेष सावधानी रखो। क्योंकि किशोरावस्थामें अज्ञानावस्थाका आरम्भ होजाता है। आरम्भिक अवस्थामें जब मनुष्य ऐसे खोटे कर्म करसकता है। तब तो अज्ञानावस्थाके पूर्ण अधिकार प्राप्त करनेपर क्या क्या नहीं करसकता है? इसके विषयमें आगे लिखागया है। जिससे पाठकोंको मालूम होजायगा कि अज्ञानावस्थाके पूर्ण अधिकार प्राप्त करने पर मनुष्यकी कितनी दुर्गति होजाती है। इसलिये नवयुवाओंके हृदयमें अज्ञानावस्था अपना अधिकारहीन जमाने पावे। इसका उपाय करनाही उचित है।

अज्ञानावस्थाका पूर्ण अधिकार ।

पहले कहा गयाहै कि बाल्यावस्था अज्ञानावस्था नहीं है । अज्ञानावस्थाका आरम्भ किशोरावस्थासे होताहै । और युवावस्थाकी समाप्ति तक वह अज्ञानता रहती है । किन्तु इस अज्ञानावस्थाका पूर्ण अधिकार १८ वर्षसे ३५ वर्ष तकको रहताही है । परकिसी किसीको यह अज्ञानता ऐसे जकड़ लेतीहै । उसको जन्मपर्यन्त नहीं छोडतीहै । वे लोग अज्ञानतामें फसकर लोक और परलोक दोनों बिगाड़ते हैं । इस लिये उचित तो यही है कि इस अज्ञानताको प्रारम्भिक अवस्थामें चेता देना चाहिये ताकि यह अज्ञानता अपना पूरा अधिकार न जमाने पावे । क्योंकि न रहेगा बांस न बाजेगी बांसुरी । अज्ञानावस्थाका पूर्ण अधिकार १८ वर्षकी आयुसे होजाताहै । १४ वर्षसे १८ वर्षतक किञ्चित अज्ञानावस्था होती है १८ वर्षसे पूर्ण अधिकार होताहै । जब इस अज्ञानावस्थाका पूर्ण अधिकार होजाताहै । तबतो बहुत ही भयङ्कर स्थिति होजाती है । जीतेजी नर्क भुगतना पड़ता है । १८ वर्षकी आयु यौवनका भलीभांति प्रादुर्भाव होजाताहै । यदि युवकगण उस समय कुछकाल २०–२५ वर्षतक इन्द्रिय निग्रह करलें । तोबहुतही अच्छा हो । उस समय कुछ कालके लिये (कमसेकम २० वर्षतक और मनुस्मृतिके नियमके अनुसार २५ वर्षतक) इन्द्रियनिग्रह करना । सन्तानोत्पत्तिके उद्देश्यमें विशेष सहायता पहुँचाताहै । लेकिन नहीं आजकल १८ वर्षकी अवस्थामें इन्द्रिय निग्रह करना तो दूररहा, बल्कियुवक गण १८ वर्षकी अवस्थामें इन्द्रियोंकी तृप्ति करनेकी चेष्टा करते रहते हैं अनेक १८ वर्षके युवाओंके दो दो तीन तीन लड़के लड़कियाँ होजाती हैं । अनेक १७–१८ वर्षके युवकगण इन्द्रियोंका दमन न करके अ

चित रीतिसे इन्द्रियोंके तृप्ति करनेकी चेष्टा करते रहते हैं। जिसका विशेष कुफल देखनेमें आता है। १८ वर्षके युवकोंके दो दो तीनतीन सन्तति होजानेके कारण उनके अभिभावक गण है। जो विना विचारे बाल्यावस्थामें उनका विवाह करदेते हैं। हमारे देशमें यह भी कुप्रथा प्रचलित है कि अत्यन्त छोटी उम्रमें बालकोंका विवाह कर दिया जाताहै। विवाहका जो पवित्र उद्देश्य—सन्तानोत्पत्ति है। उसको बालक नहीं समझने पाते है। छोटी उम्रमें विवाह करना अपनी सन्तानको अपने हाथोंसे लोहेकी जन्जीरसे जकड़ना है। बाल्य विवाहसे इस देशकी बहुत हानि हुयी है। हिन्दुओंकी उन्नतिमें बाल्यविवाहसे विशेष बाधा हुई है। जल्दी जल्दी जो मौतें होजातीहै। उसका कारण बाल्य विवाहहै। आजकल अनेक स्त्रियाँ वांझ है, उसका कारण बाल्यविवाहहै। स्मरणरहे कि सृष्टीके नियमअटल हैं। सृष्टिके नियमको भङ्गकरनाही दुःख उठानाहै। आजकल अनेक मनुष्योंके मरेहुए बच्चे पैदा होते है या जल्दी मरजाते हैं। इसकाभी अनेक कारणोंमेंसे एक कारण बाल्यविवाह बतलाया जाताहै। युवाओंके विद्याध्ययनमें बाल्यविवाहसे पूरी बाधा होती है। परिक्षाका निकटसमय है रात्रिके दसबज चुके हैं। विद्यार्थी चिराग बालकर ध्यानपूर्वक एक नजरसे अपनी पुस्तकको बाँच रहा है। इतनेमें उसके कानोंमें बिछुओंकी झनकार पहुचती है। उसका यकायक ध्यान बट जाताहै। उधरसे आवाज़ आती है कि चलिये इतना समय होगयाहै। सोईयेगा बस लाचार होकर विद्यार्थीयोंको अपना ध्यान परिक्षासे हटाकर दूसरी ओर लेजाना पड़ता है। मैनें ऐसी बातें कितनेही विद्यार्थीयोंसे सुनी हैं। मैनें एकबार एक कुशाग्र बुद्धिवाले विद्यार्थीसे पूछा कि सदैव तुह्मारा प्रथम नम्बर परिक्षामें रहताहै। अबकी बार तुम्हारा इतना नीचा नम्बर क्यों रहा? इसके उत्तरमें दुःखितहोकर जो कुछ उस विद्यार्थीनें कहाथा। उसको पढ़कर पाठक अनुमान करलेंगे कि इस बाल्यविवाहका कितना खोटा परिणाम होताहै। उस विद्यार्थीने

कहा कि "महाशय! मैं भी यह जानताहूं कि जबसे स्कूलमें भरती हुआहूं, तबसे बराबर मैं परिक्षाओंमें प्रथमही रहाहूं। परन्तु इस परीक्षा के आरम्भ होनेवाले दिनके पूर्व रात्रिको मुझको विद्यार्थीसे गृहस्थी होना पड़ाथा। १९ दिन हुए कि मेरा गौना हुआथा। उस गौनेकी सुहागरात परिक्षाके आरम्भ होनेवाले दिनके पूर्व रात्रिको हुई थी। दूसरे शब्दोंमें कहसकताहूं कि मेरा भाग्य फूटा था। मेरे माता पिताने विद्याध्ययनकी परीक्षासे गृहस्थाश्रमकी आरम्भिक परीक्षामें मुझको उत्तीर्ण कराना उचित और कर्तव्य समझा था। जिससे मेरा मस्तिष्क खाली होगया था। मेरे मातापिताने विद्याध्ययनसे विशेष मूल्य स्त्री सहवासका समझाथा। वह यह नहीं चाहते हैं कि मैं विद्याध्ययन करूं। उनकी आन्तरिक इच्छा यह है कि वे जल्दी मेरे पुत्रका यानी अपने पौत्रका मुख देखलें। यही गनीमत समझियेगा कि अबकीबार भगवानकी कृपासे उत्तीर्ण होगया हूं" यह उत्तर सुनकर आंखोमें आंसू भरआये। मैं बलपूर्वक कह सकताहूं कि उस विद्यार्थीपर यह निष्ठुर व्यवहार न किया जाता। तो अवश्यही वह परीक्षामें छात्रवृत्ति (स्कालरशिप) प्राप्त करता। सम्भव है कि वह जिस विश्वविद्यालयकी परिक्षा देने गयाथा, उसका सारे विश्वविद्यालयमें प्रथम नम्बर होता। भारतवर्षका इससे विशेष क्या दुर्भाग्य होसकता है! कि प्रातःकाल परिक्षा देनी है और उससे पूर्व रात्रिको विद्यार्थीयोंको स्त्री सहवासके लिये उत्तेजित किया जाताहै। अब बालविवाहके पक्षपातियोंको सोच लेना चाहिये कि बाल्य विवाह करनेसे वह अपनी सन्तानकेसाथ कितना उपकार या अपकार कर रहे हैं। बीस वर्षसे नीचेके युवाओंके दो तीन सन्तति होजानेसे और भी एक बुरीबात यह होती है कि जिससे उनका सारा जीवन चिन्ता करते ही व्यतीत होता है। जो अवस्था उनके पढने लिखनेकी है। जिस अवस्थामें वह आत्मज्ञान और धर्मका सञ्चय करके अपने देश और समाजकी बहुत भलाई करसकते हैं। उस अवस्थामें उनका

सारा जावन चिन्ता करते ही व्यतीत होता है । चालीस वर्षकी अवस्थामें तो उनकी गिनती बूढोंमे हो जाती है । जहां ६० वर्षकी अवस्थामें पूरा जवान कहलाता था । वहां अब उस अवस्थामें मृत्युको प्राप्त होजाते है । बालविवाहके पक्षपातियोंको किसी विद्वान्‌का यह कथन स्मरण रखना चाहियेः—“वनस्पतेर पक्वानि फलानि प्रचिनोंतियः, सनाप्नोति रसं तेभ्यो वीज चास्य विनश्यति । यस्त पक्व मुपादत्ते काले परिणत वलं । फलाद्रस सलभते वीजच्चैव फलं पुनः” इसका भावार्थ यही है अपक्व फल जो वृक्षसे तोड़ लिया जाता है । उसमें रस मिलता नहीं है । पर हॉ वीजका नाश अवश्य हो जाताहै । पक्के फल तोड़नेसे रस भी मिलताहै न वीजका नाश होता है । किन्तु वरावर नित्यनये फल लगते रहते हैं । जो माता पिता अपनी सन्तानके सन्तान अर्थात् वहुत जल्दी अपने पौत्रके मुख देखनेके लिये तरसा करते हैं । उनको चाहिये कि ऊपरवाले श्लोकको अपने हृदयपटल पर सुवर्ण अक्षरोंमें अङ्कित्त करलें । उनको याद रखना चाहिये कि जिस तरहसे अपक्व फल तोड़नेसे वीजका नाश होजाताहै । वैसेही अपक्व अवस्थामें सन्तान उत्पन्न कराना पौत्रका मुख नहीं दीखना है वाल्कि उलटा इस चावमें अपने पुत्रकाभी अपने हाथसे गला घोंटना है। अस्तु, विवाह विषयपर एक स्वतन्त्र पुस्तक लिखनेका मेरा विचार है । जिससे पाठकोंको विवाहके महत्व और उद्देश्य ज्ञात होजावेंगे । आजकल विवाहका उद्देश्य भ्रष्ट होरहाहै । इसी लिये जो गृहस्थाश्रमका सुखहै । उससे वञ्चितरहते हैं । नहीं तो गृहस्थाश्रमकी वरावर लौकिक सुख किसीमें नहीं होता है । दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि इतनी अज्ञानतामें तो अभिभावकगण युवकोंको अपने आप फंसाते हैं । परन्तु आगे वे स्वय गहरी अज्ञानतामें फस जाते हैं । जिससे भारीभारी जोखिम उठानी पड़ती है। यह पहले कहाजाचुकाहै कि विचारोंका संगातिसे घनिष्ट सम्वन्ध है । कुसगतिही कुटेव लगानेवाली है। युवावस्था होतेही नवयुवक गण कुटेवकी ओर झुक जातेहैं

इस अवस्थामें अनेक बुरी आदत तो होही जाती है । किन्तु साथ ही कामदेवके आक्रमण सहन न करके, कामकी पीडासे व्यथित होकर व्यभिचारकी ओर झुक जाते हैं । धनाढ्योंकी सन्तानको इस पापवासनाके पूरी करनेमें नौकरोंसे विशेष सहायता मिलती है । नौकरलोग कुटनियोंसे गहरा मेलमिलाप रखते हैं । यह कुटनियाँ अच्छे अच्छे घरानोंकी बहू बेटियोंके सतीत्व नष्ट कराडालतीहैं । इन कुटनियोंके हावभाव पहचानना बड़ा कठिन होता है । यह कुटनियाँ ऐसी मिलजुल जातीहैं, कि किसीको इनकी पापवासना, कलुषित इच्छा और खोटे विचारोंका पता तक नहीं लगताहै । नौकर लोग अपने स्वामी पुत्रोंसे खूब रुपये लेकर इन कुटनियोंको देते है । यह कुटनियाँ ऐसी भोली स्त्रियोंको जिनके मनमें तनिकभी पाप नहीं होता है । फुसलाकर, अनेक प्रकारके कौशल रचकर उन बिचारियोंके पातिव्रतधर्म और सतीत्व नष्ट करा-डालती हैं । यह कुटनियाँ केवल धनाढ्योंके पुत्रोंकेही आचरण नहीं बिगाड़ती हैं । किन्तु मध्यम श्रेणीके लोगोंकेभी आचरण भ्रष्ट करने तथा उनको व्यभिचारी बनानेकी चेष्टा करती रहती हैं । सन् १९०३ की बातहै कि उससाल श्रावणके महीनेमें मैंने वृन्दावनमें एक ऐसा भयानक दृश्य देखा कि मेरे प्राण थर्रा उठे । उस समय युक्त प्रदेशके एक नामी सज्जन मेरे साथ थे । हम दोनों वृन्दावनके एक प्रसिद्ध नैयायिक शास्त्रीसे भेंट करके आये थे । शास्त्रीजीकी शान्त सौम्य मूर्तिके दर्शन से तथा उनके मधुरालापसे हमारे चित्तको जो शान्ति हुई थी । उसकी चर्चा हम लोग वहाँके एक नामी और विशाल मन्दिरके बाहरी दालानमें चहलकदमी करते हुए कररहेथे । कि इतनेमें एक और हमारे परिचित सज्जन मिले । इन आगन्तुक सज्जनने आतेही हम लोगोंसे पूंछा कि शास्त्रीजी अभी हैं या

गये। उत्तर दिया गया कि उनको बैठा हुआही छोड़ आये हैं। कहिये आपको क्या काम है? उन्होंने कहा कि हमको आज यहां ठहरना है। इस लिये उनसे कहकर इस मन्दिरके अहातेमे ही एक मकानका प्रबन्ध करना है। यह कहकर वह चले गये। हम दोनों अहातेसे बाहर निकलकर रेलवे स्टेशनको जाने लगे कि इतनेमें उनका एक दूसरा और साथी बगल की कोठरीसे निकला। इसको देखकर मेरे साथ जो सज्जन थे। उनको कुछ सन्देह हुआ। बिना किसी सङ्कोचके और मेरे मने करनेपर भी वह उस कोठरीके भीतर घुस गये। उनके अनुरोधसे मैं भी उनके साथ चलागया तो वहां देखा कि एक लड़की बैठी हुई थी जिसकी उम्र १२ और १४ वर्षके भीतर थी। उसकेसाथ एक स्त्री थी। जिसकी अवस्था चालीसके ऊपर थी। मेरे साथी सज्जन, इस स्त्रीकी दुष्ट इच्छा तथा उन दोनोंकी पापभरी वासनाको पहचान गये। उन्होंने उस स्त्रीसे तथा उस लड़कीसे प्रश्न करना शुरु कर दिया कि तू क्यों आई है? तेरा क्या नाम है? यह स्त्री तेरी कौन है? यह दोनों पुरुष तेरे साथ क्यों हैं? इन सब प्रश्नोंका जो उत्तर मिलाथा। उन सबका सार यही था कि चालीस वर्षसे ऊपर उम्रवाली स्त्री जो कि उस लड़कीके साथ थी। लड़की उससे बूआ बूआ कहा करती थी। उसनेही उस अज्ञान लड़कीको इस पापकर्म करनेके लिये उत्तेजित किया था। वे दोनों पुरुष इस अज्ञान लड़कीके साथ पापवासना पूरी करनेवाले थे। उस लड़कीकी शादी तो हो चुकी थी। पर उसका गौना नहीं हुआ था। अर्थात् वह अपने पतिके यहां नहीं गयी थी। पाठकोंको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि इस घटनाको देखकर मेरा खून खलबला उठा था। यदि मेरे साथी शान्ति स्वभावके न होते। तो न जाने उसरोज क्या नौबत बीतती? मेरे साथी सज्जनने मुझको

बहुत शान्त कियाथा। इतनेमे वे दोनों दुष्ट जन आगये। उन्होंने उस बूढे नैयायिक शास्त्रीसे जिनको इनके पापकर्मकी बिलकुल खबर नहीं थी। आज्ञा लेली यह सबके सब उठकर दुसरी कोठरी को चल दिये। हम लोगोंने भी इन सब दुष्ट जनोंको सर्व व्यापक सर्व अन्तरयामी, परमात्माके भरोसे छोड़ दिया कि वहही इन दुष्टजनोंकी दुष्टताके लिये दण्ड देगा। नहीं जानते कि वह न्यायकारी परमात्मा ऐसे लोगोंके लिये किस दण्डकी व्यवस्था करेगा न मालूम दूसरे जन्ममें इन पापोंके कारण ऐसे लोगोंको कौनसी योनी मिलैगी? अस्तु इस लम्बी घटनाके उल्लेख करनेसे तात्पर्य यह है कि युवाओंको इन कुटनियोंसेभी विशेष सावधान रहना चाहिये। ताकि वह इन कुटनियोंके फन्देमें फंसकर अपना चरित्र कलुषित न करें। गृहस्थोंको उचित है कि उनके यहाँ बाहरसे जो स्त्रियाँ आती हैं। उनकी चाल ढालकी विशेष सावधानी रखें। जो युवक परदेशमें अकेले नौकर हों अथवा और कोई काम करते हों उनको उचित है कि कदापि वे अपने यहाँ खिदमतगारकी जगह औरत नौकर न रखें। न रसोई करानेके लिये कोई स्त्री अपने यहाँ रखें। प्राय यह देखा गया है कि अनेक लोगोंका जो स्त्रियाँ रसोई करनेको होती हैं उनसे उनका अनुचित सम्बन्ध होजाता है। विहार प्रान्तमें जो टहलनियाँ जिनको दाई कहते हैं। बड़े निकम्मे चारित्रकी होती हैं। जो बाबूलोग अकेले वहां रहते हैं। उनमेंसे फी सैकड़ा पांचही मुश्किलसे इन टहलनियोंसे बचे होते हैं। सौन्दर्यमें भी यह टहलनियां बहुत गिरी हुई होती हैं। तिसपरभी युवकगण इनके फन्देमें फंस जाते हैं। जिसका यह घृणित फल देखनेमें आता है कि वह अपने स्वास्थ्यकी विशेष हानि करतेहैं। क्षणिक आनन्दके कारण सैकड़ों रोग लग जाते हैं गरमी, सुजाक वगैरहः रोगोंसे पीड़ित होकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। पेन्शन बिल पोस्टोंपर सरकार ऐसी बीमारीवाले लोगोंको मुकर्रर नहीं करती

है। युवकगण भोग विलासमें इतने फंस जाते हैं कि उनको अपने तन, मन, धनका कुछभी विचार नहीं रहता है। मैंने एक बार तीन चार युवाओंसे इस विषयमें बहुत दलील की तो मुझको यह अनोखा उत्तर मिलाः—"यहां तो चैनसे गुजरती है। आकबतकी खुदा जाने" मैंनेभी इस उत्तरको सुनकर उन लोगोंसे कहा कि खाक यहाँ चैनसे गुजरती है। आकबतमें पड़ेगी पैजारें। जिन लोगोंपर गृहस्थीका बोझा है। हरदम चिन्ता रहती है। वे तो कम बिगड़ते है। किन्तु जिनपर लक्ष्मीकी पूर्ण कृपा है। वे इस रङ्गमें इतने रङ्ग जाते हैं। कि उनको दीनदुनियांकी कुछभी खबर नहीं रहती है। देखा गया है कि इस रङ्गमें डूबनेके कारण अनेक सेठ साहूकारोंके दिवाले निकल जाते हैं। अनेक लोग गृहस्थी होनेपर भी तवायफें रख लेते है। तवायफोंको वास्तविक प्रेम कुछ भी नहीं होता है। वे प्रेमकी दासी नहीं हैं। वे तो रुपयेकी भूखी हैं। उनको इतनी मोहनी शक्ति मालूम होती है कि वे बातोंमेंही खोखला कर लेती हैं। उनके हाव भाव कटाक्ष कुछ ऐसे विलक्षण होते हैं कि जिनके कारण मनुष्य अपना वास्तविक स्वरुप भूलजाता है। धनके साथही साथ वह अपने स्वास्थ्यकी विशेष क्षति करता है। युवकगण अपनी अर्द्धांगिनी धर्मपत्निकी सुध भूलकर इन पापनाशिनियोंके मायाजालमें फस जाते है। अपने दुःख सुखकी साथिन, सच्ची पतिव्रता धर्मपत्निपर बडा अन्याय करते है। वे वेश्याओंके झूंटे हाव भावोंसे लोट पोट होकर संसारके सुखसे वञ्चित रहते हैं। "वल्लाह! क्या बहार आरही है"। चश्म बद्दूर क्या भोली, भोली सूरत है"। "अय! सुभान अल्लाह! क्या जोवन खिल रहा है।" "अय! परे हटो" "मैं सदके! मैं कुर्बान मुझेन छेडो"। "खुदाकी कसम"

मेरी तरफ तिरछी नजरसे न देखो" । वस यह चोचलेकी वातें इन लोगोंके चित्तमें चुभ जाती है । किसी वातका अनुभव तो होताही नहीं है । तरुणायीकी तरंग, कुसंगति और द्रव्यके मदमें ऐसे चूर हो जाते है । कि लोक, परलोककी कुछ सुध नहीं रहती है । मैं इन विवाहिता युवाओंसे पूछता हूं कि अगर उनकी स्त्रियाँभी परपुरुषोंसे ऐसाही अनुचित सम्वन्ध कर लें तो इन लोगोंको बुरा तो न लगेगा? यह भारतवर्षका सौभाग्य है कि स्त्रीपुरुष विवाहबन्धनके तोड़नेमें स्वतन्त्र नहीं होते हैं । नहींतो यहां परभी विलायतकी भांति "डाईवोर्स" के मुकदमोंकी कमी नहीं रहती । अगर ऐसे युवकोंकी स्त्रियांभी परपुरुषोंसे अनुचित सम्वन्ध करलें तो इसमें उन स्त्रियोंका दोष नहीं है। दोषके भागी तो यह युवकगण हैं जिन्होंने ऐसे अनुचित सम्वन्धकी कुरीति प्रचलितकी है । युवकोंको स्मरण रखना चाहिये कि जैसा उनका मन है । वैसाही उनकी धर्म पत्नियोंकाहै । बल्कि धर्मशास्त्र और वैद्यकशास्त्र डङ्केकी चोट कहरहेहै कि स्त्रियोंको पुरुषोंकी अपेक्षा काम-बाधा अठगुनी सताती है । वेश्याओंके भक्तजन और परस्त्री गमन करने वाले दुष्ट जनोंको मै चितौनी देताहूं कि वह अपने हृदयपर परमेश्वरके नामपर हाथ रखकर बतलावें कि यदि उनकी स्त्रियाँभी इस निकृष्ट पथका अनुसरण करें तो वे क्या बुराई करती हैं । कोई इससे यह कदापि तात्पर्य्य न निकालें कि मैं स्त्रियोंके ऐसे निकृष्ट पथके अनुसरण करनेका पक्षपाती हूँ । हरगिज़ नहीं । मेरा सैदवसे यही विश्वास है कि जो वात एकके लिये बुरी है, वह सवके लिये बुरी है। एकके लिये अच्छी है वह सवके लिये अच्छी है । अर्थात् व्याभिचार प्राणीमात्रके लिये बहुत बुरा है । वेश्याओंके भक्तजन, सोचलेंकी वह कैसा अन्याय कर रहेहैं । एकतो वे स्वयंही पापोंकी गठरी वांध रहें है । किन्तु अपनी स्त्रियोंको भी ऐसे पापोंके लिये उत्तेजित कररहें हैं । पाठक क्षमा करें मुझको अत्यन्त दुःखके साथ यह शब्द कहने पड़ते हैं कि हमारे

देशमें स्त्रियोंके ऊपर अन्याय, अत्याचार होरहाहै । और हम पुरुषोंके बुरेसे बुरे कर्म्मोंकी हिमायत करनेको अगुआ बन जाते हैं । इसका नमुना यह है कि दो तीन वर्ष हुए कि हिन्दी रसिकोंके एक श्रद्धाभाजन लेखकने होलीकी हिमायतमे "होलीका रहस्य" नामक एक पुस्तक लिखी है । उक्त लेखक महाशयने होलीकी हिमायत करते हुए वेश्याओंके विषयमें अपनी विलक्षण तर्क बुद्धिका यों परिचय दियाहैः—"... ...जब मनुष्यको लघुशङ्काकी बाधा हो तब वह घरमें ही पनालेपर (अन्यत्र नहीं) पेशाब करके अपनी बाधा निवृत्त करता है । परन्तु बाहर यदि उसे बाधा हुई और वह न रोकसका तो तब क्या करना? क्या चाहें जिस जगह पेशाब करके बाजारको बिगाड़दें? नहीं नहीं ऐसा नहीं । उसके लिये बड़ेनगरोंमें जैसे पैशाबखाने हैं । वैसेही जिनको विवाहका साधन नहीं है उनके लिये वेश्या हैं । जिस समाजमें वेश्या नही उनमें ऐसे लोग कुलवधुओंको भ्रष्ट करते हैं .....जब मैं आर्यमित्रका सम्पादकथा तब मैने इस पुस्तककी "आर्यमित्रनें" विस्तरित आलोचनाकीथी । उस समय मैंने इस पुस्तकके लेखक महाशयसे पूंछाथा कि "ऐसी औरतें" क्याकरें? उचिततो उनको यह था कि "ऐसी औरतों" के लिये कुछ व्यवस्था करते । जिससे "कुल पुरुष" भ्रष्ट होनेसे बचते । यह हिन्दी लेखक महाशयही क्यों? किन्तु कॉग्रेसके एक बड़ेभारी लीडर (नेता) जोकि बम्बईके निर्मुकुट राजा "(Uncrowned king)"कहलाते हैं वे तवायफोंके नाचमें इतने मस्त है कि कलकत्तेसे गौहरजानको बुलाकर बम्बईमें नाच कराया करते है । लाहौरमें आगामी दिसम्बरमें होनेवाली कॉंग्रेसके साथ जो देशी शिल्पकी प्रदर्शिनी होनेवाली है ! उसमेंभी वेश्याभक्त जनोंने वेश्याओंका नाचना ठहराव कर लियाथा । परन्तु जब उक्त प्रदर्शिनीसे सम्बन्ध रखनेवाले एक प्रोफेसर इस बातपर नाराज होकर उक्तप्रदर्शिनीसे सम्बन्ध परित्याग करनेको तैयार होगये थे । तबतो यहबात टली । अनेक जातियोंमें विवाहोंमें, उपनयन

संस्कारों तथा अन्य उत्सवोंमेंभी वेश्याओंका नृत्य होता है। अनेक बुद्धिके शत्रु रामनवमी प्रभृत्ति उत्सवोंपर ठाकुरजीके आगे भी इन वेश्याओंका नृत्य कराने लगगये हैं। हाय! हाय! आजकल हमारा देश कितना डूबता जारहा है और हमारी बुद्धि कितनी भ्रष्ट होगयी है। इसका अनुमान विद्वज्जन वेश्याओंके नाचसेही कर सकते हैं। वेश्याओंके नाचके अनेक पक्षपाती यह आपत्ति उठाते हैं कि नाचना और गाना दोनों कला (Art) हैं। पहले समयमेंभी इनका प्रचारथा। वेश्याओंके पक्षपातियोंके इस सुरमें सुर मिलाकर मैं भी यही कहता हूं कि वेशक नाचना और गाना बहुत भारी कला है। पहले समयमेंभी इनका प्रचार था। परन्तु आजकल जिस ढङ्गसे इस कलाका प्रचार हो रहा है। उससे देश और समाजको कुछ लाभ नहीं हुआ है। बल्कि विचारपूर्वक देखा जाय तो समाजकी बहुत भारी हानि हुई है। इस विषयमें विशेष प्रमाण देनेकी आवश्यकता नहीं है। हां जिन लोगोंको इसका हठ और दुराग्रह है वे प्रत्यक्षमें इस बातको देखकर सोच सकते हैं कि इन वेश्याओंसे समाज और देशको क्या लाभ पहुंच सकता है? कितनीही जातियां—जैसे मुसलमान, कायस्थ वगैरहः इन तवायफोंके रङ्गमें मस्त होकर गारत होगयीं हैं। इनके सहवासके कारण अपनी नस्ल तकको बरबाद करदेते हैं। कितनी ही नवयुवतियाँ देखती हैं कि उनके पति उनसे तो बोलना बुरा समझते हैं। पर इन वेश्याओंके अन्धभक्त बनरहें हैं तबतो वेभी सोचती हैं कि यदि हमभी इस पोजीशन (स्थिति)में होती तो हमारे पतिभी हमारी ऐसी खातिर करते, जैसा कि इनकी कररहें है। बस वे अज्ञानता वश इस कुमार्गका ग्रहण करती हैं नाच यह भी खराबी है कि नाचके वक्त शिष्टता, सभ्यता तो बिलकुल उठजाती है। नाचोंके वक्त यह बात देखनेमें आयी है कि ६० वर्षकाएक व्यक्ति बैठा है वहीं छः वर्षका एक

बालकभी बैठा हुआ हैं। पिता पुत्र और पौत्र तीनो बैठे हुए नाच देख रहे हैं। न तो पिताको इस बातकी सुध है कि मेरी बगलमेंही मेरे पुत्र और पौत्र बैठें है। न पुत्र और पौत्रही सोचते है कि मेरे बाप दादा बैठें हैं। महफिलमें बैठे हुए पिता, पुत्र और पौत्रमें पिता, पुत्र और पौत्रका भाव नहीं रहता है। तीनोंका हार्दिक भाव इस समय एकही होता है। विज्ञजन तनिक इस गहरी बातको सोचें कि उस समय इन दादा, बेटा और पोतेका वेश्याके प्रति एकही भाव होनेसे इन तीनोंका उनसे भिन्न भिन्न क्या सम्बन्ध हो सकता है? अर्थात् दादाके सम्बन्धसे पोतेकी वह तवायफ दादी हो सकती है। बापके सम्बन्धसे बेटेकी माँ होसकतीहै। दादेकी बेटे और पोतेके सम्बन्धसे पुत्र वधू और पौत्र वधू होसकती है। इसका भार पाठकोंकोही सौंपताहूं कि पिता, पुत्र और पौत्रका यह पवित्र, उच्च भावहै या निकृष्ट और घृणित भाव है। मुझे विशेष कहनेकी अवश्यकता नहीं है कि तवायफोंके रङ्गमें मस्त होजानेसे कितनेही बड़े बड़े लोगोंकी रियासतें नष्ट होगयी हैं। आर्यसमाजके प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वतीने जोधपुरके स्वर्गीय महाराज यशवन्त-सिंहको वेश्याके प्रेममें फँसेहुए देखकर कहाथा कि वेश्या कुतियाके बराबर हैं और राजा सिंहके समानहै। जो राजा वेश्याओंसे सहवास करते हैं। वे सिंह होकर कुतियोंसे सहवास करते है। मैं इस वाक्यका यह परिवर्तन करताहू कि जो लोग वेश्याओंका सहवास करते हैं। वे सब मनुष्यहोकर भी कुत्ते हैं। ब्रह्मसमाजके प्रसिद्ध वक्ता बाबू केशवचन्द्रसेनने एक स्थलपर कहाहै: —"Her (the dancing girls) blandishments are India's ruin Alas! her smile is India's death" समझे पाठक! केशवचन्द्रबाबू क्या कहते हैं कि इन तवायफोंके हावभावही हिन्दुस्थानके सत्यानाशके कारण हैं। अफसोस! इनकी मुसकराहटही भारतवर्षको नष्ट करनेवाली है। इसके अतिरिक्त कितनेही समझदार लोगोंने तवायफोंके नाच और इनके

सस्कारों तथा अन्य उत्सवोंमेंभी वेश्याओंका नृत्य होता है । अनेक बुद्धिके शत्रु रामनवमी प्रभृत्ति उत्सवोंपर ठाकुरजीके आगे भी इन वेश्याओंका नृत्य कराने लगगये हैं। हाय! हाय! आजकल हमारा देश कितना डूबता जारहा है और हमारी बुद्धि कितनी भ्रष्ट होगयी है। इसका अनुमान विद्वजन वेश्याओंके नाचसेही कर सकते हैं। वेश्याओंके नाचके अनेक पक्षपाती यह आपत्ति उठाते है कि नाचना और गाना दोनों कला (Art) हैं। पहले समयमेंभी इनका प्रचारथा । वेश्याओंके पक्षपातियोंके इस सुरमें सुर मिलाकर मै भी यही कहता हूं कि वेशक नाचना और गाना वहुत भारी कला है। पहले समयमेंभी इनका प्रचार था। परन्तु आजकल जिस ढङ्गसे इस कलाका प्रचार हो रहा है। उससे देश और समाजको कुछ लाभ नहीं हुआ है। वल्कि विचारपूर्वक देखा जाय तो समाजकी वहुत भारी हानि हुई है। इस विषयमें विशेष प्रमाण देनेकी आवश्यकता नहीं है। हां जिन लोगोंको इसका हठ और दुराग्रह है वे प्रत्यक्षमें इस वातको देखकर सोच सकते है कि इन वेश्याओंसे समाज और देशको क्या लाभ पहुच सकता है? कितनीही जातियां—जैसे मुसलमान, कायस्थ वगैरहः इन तवायफोंके रङ्गमें मस्त होकर गारत होगयीं हैं। इनके सहवासके कारण अपनी नस्ल तकको बरबाद करदेते हैं। कितनी ही नवयुवतियॉ देखती हैं कि उनके पति उनसे तो वोलना बुरा समझते है। पर इन वेश्याओंके अन्धभक्त वनरहे है तवतो वेभी सोचती हैं कि यदि हमभी इस पोजीशन (स्थिति)में होती तो हमारे पतिभी हमारी ऐसी खातिर करते, जैसा कि इनकी कररहें है। वस वे अज्ञानता वश इस कुमार्गका ग्रहण करती है नाच यह भी खरावी है कि नाचके वक्त शिष्टता, सभ्यता तो विलकुल उठजाती है। नाचोंके वक्त यह वात देखनेमें आयी है कि ६० वर्षकाएक व्यक्ति वैठा है वहीं छः वर्षका एक

बालकभी बैठा हुआ हैं। पिता पुत्र और पौत्र तीनो बैठे हुऐ नाच देख रहे हैं। न तो पिताको इस बातकी सुध है कि मेरी बग़लमेंही मेरे पुत्र और पौत्र बैठें है। न पुत्र और पौत्रही सोचते है कि मेरे बाप दादा बैठें हैं। महफिलमें बैठे हुए पिता, पुत्र और पौत्रमें पिता, पुत्र और पौत्रका भाव नहीं रहता है। तीनोंका हार्दिक भाव इस समय एकही होता है। विज्ञजन तनिक इस गहरी बातको सोचें कि उस समय इन दादा, बेटा और पोतेका वेश्याके प्रति एकही भाव होनेसे इन तीनोंका उनसे भिन्न भिन्न क्या सम्बन्ध हो सकता है? अर्थात् दादाके सम्बन्धसे पोतेकी वह तवायफ दादी हो सकती है। बापके सम्बन्धसे बेटेकी माँ होसकतीहै। दादेकी बेटे और पोतेके सम्बन्धसे पुत्र बधू और पौत्र बधू होसकती है। इसका भार पाठकोंकोही सौंपताहूं कि पिता, पुत्र और पौत्रका यह पवित्र, उच्च भावहै या निकृष्ट और घृणित भाव है। मुझे विशेष कहनेकी अवश्यकता नहीं है कि तवायफोंके रङ्गमें मस्त होजानेसे कितनेही बडे बड़े लोगोंकी रियासतें नष्ट होगयी हैं। आर्यसमाजके प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वतीने जोधपुरके स्वर्गीय महाराज यशवन्तसिंहको वेश्याके प्रेममें फँसेहुए देखकर कहाथा कि वेश्या कुतियाके बराबर हैं और राजा सिंहके समानहै। जो राजा वेश्याओंसे सहवास करते हैं। वे सिंह होकर कुतियोंसे सहवास करते है। मैं इस वाक्यका यह परिवर्तन करताहू कि जो लोग वेश्याओंका सहवास करते हैं। वे सब मनुष्यहोकर भी कुत्ते हैं। ब्रह्मसमाजके प्रसिद्ध वक्ता बाबू केशवचन्द्रसेनने एक स्थलपर कहाहै: —"Her (the dancing girls) blandishments are India's ruin Alas! her smile is India's death" समझे पाठक! केशवचन्द्रबाबू क्या कहते हैं कि इन तवायफोंके हावभावही हिन्दुस्थानके सत्यानाशके कारण हैं। अफसोस! इनकी मुसकराहटही भारतवर्षको नष्ट करनेवाली है। इसके अतिरिक्त कितनेही समझदार लोगोंने तवायफोंके नाच और इनके

सहवासमें अनेक त्रुटियाँ दिखलायी है। इतिहासोंमें ऐसे अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। कि कितने ही राजा, नब्बाव इन तवयाफोंके ही नाच रङ्गमें अपना राज्यतक गँवाचुके हैं। मुगलोंकी बादशाहातके सत्यनाशकी जड़ इन तवायफोंका ही नाच रङ्ग था। लखनऊके नब्वाव वाजिदअली शाहको अङ्गरेजोंकी शरणमें अपने जीवनके अन्तिम दिवस क्यों व्यतीत करने पड़े? केवल इन कालीनागिन वेश्याओंकेही कारण। पन्ना नरेश माधवसिंहकी राज्यच्युतिका कारण केवल वेश्याही वतलायी जाती हैं। स्थानका सङ्कोच है वर्ना ऐसे अगणित उदाहरण लिखे जा सकते हैं। इन सव वातोका मर्म यही है कि नवयुवकोंको इन वेश्याओंके फन्देसे वचानाही चाहिये। अभिभावकोंका यह कर्तव्य होना चाहिये कि वह इस वातका खूब प्रयत्न करें कि नवयुवकोंको इन वेश्याओंकी जहरीली हवा न लगने पावे। जो व्यक्ति व्यभिचारी है। उसका कदापि कभी किसी तरहका विश्वास नहीं करना चाहिये। प्रायः ऐसा होता है कि जिस मुहल्लेमें एक व्यभिचारिणी स्त्री होती है वह उस मुहल्लभरकी स्त्रियोंको व्यभिचारिणी वनानेकी चेष्टा करती रहतीहै। ऊपर कहा गयाहै कि कुटनियोंसे सावधान रहना चाहिये, देखा गयाहै कि यह कुटनियां भी वही औरतें होतीहैं। जो यौवनावस्थामें पूरी व्यभिचारिणी होती हैं। जव बुढापेमें वह इस योग्य नहीं रहतीहै। तव तो वह औरतोंको वहकाकर व्यभिचारिणी वनानेकी चेष्टा करती रहतीहैं। जिस भांति व्यभिचारिणी औरत भयङ्कर है। ठीक वैसेही व्यभिचारी पुरुष भी महाभयङ्कर है। जैसे व्यभिचारिणी स्त्री मुहल्लेभरकी स्त्रियोंको व्यभिचारिणी वनानेकी चेष्टा करती रहती है। वैसेही व्यभिचारी पुरुष मुहल्लभरके नवयुवकोंको व्यभिचारी वनानेका प्रयत्न करता रहता है। भारतवर्षसे सामाजिक शासन उठ गया है। नहीं तो समाज ऐसे व्यक्तियोंको

बहिष्कार करनेकी व्यवस्था करता तो सम्भव है कि इतना अनिष्ट न होनेपाता। कहीं कही व्यभिचारी पुरुष इतना अनर्थ करतेहै कि अपने बेटोकी वहू, अपने भाईयोंकी वहू वगैरहः पर भी हाथ फेर देते हैं। इन पापीजनोंकी पापमय लीलाका विशेष उल्लेख करके अपने तथा पाठकोंके पवित्र भावोको भी कलुषित करनाहै। अनेक ऐसे पापियोंको अपने पापोंका कर्म इस जन्ममेंही मिलजाताहै। वह सुजाक गरमी (आतशक) वगैरह रोगोंसे ऐसे पीड़ित होते है कि दीन और दुनियांके कामके नही रहतेहै। आतशक रोगसे बढकर भयङ्कर दूसरा और कोई रोग नहीं है। यह उडनेवाला रोग होताहै। व्यभिचारिणी स्त्रियोंके सहवाससेही पुरुषोंको लगजाता है। वे लोग इन व्यभिचारिणी स्त्रियोंके बनावटी सौन्दर्यपर मुग्ध होजातेहैं। फिर जन्मभर पछतातेहैं। युवकोंको जब यह बीमारी होजाती हैं तबतो वह इसको छिपातेहै इसका परिणाम यह होता है कि वह अनेक ऐसी औषाधियां व्यवहार करते हैं। जिनके व्यवहार करनेसे जन्मभर दुःख उठाते रहते हैं। गरमीका रोग ऐसा जहरीला होता है कि सारेशरीरमें प्रवेश करजाता है। शरीरके अवयवोंमें भरपूर वेठजानेसे मनुष्यकी विशेष दुर्गति होजाती है। हाथ पैरोंकी अंगुलियां सड़जाती है। नाक गलजाती है, तालूफटजाता है, आँखें वैठजाती हैं। कानोंसे वहरे होजाते हैं। कर्म्मेन्द्रिय सड़जाती हैं। सारे शरीरमें वड़े वड़े घाव होजाते है। इस बीमारीवाले व्यक्तिसे सवही मनुष्य नफरत करते हैं इस बीमारीका होनाही मानों व्यभिचारी होनेका सारटिफिकेट मिलना है। यह वीमारी ऐसी उड़नी होती है कि जहाँपर किसी ऐसी वीमारी-वाले व्यक्तिने पेशाब करदिया होतो वहांपर अच्छे आदमीके पेशाब करनेपर उसकेभी यह बीमारी होजाती है। इस रोगवालेके साथ खाने पीनेसे भी यह रोग लग जाता है। उपदंश आतशक के विषयमें इस छोटीसी पुस्तकमें विशेष नहीं लिखा जासकताहै। इस बीमारीसे

बड़ी बड़ी दिक्कतोंसे सामना करना पड़ताहै । एक बात औरभी है कि यदि इस बीमारीका जडसे नाश न किया जावे तो चाहै जब चाहे जिस अवस्थामें फूटआती है । यह बीमारी अपनेकोही दुःखदेकर खतम नहीं होजातीहै । परन्तु आगे जो सन्तान होतीहैं । उसको भी सताती है । इस बीमारीवाले व्यक्तिके जो सन्तान पैदा होती है । उसकी सन्तान प्रथम तो जीवित ही नहीं रहती है । जो जीवित रहती है तो अनेक रोगोंसे ग्रस्त रहती हैं । जैसा उपदंशका रोग भयङ्कर है, वैसाही सुज़ाकका है । जैसे दुराचारिणी स्त्रियोंके सहवाससे आतशक होजाती है । ठीक वैसेही इसकी भी उत्पत्ति होती है । इस रोगवाले मनुष्यकी बहुत बुरी दशा होजाती है । सुज़ाक कई प्रकारकी होती है । अनेक डाक्टर वैद्योंका यहभी कथन है कि मनमें बुरे विचार पैदा होनेसे, उनबुरे विचारोंके न निकलनेसे प्रमेह होताहै । प्रमेहसे सुजाक होजाती है । खैर चाहे जैसे आतशक, प्रमेह और सुजाक हो, यह सब इतनी भयङ्कर बीमारी हैं । कि जिनसे पीड़ित होनेपर मनुष्यको अपना जीवन बोझा प्रतीत होने लगजाता है । इसमें भी सन्देह नहीं है कि इन सब बीमारियोंकी उत्पत्ति व्यभिचार है। चाहें अनेक लोगोंको व्यभिचार न करनेसे यह बीमारी लगी हो किन्तु इन बीमारीयोंसे पीड़ित व्यक्तिओंके साथ उठने, बैठने, खाने, पीनेसे भी यह बीमारी होजातीहैं । वे क्या व्यभिचारी होते है । युवावस्थामेंही अज्ञानताका पूर्ण अधिकार होजाताहै जिससे यह सब दुःख उठाने पड़ते हैं । किसी किसीपर तो यह अज्ञानता इतना अधिकार जमा लेती है कि साठ सत्तर वर्षकी आयुमेंभी उनके हृदयसे यह अज्ञानता दूर नहीं होती है । जिस अवस्थाकी व्यवस्थामें शास्त्रकारोंने कहा है:— "गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्" उस अवस्थामें धर्मका आचरण करना तो दूर रहा, अधर्मका आचरण करते है। उस अवस्थामें इन्द्रियोंके शिथिल होजानेपर व्यभिचार करनेके लिये कामोद्दीपक औषधियोंका व्यवहार करते है । ऐसे लोगोंको कुछ ऐसा चसका पड़जाता है कि

बुढापेमें उनकी हिस बुझती नहीं है । तिसपर भी इन लोगोंकी जो कुगति होती है वह किसीसे छिपी नहीं है । आतशक, सुज़ाक वगैरह से जो कुगति होती है उसका ऊपर निदर्शन कियागया है । किन्तु समझदार लोग ऐसे व्यक्तियोंको बुरी निगाहसे देखते हैं । जो मनुष्य व्यभिचारी होते हैं, उनको अपने पापोंके भेद खुलजानेका बड़ा डर होताहै । कहीं कहीं तो इन व्यभिचारियोंके देखे जाने पर जूताओंसे पिटना पड़ता है कि छटीतककी याद आजाती है । सिसकते हुए घर आते हैं । अपने दुःखकी किसीसे कहने तककी हिम्मत नहीं होती है । इतने कहनेका सारॉश यह है कि यदि यौवनावस्थाके आरम्भमें ही अज्ञानताने अपना पूर्ण अधिकार करलिया तो वृद्धावस्थामें बराबर सताती रहेगी । अतएव इस विषयमें पूरी सावधानीका प्रयोजन है कि अज्ञानता अपना पूर्ण अधिकार नजमाने पावे । नहीं तो आजन्म इससे पीछा नहीं छूटेगा इस अज्ञानतासे बचनेका एकही उपाय "विचारोंका सुधार" है। विचारोंके सुधार होजानेपर मनुष्य ब्रह्मचर्य्यसे रह सकताहै । "विचारोंका सुधार" और "ब्रह्मचर्यकी महिमा" के विषयमें अन्यत्र लिखागयाहै ।

नशीले पदार्थोंसे हानि ।

आजकल हिन्दुस्थानमें नशीले पदार्थोंका भी विशेष सेवन किया जारहाहै । इन नशीले पदार्थोंका व्यवहार यहां तक बढ़ गयाहै कि अनेक मातायें अपने बच्चोंको भी दूधमें अफीम पोस्त वगैरहः घोलकर पिला देती हैं । क्योंकि बच्चे बहुत रोते हे । और रहते नहीं है माताओंको उस समय घरेलू काम करने होतेहैं । तब तो वे विचारी लाचार होकर यही सुगम उपाय सोचतीहैं । नशेमें बच्चा थोड़ी देरके लिये सोजाताहै । वे उतनी देरमें अपना काम निबटालेती है । परन्तु माताओंको यह विदित नहींहै कि वे अपने तनिक सुभीतेके लिये बच्चोंको कितना नुकसान पहुँचा रही हैं । अगर माताओंको यह विदित होता कि नशीले पदार्थोंके सेवन करानेसे बच्चोंके स्वास्थ्यकी कितनी हानि होती है तो कदापि वे अपने कलेजोंके टुकड़ोंके प्रति यह निष्ठूर व्यवहार न करतीं । माताओंको भी बतलाय देना चाहिये ताकि वे अपनी प्यारी सन्तानोंका अपने हाथोंसे स्वास्थ्य नष्ट न करें । इन नशीले पदार्थोंसे नवयुवकोंको विशेष सावधान रहना चाहिये क्योंकि नशीले पदार्थोंके सेवन करनेसे मस्तिष्क शक्तिका ह्रास होजाताहै । यह सब मानते और जानतेहैं कि जितनी शारीरिक शक्तियांहै उन सबका मस्तिष्क राजाहै । इस मनुष्य देहकी सारी शक्तियां सिर्फ एक दिमाग़की ताक़तसेही सब काम करनेमें समर्थ होतीहै । जिस आदमीका दिमाग़ बिगड़ जाताहै वह कोई कार्य नहीं कर सकताहै । मस्तिष्कमें खराबी पैदा होनेसे मानसिक शक्तिके साथही साथ शारीरिक शक्तिका भी ह्रास होजाताहै । इस लिये प्रत्येक व्यक्तिका पहला और अवश्यक कर्त्तव्य

है कि वह अपने मस्तिष्क शक्तिके पुष्ट करनेकी ओर ध्यान रक्खें जिससे पीछे मस्तिष्क बिगड़ जानेसे कोई दुःख न उठानापड़े । इस मनुष्य देहकी बनावट बड़ी विलक्षण है। शरीरके पुर्जे और जोड़ इस भाँति सटे हुए है कि एक पुर्जेके बिगड़नेसे शरीरके सारे पुर्जोंकी जोखिमका डररहता है । जैसे शारीरिक शक्तियोंका मस्तिष्क राजाहै, वैसेही पेट खजानाहै । खजानेमें गड़बड़ होजानेसे राजा और प्रजाको तकलीफ होती है । ठीक उसी भाँति इस शरीरके पेटरुपी खजानेमें गड़बड होजानेसे मस्तिष्करुपी राजा तथा प्रजारुपी अन्य इन्द्रियोंको अनेक दिक्तोंमे सामना करना पड़ता है । पर दुःखकी बात है कि हिन्दुस्थानियोंको अज्ञानताके कारण अपने शारीरिक और मानसिक शक्तिके बिगड़ने और सुधरनेका भी ध्यान नहीं रहा है । यहां तक विचार नहीं रहाहै कि कौन कौनसे पदार्थोंके सेवन करनेसे हमारी मानसिक और शारीरिक शक्तिका विकास होगा । कौन कौनसे पदार्थोंके सेवनसे शारीरिक और मानसिक शक्तिका ह्रास होगा। मनुष्यका पवित्र कर्त्तव्य देह रक्षा, जाति रक्षा, समाज रक्षा और अपने धर्मकी रक्षा करना है । परन्तु अभागे हिन्दूस्थानी अपनी रक्षा, जाति रक्षा समाज रक्षा, और धर्मकी रक्षा करना तो दूर रहा किन्तु अपने हाथसेही स्वयं अपने जाति, समाज और धर्म पर आघात कर रहे हैं। यदि हम लोग यह समझ गये होते कि अपने शरीर, जाति समाज, देश और धनकी रक्षा करनेका कितना महत्व है ? यदि हम लोग यह समझ गये होते कि अपना टका अपने समाज जाति और देशके रुपये बरबाद करनेमें कितना भयङ्कर परिणाम भुगतना पड़ता है तो कदापि आज हमारी, हमारी जातिकी हमारे समाज और देशकी यह शोचनीय स्थिति नहीं होती । यह सब न सोचनेके कारणही हमारी आज यह दशा होरही है । नहीं तो आज

क्यों ऋषिमुनियोकी सन्तान विद्या, बुद्धि बलमें भ्रष्ट होजाती? जिस जातिके पूर्वजोंने चावलके कण खाखाकर ऐसे दार्शनिक ग्रन्थ लिखेहैं। जिनको आधुनिक विद्या और सभ्यताका घमण्ड करनेवाले समझनेमें असमर्थ होते हैं। आज उनकी सन्तान उचित रीतिसे रक्षा न करनेके कारणही विद्या, बुद्धिबल, सहासमें सबसे पीछे है। इसके अनेक कारणोंमें नशीले पदार्थके व्यवहार करनाभी प्रबल कारण है। नशीले पदार्थोंके व्यवहार करनेसे बुद्धिभ्रष्ट होजाती है। भाँग, चरस, गांजा चण्डू, अफीम तम्बाकू शराब सबही नशे खराबहैं। इन नशीले पदार्थोंके प्रचारसे हिन्दुस्थान डूबा जारहाहै। सिगरेटों तथा शराबके प्रचारहो जानेसे हिन्दुस्थानका रुपया विलायत पहुँच रहाहै। जिसने शराबका नशा किया वह तबाह होजाताहै। करीब करीब सबही नशीले पदार्थ गर्म होते हैं। जो लोग अगरेजोंकी देखादेखी शराब तथा अन्य नशीले पदार्थोंके शिकार बनेहुए है। यह भूलतेहैं, उनको सोचना चाहिये कि प्रत्येक देशकी अनेक बाते आबहवापर निर्भर होतीहैं। इगलेण्ड शीत प्रधान देश है। हिन्दुस्थान उष्ण प्रधानदेश है इग्लेण्डमें इतनी सर्दी पड़ती है कि वहाँके लोगोंने शराब पीकर ही सर्दीसे अपने बचावका उपाय सोच रखा है। वहलोग शराब पीकर सर्दीसे अपना बचाव करें तो कुछ आश्चर्य नहीं है। न उनको शराब पीनेसे इतनी हानिहोती है जितनीकी हिन्दुस्थानके लोगोंको शराबके सेवन करनेसे हानि होनेकी सम्भावनाहै। इस लिये इंगलेण्डकी सब बातोंकी नकल करना ठीक नहीं जंचता है अङ्गरेजोंके यहां विवाहभोज्य तथा अनेक शुभ कार्य्योंमें स्वास्थ्य रक्षाके निमित्त मद्यका प्याला पिया जाता है। तिसपरभी वहां अनेक लोग मद्यपानका निषेध करते हैं। अनेक टेम्परेन्स एसोसियेशन स्थापित हैं। स्वर्गीय डबल्यु सी. केन, स्म्युलस्मिथ प्रभृत्ति अंगरेजही हैं जिन्होंने हिन्दुस्थानसे नशीले पदार्थोंके उठानेके लिये पार्लिमेण्टतक आन्दोलन किया था। इतनेपर भी हम लोगोंकी आंखे नहीं खुली हैं।

आजकल भारतवर्षमे शायदही ऐसी कोई जाति बची हो, जो नशा न करती हो। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षमें अनेक जातियोंमें नशा प्रचलित है। जिन जातियोंमें शराव, गांजा, चरस, तम्बाकू इत्यादिका प्रचार नहींहै। उन जातियोंमें भङ्गका खूब प्रचार है। युक्त प्रदेशके नागर ब्राह्मणोंमें तथा मथुराजीके चौबोंमें हुक्का पीनेतककी मनायी है। परन्तु इन जातियोंमें जब अन्य नशीले पदार्थोंकी मनायी है तब तो भङ्गका खूब प्रचार है। चौबे लोग जैसी भङ्ग पीते हैं वह तो सब पर विदितही है किन्तु नागर ब्राह्मणोंमें भी भङ्गका खूब प्रचार है सभ्य कहलानेवाले लोगोंमें दो प्रकारके नशा शराब और तम्बाकू फैले हुएहैं। डाक्टरोंका कथन है कि तम्बाकू पीनेवालेकी आंखे खराब होजाती है कभी कभी ऐसे पुरुष अन्धे होजाते हैं। तम्बाकूके पीनेसे बहिरे होजानेकीभी सम्भावना है। यह भी कहाजाताहै कि बहुत तम्बाकू पीनेसे हृदयके अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं। सिगरेट पीना तो आजकल एक प्रकारकी सभ्यता समझी जाती है। शराबका प्रचार यहांतक है कि नीच जातियां कोली धोबी, चमार वगैरहः भी इससे नहीं बच सके हैं। ब्राह्मण, वैश्यादि जिन जातियोंमें शराब पीनेकी मनायी है। और यहां तक कड़ा नियम है कि किसीको अपनी जातिमें शराब पीते हुए देखते हैं तो जाति बाहर कर देतेहैं। उन जातियोंमें भी छिपकर मद्यपान करने लगेहै। बड़ेबड़े गोस्वामी और आचार्यगण भी इस शराबसे नहीं बचसकेहैं। उनके अनेक लोग छिपकर पीतेहैं। पहले समयमें साधु महात्माओंसे संसारके उपकारकी विशेष सम्भावना रहती थी। लेकिन आजकल जो साधु सन्यासी देखे जातेहै वे चरस गांजेकी धुनमेंही दिखलायी पड़तेहैं। छोटी छोटी जातियां नशेमें इतनी चकनाचूर होगयीं हैं कि पैसा पास न होने पर भी वह लोग रुपया उधार करके शराब

पीतेहै। जिससे अपना स्वास्थ्य तथा देशका धन नष्ट करतेहैं। अङ्गरजी राज्यके पूर्व हिन्दुस्थानमे शरावका इतना प्रचार नथा कि जितना अव है। आज कलकी भांति न भट्टियोंकी इतनी अधिकता थी, और न गलीगली और मुहल्ले मुहल्लेमें इतनी कलारियांही थीं। आजकल शरावका जो प्रवल प्रचार होरहाहै। उसका कारण आवकारी विभाग (Excise Administration) भीहै। आवकारी विभागने यहां भट्टियां वनायी है कलारियां कायमकी है। जिसके कारण लोगोंके आँखोंके सामने मदिराकी वोतलें नाचेन लगीं और प्रचार होने लगा। इण्डियन नेशनल कॉंग्रेसके अनेक ठहरावोंमेंसे एक ठहराव "Excise Policy and Administration" भी रखा जाताथा। जिसमें गवर्नमेण्टसे आवकारी विभागके सुधारकी प्रार्थना की जातीथी। लेकिन सुना गया है कि आगामी दिसम्वरमें लाहोरमे कॉंग्रेसके नामसे जो "मेहता महफिल" होनेवालीहै, उसमें भी औद्योगिक प्रदर्शिनीके साथ ही साथ शरावकी भी दुकानें खुलनेकी इच्छा प्रकटकी थी। किन्तु अमृतसरकी मद्यपान निवारिनी सभाके अनुरोधसे यह वात टली। जव शिक्षित कहलाने वाले लोगोंकी यह दशा है तव तो अशिक्षित लोग इसका व्यवहार करें तो कुछ ताज्जुव नहीं है।

नवयुवकोंका यह पवित्र कर्त्तव्य होना चाहिये कि वे स्वयं नशीले पदार्थों का व्यवहार न करें तथा अन्य लोगोंको भी इसके व्यवहार न करनेका परामर्श देते रहें। सभी नशा मनुष्यको निकम्मे, आलसी वना डालतेहैं। स्मरण रहे वही जाति सुख सम्पत्तिका भोग कर सकती है जो जाति अपनी भलाई बुराईका खुद विचार करती है। नशे के प्रचार करनेमें भी एक प्रकारकी नीतिहै। जो चीनी उद्योगमें सवसे आगे वढ़े हुए थे वह आज अफीमके चसकेमें अपने उद्योगको तिलाञ्जुलि देचुके हैं वहां अफीम न भेजनेसे कौनसी बुराईकी सम्भावनाहै। उसका गहरा तात्पर्य प्रत्येक मनुष्यकी समझमें

आना कठिन है। पर इसमें सन्देह नहीं है कि अफीमके विशेष प्रचार होनेके कारण अफीमची चीन कहलाने लगा है। हमारे यहा राजपूतानेके लोगोने अफीमका व्यवहार करके आत्मा गौरव नष्ट कर दिया है। गत वर्ष पूनामें प्रातः स्मरणीय महात्मा बालगङ्गाधर तिलक तथा उनके स्वेच्छासेवकोने शरावके रोकनेमें भरसक यत्न किया था। पूरी सफलता प्राप्त होनेकी उनको सम्भावना हुई थी। किन्तु इस देशके दुर्भाग्यके कारण जो स्वेच्छासेवक मद्यपानके निषेध में सदुपदेश देते थे उनको उलटा आपत्तिमें फंसना पड़ा " ठीक होम करते हुए, हाथ जलने वाली " कहावत चरितार्थ हुई थी।

शराब तथा अन्य नशोके सेवन करनेसे शरीरमें अनेक रोग पैदा होजातेहैं। विलायतके अनेक डाक्टरोंने शराव पीनेकी मनायी की है। उनलोगोंका कथन है कि शरावके पीनेसे दिमाग पेट वगैरहःके अनेक रोग होजातेहैं। लकवा, मन्दाग्नि, वात, मूत्ररोग, चर्मरोग, फोड़ा, फुन्सीकी जड यह शरावही है। शराबियोंकी दुर्दशा प्रतिदिन देखी जाती है, कभी कभी उनका शरीर सूखे काठकी तरह अपने आप भभक उठता है। दिमागमें गर्मी बढ़नेसे बहुधा लोग बावले होजातेहै।

नशीले पदार्थोंके व्यवहार करनेसे जो हानियाँ होती है। उनका दिग्दर्शन किया जाचुकाहै। अब पाठकगण स्वयंही विचारेंकि जिन नशोंके सेवन करनेसे मनुष्यकी गतिमति चक्कर खाजातीहै। जिन नशेके पदार्थोंके सेवन करनेसे मनुष्य अपने होश हवास ठीक नहीं रख सकता है। उन नशीले पदार्थोंका सेवनकरना कितना उपयोगी है? इस शरावके कारण ही छप्पनकोटि यादवोंका क्षणभरमें नाश होगया था। इस शरावके कारण ही सिकन्दर जैसे साहसी पुरुषकी ३२ वर्षकी अवस्थामें मृत्यु होगयीथी। इस शरावके कारणही अकबर बादशाहको अपने दो दुलारे लडके दानियाल और मुरादकी मृत्यु देखनी पड़ी। इस शरावके नशेमें ही बादशाह जहाँगीर नूरजहाँ बेगमके हाथका पुतला

बन गयाथा । इस शरावके नशेमेंही इंगलेण्डके बादशाह प्रथम हेनरीके पुत्र विलियमका जहाज डूब गयाथा । जिसका सदमा पहला हेनरी जन्मभर नहीं भूलाथा । वह घटना इंगलेण्डके इतिहासमें चिर स्मरणीयहै इतिहासोंमें ऐसी ऐसी असख्य घटनायें पायी जातीहैं । अतएव इन नशीले पदार्थोंको सेवन कदापि नहीं करना चाहिये। गतवर्ष नागपुरमें देहलीके सय्यद हैदररजाने अपने व्याख्यानमें कहाथा कि हव्बुल्ल वतनी अर्थात् स्वदेश भक्तिका नशा करो । नवयुवकोंको उचित है कि देहलीके सय्यद हैदर-रजाके इस वाक्यको अपना लक्ष्य बनाकर स्वदेशभक्तिकाही नशा करना चाहिये। प्यारे नवयुवकों ! विचारो तो सही तुह्मारे देशकी कितनी अधोगति होरहीहै ? रुपया यों फजूल वरवाद न करके देश सम्बन्धी कार्योंमें लगाओ पड़ोसी जापानसे कुछतो शिक्षा ग्रहण करो । सुना जाताहै कि जापानवाले अपना रुपया अपने देशका समझतेहैं । इसी लिये वह बहुत सादे पनसे रहते हैं। जो कुछ निजका रुपया बचातेहैं। वह अपने देशके कार्यमें खर्च करते है । सो भाईयो ! इस दुःखित भारतमाताके नामपर ही आपसे अपील करते है । इन नशीले पदार्थोंका व्यवहार न करके, जरा स्वदेशभक्ति की शराब पीयो। जिससे तुह्मारे मस्तिष्ककी शक्तियॉ पुष्ट होंगी । और भारतमाताकेभी वही सुदिन दिखलायी पड़ेंगे * इन नशीले पदार्थोंके व्यवहारमें व्यर्थ अपना धन शक्तिका नष्ट मतकरो ।

---

* पिछले वर्ष जब कि इस निबन्धका लेखक "विहारबन्धुका" सम्पादकथा तब तो एक लेख "नशीले पदार्थ और स्वदेशभक्ति" लिखा था। जो कि विहारबन्धु २७ फरवरी सन् १९०९ के अङ्कमें प्रकाशित हुआ था। यहापर वही लेख उद्धृत किया गया है। किन्तु उद्धृत करते समय अनेक नयी बातें लिखदीहै । आशा है कि पाठकगण इस लेखको पढकर अवश्य नशीले पदार्थोंकी हानि लाभका विचार करेंगे -लेखक

ब्रह्मचर्यकी महिमा।
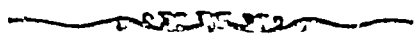
संसारमें सुख नहीं है। इस जगत्में जहां देखो वहां दुःख है। यही ध्वनि चारों ओरसे आरही है। किन्तु ऐसे कहनेवाले लोग बड़ी भूल कर रहेहैं। अनेक लोगोंने यही मान रखाहै कि भोग विलाससे बढ़ कर संसारमें और कोई सुख नहीं है। उन लोगोंकी समझमें जिस ढङ्गसे जैसे बने इन्द्रियोंकी तृप्ति कर देनाही सुखकी सीमाहै। पर देखा जाय तो कहना पड़ेगा कि इन्द्रियोंकी तृप्ति करना क्षणिक सुख या आनन्द है। सच्चा सुख तो इन्द्रियोंके दमन करनेसेही प्राप्त होसकता है। विशेषतः युवावस्थामें तो इन्द्रिय दमनका विशेष प्रयोजन है। उस समय कुछ कालके लिये इन्द्रियोंके दमन करनेसे जन्म भर सुख मिलताहै। इस बातको सोच करही हमारे पूर्वजोंने हमारे जीवनकी चार सीमा नियुक्त की थीं। अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। इन आश्रमोंकी व्यवस्था करनेसे यही तात्पर्य्यथा कि मनुष्य अपनी जीवनयात्रा सुख और शान्ति पूर्वक व्यतीत करे। किन्तु दुःखकी बातहै कि हमारे जीवनयात्राकी पहली सीढी जो ब्रह्मचर्य है, उसकी बहुत अधोगति होरहीहै। सच तो यह है कि भारतवर्षके लोग ब्रह्मचर्यका महत्त्व भूलते जारहेहैं। ब्रह्मचर्यकी प्रणाली उठती जारहीहै। केवल नाम मात्रको उपनयन संस्कार होजाने के पश्चात् ब्रह्मचर्यका थियेटर किया जाताहै। लड़का यज्ञोपवीत धारण करके घरसे बाहर निकलता है। बहिन चट भाईको मनाती है कि तू काशी पढने मत जाय। जल्दी शादी कर दीजावेगी। बस जो कुछ ब्रह्मचर्यका दृश्य होताहै वह केवल इतनाही है। यदि प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्यकी सुव्यवस्था हो तो कदापि गृहस्थाश्रममें

हमको दुःख उठाना न पड़े। न चारों ओरसे यह ध्वनि आवे कि संसारमें सुख नहीं है। भला सुख कहांसे हो ? जब कि सुखकी पहली सीढ़ी जो ब्रह्मचर्य है। उसी की हम उपेक्षा कर चुके हैं। बात तो यह है कि आजकल पश्चिमी रोशनीके कारण हमारी आँखोंमें चकाचौंध छागयी है। जिससे हमलोग अपने घरके हीरेको न देखकर पराये घरके कांचको देखते हैं। असली बाततो यही है कि हमारे यहाँ से अनेक प्राचीन बातें उठगयी हैं और अनेक उठती जाती है।

हमारे वैद्यक और धार्मिक शास्त्र दोनों कहते हैं कि नियमित रूपसे ब्रह्मचर्यके पालन न करनेसे ही मनुष्य अल्पायु होते है। ब्रह्मचर्य तीन प्रकारका होता है। कनिष्ठ मध्यम और उत्तम। कनिष्ट ब्रह्मचर्य २५वर्षकी आयु तक होताहै जिसमें मनुष्य ८ वर्षकी अवस्थासे जितेन्द्रिय रहकर वेदादिको पढ़कर ज्ञानका सञ्चय करता है। मध्यम ब्रह्मचर्यकी सीमा ४४ वर्षतक होती है, उत्तम ब्रह्मचर्य ४८ वर्षतक होताहै। शास्त्रकारोंने इन तीन श्रेणीके ब्रह्मचर्यके नाम इस भांति रखे हैं। वसु, रुद्र और आदित्य। इन तीनो शब्दोंकी परिभाषा यों हैं। वसु अर्थात् उत्तम गुनोंको अपने हृदयमें वसानेवाला वसु कहलाताहै। रुद्र जो दूसरोंका कष्ट न देखसके, बदमाशोंसे भले लोगोंको जो कष्ट मिलरहा हो, उसे दूर करके खल व्यक्तियोंको दण्ड दे अर्थात् खल मनुष्योंको रुलानेवाला रुद्र कहलाताहै। आदित्य ब्रह्मचारी परोपकार वृत्ति धारण करके प्राणीमात्रके कष्ट निवारण करनेकी चेष्टा किया करताहै, उसके मुखपर सूर्यके समान तेजास्विता झलकती रहती है। इसी लिये उसको आदित्य ब्रह्मचारी कहते है। यह भी कहा जाता है कि आदित्य ब्रह्मचारी अपने प्राणोंपर इतना अधिकार कर-लेता है कि जब वह चाहे तब छोड़े। भूख प्यासादि दुःखोंको बिलकुल नहीं मानताहै। ब्रह्मचर्य ही सुखका साधनहै। शतपथमें लिखा हुआ है कि ब्रह्मचर्य व्रतकी पूर्णतासे कभी कोई क्लेश नहीं व्यापता

है। पाठको! विचारिये कि आजकल कनिष्ट ब्रह्मचर्य २९ वर्षतक का भी नही रहाहै । यही कारण हैं कि जो अनेक कष्ट भुगतने पड़तेहैं। २९ वर्ष तो क्या? १९ वर्षकी अवस्थामें ही स्त्री सहवास करने लग जाते है। आजकल हमारे यहाँ लड़कोंकी शादी करदेनाही लाड़ समझा जाताहै। यहाँतक कि नन्हे नन्हे बच्चोको जब प्यार करेंगे तो कहैंगे कि कह बेटा कैसी बहू लेगा? काली या गोरी । बाल्य विवाहसे इस देशका कितना अनिष्ट होरहाहै । वह पहले कहा जाचुकाहै अब विशेष कहनेकी आवश्यकता नही है। चरक सुश्रुत प्रभृत्ति वैद्यक ग्रन्थोंमें ब्रह्मचर्यकी विशेष महिमा दर्शायी गयी है । गौतम ऋषि ब्रह्मचर्यके विषयमें कहतेहैं: । "आयुस्तेजो वलं वीर्यं प्रज्ञा श्रीश्च महायशः पुण्यच मत्प्रियत्वंचहन्यतेऽब्रह्मचर्यया" अर्थात् आयु तेज, वल, वीर्य, बुद्धि, श्री, महायश, पुण्य, प्रेम, गुणगण, यह सर्व ब्रह्मचर्यके नष्ट करनेसे खण्डित होजातेहै । छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि "ब्रह्मचर्यकोही यज्ञ कहतेहै" ब्रह्मचर्यसेही मनुष्य आत्मिक, शारीरिक, और सामाजिक उन्नति करताहै । उद्दालक ऋषिने अपने पुत्र श्वेतकेतुको ब्रह्मचर्यका महत्त्व यों समझाया था कि हे श्वेतकेतु! तू ब्रह्मचर्यको धारण कर क्योंकि ब्रह्मचर्यका आचारण न करनेसे मनुष्य वर्णशङ्कर होजाताहै । और हमारे कुलमें कोई भी ऐसा नहीं हुआ इस लिये तू ब्रह्मचर्य धारण कर" । प्यारे नवयुवकों! यह ब्रह्मचर्यकाही प्रताप था कि महाभारतके महासंग्राममें भीष्मपितामह अनेक चोटोंको सहकर शरशय्या पर बड़े आरामसे लेटे रहे। सुना जाता है कि जिस समय भीष्मपितामहके सिरहाने रखनेकी आवश्यकता हुई थी तब किसीने कहा कि तकिया लाओ इस पर भीष्मपितामहने डपट कर कहा नहीं नहीं मखमलके तकियाकी आवश्यकता नहीं है । क्षत्रिय सन्तानके लिये बाणोंके

तकियेकी जरूरत है। अर्जुन कहां है ? उसको बुलाओ और उससे कहो कि मेरे सिर पर वाण लगावे जिससे वह सीधा होजावे हमारे अनेक पाठक इसको पढ़ कर कहैंगे कि यह असम्भव है परन्तु नहीं ब्रह्मचर्यके सामने कुछ भी असम्भव नहीं है। महाभारतमें लिखा हुआ है कि जिस समय भीष्मपितामहका जन्म हुआ था उस समय उनकी चार पाईके नीचे ईंट रखी हुई थी । दैव संयोगसे भीष्मपितामह उस ईंट पर गिर पड़े और उस ईंटके टुकड़े टुकड़े होगये। उन्होंने दश दिन तक महाभारतके महासंग्राममें महापराक्रम दिखलाया था और जब पानीकी इच्छा हुई तो लोग पानी लेकर दौड़े । इसपर उन्होंने कहा कि मुझे मानुषभोगोंकी अपेक्षा नहीं और अर्जुनसे कहा कि पृथ्वीको वाणसे भेदन करके पानी निकालो और जब अर्जुनने पानी निकाला तो उसे पान किया। उस समय सूर्य दक्षिणायन था इसलिये भीष्मने शरीर नहीं त्यागा। और युधिष्ठिरादिको धर्म और ज्ञानका ऐसा उपदेश किया कि जैसा आजपर्य्यंत नहीं हुआ। जब सूर्य उत्तरायण हुए तब तो अपना प्राण त्यागा। भगवान श्रीकृष्णचन्द्रने जैसे जैसे अलौकिक कार्य किये थे, उन सबका कारण ब्रम्हचर्य ही था । हनुमानजीका नामलेने और ध्यान करनेसे सूखी हड्डियोंमें जोश उबल उठताहै । हनुमानजीको महावीर किसने बनाया? इसी ब्रह्मचर्यने । मेघनादको मारनेकी किसीमें ताब नहीं थी। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्रनेभी यही कहाकी मेघनाद को वही मार सकेगा कि १२ वर्षतक जिसके मनमें अपवित्र भाव न हुए हों। लक्ष्मणजीने अपने ब्रह्मचर्यके सहारेही मेघनाद पर विजय प्राप्तकी, जिस समय अर्जुनने गन्धर्वको युद्धमें विजय किया, तबतो गन्धर्वने अर्जुनसे यही कहा कि ब्रह्मचर्यं परोधर्मः सचापि नियतस्त्वयि यस्मात्तस्मादहं पार्थ रणेऽस्मिन् विजितस्त्वया" अर्थात् हे अर्जुन! ब्रह्मचर्य परमधर्म है। इस ब्रह्मचर्यहीका प्रताप है कि तूने मुझको विजय

किया"। भारतवर्षमें जिस समय बौद्ध धर्मका प्रबल प्रताप था, उस समय स्वामी शङ्कराचार्यजीने बहुत थोड़े दिनोंमें ही बौद्धधर्मके स्थानमें अपने धर्मका झण्डा खड़ाकर दिया था। शङ्कराचार्यने बौद्धोंपर जो विजय प्राप्तकी थी, उसका कारण भी ब्रह्मचर्य की तेजस्विताही थी। सत्यतो यह है कि "ब्रह्मचर्येण वै लोकान् जयन्ति परमर्षयः" ब्रह्मचर्यहीसे महर्षि लोग लोकान्तरोंको विजय करते हैं। अष्टाङ्गहृदय सूत्रस्थान अध्याय ७ में एक स्थलपर लिखा हुआ है कि भोजन और निद्राके साथ ब्रह्मचर्यही शरीरका सहारा है। जैसे घरका सहारा स्तम्भ होते हैं। चरकमें ब्रह्मचर्यको रसायण कहागयाहै। आजकल विश्वासतो अनीलका अङ्ग होरहाहै। नहीं तो पहले समयमें जो अलौकिक घटना होती थी, जिनको सुनकर हम आश्चर्य करने लग जाते हैं और कह देते हैं कि यह असम्भव है। उसका मूल ब्रह्मचर्यही था। वे लोग ब्रह्मचर्यके पालन करनेसे वह कार्य करडालते थे जो कि आजकल हमको असम्भव प्रतीत होतेहै। ब्रह्मचर्यके नियम न पालन करनेके कारणही हम वैसे कार्य करने तो दूररहे किन्तु उनके कार्यपर विश्वास भी नहीं करते हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करनेके कारणही पहले लोगोंने प्रकृति (Nature) से मुकाबिला कियाथा। ज्येष्ठमासकी प्रचण्ड धूपमें सूर्य्यके सम्मुख वे ध्यानावस्थित होकर बैठे रहतेथे। श्रावण भाद्रपदकी वर्षामें वे पद्मासन लगाये ईश्वरके ध्यानमें मग्न रहते थे। उनके ऊपर झड़ाझड़ पानी बरसा करताथा तो भी उनको ज्ञात नहीं होताथा कि यह क्या होरहाहै? शरतृऋतुमें अर्द्धरात्रिके समय नङ्गे एक कोपीन पहिने परमात्माका स्मरण करते रहते थे। उनको तनिक भी गरमी, सर्दी और धूप नहीं व्यापती थी। उसका कारण केवल एक अखण्ड ब्रह्मचर्य था। वे अपने ब्रह्मचर्य के बलसे संसारको चकित करगये हैं। आज हम अपने ब्रह्मचर्य की मर्यादा न रखकर संसारमें हीन

होरहेहैं। वे लोग अखण्ड ब्रह्मचर्य धारणकरके नित्य नये आविष्कार करते थे। उनके देदीप्यमान मुखका दर्शन करतेही भय होजाताथा हृदयमें उनके प्रति स्वाभाविक भक्ति उत्पन्न होजाती थी। आज हम ब्रह्मचर्यकी मर्यादा स्थिर न रखनेके कारण अपने स्वरूपको भी भूल गये हैं। हमको आत्मरक्षा, आत्मसम्मान, आत्मगौरवका तनिकभी ध्यान नही रहा है। ब्रह्मचर्यकी मर्यादा स्थिर न रखसकनेके कारणही हमारी आज यह दुर्दशा होरही है कि एक गोरेको देखकर अपना छाता वन्द न करलें या सलाम न करें तो हमको जूतोंकी ठोकर खानी पड़ती है। और हमारी तिल्लीफट जाती है। गोरेका कुछ भी अपराध नहीं होताहै। कहाँतक कहें कि हमने ब्रह्मचर्यके महत्वको न पहचान कर स्वयं अपनी यह दशा कररखी है।

वर्त्तमान समयमें भी हमारे देशमें ऐसे कितनेही महात्मा होगये हैं कि जिन्होंने अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण करके वतलादिया है कि यह भारतवर्ष ही है, जहां अवभी अध्यात्मिक उन्नतिकी ओरसे रुची हट नहीं गयी है। वङ्गालके सुप्रसिद्ध महात्मा रामकृष्ण परमहंसके सदुपदेशोंकी धूम विलायत तक मच गयी थी। उसका कारण केवल उनका अखण्ड ब्रह्मचर्य था। महात्मा रामकृष्ण परमहंसके विवाह होजाने पर भी उन्होंने कभी स्त्री गमन नहीं कियाथा। अज्ञानावस्थामें उनका विवाह हुआ था पर होश सम्हालतेही १५—१६ वर्षकी आयु पर उनको वैराग्य उत्पन्न होगया था। वह संसारकी अन्य स्त्रियोंको तो माता समझतेही थे, परन्तु अपनी विवाहिता स्त्री तकसे उन्होंने माताही कहा। संसारका उनको कोई रहस्य ज्ञातनहीं था। ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता वाबू केशवचन्द्र सेन तकके इनके सदुपदेश श्रवण करके विचार पलट गये थे। आर्यसमाजके संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती आदित्य ब्रह्मचारी थे। स्वामीजीसे चाहे जिसका चाहे जिस विषयमें मत भेद रहा हो, परन्तु यह सव कहते हैं कि

उनके चेहरे पर ब्रह्मचर्यका तेज झलकता था। सच बात तो यह है कि वे अपने ब्रह्मचर्यके प्रतापसेही इतनी प्रतिद्वन्दता होने पर भी अपने विश्वाससे तानिक नहीं डिगे और अपने विचारोंका प्रचार करते रहे। इस ब्रह्मचर्यके बलसेही स्वामी विवेकानन्दने अपने गम्भीर गर्जनसे अमेरिकावालोंको हिन्दू धर्मका महत्त्व समझाया था। स्वामी रामतीर्थ बालब्रह्मचारी नहीं थे, जब उनके दो सन्तान होचुकी थीं तब उन्होंने सन्यास ग्रहण किया था। परन्तु सन्यास ग्रहण करलेने पर वे पूर्ण ब्रह्मचर्यसे रहते थे। उनके दर्शन करतेही स्वतः हृदयमें भक्तिका स्रोत बहने लग जाता था। इस निबन्धके लेखकको कई बार स्वामीजीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआथा। उनके दर्शन करतेही भक्ति और प्रेमकी सजीव मूर्ति आंखोंके आगे नृत्य करती थी। यह सब महात्मा अध्यात्मिक उन्नतिकी ओर झुक गये थे। ऊपर उल्लेख किये हुए महात्माओंके स्थूल शरीर इस संसारमें नहीं हैं। परन्तु उनके सूक्ष्म शरीर उनके सदुपदेशों द्वारा जबतक संसार है तबतक काम करते रहेंगे। कहनेका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मचर्य असम्भवकोभी सम्भव करसकताहै, जिन्होंने मदरासके प्रोफेसर राममूर्तिके कौतुक देखे हैं उनको बतलानेकी आवश्यकता नहीं है कि वे कैसी आश्चर्यमें डालनेवाली घटनायें करते हैं। चलती हुई मोटरकार अपने हाथसे पकड़कर रोकदेना। अपनी छातीपर बैलोंकी गाड़ीमें पत्थर लदाकर चलवाना। कितनेही मनका पत्थर अपने ऊपर रखवाकर तुड़वाना इत्यादि ऐसी आश्चर्यमें डालनेवाली घटना हैं, जिनको बिना देखे हुए कदापि विश्वास नहीं होता है बल्कि देखलेनेपरभी लोग कहते हैं कि इनमें जादू टोना भरा हुआ है। पर इन घटनाओंमें जादू टोना कुछ भराहुआ नहीं है केवल वे ब्रह्मचर्यके बलसे ऐसी आश्चर्यमें डालनेवाली घटनायें कररहे हैं। सो पाठक केवल ब्रह्मचर्यके ऊपर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, धार्मिक उन्नति निर्भर है। भला

सोचिये तो सही कि जिस वीर्यके खोनेमें इतना आनन्द प्राप्त होता है, उस वीर्यको अपने पास रखनेमें कितना आनन्द मिलेगा। ब्रह्मचर्य की मर्यादा स्थिर रखकर यदि हम गृहस्थाश्रममें प्रवेश हों तो कदापि कभी किसी कष्टकी शिकायत नहीं करनी पड़ेगी। विलायतमें ऐसे कितने ही लोग होगये हैं जिन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य धारण करके जीवन व्यतीत कियाथा। प्रसिद्ध गणितज्ञ सर आइजकन्यूटन अस्सी वर्षसे ऊपर तक जीवित रहा और वह ब्रह्मचर्यकी जिन्दगी बसरकरता रहा। योरोपका प्रसिद्ध तत्वज्ञानी कैंट बहुत बड़ी उम्रतक जिया और वह ब्रह्मचारी था। हरबर्ट स्पेन्सर जैसा संसारके विचारोंको पलटा देनेवाला ब्रह्मचारी हुआ। ब्रह्मचर्यसे मस्तिष्ककी शक्तियां पुष्ट होती हैं। बुद्धि स्फुरित होती है। ब्रह्मचर्य धारण करनेसे प्रतिभा दुगनी खिल उठती है। इसीलिये जो ब्रह्मचर्यसे रहतेहैं वह जितना काम करसकतेहैं, उतना जो ब्रह्मचर्यसे नहीं रहताहै कदापि नहीं कर सकताहै। स्वर्गीय स्वामी रामतीर्थजीने अपने एक व्याख्यानमें बहुत ठीक कहा था कि "हमारे भारतकी विद्याको विदेशियोंने हासिल करके लाभ उठाया और हम वैसेही कोरे के कोरे रहे जाते हैं यह कैसे अफ़सोसकी बातहै। हमारे बापने कुआं खुदवाया है। इसके कहनेसे हमारी प्यास नहीं जावेगी। इसी तरह शास्त्रों पर अमल करनेसे आनन्द होगा। अमेरिकाके सबसे बड़े मुसन्निफ़ एमर्सन (Emerson) का गुरू ब्रह्मचर्यका पालन करनेवाला थोरो (Thoro) भगवतगीताके बारेमें इस तरह लिखताहै कि हर रोज मैं गीताके पवित्र जलसे स्नान करता हूँ। जो इस पुस्तकको लिखे हुये देवताओंको सालाहासाल गुज़र गये लेकिन इसके बराबरकी कोई किताब अभीतक नहीं निकली है। उसकी अज़मत (बड़ाई) व खूबी हमारी आजकलकी तसनीफात (रचनाओं) से इस कदर चढ बढ कर हैं कि कई दफ़ा मैं यह ख़याल करताहूं कि शायद इसके लिखे जानेका ज़माना बिलकुल निराला ज़माना

होगा .... एक दिन जंगलमें सैर करते हुए इससे एमर्सनने पूछा कि इंडियन यानी अमेरिकाके असली बाशन्दोंके तीर कहां मिलतेहैं ? उसने हस्ब (मुआफिक) मामूल हर वक्तका वही जवाब दिया " जहां चाहो " । इतनेमें जरा झुका और एक तीर रास्तासे उठाकर झट देदिया और कहा यहलो । एमर्सनने पूछा कि मुल्क कौनसा अच्छा है ? तो जवाब दिया कि अगर पैरोंतलेकी ज़मीन तुमको बिहिश्त (स्वर्ग) से बढ़कर नहीं मालूम देती तो तुम इस जमीन पर रहनेके लायक़ नहीं । उसके दरवाजे हर वक्त खुले रहतेथे । और रोशनी और हवाको कभी रोक टोक नहीं थी । एमर्सन कहता है उसके मकानकी छतमें एक भिड़ोंका छत्ता लगा हुआ था । और भिड़ों और शहदकी मक्खियोंको मैंने उसके साथ चारपाईपर बेखटके सोते देखा मगर इस समदर्शीको कभी ईज़ा (तकलीफ) नहीं पहुंचाती थी । सांप उसकी टांगोंमे लिपट जाते थे । मगर उसे जरा परवा नहीं । काटते तो कैसे क्यों कि उसके हृदयसे दया और प्रेमकी किरणें फूट रही थीं और वह तो दयालु भूषण था " । यह सब ब्रह्मचर्यका प्रताप है । इसमें कुछभी अयुक्ति नहीं है । आदित्य ब्रह्मचारीको संसारमेंकुछभी भय प्रतीत नहीं होता । सुना जाता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती बड़े वड़े भयानक जंगलोंमें घूमते रहे । बड़ेबड़े भयानक जानवर उनके सामने आगये पर वह तानिक विचालित नहीं हुए । स्वामी रामतीर्थजीके बारेमेंभी ऐसी कितनीही बातें सुनी जाती हैं । पाठक ! ब्रह्मचर्यका प्रताप देखियेगा

फरवरी सन् १९०२ में जब स्वामी रामतीर्थजी फैजाबाद गये थे वहां एक बड़े मौलवी एक मसलेपर बहस करने नहीं नहीं लड़नेके लिये आये थे । मगर जिस वक्त नज़र दो चार हुई न जाने वह लड़ाईकी तबीयत कहां चली गयी । मौलवी साहबकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बहने लगे और स्वामीजीसे हाथ जोड़कर बोले कि " ऐ राम मैं तुझको

ऐसा नहीं जानताथा अब मेरे कुसुर मुआफ कर "। जो ब्रह्मचर्य धारण करता है, उसको मौतका डरभी बिलकुल नहीं लगता है।—स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे कि जिस शख्सको दुनियाँका नखरा टकरा और नाज़ व इशवा (कटाक्ष) नहीं हिला सकता वही दुनियाँको जरूर हिला देगा। इसमें सन्देह नहीं है कि जो दुनियाँके नखरे टकरेमें नहीं पड़े है। वह दुनियाँको हिला गये हैं। अनेक पाठक इस लेखको पढ़कर यह शङ्का किये विना न रहेंगे कि सबही ब्रह्मचर्यसे रहें तो ससारका कार्य कैसे चलेगा? इसका उत्तर केवल इतनाही है कि हमारे यहाँ आश्रमोंकी व्यवस्था कीगयीहै। उसके अनुसार चलना चाहिये किन्तु इसपर भी जो महात्मा सारी आयु ब्रह्मचर्यका व्रत धारण करके, परमार्थमें रत होजातेहैं, वह धन्य है। किन्तु कमसे कम २५ वर्ष ब्रह्मचर्य रखकर गृहस्थाश्रममें प्रविष्ट होते हैं, उनको इतने कष्ट नहीं सताते हैं कि जितने आजकल सतारहे हैं। अतएव जो नियमानुकूल गृहस्थाश्रममें प्रविष्ट होंगे, उनको कदापि दुःखनहीं सतायेगा आजकल दुःखका कारण नियम भङ्ग करनाही है। गृहस्थाश्रममें मनुष्य ब्रह्मचर्यसे रहसकता है। इस विषयकी व्यवस्थाहै कि ऋतुगमनकी विधि अर्थात् रजोदर्शनके पांचवे दिवससे लेके सोलहवें दिवसतक ऋतु दान देनेका समय है। उन दिनोंमेंसे प्रथम चार दिन त्याज्यहै रहे १२ दिन उनमें एकादशी और त्रयोदशी रात्रिको छोड़के बाकी १० रात्रियोंमें गर्भाधान करना उत्तम है और रजो दर्शनसेलेके १६ वीं रात्रिके पश्चात् समागम नहीं करना चाहिये। इत्यादि नियमोंके अनुसार चलनेसे गृहस्थी ब्रह्मचारी होताहै। प्यारे नवयुवको! तुमही इस देशकी आशास्थलहो, देखो तुम्हारा देश डूब रहाहै। तुम्हारी भारतमाताको अनेक क्लेशोंने ग्रसितकर रखाहै। सो प्यारो इस देशकी दशा विचारकर, ब्रह्मचर्य पूर्वक रहकर अपनी आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक दशा सुधारो। ब्रह्मचर्यके महत्वको समझो। तबतो करुणा वरुणालय जगदीश्वर भी हमको वही दिन फिर दिखावेंगे।

विचारोंका सुधार।

प्रत्येक मनुष्यका यह कर्त्तव्य है कि वह अपने मनमें बुरे विचार न आने दें। जैसे विचार मनुष्यके हृदयमें पैदा होते हैं। वैसाही उसका स्वभाव होजाताहै। स्वभाव और विचारका घनिष्ठ सम्बन्ध है। हृदयमें बुरे भावोंका उदय होनाही बुरे स्वभावकी जड़है। अङ्गरेजीमें एक कहावतहै कि "हवाके किले मत बनाओ"। इस पर एक और दूसरा लेखक कहता है कि जो हवामें किले नहीं बनाते हैं। वह कुछ भी काम नहीं करसकतेहै। इसका मतलब यह है कि सदैव उच्च भाव रखना चाहिये। हृदयमें जैसे जैसे भावोंका विकास होता जाताहै, मनुष्य वैसेही वैसे कार्य करने लग जाताहै। इसी लिये हमारे धर्मवक्ताओंने वाणी और मनसे भी पापकर्म करनेके सङ्कल्प तककी मनायी कीहै। शास्त्रकारोंका कथन है किसी प्रकारके पापकर्म का मनमें विचार होनाही पापका भागी वनना है। उनका कथन है कि मनही सवइन्द्रियोंका राजा है। मनको वशमें करलिया तो कभी कोई बुरे कार्य स्वप्नमें भी नही करसकतेहैं। मनमें किसी प्रकारका विकार न वढने पावे, सदैव यही प्रयत्न करता रहे। देखा गया है कि पवित्र हृदयवाला मनुष्य चुप भी वैठे तो सव लोग उसके उत्तम स्वभावसे उपदेश ग्रहण करतेहैं। मन पवित्र हो तो कभी कोइ निकृष्ट कर्म नहीं किया जासकताहै। मन वड़ा चञ्चलहै। भगवान श्रीकृष्ण-चन्द्रसे अर्जुनने पूंछा था कि चंचलंहि मनः कृष्ण प्रमाथिवलवद्दृढम् तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिवसुदुष्करम् " हे कृष्ण! यह मन वड़ा चचल है देह और इन्द्रिय गणको क्षोभकारक है वड़ा वलवान और दृढ़है इस मनको रोक लेना मेरी समझमें ऐसा कठिन है जैसा प्रवल वायुका

रोकना । इस पर श्रीकृष्णने उत्तर यह दिया था कि हे महाबाहो ' निस्सन्देह मन बड़ा चचल है वह रुक नहीं सकताहै । परन्तु कौन्तेय ! अभ्यास और वैराग्यसे निग्रह होसकताहै । भगवान श्रीकृष्णने एक स्थल पर यह भी कहा था कि हे अर्जुन ! जिसने अपनी आत्मासे आत्मा जीतलीहै, तो वही आत्मा उसका बन्धु है। और जो आत्मा नहीं जीतीहै, तो उसकी आत्माही उसका शत्रुहै । अर्थात् आपही अपना शत्रुहै और आपही अपना मित्र है। इसमें सन्देह नहीं है कि मनुष्य जो कुछ भला बुरा अपना करता है । वह आपही करता है । यदि अपने मनको स्थिर करके, आगे पीछेका सोचकर कोई कार्य करें तो कदापि कष्ट न हों। प्रत्येक मनुष्यका यह पवित्र कर्त्तव्य है कि वह अपनी आत्माके जीतनेकी चेष्टा करता रहे । आत्माको जीतनेसे मतलब यह है कि अपने विचार पवित्र रखे । किसी कारणभी बुरेभाव अपने मनमें न आने दे । अपने मनको वशमें रखें न कि मनके खुद वश होजावे । जबतक मनकी गतिको स्थिर नही की जावेगी तबतक कदापि कोई कार्य नहीं होसकता है । इन्द्रियोंको वशमें करनेका सीधा उपाय मनकी गतिकोही स्थिर करना है । मनकी गति बड़ी तीव्र है। जितनी तीव्र मनकी गति होती है, उतनी तीव्र गति किसी पदार्थकी नहीं होती है । जहॉ वर्षोंमें रेल जहाज द्वारा मनुष्य पहुंचता है वहां एक सैकण्ड तो क्या ? आधी सैकण्डमेंही मन पहुच जाता है। इसी लिये हमारे शास्त्रकारोंने मनको वशमें रखनेके लिये विशेष बल दिया है । भगवान श्रीकृष्णचन्द्र कहते है कि "आत्मा नदी संयम पुण्य तीर्थः सत्योदकः शील तटा दयोर्मि, तत्राभिषेके कुरु पाण्डुपुत्र ! न वारिणा शुद्धयति चांतरात्मा"—इसका अर्थ यह है कि आत्मा नदी है । पुण्य तीर्थ जिसमें संयम है । सत्यही जिसमें जल और दया जिसकी तरङ्ग है । हे पाण्डुपुत्र ! इस आत्मारुपी नदीमें स्नान कर जलसे

आत्माकी शुद्धि नहीं होती है । वास्तवमें देखा जाय तो आत्मा
की शुद्धिके लिये आत्मसयमका विशेष प्रयोजन है । आत्मसयम होनेसे
विचारोंका सुधार होसकता है । यह सब जानते है कि मस्तिष्ककी
शिक्षाको शिक्षा नहीं कहते है । हार्दिक शिक्षाको शिक्षा कहा
जाता है । चाहें जितने हम विद्वान होजावे । परन्तु जबतक हमारा
मन स्वच्छ नहीं है । तबतक हम विद्वान् होकर भी मूर्खही हैं । आ-
त्मिक शुद्धताके बिना बुद्धी द्वारा उपार्जन किया हुआ हमारा ज्ञान केवल
पाप करनेके लिये हमारी शक्तिको बढ़ाताहै । और ज्ञान प्राप्त करते
हुए यदि हम अपनी आत्माको भी शिक्षा द्वारा सुधारते जावें तो हमारे
हृदयमें बुरे विचार कभी उत्पन्न नहों । अतएव केवल मस्तिष्क शिक्षा
की ही आवश्यकता नहीं है किन्तु आत्मिक शिक्षाकी आवश्यकता है ।
आत्मिक शिक्षाके प्राप्त होजाने पर विचारोंका सुधार होता है ।
आत्मिक शिक्षासे अच्छी नीयत होती है । अच्छी नीयत
होनेपर मनकी बात पूरी होती है । जिन लोगोंके हृदयमें दूसरोंके
प्रति राग द्वेष होते हैं उनको कदापि सफलता प्राप्त नहीं होती
। पवित्र भाव, दृढ़ साहसी, शुद्ध विचार और शुभ संस्कारही
मनुष्यके अभ्युदयकी सीढी है ।—प्रोफ़ेसर आज़ादने अपनी एक
पुस्तकमें एक ऐसी घटना लिखी है कि जिसको पढ़कर पाठक समझ
जायेंगे कि विचारोंका कितना प्रभाव रहता है । घटना यह है कि
एक दिन लखनऊमें नव्वाब साहबके दरबारमें एक कविने अपनी
कवितासे सब लोगोंको प्रसन्न कियाथा । महलमे नव्वाब साहब देरसे
पहुंचे बेगमोंने पूछा कि देर क्यों हुई ? नव्वाब साहबने उस कविकी
बात कही । बेगमोंनेभी उस कविकी कविता सुननेकी इच्छा प्रगट
की । दूसरे दिन कवि बुलाया गया । बेगमें उसकी कविता सुनकर
बहुत खुशी हुई और कहा कि महलमें एक कमरा इनकोभी रहने
के लिये दिया जाय । यह सुनकर कविके हृदयमें बुरे भाव पैदा हुए

और कहा कि मुझको दिखलायी नहीं देता है। कविकी इस वातपर नव्वाव साहवके दिलमें कुछ खुटका नहीं रहा और महलोंमें उसको रहनेकी आज्ञा देदी। इस भांति स्त्रियोंको देखनेके लिये शायर नव्वाव साहवको धोखा देकर महलोंमें रहने लगा। एक रोज़ रफा हाजत के लिये शायर जाना चाहताथा। लौंडीसे लोटा पानीका मांगा। लौंडीने कहा कमरामें लोटा नहीं है कहांसे लाऊं? उसको जल्दी लगीथी। विना किसी सङ्कोचके वोल उठा—"देखती नहीं है वह क्या लोटा पड़ा हुआ है? सच भला कहांतक छिपे है। यह सुनतेही लौंडी भागी और वेगम साहवके पास पहुचकर कहा कि यह मुआ तो देखता है, अन्धा नहीं है। अपने तईं झूटमूट अन्धा वन वैठा है। उसी दिन वह महलसे निकाल दिया गया। लेकिन कहते है कि दूसरेही रोज वह सच मुच अन्धा होगया। स्वामी रामतीर्थजीने अपने व्याख्यानमें इस घटनाको उल्लेख करते हुए कहा है—"गर दर दिले तो गुल गज़रद गुलवाशी, दर वुलवुले वेक़रार वुलवुलवाशी। सौदाय वला रञ्ज वलामीआरद, अन्देशये कुल पेशाकुनी कुलवाशी" इसका अर्थ यह है कि अगर तेरे दिलमें फूल गुज़रेगा तू खुश रहेगा और वेकरार वुलवुल गुज़रेगी वेकरार रहेगा। वलाका खफ़कान वलाका रञ्ज लाताहै। अगर सवकी फ़िक्र इख्तियार करे तू वैसाही सव होगा तू"। इतने कहनेका सारांश यहीहै कि जैसी भावना करोगे वैसे ही होगे। हमारे यहां पवित्र विचारोंके लिये वहुत कहा गयाहै। गर्भस्थ वालककी माताके लिये यही कहा गया है कि वह सदैव प्रसन्न चित्त रहें, ताकि उसके बुरे विचारोंका गर्भस्थ वालकके हृदय पर भी प्रभाव न पड़े। मनकी गति स्थिर न रख सकने पर मनुष्य शोकातुर होजाताहै। अनेक व्यक्ति मनकी गति स्थिर न रखनेके कारण पागल होजातेहैं। यह प्रत्यक्ष देखा गया है कि जिस व्यक्तिको जिस पदार्थकीलौ लगजातीहै, उसका मन दिन रात उस पदार्थकी

प्राप्ति करनेके लिये लगा रहताहै। तब क्यो न अच्छे विषयोंकी ओर मनको झुकावें ? विद्यार्थियोंको उचित है कि सदैव वह अपने विद्याध्ययनकी ओरही मनको झुकाते रहें। युवा पुरुषोंको उचित है कि जो उनका कर्त्तव्य है, मनकी गतिको रोककर उसको पूरा करनेकी चेष्टा करते रहें। वृद्ध पुरुषोंको उचित है कि वे हर समय धर्मकाही सञ्चय करें। कामके प्रबल झोकोंकी मनसे उत्पत्ति मानी है और इसका नाम मनोज रखा है। विना मनके यह कुछ भी नहीं कर सकताहै। अभिभावकोंको उचित है कि अपनी सन्तानके विचार सुधारनेके लिये अच्छी अच्छी पुस्तकें पढनेको दें। युवा पुरुषोंके हाथमें अश्लील पुस्तकें कदापि नहीं जानी चाहिये। उनके पवित्र और उच्च भाव होने चाहिये। प्यारे युवकों! तुमको उचित है कि सदैव अपने देशके प्रति उच्च और दृढ़ भाव रखो। बुरे विचारोंको हृदयमें कभी स्थान मत दो, इसीमें तुम्हारा और तुम्हारी भारतमाताका कल्याण होगा। तुम्हारे विचार सुधर जानेसे तुम्हारे चरित्रमें बल पैदा होगा। तब चरित्रके बल प्राप्त होजाने पर सारे ससारमें तुम्हारे नामकी पूजा होगी। आज भारतवर्षकी जो इतनी अधोगति होरहीहै उसका कारण यहीहै कि आज हम चरित्र हीनहैं। चरित्र हीन होनेके कारण हमारी सामाजिक शक्ति उतनी पुष्ट नहीं है जितनी पहले थी। जिस रोज हमारा चरित्र सुधर जायगा उस रोज हम भगवान श्रीकृष्णके शब्दोंमें आत्माको आत्मासे जीत लेंगे। चरित्र विचारोंके सुधारसे सम्हलेगा, सो इस समय विचारोंके सुधारकी विशेष आवश्यकता है।

सदाचार और शिक्षा।

यदि विचार किया जाय तो इस पुस्तकका सारा निचोड़ दो शब्द
आसकताहै अर्थात् सदाचार और शिक्षा । शिक्षा और सदाचार
घनिष्ठ सम्बन्ध है किन्तु आजकलकी शिक्षासे जो शिक्षाका उद्देश्य
उसकी सफलता नहीं होती है। यह पहले कहा जाचुका है
किताबें तोतेकी भांति रट कर विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी
से केवल योग्यताका सम्मान पत्र प्राप्त कर लेनाही शिक्षा न
है। शिक्षा वह है जिससे लौकिक व्यवहारका ज्ञान हो । आत्मि
न्नतिका सहारा हो, मानसिक विचार परिष्कृत हो, शिक्षा वही
जिस शिक्षाको प्राप्त करके मनुष्य, मनुष्य बने। देश, काल, पा
अनुसार जिस विषयका भरपूर ज्ञान प्राप्त होजाय वही शिक्षा कहल
है। शिक्षा और विद्यामें तनिक भेद है । केवल विद्याध्ययन कर
मनुष्यके विचार नही सुधरतेहैं। जिस भांति गधे पर पोथियोंका
लादने पर वह विद्वान नही होसकताहै। वैसेही केवल विद्या पढ़ ले
और अपने आचरण ठीक न रख सकनेसे सुशिक्षित नहीं कह
सकताहै। योरपके विद्वान् शिक्षाका अर्थ करते हैं जिससे संसार यात्र
पुरुषार्थमें सफलता मिले । उन लोगोंके विचारमें जीवन युद्ध
जीवनकाही युद्ध है। परन्तु यहां ऐसा विचार नही है। हमारे
वही शिक्षा उपयोगी होसकती है जिससे लोक और परलोक दो
सहायता मिले। बृटिश एसोसियेशनके प्रेसीडेंटने कहाहै कि भवि
जातियोंकी उन्नति वा अवनतिका निर्णय जलथलकी लड़ाइयोंमें
होगा किन्तु स्कूलोंमें होगा। सच है कि मानसिक शिक्षापरही
प्रकारकी उन्नति निर्भर है। भारतवर्षमें राष्ट्रीय शिक्षाका विशेष प्र

जन है, क्योंकि आजकल जो शिक्षा दीजाती है, उससे भारतवासियो को अपने पूर्वजोके अलौकिक चरित्रोंका कुछ पता नहीं लगता है। स्मरण रहे कि गिरी हुई जाति कदापि उन्नति नहीं करसकती है जबतक की उसको यह न बतलाया जावे कि पहले तुह्मारी क्या दशाथी? अब तुह्मारी क्या दशा होरहीहै? पददलित जातिको वारम्बार यही स्मरण करना चाहिये कि हाय! हम क्याथे और क्या होगये हैं? हम कौनकी सन्तान हैं? भारतवर्षकी वर्तमान शिक्षा प्रणालिसे यह ज्ञान सम्पादन होना कठिन है, क्योंकि इतिहासके नामसे जो पुस्तकें पाठ-शालाओंमें पढायी जातीहैं, उनमें केवल हीनावस्थाके अतिरिक्त अन्य महत्वकी घटनाओंका नाम निशानभी नहीं होता है। इन इतिहास कहने-वाली पुस्तकोंमें यही बतलाया जाताहै कि मानसिंहने अपनी बहिन और बेटी अकबरको ब्याही। औरङ्गजेबने हिन्दुओंके मन्दिर तोड़े और उनको खूब सताया। सिकन्दर लोदीने हिन्दुओंकी हज़ामत बन्द करवा दियी थी। आजकलकी इतिहास कहेजानेवाली पुस्तकोंमें आदिसे अन्ततक ऐसी ही बातेंभरीहुई है। भला इन घटनाओके पढ़नेसे हमलोग कैसे आत्मगौरव, आत्मसम्मान और आत्ममर्यादाका अवलम्बन करसकतेहैं। इन इतिहासोंके पढ़नेसे हम कैसे अपना चारित्र संगठन करसकतेहै। हमारे चरित्रोंके सुधारनेके लिये हमारे पूर्वजोंके चरित्रोंके महत्वको समझा-नेकी अत्यन्त आवश्यकता है। न हमको अपने पूर्वजोंके चरित्रोंका कुछ ज्ञान होता है। न हमको धार्मिक शिक्षा मिलती है। न हमको राजनैतिक शिक्षाका बोध कराया जाताहै। न हमको लौकिक व्यवहारका ज्ञान प्राप्त होता है। न हमको देश सम्बन्धी बातें बतलायी जातीं हैं। हां केवल विश्वविद्यालयका योग्यताका सम्मानपत्र अवश्य प्राप्त होजाता है उसका परिणाम यह देखनेमें आता है कि जब अङ्गरेज अङ्गरेजी नित्य नये आविष्कार करते है तब तो हमको गुलामी

जीवनके दिवस व्यतीत करने पड़ते हैं। अन्य देशोंकी शिक्षामें और यहांकी शिक्षामें वहुत भेद है, जव कि अन्य देशोंमें शिक्षाका उद्देश्य अपनी जाति अपने समाज और अपने देशके प्रति कर्त्तव्य पालन करनेका है तव तो इस देशमें शिक्षाका उद्देश्य अपने पेट भरनेके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सुना जाता है कि जापानमें जव गुरू अपने विद्यार्थीको पढ़ाता है तव पूंछता है कि तेरा यह शरीर कहांसे आया ? वह कहता है माता पितासे, तव गुरू फिर पूछता है कि माता पिता यह शरीर कहांसे लाये ? वह उत्तर देता है कि जापानकी मिट्टीसे। तवतो गुरू कहता है कि जापानको अधिकार है कि जव चाहे तुह्मारे शरीरको अपने काममें लासकता है। हिन्दुस्थानमें जापानकी भांति यह शिक्षा देना राजविद्रोहका कलङ्क अपने मत्थे लेना है। हमारी पाठशालाओंमें ऐसी शिक्षा न दिये जानेपरभी रिज़ले सरक्यूलर पुकार रहा है कि स्वदेशभक्ति अर्थात् राजनीति की शिक्षा मत दो। किन्तु इंगलेण्डमें यह वात नहीं है वहां स्वदेशभक्ति और राजनीतिकी शिक्षा दीजाती है। वहांके विद्यार्थी धड़ल्लेसे राजनीतिकी आलोचना करते हैं। वहांके विद्यार्थियोंको कितावोंके कीड़े वनना पसन्द नहीं है। वे अपने देशसम्वन्धी विपयोंका ज्ञान सम्पादन करते हैं। हतभाग्य भारतवर्पही है कि जहां शिक्षासम्वन्धी इन वातोंकी उपेक्षा कीजाती है। यह हिंदुस्थानियोंका दुर्भाग्यही है कि उनको अपने घरकी कुछ वातें नहीं मालूम होतीं हैं। आजकलके शिक्षित कहलाने वाले लोगोंसे इंगलेण्डकी चाहे जिस समयकी घटनाकी वात पूंछ लीजियेगा। हिन्दुस्थानमें अङ्गरेजी शासनकी चाहें जिस घटनाके विपयमें पूछ लीजियेगा। तत्काल उत्तर मिलेगा। किन्तु भारतवर्पके पूर्व्व इतिहासके विपयमें पूछियेगा तो उनको कोरा पाईयेगा। इसमें इन शिक्षित कहलानेवाले

लोगोंका दोष नहीं है। दोषतो उनकी शिक्षाकाहै । अङ्गरेजी राज्य के आरम्भसे इस देशमेंही जो चिरस्मरणीय घटना होगयीहैं, उनकाभी पता उनको नहीं है। एक दिनकी बात है कि इस निबन्धका लेखक एक अण्डर ग्रेज्युएट और एक ग्रेज्युएट स्कूलमास्टरोंके साथ टहलने जा रहाथा कि उस दिन अकस्मात् इतिहास सम्बन्धी चर्चा आपसमें होने लगगयी थी। जिस समय लेखकने प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप सिंहके विषयमे जिक्र किया था, उसको सुनकर दोनों स्कूलमास्टर अवाक् रहगये। उनलोगोंको यह बाततो स्मरण रही थी कि राजपुतोंने बादशाह अकबरको अपनी बहिन बेटीयां ब्याही थी। परन्तु यह बात उनको ज्ञात नहीं हुई कि महाराणा प्रतापसिंह जैसे महात्माभी अकबरके सामनेही इस भारतभूमिमें होगये हैं कि जिन्होंने अनेक कष्ट सहने परभी "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी"का यह मत्र जपना नहीं छोड़ा और स्वाधीनताका अपमान नहीं कियाथा। कहनेका सारांश यह है कि इतिहासके नामसे जो पुस्तके हमारी पाठशालाओंमें पढ़ायी जाती है, उनमें हमारी गिरीहुई दशाही दिखलायी जाती है, और हमारी महत्वकी बातोंका पतातकभी नहीं लगता है। इसी लिये कहना पड़ता है कि हमारी जो वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली है, उससे हम विद्वान् तो अवश्य होजाते है, परन्तु शिक्षित नहीं होतेहै। वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीसे हम गुलामीका बोझा ढोहने योग्यतो अवश्य होजातेहैं किन्तु हमको लौकिक, पारलौकिक सम्बन्धी कुछभी ज्ञान प्राप्तनहीं होताहै । वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीसे हम डिप्टीकलक्टर, जज, वकील, एञ्जीनियर, डाक्टर वगेरहः सब कुछ बनसकते हैं, परन्तु हमको इस बातका बोध नहीं होता है कि देशके और देशवासियोंके प्रति हमारा क्या कर्तव्यहै? वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीसे हमको यह मालूम होजाताहै कि नेपोलियन बोनापार्ट, एलिग्जेंडरदीग्रेट प्रभृति कौन थे? किन्तु हमको यह नहीं मालूम होताहै

कि राणा सांगा कौन थे? यही कारण है कि ४० वर्षके भीतरही जापानने अपनी आशातीत उन्नतिकर दिखलायी है और भारतवर्षमें सौ वर्षसे ऊपर भी शिक्षाका प्रचार होजानेसे वह उन्नति नहीं हुई है जितनीकि होनी चाहिये। इसका कारण यह है कि भारतवर्षमें समुचित शिक्षाका प्रचार नहीं हुआ है। वल्कि इन सौ वरसके भीतर भारतवासियोंने शिक्षा ग्रहण करते हुए भी अपने चारित्रको खो दिया है। भारतवासियोंकी आजकल जो शिक्षा होतीहै वह मस्तिष्ककी होती है। हार्दिक शिक्षा नहीं होतीहै। ऊपर कहा गया है कि शिक्षा और सदाचारका घनिष्ट सम्बन्ध है परन्तु आजकलके शिक्षित लोग कम सदाचारी दिखलायी पड़ते है। जहां पहले भारतवर्षमें मुकदमे नहीं होतेथे वहां आजकल तनिक बातोंमें इतनी रार ठन जाती है कि सगे भाईयोंमें, मॉ वेटेमें, पति पत्निमें, मुकदमें होरहेहैं। आजकल एक दूसरेका विश्वास तो तनिक नही रहाहै। पहले सुना जाताहै कि आपसमें लेन देन करते समय कुल्हियाओंको भर कर रुपये देदेतेथे, ऋणकर्त्ता जव कर्ज चुकाने आते थे तब उतनेही रुपये देजातेथे। आजकल बुरा हालहै तमस्सुक लिखा जाताहै, रजिस्ट्री करायी जाती है, वलदीयत लिखी जाती है, शनाख्त होतीहै, गवाहोंके दस्तखत कराये जाते हैं। लेकिन फिर भी रुपये देते वक्त वेईमानी होजाती है। गावोंमें जहा वर्त्तमान सभ्यताने अपने सब्ज कदम नहीं रखे हैं, वहॉ पर अभीतक प्राचीन धार्मिक होनेके चिन्ह मिलतेहै यद्यपि अधिकांश गॉवोंमें यह वीमारी पहुॅच चुकी है परन्तु फिर भी इस समय वहांके अशिक्षित लोगोंमें प्राचीन धार्मिकता और परस्पर विश्वास है। यहॉ पर हम ऐतिहासिक घटनाओंका उल्लेख करते है जिसको पढकर पाठक अनुमान कर लेंगे कि प्राचीन समय भारतवासी कैसेथे? इफरीटसका शिष्य ईरैन शतवर्षी (सदी)

मसीहमें भारतवासियोंके चरित्रका कथन करते हुए लिखता है कि भारतवासियोंमें कोई मनुष्य झूट नहीं बोलताथा । हिवनसाँग एक चीनी यात्री अपने सफ़रनामेमें लिखता है कि भारतवासी अपनी धार्मिकता और सत्यताकेलिये विख्यातहैं । वह किसीके माल असबाबको बलात्कार छीन लेना बुरा समझते हैं। प्रत्येक काममें न्यायका विशेष ध्यान रखते हैं । सत्यका व्यवहार करना उनके चरित्रका विशेष लक्षण है । इसी प्रकार खागताई जो कि चीनकी ओरसे शाह श्यामके दरबारमें दूत होकर आयाथा, उसने अपने देश जानेके समय यह कहाकि भारतवासी बड़ेही धार्मिक और सत्य बक्ताहैं । यह दूसरी शताब्दीकी बातहै उस समय भारतवर्ष बहुत गिर चुकाथा । चौथी मसीह सदीतक हिन्दुस्थानकी अच्छी स्थिति थी फ़रायर जारडैन्स लिखता है कि भारतवर्षके लोग अपनी बातके बड़े सच्चे और न्यायके पक्के हैं । छठी सदीमें फेटूशाह चीनकी ओरसे भारत वर्षमें राजदूत होकर आयाथा, इसन लिखा है कि भारतवासी अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहते हैं । ऊरेसीने ग्यारहवीं सदीमें भूगोल बनायाथा उसमें भारतवासियोंके विषयमें उल्लेख करते हुए लिखा है कि भारतवासी स्वाभाविक न्यायके मानने वाले हैं अपनी प्रतिज्ञापर अटल रहते हैं । किसी प्रकारभी प्रतिज्ञा भङ्ग नहीं करते हैं और वह इन सद्गुणोंके लिये ऐसे विख्यात हैं कि हर एक देशके लोगोंको उनके सामने नीचा देखना पड़ता है । प्रोफेसर म्येक्समूलर साहबने अपनी पुस्तक " इण्डिया एण्ड हाट केन इट टीचअस"में अगणित गुण भारत-वासियोंके दिखलाये हैं । और भी कितनेही इतिहास वेत्ताओंने अगणित उदाहरण भारतवासियोंकी सचाईके लिखे है, यहां पर स्थानके अभावके कारण इतनेही यथेष्टहै। एलफिन्स्टन (Elphinstone) साहब मिस्टर मिल, मिस्टर मुरसर प्रभृति उदार हृदय अङ्गरेजोंने भी

भारतवासियोंके अलौकिक गुणोंकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसाकी है। पाठक पहले भारतवासी इतने अत्युच्च चरित्रके क्यों होतेथे ? इसका उत्त यह है कि उनके मानसिक विचार सुधरे हुए होतेथे। आजकलकी भांति पिछले कुछ दिनोंमे विद्याकी इतनी चर्चा न रही हो किन्तु शिक्षाक अभाव नहीं था। किसी प्रकारका छल प्रपञ्च उनको ज्ञान नहीं था उनको ज्ञातथा कि मानसिक विचारोंका सुधरनाही मनुष्यको उन्नतिकी सीढ़ी पर पहुंचाता है। सच बात तो यह है। कि मनुष्यकी उन्नति सुख दुःख उसके आचरण पर निर्भर है। जो मनुष्य विद्वान है परन्तु उसके आचरण ठीक नहीं है, उसका विद्वान होना न होना बराबर है। "प्रोफेस ब्लाकी अपनी सेलफ् कलचर" नामक पुस्तकमें एक स्थलपर लिखते कि "एक वस्तुकी आवश्यकता है" द्रव्यकी आवश्यकता नहीं है पराक्रमकी आवश्यकता नहीं है, स्वाधीनताकी आवश्यकता नहीं है चातुर्य्यकी आवश्यकता नहीं है, कीर्तिकी आवश्यकता नहीं है। आरोग्यताभी वह वस्तु नहीं है जिसकी विशेष आवश्यकता हो। वह आवश्यक वस्तु केवल शील (अच्छा चरित्र) है। संस्कृतका एक कवि कहता है—"वृत यत्नेन सरंक्षेत् वित्तमायाति यातिच, अक्षीणो वित्ततः क्षीणोवृत्त तस्तु हतो हतः" अर्थात् चारित्रकी रक्षा यत्नके साथ करनी चाहिये धन तो आता जाता रहता है धन क्षीण मनुष्य दुर्बल नहीं होता है पर चरित्रके जानेपर मनुष्य मारा जाता है। उक्त कविका कथन है कि विदेशेषु धन विद्या व्यसनेषु धनंमति. परलोके धन धर्म्म शीलं सर्वत्र वै धनम् " इसका भावार्थ यह है कि विद्या परदेशमें धन है, बुद्धि आपदमें धन है, धर्म परलोकका धन है पर चारित्र सब जगह धनका काम देजाता है। जिन लोगोंके आचरण ठीक नहीं है उन लोगोंको उक्त कविने इस भांति फटकारा है—"वरं विन्ध्या टव्या मनशन तृषातस्य मरणम् वरं सर्पा कीर्णे तृणपिहितकूपे नियतनम्

संगत्ता वर्त्ते गहन जलमध्ये विलयनम् न शीलाद् विभ्रशो भवतु कुलजस्य श्रुतवतः" अर्थात् भूखे प्यासे विन्ध्याजंगलमें मरना भलाहै। सर्पसे भरेहुए तिनकेसे पूर्ण कुएँमे गिरना भलाहै गहरे जलके कुण्डमें विलाय जाना भला है किन्तु पढ़े लिखे सद्वशके मनुष्यके लिये चरित्र खोना भलानहीं है। वास्तवमें संस्कृतके इस विद्वानका कथन अक्षर अक्षर ठीक है। इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं है । अङ्गरेजीमें एक कहावत है कि कहनेकी अपेक्षा करके दिखलानेका विशेष प्रभाव होताहै । इसमें क्षणमात्र सन्देह नहीं है कि जो मनुष्य कहता कुछ हो और करता कुछ हो उसके कहनेका तानिक असर नहीं होता है । यदि गुरू चोरी करताहो और अपने शिष्यको उपदेश दे कि तू चोरी मतकर, गुरूको सोचलेना चाहिये कि उसके उपदेशका क्या वज़न होगा ? उपदेश करनेका अधिकारी वही होसकताहै जो कि जैसा कहे वैसाही बर्ते। भारतवर्षमें आजकल अगणित उपदेशकहैं जिस समय उनके व्याख्यान होते हैं उस समयतो वाहवाहकी धूम मचजाती है परन्तु पीछे उनके उपदेशोंका कुछ असर नहीं रहता है। जिस उपदेशकका आचरण ठीक नहीं है उसका उपदेश पानीके बुलबुलेकी भांति होताहै, जो थोड़ी देर पीछे बैठजाताहै। आचरण सुधारना और बातहै और विद्वान होजाना दूसरी बातहै। दुराचारी विद्वानकी अपेक्षा एक सदाचारी मूर्ख अच्छाहै। जिन्होंने बङ्ग देशके प्रसिद्ध महात्मा रामकृष्ण परमहंसका जीवन चरित्र पढ़ाहै, वह इस निवन्धके लेखकके इस कथनका हृदयसे अनुमोदन करेंगे कि दुराचारी विद्वानकी अपेक्षा सदाचारी मूर्ख कितना काम करताहै ? महात्मा रामकृष्ण परमहंस विद्वान नहीं थे, वह कभी पाठशालामें पढ़ने नहीं गये किन्तु उनके अमृतमय उपदेशोंकी धूम विलायततक मच गयी थी। प्रोफेसर मैक्समूलर जैसे विद्वान भी राम-कृष्ण परमहंसके उपदेशोंपर मोहित होगयेथे । इसका कारण यह है कि रामकृष्ण परमहंस सदाचारी पूरेथे । महात्मा रामकृष्ण परमहंसके समयमें

बङ्ग देशमें नास्तिकताकी लहर उठरही थी, अङ्गरेजी शिक्षा दिशा भासकरके बङ्गाली बाबुओंका अपने पैत्रिक धर्मपरसे विश्वास उठता जा रहाथा। परन्तु रामकृष्ण परमहंस जो कि संस्कृत अङ्गरेजी किसी भाषा के विद्वान नहींथे पर सदाचारी थे उनके उपदेशोंसे बङ्गाली नवयुवकों के विचार पलटगये। कहनेका तात्पर्य यह है कि सदाचारी मूर्ख दुराचारी विद्वानसे कहीं अच्छा है। विलायतका लार्ड बाइरन अच्छा कवि था। उसकी कीर्ति इतनी शीघ्रतासे फैली कि उसके साथ यह कहावत प्रसिद्ध होगयी है कि "He rose in the morning and found himself famous" उसकी शृङ्गार रसात्मक कविता विशिष्ट उत्कृष्ट हुआ करती थी उसके पदोंके माधुर्य्यसे लोग बहुत मोहित होजाते थे, परन्तु उसके कुत्सित जीवन यापन करनेसे उसकी वह कीर्ति स्थिर नहीं रहसकी। लार्ड बेकन अङ्गरेजी भाषाका अच्छा लेखक होगयाहै उसके निबन्ध बड़ेही भावपूर्ण हैं, स्थान स्थानमें शिक्षा भरी हुई है। सुना जाताहै कि वह अपने स्वभावको रिश्वत लेते समय स्थिर नहीं रखसका। यह बात चित्तमें खटका पैदा किये विना नहीं रहती है उसके निबन्धोंकी सारी शिक्षाओंका प्रभाव उठ जाताहै।

प्रत्येक मनुष्यका यह आवश्यक और परम कर्तव्य है कि वह अपने ताईं सदाचारी बनावे। अपने स्वभावको विगड़ने नदे, और शीलवान बने, संसारमें शिष्टताके साथ जीवन वितानेके लिये उत्तम शील गुणकी अत्यन्त आवश्यकता है। अपनेको सदाचारी बनाना स्वयं मनुष्यके हाथ है। जिस मनुष्यका आचरण एकबारभी भ्रष्ट होजाताहै फिर उसका सम्हालना कठिन है। इस लिये पहलेहीसे उत्तम गुणोंका सञ्चय करना चाहिये। उपर लिखा जाचुकाहै कि विद्या और शिक्षामें भेद है, पाठक यह अत्युक्ति नहीं है। वास्तवमें विद्या और शिक्षामें बहुत भेद है। एक प्रकारसे पाठशालाको छोड़तेही विद्या समाप्त होजातीहै परन्तु पाठशाला छोड़ते समय शिक्षा समाप्त नहीं होती है। मनुष्यको पग पगपर

शिक्षा मिलती है । इस जीवनमें तो तनिक बातोंसेभी शिक्षा ग्रहण करके अपना जीवन सुधारता है वही धन्य है । मनुष्य सर्व्वोपरि तेजस्वी, गुणवान बलवान् और प्रतिभाशाली क्योंनहो? पर यदि उसमें धर्मभावका प्रधान अङ्ग जो हृदयका महत्व कहाता नहीं तो वह कौडीके कामका नहीं है । यदि वह अपनी उच्च अभिलाषाको पूर्ण करनेके लिये अत्यन्त चेष्टा भी करता हो, परन्तु उसके हृदयमे धार्मिक भावोंके अभाव होनेके कारण उसको अपने दीर्घ मनोरथमें क्षणिक सफलता प्राप्त होती है। वह स्थायी नही रहती है पाठक! बङ्ग देशके दो प्रतिभाशाली विद्वानोंके जीवनकी बातें विचारियेगा तो आपको इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मिलेगा । वे दो विद्वान् माईकेल मधुसूदनदत्त और महात्मा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर है । इसमें सन्देह नहीं कि माईकेल मधुसूदनदत्त प्रतिभाशाली कविथे, वे कई भाषाओंके पण्डितथे और उदार हृदय भी पूरे थे पर उनके स्वभावमें उच्छृङ्खलता थी । उन्होंने अपने स्वभावके सुधारनेकी चेष्टा नहीं की, उसका परिणाम यह हुआ कि ऐसी प्रतिभाशाली कविके जीवनके दिवस घोर दुःखसे व्यतीत हुए थे। इधर महात्मा विद्यासागरके शीलकी इतनी तेजस्विताथी कि उनके स्वभावमें पूरी स्वतन्त्रता होने पर भी उनका जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हुआ था । विद्यासागरका चरित्र इतना उच्च था कि वे मामूली चट्टी (सिलीपर जूता) पहन कर, और एक मामूली डुपट्टा ओढकर लाटसाहब तकके दरबारमें जातेथे और उनकी विशेष प्रतिष्ठा होती थी । सुना जाता है कि विद्यासागर जब कौलेजमें अध्यापक थे तब तो उक्त कौलेजके एक अङ्गरेज अफसरने उनको अपने कमरेमें बुलाया, विद्यासागर उसके कमरेमें गये और देखा कि अङ्गरेज अफसर कुर्सी पर बैठा हुआ अपने सामनेकी मेज़पर दोनों पैर ऊंचे किये हुए रखे है तुरन्त विद्यासागर भी वैसेही बैठ गये । तब वह अङ्गरेज अफसर बहुत नाराज हुआ और विद्यासागरकी गुस्ताखी बतलाने

लगा, उन्होंने निडर होकर विना किसी सङ्कोचके अङ्गरेज अफसरसे कहा कि "हम क्याजानें ? हम तो यही समझे हुए थे कि आप लोगोंके यहां इस भांतिही आदर सत्कार होता होगा, इस ढङ्गसेही बैठनेमें प्रतिष्ठा समझी जाती होगी। जैसा हमने देखाहै वैसाकिया है, इसमें हमने क्या बुराईकी? इस उत्तरको सुनकर वह अङ्गरेज अफसर लज्जित हुआ। प्यारे नवयुवकों! विद्यासागरके इतने निर्भीक चित्त होनेका कारण केवल उनका सदाचारथा। वे जैसे विद्याके सागरथे वैसेही शीलके सागरथे। यही कारण है आज वङ्गदेशमें विद्यासागरके नामकी घरघरमें पूजा होती है। आजकल प्रायः सभी लोगोंकी इच्छा होतीहै कि हमारा नामहो लेकिन स्मरण रखना चाहिये कि सच्ची योग्यतासे ही सच्चा सम्मान प्राप्त होताहै। जो लोग इस समय लीडर (नेता) या रिफोरमर (सुधारक) बनना चाहते हैं। परन्तु वे मलीन विचारके हैं, आचरण भ्रष्ट है। काम क्रोध मद और लोभमें फंसे हुएहैं उनको उचित है कि वे नेता बननेके पूर्व अपने आचरणोंको ठीक करें, आत्मसुधार करें तबतो स्वतःही वे सुधारक या नेता होजायंगे। शिक्षाके साथही साथ सदाचारी बननेकी चेष्टा करो। मनु महाराज कहते हैं "आचारः परमोधर्मः" आचारही परम धर्म है। दुराचारका नाश करनेवाला सदाचारही है। विना सदाचारके मनुष्यका मनुष्यत्व कुछभी नहीं है। दुराचारी मनुष्य और पशुमें कुछभी भेद नहीं है। दुराचारी मनुष्यका जीवन दुःख और अशान्तिसे व्यतीत होताहै। दुराचारी पुरुष लोक और परलोक दोनों विगाड़ताहै। धन और धर्म दोनोंका नाश करताहै। दूराचारी पुरुष अपने जीवनका उद्देश्य नष्ट करताहै। सदाचारसे आयु वढ़ती है। नास्तिकको सदाचारके सम्मुख अपना मस्तक नवाना पड़ता है। सदाचारके प्रतापसे शत्रुभी मित्र वन जाते हैं। सदाचरी व्यक्तिका जीवन दूसरे लोगोंके लिये आदर्श होता है। सदाचारी व्यक्ति चाहे

अपने मुखसे दूसरे लोगोंको उपदेश न करे तो भी अन्य मनुष्य उसके जीवनसे पूरी शिक्षा ग्रहण करते हैं । इस समय हमारी विशेष अधोगति होरही है तब भी हमारे पूर्वजोंकी अबतक कीर्ति चतुर्दिक व्यापी क्यों होरही है । केवल सदाचारके कारण । प्यारे युवको ! भारतमाताकी सन्तानो ! एकबार सदाचारकी महिमाको सोचो, जिस भांति तुम अपना कुत्सित जीवन यापन कर रहे हो उससे बचो । अपने पूर्व पुरुषोंके प्रदर्शित किये हुए मार्गका अवलम्बन करो । स्वावलम्बन और सदाचारकी शिक्षा ग्रहण करके अपने अपने समाजके और अपने देशके हित करनेकी चेष्टा करो । अब कबतक घोर निद्रामें पड़े रहोगे । वह देखो संसारकी सभी जातियां अपनी भलाई करनेकी उपाय कर रही हैं । क्या तुम ऋषि मुनियोंकी सन्तान होकर भी पशुओंकी भांति अपना जीवन व्यतीत करोगे ? नहीं नहीं प्यारो ! अब समय आगया है कि हम आत्म गौरव, आत्मसम्मान, आत्माभिमानको पहचानें जिससे फिर हमारे गये दिन दिखलायी पड़े । तबही हम मनुष्य होनेके अधिकारी होंगे । इस समय तो हम पशुओंसे भी गये बीते हैं ।

परिशिष्ट ।

फुटकर बातें ।

नवयुवकोंको निम्न लिखित बातोंपरभी अपना पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक है ।

(१) स्वास्थ्य—इस विषयमें इस पुस्तकमें लिखा जाचुका है परन्तु स्वास्थ्य रक्षाके निमित्त कसरत करना अत्यावश्यक है ।

(२) स्वास्थ रक्षाके लिये भोजनकी भी ठीक व्यवस्था होनी चाहिये ।

(३) निद्राका भी स्वास्थ्यसे विशेष सम्बन्ध है जिस भांति कम सोनेसे स्वास्थ्यकी हानि होती है उसी तरह अधिकसोनेसे भी मनुष्य आलसी, निकम्मा होजाता है और स्वास्थ्यको भी हानि पहुँचाताहै।

(४) प्रत्येक कार्य्य करनेका समय नियत कर लेना चाहिये। जो मनुष्य समयका सद्व्यय नहीं करताहै । वह मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ नष्ट करताहै ।

(५) मनुष्यको परिश्रमी होना भी उचित है । विना परिश्रम किये किसी कार्य्यमें सफलता प्राप्त नहीं होतीहै ।

(६) अपने रुपये हमेशा अच्छे कामोंमें खर्च करने चाहिये । गरीब निर्धन, लूले लंगड़े अन्धे आपाहिजोंकी सहायता करनाही परम धर्म है । जो विद्यार्थी धनके अभाव होनेके कारण न पढ़सकते हो, उनकी भी धनसे सहायता करना परम धर्म है ।

(७) विद्यार्थियोंको उचित है सदैव पढनेमें मन लगावें निम्न दोषोंसे बचते रहें—

आलस्य मद मोहौच चापलं गोष्ठिरेवच, स्तब्धताचाभिमानत्व यथा त्यागित्व मेवच। एते वै सप्त दोषाः स्युःसदा विद्यार्थिनां मत, सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थीवा त्यजेत्सुखम् ॥

अर्थ—विद्यार्थीके लिये आलस्य, मद, मोह, चपलता गप्प करना अनम्रता, अभिमान, समयको व्यर्थ नष्ट करना । यह सात दोष हैं। सुखार्थीको विद्या कहाँसे हो, विद्यार्थीको सुख नहीं मिलता, सुखार्थी विद्या और विद्यार्थी सुखको छोड़े ।

(८)—माता पिताको उचित है कि अपने लड़कोंको स्वांग, थियेटर प्रभृत्तिमें भी पात्र (Actor) न बननेदें क्योंकि वहाँपर भी पापीजन बच्चोंके साथ अपनी पापवासना पुरी करते हैं ।

इति.

शुद्धि पत्र.

अशुद्ध		शुद्ध		पृष्ट		पंक्ति
वह	....	वे	....	३	....	३
सरॉश	....	सारॉश	....	४	...	१४
क्यौंकि	....	क्योंकि	....	५	....	२
फ़जूल	....	फजूल	....	५	....	९
हे	....	है	....	५	....	१७
लना	....	लेना	....	५	....	२०
जरूर	....	जरूरत	....	५	....	२१
मारना नहीं चाहिये		मारना ठीक नहीं	....	६	...	८
घडकी	....	घुडकी	....	६	....	१०
निष्टुरता	....	निष्ठुरता	....	६	....	१२
गुस्ताख	....	गुस्ताख़	....	६	....	१७
पहुचे	....	पहुँचे	....	६	....	१७
विचारों की	....	विचारोंकी	....	६	....	१८
कि ताड़ना	....	ताड़ना	....	६	....	२३
कि बालकों	....	जो बालकों	....	६	....	२४
प्रवृीत	....	प्रवृत्ति	....	७	....	७
परिक्त	....	परिष्कृत	....	७	....	११
खेलाते	....	खिलाते	....	७	....	१३
की	....	कि	....	७	....	१७
कि समय	....	कि एक समय	....	७	....	२५
विषयो	....	विषयों	....	८	....	१

शुद्धिपत्र

	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
*	शिष्टता	शिष्टता	८	३
	जिनसे	जितने	८	१२
	भोग विलास	भोगविलास	९	५
	अनक	अनेक	९	६
	स्वभावक	स्वभावके	९	८
	हृदय	हृदय	११	७
	वेहियाई	बेहियाईका	१२	१६
	किशोरावस्था	किशोरावस्था	१४	१
*	सौन्दर्यता	सुन्दरता	१५	११
	स्वभाविक	स्वाभाविक	१५	१३
	स	से	१६	६
	सम्हालत	सम्हालते	१६	८
	विषेश	विशेष	१७	३
*	दुसरे	दूसरे	१७	१७
	पुरी	पूरी	१७	१८
	मास्तर	मास्टर	१८	३
	प्रतिमा	प्रतिभा	१८	९
	हाथ	हाथसें	१८	१५
	धिचक जाते	घिचक जाते	१८	१९
	एज्यृकेशनल डिपार्टमेण्ट	(एज्यूकेशनल डिपार्टमेण्ट)	२०	४
	क्यौंन	क्योंन	२०	१४
	बहूत	बहुत	२०	२७
	हूयी	हुई	२३	९
	सृष्टी	सृष्टि	२३	१२
*	परिक्षा	परीक्षा	२३	१६
	चिराग	चिराग	२३	१७
	नजर	नजर	२३	१७
	यस्त	यस्तु	२५	६

शुद्धि पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
योनी	योनि	२८	९
चितौना	चिनौती	३०	१६
नमुना	नमृना	३१	३
नाचना	नाचका	३१	२३
विद्वजन	विद्वज्जन	३२	५
नाच	नाचमे	३२	२३
* नन्नाव	नत्राव	३४	२
* स्त्रीयों	स्त्रियों	३४	१५
* सुजाक	सुज़ाक़	३५	६
* आतशक	आतशक़	३५	७
क्या व्यभिचारी	व्यभिचारी	३६	१८
नुकसान	नुकसान	३८	९
निष्ठूर	निष्ठुर	३८	१२
करतीं	करती	३८	१२
* ह्रास	ह्रास	३८	१६
उनंके	उनमे	४१	२०
निवारिनी	निवारिणी	४२	१५
तिलाञ्जुलि	तिलाञ्जलि	४२	२५
कहैंगे	कहेंगे	४८	३
* सुर्य	सूर्य	४८	१३
रसायण	रसायन	४९	९
पर	में	५०	२०
तहर	तरह	५२	१८
अयुक्ति	अत्युक्ति	५३	१६
तचाभिषेक	तत्राभिषेक	५१	२३
बुद्धी	बुद्धि	५७	७
साहसी	साहस	५७	८
प्रणालि	प्रणाली	६१	

शुद्धि पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
दियी	दी	६१	१४
गजपुतों	राजपूतों	६३	८
[illegible]टीटस	इक्टीटस	६४	२४
[illegible]नसॉग	हिवनन्साग	६५	२
[illegible]गताई	खॉगताई	६५	७
[illegible]	वृत्त	६६	१६
भरणम्	मरणम्	६६	२५
नियतनम्	निपतनम्	६६	२५
गत्ता	गर्त्तो	६७	१
दिक्षा	दीक्षा	६८	१
* कीर्ति	कीर्त्ति	६८	७
कहाता	कहलाता है	६९	४
चतुर्दिक	चुतार्दिक्	७१	३
आलस्य	आलस्यँ	७२	१५
त्व	त्वं	७२	१५
मतः	मताः	७२	१६

नोट—जिन शब्दोके आगे * ऐसा चिन्ह है। प्रायः वे इस पुस्तकमें सब जगहँ अशुद्ध छपे हैं। प्रत्येक स्थलपर सँशोधन न करके, एक स्थलपर ही सँशोधन कर दिया गया है। पुस्तकके पढ़नेके समय पाठकोंको अवस्य इस बातका ध्यान रखना चाहिये। स्थानके सङ्कोचके कारण, शुद्धिपत्रमें प्रश्न चिन्ह (?) सम्बोधन चिन्ह (!) इनवरटेड कौमा (" ") वगैरहः की जहाँ भूलें हुई हैं। उनका शुद्ध रूप नहीं दिया जासका है। कृपया पाठक वहाँ पर भी सावधानता पूर्वक पढ़ें। इसके अतिरिक्त जहाँ कहीं अक्षर उड़गये हैं या उठे नहीं हैं। उनकाभी शुद्धिपत्रमें दुबारा लिखना उचित नहीं समझा है।

॥ श्रीः ॥

प्रथम भाग ।

श्रीयुत पं० ज्वालादत्त शर्मा द्वारा लिखित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई
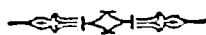
खेतवाडी ७ वी गली खम्बाटा लैन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ श्रीः ॥

कर्मयोग.

प्रथम भाग।

श्रीयुत पं० ज्वालादत्त शर्मा द्वारा लिखित।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई
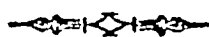
खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

सवत् १९६७, शके १८३२.

समर्पण ।

सिवाली (हिमालय) निवासी श्रीसोऽहं स्वामी-
जीके शिष्य श्रीविचित्रानन्दसरस्वती-
जीके चरणकमलोंमें उनके सत्संग-
द्वारा जो आत्मिकलाभ पहुंचा
है, उस पवित्र नातेसे यह
अनुवाद बडी श्रद्धा
और भक्तिके साथ
समर्पण किया
जाता है ।

ज्वालादत्त शर्म्मा.

॥ श्रीः ॥

अथ कर्मयोग विषयानुक्रमणिका ।

प्रथम भाग.

॥ इति कर्मयोग प्रथमभाग विषयानुक्रमणिका ॥

॥ श्रीः ॥

अथ कर्म्मयोग ।

प्रथम भाग ।

प्रथम परिच्छेद ।

मनुष्यके चालचलन (Character) पर कर्म्मका प्रभाव ।

संस्कृतमें "कृ" धातुसे कर्म्म शब्द बना है, जिसका अर्थ करना है। जो कुछ भी किया जाता है उसका नाम कर्म्म है । बोलचालमें क्रियाके फलको भी कर्म्म कहते हैं। कर्म्मकी प्रशंसामे वे सब कार्य्य कारण आजाते हैं जिनसे हमारे गत एवं वर्त्तमान जीवन पर प्रभाव पडता है, किन्तु कर्म्मयोगसे हमारा अभिप्राय केवल इस जन्मके कर्म्मसे है ।

मनुष्य-जीवनका उद्देश ज्ञान-प्राप्ति है । हमारे शास्त्रोंने इसीको मुख्यता दी है, प्रसन्नता या सुख मनुष्यजीवनका उद्देश नहीं है, किन्तु इसका उद्देश केवल ज्ञान है, प्रसन्नता एवं सुखका अन्त है । इसलिये सुखको जीवनोद्देश समझना भूल है, संसारमें जितने दुःखोंके दृश्य दिखाई देते हैं इन सबका कारण यह है कि मनुष्यने भूलसे सुखको जीवनका उद्देश समझरक्खा है, कुछ ही समय बाद मनुष्य जानजाता है कि उसको सुख दुःखके झमेलेमें नहीं पड्ना चाहिये, और उसका लक्ष्य ज्ञान होना चाहिये, अपने २ समय पर सुख दुःख भी गुरुका काम देते हैं, भलाई और बुराई दोनोंहीसे मनुष्यका अनुभव बढता रहता है, सुख दुःख तो व्यतीत होजाते हैं परन्तु ये अपना २ चित्र मनुष्यके मन पर खींच जाते हैं और इन्हीं चित्रोंके समूहको मनुष्यका चालचलन या (Character) कहते हैं । यदि आप किसी एक मनुष्यके चालचलनको देखें तब आपको ज्ञात होगा कि उसका चालचलन उसकी विविध मानसिक वृत्तियोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं है, इसको देखकर आप स्वयं समझजायगे कि इस चालचलनके बनानेमें भलाई और बुराई सुख एवं दुःखने बराबर हिस्सा लिया है ।

सुखकी अपेक्षा दुःखही चालचलनके बनानेमे सच्चे गुरुका काम देता है । संसार
जितने सुप्रसिद्ध महान् पुरुष हुए हैं यदि उनके जीवनचरित्र ध्यानसे पढेजांय तो
ज्ञात होगा कि दुःखोनेही मुख्यतया उनके जीवनको उत्तम बनानेमें काम किय
है, सुखकी अपेक्षा दुःखनेही उनको अधिक शिक्षा दी है । इसी प्रकार सम्प
त्तिकी अपेक्षा निर्धनताने उनको उत्तम एव योग्य बनाया है । और प्रशंसाके
अपेक्षा लोकनिन्दाने उनकी अतरग शक्तियोंको अत्यधिक उत्तेजित किया है

मनुष्यमें ज्ञान कहीं बाहरसे नहीं आता । प्रत्युत इसमें स्वय वर्त्तमान है । सब
कुछ मनुष्यके अन्दर ही भरापडा है, "उसने सीखा" "उसने पढा" "उसने किसी
विषयका उद्घाटन किया" ये सब लोकाचारके बोलचाल हैं । वास्तवमे मनुष्यके
मनमें समस्त विज्ञान और कलाओंका ज्ञान भरा पडा है । इसका सीखना केवल
आत्माके ऊपरसे अज्ञानरूपी आवरणोंको दूर करना मात्र है । कहा जाता है कि
न्यूटन (Newton) ने पृथ्वीकी आकर्षणशक्ति (Gravelation) को जाना.
क्या यह विद्या किसी कोनेमे बैठी हुई न्यूटनकी प्रतीक्षा कर रही थी ? नहीं
यह उसीके मस्तिष्कमें विद्यमान थी । समय आया और उसको अपने अन्दर
इसका प्रकाश प्रतीत होगया । जो कुछ विज्ञान संसारमें है वह सब मनुष्यके
मनसे निकला है । सासारिकविज्ञानका अनन्त कोश तुम्हारा मन है, प्रकृति केवल
सकेत करदेती है और इसके सकेतको पाकर तुम जो अपने मनमें विचार करते
हो, वही तुम्हारेलिये विचारणीय विषय है । सेवके वृक्षसे एक सेव गिरा, और
न्यूटनके मनको एक प्रकारका सकेत मिलगया । इसी विषय पर वह मनमें विचा-
रने लगा और उसने अपनी अगली विचारमालामे एक नवीन कड़ी देखी ।
उसीका नाम The Law of Gravilation रखलिया । यह विज्ञान न तो सेव
में था और न पृथ्वीमे वरन न्यूटनके मन ही मे था । इसी प्रकार समस्त विज्ञान
चाहें वे, सासारिक हों या पारमार्थिक, शारीरक हो या आत्मिक पर सब मनु-
ष्यके मनमें ही रहते हैं । बहुतसे मनुष्योमे यह अप्रकट रूपसे रहते हैं, इनका
आवरण शीघ्र नहीं उतरता और जब ये आवरण धीरे २ दूर होनेलगते हैं तभी
कहा जाता है कि हम सीख रहे हैं बस एक यही भेद है जो मनुष्यकी ज्ञानवृ-
द्धिमें काम करता रहता है । जिस मनुष्यके आवरण उतरगए वह "जाननेवाला"
कहलाने लगा और जिसके ये पर्दे दूर नहीं हुए वही अज्ञानी या मूर्ख रहा ।

... समस्त आवरण दूर होगए वह एक प्रकारसे सर्वज्ञ होगया। संसारमे ऐसे ... महापुरुष हुए है और आशा है कि इस कल्पमें भी ऐसे महानुभाव जन्मेंगे। ... प्रकार चिकमाक पत्थरमे अग्नि रहती है उसी प्रकार मनमे विज्ञान रहता है ... प्रकार उक्त पत्थरको रगडनेसे अग्नि निकलती है उसी प्रकार बाहरी संकेत ... ही तुम्हारा विज्ञान वृद्धि पाता है हमारी समस्त इच्छा विचार और कर्म्मके ... ये ऐसीही समझना चाहिये। हमारे रोने और हंसनेमे हमारे सुख और दुःखमे हमारी प्रशसा और निन्दामें हमारे भले और बुरेमें इसी प्रकार हमारे सुख और दु खमें हर जगह इसीका व्यापार दृष्टिगत होगा। और यदि हम जरा गहरा विचार करें तब यह सारा भेद अभी खुलजाय, कि समस्त विषय बाह्यसकेत पाकर हमारे भीतरसे निकले है। इन सबका परिणाम हमारी वर्त्तमान दशा एवं वर्त्तमान जीवन है। इन सबके समूहका नाम "कर्म" है जो कुछ हमारे मन एव शरीरका प्रभाव हमारे आत्मा पर पडता है, उसीमेसे चिकमाक पत्थरकी अग्निके समान हमारी नवीन २ शक्तियां प्रकट होने लगती हें।

यह सब कुछ कर्म्म है इसलिये हम अपने समस्त जीवन भर किसी न किसी प्रकारके कर्म्म करतेही रहते हैं। मैं तुमसे वातचीत कररहा हूं, यह कर्म्म है। तुम ध्यानसे सुनरहे हो, यह भी कर्म्म है, श्वास लेना, चलना, फिरना, बोलना सब कर्म्म है, जो कुछ हम सोचते हैं जो कुछ हम करते हैं, जो कुछ हम समझते है यह सब कर्म्मही कहलाते हैं और यह सब कर्म्म अपने स्मारक चिह्न (प्रभाव) हमपर छोडजाते हैं।

कुछ कर्म्म ऐसे हें, जो बहुतसे और नानाप्रकारके कर्म्मोंके समूह होते हे, यदि हम समुद्रतट पर खडे होकर तटके पत्थरोंसे लहरोंके टकरानेके शब्दको सुनें तब हमको मालूम होगा कि बडाभारी शब्द होरहा है, ये लहरें अकेली नहीं हैं प्रत्युत इनके साथ करोडो और असख्य छोटी २ लहरें सम्मिलित हैं परन्तु जबतक ये सब मिलकर ऐक्यभावसे समुद्रके तटसे नहीं टकरातीं तबतक हम उनकी ध्वनि नहीं सुन सकते, इसी प्रकार तुम्हारे मनकी दशा है इसमे भी कर्म्म समूहका भार भराहुआ है, कभी २ हम जो करते हैं उसको अनुभव भी करते हैं, यह कर्म्म बहुतसे छोटे २ कर्म्मोंके समूहरूप होते हैं, यदि तुम किसी बडे आदमीके

चालचलनको जाचना चाहते हो तब इसके बडे २ कामोंको मत देखो, मूर्खसे भ-
मनुष्य किसी न किसी समय प्रतिभाशाली विद्वान् बनजाता है, हमको आदमी
साधारण कामोको देखना चाहिये इन नित्यप्रति व्यवहारमें आनेवाले छोटे
कर्म्मोंको देखकर उसके चालचलनका पता लगजायगा क्योंकि यही काम म-
ष्यकी मनोवृत्तियोके रचयिता हैं। कभी २ साधारण मनुष्य समय पाकर व-
बनजाते हैं, वास्तवमे बडा आदमी वह है जो प्रत्येक कर्म्ममे प्रत्येक दशामे व-
है, जहा कहीं भी जिस दशामें रखाजाय वहा और उसी दशामे बडाई
काम करता रहै।

मनुष्यके आचार विचार पर उसके कर्म्मका बडा प्रभाव पडता है यह प्रभा
बडा बलवान् होता है इसका मुकाबला करना महान् कठिन है। थोडी देरके लि
समझलो कि एक केन्द्र centre है और वह ससारकी समस्त शक्तियोंको अपनी
ओर खींचरहा है, और इस प्रकार वह केन्द्र बनकर समस्त शक्तियोंको अपनेमें
सम्मिलित करता हुआ फिर इनको भारी धाराकी समान फेंक देता है। इस
प्रकारका केन्द्र वास्तवमे मनुष्य है, इसमे विद्या है, बल है, और वह सब ससारको
अपनी ओर खींचे हुए है, भलाई बुराई सुख दु ख सब इसीकी ओर खिंचे हुए
हैं और उसीसे चिपटे हुए हें और वह इसी सामग्रीद्वारा अपनी जबर्दस्त मनो-
वृत्तिको बनाता है जिसको charecter चालचलन कहते हैं और फिर इसको
बाहरकी ओर फेंकदेता है, । यतः इसमे प्रत्येक पदार्थ खींचनेकी शक्ति है इसी
प्रकार इसको बाहर फेकने, बनाने और परिणाममे लानेकी शक्तिभी प्राप्त है।

संसारके सब काम, मनुष्य समाजकी सब कार्य्यवाही, उसके चहुओर दिखाई
देनेवाले समस्त पदार्थ, केवल मनुष्यकी विचारशक्ति will power के फलस्वरूप
हैं। मेशीनें और यंत्र नगर या जहाज ये सब मनुष्यकी विचारशक्तिने ढाले हैं
और यह शक्ति मनुष्यके आचरण charecter से बनती है और यह चाल-
चलन कर्म्मसे बनता है। जैसा कर्म्म होगा वैसेही विचार होगे। ससारके बल-
वान् और शक्तिशाली वे महापुरुष हुए हैं जो बडे काम करनेवाले थे, इनकी
विचारशक्ति अद्वितीय थी ये ऐसे बलवान् थे कि ससारको उलट पलट सक्ते थे
और इनमे यह अद्वितीय विचारशक्ति जन्मजन्मांतरमे लगातार काम करनेसे

॥ बुद्धकी जैसी विचारशक्ति एक जन्मके कर्मका फल है? क्योंकि ...नते है कि इसका पिता जिस प्रकृतिका मनुष्य था, कदाचित् कोई मनुष्य ...हीं कह सकेगा कि मनुष्यके कल्याणके लिये कभी इसकी वाणीसे ...के शब्द निकले होगे, बुद्धके पिता जैसे करोडों छोटे २ राजे संसारमे हो ...ह यदि यह कहाजाय कि मनुष्यमें विचारशक्ति भी एक प्रकारकी पैतृक ...त्ति है और वह भी माता पितासे मिलती है तब आप कैसे मानलोगे ...बुद्धकी अनुपम विचारशक्ति एक साधारण राजासे उसको मिलीथी, ...भव है इस (राजा) के नौकर चाकर भी अनाज्ञाकारी रहे हो पर यहां यह ...लगता है कि इसके पुत्रका आधा संसार अभीतक दास बननेमे गौरव समझ ...हा है फिर आप कैसे कहसक्ते है कि उस महात्माको उसकी विचारशक्ति एक ...साधारण राजा द्वारा मिली जिसको करोडो मनुष्य ईश्वरकी समान पूजते है। ...बुद्धकी यह अनुपम शक्ति कहासे आई? यह शक्ति कभी पैतृक सम्पत्ति नहीं होसक्ती इतनी शक्ति उसमें कैसे एकत्रित होगई! यह कभी एक जन्मका काम नहीं है इसने सहस्रों जन्म लिये होंगे हजारो प्रत्युत लाखों वर्षोंसे इसकी शक्ति बढती आई और अन्तमे बुद्ध स्वरूप होकर वह समाजपर फटपडी और संसारमें अद्यावधि उसका प्रकाश है।

यह बात केवल करनेसे प्राप्त होती है यावत् कोई पुरुष कमाई नहीं करता उसको कुछ नहीं मिलता यह एक कानून है जिसको आप प्रकृतिमे चहुओर देखोगे किसी समय हम भूलसे समझले कि ऐसा नहीं होता किन्तु अन्तमे इसकी सत्यता माननी पडेगी, कोई मनुष्य सारी आयु संपत्ति प्राप्त करनेके लिये लडाई लडता रहै लोगोको धोखा देता रहे परन्तु अन्तमे मालूम होताहै कि इसको सम्पत्तिपर कोई अधिकार नहीं था और इसलिये-इसका जीवन दुःख और दारिद्र्यका जीवन बनारहा। हम शारीरिक आनन्दकी सामग्री एकत्र करनेलगें परन्तु हमारा अधिकार उसीपर होता है जिसकी हम कमाई करते हैं, मूर्ख मनुष्य हजारों पुस्तक खरीदकर अपने पुस्तकालयमें भरलेते हैं परन्तु वह केवल उन

---

१ इंग्लिशमें Hiredily शब्द आया है जिससे अभिप्राय है कि मनुष्यके समस्त ...ण दे पितासे पुत्रमें पहुचते हैं।

पुस्तकोंको पढसकेगा जिनपर उसको अधिकार प्राप्त है, और यह अधिकार हमको अपने कर्मोंसे मिलाकरता है, हमारे कर्म्म ही हमारे अधिकारोंका निर्णय करते हैं और जब हमको अधिकार और संस्कार है इसीके अनुसार हम इनको अपनेमे प्राप्त करसकेंगे, हम अपनी वर्त्तमान दशा एवं वर्त्तमान जीवनके स्वयं उत्तरदाता हैं, और जो कुछ हम होना चाहते हैं इसकी इच्छा और शक्ति हममे प्रस्तुत है, यदि हमारी वर्त्तमान अवस्था हमारे गतजीवनके कर्मका फल है तब इससे ज्ञात होसकेगा कि आगे चलकर हम जैसा बननेकी इच्छा करते है चाहे जैसे बननेकी हममे शक्ति है, हम वैसे ही बनजायगे। इसलिये हमको यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि कौन कर्म्म करनेसे हमारा कल्याण होगा, तुम यदि यह कहो कि "कर्म्मपर विचार करने क्या इसके जाननेकी क्या आवश्यकता है इस संसारमें प्रत्येक कुछ न कुछ कर्म्म कररहा है" किन्तु स्मरण रखो कि इस प्रकार बातें बनानेसे निष्फल हमारा समय व्यतीत होता है। "कर्म्मयोग" के लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें लिखा है कि " बुद्धिमानी और योग्यताके साथ कर्म्म करना (Science) सायंस है पर इतना जान लेना चाहिये कि कर्म्म कैसे करना चाहिये" तब जाकर उत्तम फल निकलेगा, तुमको स्मरण रखना चाहिये कि हर कर्म्मके करनेसे यह अभीष्ट है कि मनःशक्ति जो दबी पडी है उभर निकले और सोया हुआ आत्मा जाग उठे, यह शक्ति प्रतिमनुष्यमे हैं ज्ञान भी उसीमे है नानाप्रकारके कर्म्म संकेतके समान है जिनके द्वारा यह सोया हुआ जन जागउठता है।

मनुष्य किसी न किसी इच्छाको सन्मुख रखकर काम करता है, कोई काम ऐसा नहीं होता जिसमे कुछ न कुछ इच्छा न हो, कोई प्रसिद्धि चाहता है, वह प्रसिद्ध होनेके लिये उपाय करता है जो सम्पत्ति चाहते हैं वे उसके लिये कर्म्म करते हैं। कुछ अधिकार चाहते हैं वे अधिकार प्राप्तिके लिये कर्म्म करते हैं। कुछ आदमी स्वर्ग प्राप्तिके लिये कर्म्म करते हैं, कुछ चीनियोंकी समान संसारमे मरनेबाद नाम पैदा करनेके लिये कर्म्म करते रहते है क्योंकि इस देशमे (चीनमें) मरनेके बाद उपाधि मिलती है कदाचित् और कर्म्मोंसे ये कर्म्म अच्छे होते हैं चीनियोमें जब कोई अच्छा कर्म्म करता है तब उसके मृत-

ो उपाधि (Title) मिलती है कुछ मुसल्मान इन्हीं लिये कर्म करते हैं उनके मरने पर उनकी कब्र खूब सजाई जाय कुछ आदमी अपने पापोंके प्रायश्चित्त स्वरूप कर्म्म करते हैं पहिले बुरे कर्म्म किये फिर एक मन्दिर ...दिया और कुछ धन पुजारीके अर्पण कर मानो उन्होंने स्वर्गके लिये सर्टी... प्राप्त करलिया। निदान, कर्म्म करनेके लिये अनेक और विविध प्रयोजन हुआ करते हैं।

कर्म्मको कर्म्मके लिये करो। हर देशमें ऐसे सहृदय पुरुष हैं जो न नामके ...च्छुक हैं न प्रसिद्धि चाहते हैं और न स्वर्गहीकी चाहना करते हैं परन्तु बराबर ...र्म्म करते रहते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि कर्म्मका फल स्वय अच्छा हुआ ...रता है। ऐसे सज्जन भी ससारमें विद्यमान हैं जो निर्धनोंकी रक्षा करते हैं और ...नको साहाय्य देनेके लिये प्रस्तुत रहते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि नेकी ...रना अच्छा है और उनको नेकी एव भलाईसे प्रेम है। अब पुनः कर्म्म करनेकी ...ष्ठाकी ओर फिरते हैं जो लोग नाम और प्रसिद्धिके लिये कर्म्म करते हैं उनके ...र्म्मोका फल चिरकाल पश्चात् निकलता है, कभी २ हमको उस समय प्रसिद्धि ...ौर नामवरी मिलती है जब हम वृद्ध होजाते हैं और जीवनका सूर्य्य प्राय ...स्तही होजाता है, यदि मैं अपने जीवन भर प्रसिद्धिके लिये कर्म्म करता रहूं ...ब मुझको अन्तमें मालूम होगा कि मैंने इस लबी यात्रामे बहुतही कम लाभ ...म किया यदि नामके लिये कर्म्म कियाजाय तब इसकी भी यही दशा होती है, ...रनेसे कुछ दिनों पहिले थोडीसी नामवरी मिलजायगी इसीप्रकार और सासारिक ...दार्थोंके लिये भी समझो, वडी लम्बी यात्रामें बहुतही कम लाभ है। किन्तु ...दि कोई निष्काम कर्म्म करे उसका क्या परिणाम होगा? क्या उसको कुछ न ...लेगा? क्यों नहीं, उसको सबसे अधिक लाभ होगा, निष्काम कर्म्मकी मजदूरी ...बसे अधिक होती है परन्तु मनुष्य अधीर होजाता है वह धैर्य्यसे लगातार ...र्म्म नहीं करता, शरीरके लिहाजसे भी इसका मूल्य अधिक होता है, प्रेम, ...च्चाई निर्लोभ होना ये कुछ जाहिरदारीमें कहनेके ही शब्द नहीं है प्रत्युत हमारे ...ीवनके मुख्य उद्देश हैं, इनके करनेमें एक अद्भुत आनंद और शक्तिका सचार ...ता है प्रथम जो मनुष्य पाच दिन या पांच ही मिनिट तक, स्वार्थ

अन्य किसी प्रकारकी इच्छाको छोडकर कर्म्म करेगा उसमे स्वयं एक प्राकृतिक शक्ति उत्पन्न होजायगी, अवश्यमेव, ऐसा करना कठिन है किन्तु हम अपने भीतर जानते हें कि ऐसा करनेसे कितना बडा लाभ होगा और इसके कैसे फल प्रकट होगे। जो निष्काम कर्म्म करेगा जो अपने मनको जीतलेगा उसके कर्म्म बहुत मजबूत होंगे मनका जीतना सब कामोसे बडा है, समझलो, चार घोडोकी एक गाडी बडे जोरसे पहाडीकी ओर चलीजारही है, साईस लगाम द्वारा घोडोंको रोकरहा है, बताइयेगा, किसमे अधिक बल है, घोडोंके तेजीके साथ दौडनेमें या साईसके रोकनेमे ? गेंद हवामें उछलकर कुछ दूर जाती है, फिर पृथ्वी पर गिरपडती है, दूसरी दीवारसे टकरा कर फिर वहींकी वहीं रह जाती है। ठीक यही दशा स्वार्थसे पूर्ण कर्मोंकी है इन सब कर्म्मोंका यह परिणाम होगा कि जल्दी या देरमें हम पर अधिकार पालेगे और फिर तुम्हारे हाथ न आयगे, किन्तु यदि मनको रोकाजाय तब स्वय शक्ति बढतीजायगी, निष्काम कर्म्म करना वास्तवमे मनके रोकनेका साधन है, इस-प्रकार निरोध करनेसे ईसा एवं बुद्ध महात्माओंकी जैसी शक्ति उत्पन्न होती है मूर्ख इस भेदको नहीं जानते तथापि उनको मनुष्योंपर शासन करनेकी इच्छा बनी रहती है। मूर्ख मनुष्य नहीं समझता कि यदि वह धैर्य्यके साथ निष्काम कर्म्म किये जायँ तब समस्त ससारको अपना आज्ञाकारी बनासकता है। कुछ वर्ष संतोष करो, दूसरोंपर अधिकार पानेके झूठे विचारको मस्तिष्कमे निकालफेंको और जब यह बिल्कुल दूर होजायंगे तुम समस्त सृष्टिपर शासन कर-सकोगे। मनुष्य एक दो रुपयेके लिये दौडते फिरते हैं और यह नहीं विचारते कि दो चार रुपयेके लिये दूसरोको धोखादेना बुरा है। यदि वे कुछदिन अपने आपको वशमे रखसके तब वे करोडो रुपया इच्छा होनेपर अपनी ओर खींच सक्ते हैं। परन्तु हम लोग ऐसे ही मूर्ख है! हममे बहुत मनुष्योंकी दृष्टि कुछ वर्षोंके आगे नहीं बढती, जिसप्रकार पशुओको थोडी दूरके अन्तरके अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता, वैसीही हमारी दशाहै हमारा संसार भी बडा संकुचित है, हम इससे अधिक न देखसक्ते हैं और न देखनेकी सुधि है। बस इसी लिये हम असभ्य और दुराचारी बनजाते हैं यह हमारी बहुत बडी निर्बलता और शक्तिहीनता

है। छोटेसे छोटे कर्म्मकी भी उपेक्षा करना उचित नहीं है जिस मनुष्यमे बुद्धि नहीं है जो मूर्ख है उससे नाम पैदा करनेके लिये प्रसिद्धि लाभ करनेके लिये कर्म्म करनेके लिये कहिये, परन्तु हर मनुष्यको स्मरण रखना चाहिये कि हमारा कदम आगेकी ओर बढा चले और कर्म्म करतेहुए हम कर्म्मके प्रकृत भावको भी समझते जाय कि कर्म्म क्या है और इससे क्या अभीष्ट है ? कर्म्म करनेका हमको अधिकार है "किन्तु इसके परिणामका या फलका अधिकार नहीं है" फलकी कामना छोडदो परिणाम कौन चाहता है! जब कभी किसी आदमीको सहायता देनेका समय आवे कभी न सोचो कि उसका वर्त्ताव तुम्हारे साथ कैसा है, कभी फलकी ओर दृक्पात न करो यदि तुम भला या बडा कर्म्म करना चाहते हो तब यह न सोचो कि इसका क्या फल या परिणाम होगा।

इस प्रकारके कर्म्म करनेके लिये अनेक कठिनाइयोका सामना करना पडता है, अतुल पराक्रमकी आवश्यकता है हमको चाहिये कि सदा काम करते रहे बिना कर्म्मके एक क्षण रहना भी कठिन है, जिसको लोग शान्ति-कहते हैं इसका समझना सुलभ नहीं है एक मनुष्य जीवनकी उधेड़बुनमे हाथ पाव मारता हुआ जब कभी सामाजिक जीवन (Social Life) की धारामे पडता है तो गोता खाने लगता है, दूसरा मनुष्य वह है जिसने ससारत्यागका विचार कर लिया है हर वस्तु इसके समीप शान्तिका दृश्य दिखा रही है किसी प्रकारकी अशान्ति नहीं है कुछ एक धीमी २ आवाज सुनाई देती है यहा प्रकृतिका ही राज्य है वृक्षो पर पशु और पुष्पोके सिवा कुछ दिखाई नहीं देता। परन्तु ये दोनो चित्र पूर्ण नहीं हैं। यदि कोई अयोग्य पुरुष झूठे त्याग और वैराग्यकी शिक्षा प्राप्त कर त्यागी और विरक्त बनजाय तब, जब कभी ससारसागरकी लहरोंके थपेडे लगेंगे वह सहसा कुचल दिया जायगा. जो मछलियां समुद्रके गहरे जलमे रहती हैं जब कभी किनारेपर आजाती हैं तब समुद्रकी लहरे उनको थपेडों द्वारा खण्ड २ करदेती हैं इनका कहीं पता नहीं मिलता। इसी प्रकार जो मनुष्य एकान्त वास कर कुछ कर्म नहीं करते जहा समाजके साथ चार आखें हुई नष्ट होजाते हैं। इसीप्रकार जो मनुष्य निशिदिन सामाजिक झगडोंमें फसा रहताहै वह भी एकान्त सेवनका अधिकारी नहीं। २२ प.

पागलखानेमे भेजे जानेके योग्यहै। आदर्श मनुष्य वह है जो एकान्तवास और चुपचाप रहनेपर भी तेजीके साथ कर्म करता रहै और अत्यन्त अशान्ति उत्पन्न करानेवाले कर्मोंमे रहते हुए भी एकान्तवास और मौन रहनेके प्रकृत भावको समझे हुए है, क्योंकि इसका मन वास्तवमें इसके एकान्त निवासका भवन बन गया है। इसने मनोवृत्तिनिरोध करनेके गुप्त रहस्यको समझ लिया है। नगरकी गलियोमे होताहुआभी जहा शोरके कारण कान बहरे होते हैं वह शान्तचित्त रहताहै मानो वह किसी योगीकी गुफामे प्रवेश कररहा है। और जहा किसी प्रकारका शोर पहुचही नहीं सकता। परन्तु वहांभी वह बडी तेजीके साथ दिन रात काममें लगा रहता है। यह कर्म्मयोगका रास्ता है। यदि तुमने इस गतिको प्राप्त करलियाहै तब तुम कर्म्मके भेदसे अनभिज्ञ नहीं हो।

किन्तु हमको आरम्भमें अनेक कामोको हाथमे लेकर उन्नति करना है, जिस प्रकार धीरे २ हम बढते जायगे, उसी प्रकार नित्यप्रति निस्वार्थ और सन्तोषी बनतेजायगे, जिस कर्म्मको हमारे प्रारब्धने हमको सौंपाहै हमको उसीपर सन्तोष करना चाहिये और इसके सच्चे भावको समझकर उसीमें यथाशक्य चेष्टा करनी चाहिये, तब एक वर्षमेंही हमारी दशा बदलजायगी यानी जो कुछ स्वार्थके अश मनमे होंगे वह इसी थोडेसे कालमें लय होजायगे। और कुछही काल उपरान्त हम स्वार्थरहित एवं निष्प्रयोजन कर्म्म करने लगेंगे। यदि जो कभी २ स्वार्थ प्रकट भी होगा तब हम इसको वडी सावधानीसे नष्ट कर सकेंगे। यदि इस प्रकार काम होतारहा तब जिसप्रकार बहते हुए नदी नाले समुद्रमें पहुचजाते हैं उसीतरह एक ऐसा समय हमारे जीवनमे आजायगा जब हम नितान्त स्वार्थसे शुद्ध होजायगे। और जब हम निस्वार्थ होजायंगे, हमारी समस्त शक्तिया हमारे चहुंओर स्वयमेव एकत्र होने लगेगी और तब सचाईके ज्ञानका आपही आप प्रकाश होजायगा और हम इसके अधिकारी बनजायगे।

॥ इति प्रथम परिच्छेद समाप्त ॥

---

१ ईशोपनिषद्में लिखाहै कि:-
ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचित्जगत्यां जगत् ॥
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मागृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ १ ॥

द्वितीय परिच्छेद ।

हर मनुष्य अपनी २ जगहपर वडा है ।

साल्यके मतसे प्रकृतिमे तीन गुण है संस्कृतमे इनको **सत्व रजस्** और **तमस्** कहते हैं । जिस समय इनका संसारमें काम होनेलगता है तब ये तीनो अलग अलग काम करते है तमस्मे आकर्षणशक्ति है रजस्मे भोग शक्ति है तेजी और सरगर्मी भी इसीका स्वभाव है इसीलिये संसारका हर परमाणु अपने केन्द्रमे अलग भागनेकी चेष्टामे लगा रहता है, सत्वमे शान्ति और जब्त है यही वह गुण है जो इन दोनोको तौलकर इनको एक परिमाणमें रखता है ।

प्रति मनुष्यमें ये तीन गुण प्रत्युस्त हे । जब तमस्की वृद्धि होती है तब ऐसे हम सुस्त और कायर होजाते है कि कोई चेष्टा नहीं कर सकते । सुस्ती या और किसी विचारके कारण ऐसे जकड जाते है कि हिलना डोलना दुस्तर होजाता है । किसी समय हममें स्फूर्त्ति आजाती है और हम तेजीसे काम करने लगते हैं यह रजस्-गुणका प्रभाव है कभी कभी हमको आनन्द अनुभव होने लगता है और हम शान्त होजाते हैं यह वह दशा है जब सत्वगुणकी प्रधानता होती है। संसारमे तीन प्रकारके मनुष्य मिलेंगे । पहिले तो वे जो सदा सुस्त रहतेहे निद्रामें रत और शरीरसे आलस्यके कारण कुछ काम न लेनेवाले, दूसरे वे जिनको काम पसन्द है और वे तेजीके साथ अपने कर्त्तव्य पूर्तिमें लगे रहते हे । तीसरे वे हैं जो शान्त हैं, प्रसन्न हैं और धैर्यवान् हे । तीसरेमें सत्वगुण प्रधान है और उसने रजस् एवं तमस्को उचित परिमाणमें रखछोडा है । समस्त सृष्टिमें चाहै वह जड हो या चैतन्य चाहे मनुष्यहो या कोई और पर सबमें तीनो गुणोंकी सत्ता पाइएगा और इसीकारण नाना प्रकृतिके जन दिखाई देगे, जो सत्व रजस्की न्यूनाधिकताको भली प्रकार प्रकट कररहे हैं ।

कर्मयोगका सम्बन्ध प्रकृतिके इन्हीं तीन गुणोसे है, यदि हम यह जानजाये कि वे क्या है ? और हमको किसप्रकार उनसे काम लेनाचाहिये तब निश्च[illegible] हमको अपने जीवनको उत्तम बनानेमें बडी सहायता मिलेगी । [illegible]
जो गठन कुछ ऐसी वनी है कि वह एक सूत्रमें नहीं बांधी [illegible]
पृथक् पृथक् कक्षामे रखना बहुतही आवश्यक है हम सब लोग

सभ्यता क्या चीज है, "धर्म्म" किसको कहते हैं किन्तु इसके साथही हमको यह भी मालूम है कि हरदेशके निवासियोंमें सभ्यताकी समझ बूझमें भेद रहता हैं। जिस बातको तुम अपने देशमें अच्छा मानतेहो वही बात दूसरे देशवाले बुरी समझते हैं। यथा हमारे देशमें चचाकी लडकीसे विवाह करना बुरा समझाजाता है लेकिन यूरुपमें इसका खूब प्रचार है और इसको बुरा नहीं समझते एक देशमें लोग सालियोंसे विवाह करते हैं दूसरे देशमें यही कर्म्म निन्दित है। किसी देशमें केवल एकही विवाह करनेकी रीति है दूसरेमें दो २ और चार २ विवाह करलेते हैं। इसी प्रकार देशकालानुसार समाजके प्रायः सब विषयोंमें भिन्नता दिखाई देगी। तथापि हमारे चित्तोंमें यह विचार बैठगया है कि संसारमें सभ्यता एक ऐसे नियम पर निर्धारित होनी चाहिये जिसको सब मानते हो।

यही दशा धर्म्मकी भी है, अनेक जाति अनेक धर्म्मकी समझ रखती है एक देशमें जो काम पुण्य है दूसरेमे पाप है। जो काम यहा कियाजाता है दूसरे देशोंमे वही काम अच्छा नहीं समझाजाता, तथापि हमको सदा इच्छा रहती है कि धर्म्मकी स्थिति भी किसी सार्वभौमनियमपर होनी चाहिये, इसी प्रकार एक समाज किसी कामको अच्छा बताती है दूसरी इसीको निन्द्य ठहराती है। हमारे लिये केवल दोही मार्ग हैं या तो हम मूर्खोंके मार्गपर चलें जो समझते है कि सच्चामार्ग केवल एकही है और बाकी जो कुछ है वह झूठा और पापड है, या बुद्धिमानोकी सडकपर चलें जो कहते हैं कि ज्यो २ मनुष्यकी बुद्धि और मस्तिष्क विशाल होते जायगे त्यों २ इसके धर्म्म और आचारमे भी परिवर्त्तन होता जायगा। इसलिये सबसे आवश्यकीय बात यह है कि धर्म्म और आचारके लिये उसमें होनेवाले सुधारोंकी बातपर विचार करले और अच्छी तरह समझले कि जो धर्म्म या आचार जीवनके एक विषय या समयपर उचित है वही जीवनके दूसरे विषय या समयपर अनुचित या हानिकारक होता है।

दृष्टान्त द्वारा समझ लीजिये कि समस्त अध्यापकोंने यही पढाया कि "बुराईका मुकाबला न करो" Resist not evil जिसमें यह वृत्ति होगी वह आदर्श चरित्र होजायगा किन्तु यदि इस नियमका सबलोग परिपालन करनेलगे तब बडा अनर्थ हो। यदि यह नियम केवल एकही दिनके लिये वर्त्ताजाय तब भी

समाजके नष्ट होनेमें कुछ कसर बाकी न रहे । परन्तु तब भी हमारे मनमें इस शिक्षाकी सचाई खटकती रहती है कि बुराईका मुकाबला अच्छा नहीं है ; यह सभ्यताकी अन्तिम सीढी है किन्तु इसका बर्तोजाना मनुष्योंके एक बहुत बडे समूहके नाशका हेतु होगा । यही नहीं प्रत्युत लोगोंको यह विश्वास दिलाना होगा कि तुम सदासे पथभ्रष्ट रहे थे, इनकी आत्माको निर्बल करना होगा और इसीके कारण उनके विचार, शिथिल और उनका मार्ग भ्रष्ट होजायगा, और यदि इस शिक्षा द्वारा अपनेको घृणित समझने लगे तब तो समझिये स्वयमेव उन्होंने अपना नाश करलिया । जो बात किसी एक पुरुषके लिये हानिकारक है वह एक जातिके लिये नाशकारक होगी ।

सबसे पहिले हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपनेसे घृणा न करें क्योंकि सबसे अधिक उन्नति करनेके लिये यह आवश्यक है कि हम अपने ही ऊपर भरोसा रक्खे फिर ईश्वरपर । जिसको अपने ऊपर भरोसा नहीं है वह ईश्वरपर भी भरोसा नहीं रख सकता । इस लिये हमको स्मरण रखना चाहिये कि मुख्य दशामें धर्म्म और कर्म्मका प्रयोजन और उसके करनेके अभिप्रायमें अन्तर होना चाहिये, और इसलिये जिस आदमीके जीवनका यह व्रत होगया है कि वह "बुराईका मुकाबला नहीं करता" इसके लिये भी मुख्य २ अवसरोपर बुराईको जड मूलसे आवश्यक होगा ।

ऐसा घूसा तानकर लगा सक्ता है कि विपक्षीकी वहीं इतिश्री होजाय परन्तु वह अपने शत्रुओंको क्षमा करदेता है एक मनुष्य निर्बलताके कारण किसीसे शत्रुता नहीं करता इसको अपने शत्रुता करनेके नियमसे कुछ लाभ नहीं पहुचता । किन्तु यदि दूसरा मनुष्य जबर्दस्ती करता है तब वह पाप करता है । बुद्ध भगवान्‌ने अपने राजपाटको छोडदिया । यह सच्चा त्याग था किन्तु यदि कोई भिखारी विरक्त बन जाय तब क्या तुम इसको त्यागी कहोगे ? जब कभी हम प्रेम या शान्तिके विषय पर विचार करनेलगे तब आवश्यक है कि हम पहिले यह सोचलें कि हममें शत्रुता करनेकी या भडकनेकी शक्ति भी है या नहीं यदि है और होनेपर भी हम शान्ति-प्रिय है तब वास्तवमें हम प्रेम और शान्तिके सच्चे अभिलाषी हैं । किन्तु यदि हममे शक्ति नहीं है और हम वृथा ही यह सोचते रहते है कि हम प्रेमके कारण किसीसे विरोध नहीं करते तब समझलो कि हम अपने आपको बहुत बडा धोखा देरहे है। कर्म्मयोगी इस बातको भलीप्रकार जानता है कि बुराईका विरोध न करना सभ्यताकी ऊची सीढी है और जिसमे यह शक्ति वर्त्तमान है वह बडा शक्तिशाली है और आत्मिक उन्नतिमे वह आगे बढगया है परन्तु जबतक इस कक्षातक पहुच न हो हर मनुष्यका कर्त्तव्य है कि वह बुराईके विरुद्ध लडता रहै, रातदिन उसीकी उधेड बुनमें लगा रहै, बुराईके साथ सदा हाथापाई और गुत्थमगुत्था होती रहे और जिस समय इसमे इतना बल आजायगा कि वह बुराईको कुचलसके उस समय इसका मुकाबला न करना उसका अनुपम गुण प्रकट करैगा ।

मुझको एक समय एक ऐसे निरक्षर भट्टसे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ जो न कुछ जानता था और न जाननेकी उसको इच्छाही थी प्रकटमें इसका जीवन विक्षिप्तोंकासा था उसने मुझसे पूछा "कि ईश्वर कैसे मिल सकेगा और मुक्तिका साधन क्याहै" मैंने उससे पूछा "तुम झूंठ बोल सकते हो ?" उसने उत्तर दिया "नहीं ।" तब मैंने कहा "अच्छा तो अब तुम झूठ बोलना सीखो, क्योंकि लकडीके कुन्देकी तरह पडे रहने और पशुओकासा जीवन व्यतीत करनेसे झूठ बोलना हजारों गुना अच्छा है, तुम सुस्त हो, तुमको आत्मिक बल प्राप्त नहीं है । जिसको निष्काम कर्म्म कहते हैं उसको तो तुमको समझ भी नहीं है । तुम इतने मूर्ख हो

कि बुराई भी नहीं करसक्ते ।" यह एक अन्तिम दशा थी और मैं हास्यभावसे कहरहा था मेरा यह अभिप्राय था कि शांति तक पहुंचनेके लिये मनुष्यको खूब तेज काम करना पडेगा ।

हरप्रकारके आलस्यसे मनुष्यको वचना चाहिये । हर काममें लगारहना ही स्पष्ट बताता है कि आलस्य छोडदो सब बुराइयोंसे चाहे वे शारीरक हो या आत्मिक विरोध करो और जब तुम इस चेष्टामे सफल मनोरथ होजाओगे तब शांति स्वयमेव प्राप्त होजायगी । यह कहना कि किसी प्रकारकी बुराईसे विरोध न करो बहुत आसान है परन्तु इसको कार्य्यमें परिणत करना तलवारकी धारपर चलना है । माना कि सम्भव है कि हम दिखलावेके लिये प्रकटमें मुह फेरले परन्तु वास्तविक दशा क्या है मन क्या कहता है, मनमें बार २ यही विचार उत्पन्न होता है कि बुराईको कुचल देनाही अच्छा है । यदि तुमको सम्पत्तिकी आवश्यकता है और साथही तुम यहभी समझते हो कि संसारकी दृष्टिमें धनलोभी मनुष्य बुरे हुआ करते हैं तब स्मरण रखो तुम कदापि धनोपार्जन करनेके लिये हाथ पैर न मार सकोगे परन्तु मन, भीतरही भीतर कुढता रहैगा कि यदि धन पास होता तो समय बडे आनन्द में व्यतीत होता । यह सबसे बडी बुराई और अपने साथ कपट है । सांसारिक कामोंमे डुबकी लगाओ जब इसके भोग विलास भोगचुकोगे और इसकी विपत्तिया भी सह लोगे तब स्वयमेव "त्याग" आजायँगा । इस समय तुम अवश्य शांत बनोगे इस समय अपनी इच्छानुसार बल विद्या या अधिकार जो चाहो प्राप्त करो जब इच्छा भर जायगी तब ऐसा समय स्वयं आजायगा जब तुमको ये सब मिथ्या दीखने लगेगा, यावत् वासना दूर न होगी तुम्हारे लिये शांत धीर एवं त्यागी होना अतीव दुस्तर है हजारों वर्षसे शांति और त्यागका उपदेश संसारको सुनाया जारहा है लोग बालकपनहीसे त्याग और शान्तिके महत्वके लेक्चर सुनते हैं किन्तु लाखोंमें कदाचित् एकही मनुष्य निकलेगा जो शान्तिका जीवन व्यतीत करता हो, मैंने अपने जीवनमें वीस आदमी भी नहीं देखेहैं जो शान्त हो और बुराईके विरुद्ध युद्ध न करते हों माना कि मैं आधे संसारसे अ[illegible] भ्रमण कर चुका हूं ।

हर मनुष्यको अपने किसी उद्देश्यको सन्मुख रखकर उसकी चेष्टामें लगा रहना चाहिये, यह उन्नतिका निष्कण्टक मार्ग है, दूसरोंके उद्देश्यको अपने सन्मुख रखनेसे उन्नति नहीं होसक्ती, मानलो कि हम किसी अल्प-वयस्क बालकसे यह आशा करें कि वह २० कोस पैदल चलाजाय तब कैसी मूर्खता होगी. या तो बच्चा मरजायगा और या सहस्रों बालकोंमेंसे एक बालक रींगता हुआ यात्रा पूरी करेगा और वह भी अर्धमृत होजायगा । ससारमें लोग वृथा इस तरहकी कार्य्यवाही करतेहैं हर समाजके स्त्री पुरुष एकही प्रकृतिके नहीं होते न उनमें एकसी शक्ति होती है इसलिये उनके उद्देश्य भी भिन्न २ होंगे और इस लिये हमें उनके बुरा भला कहनेका कब अधिकार है । जिसको वे भला समझतेहैं करें । तुम्हारे विचारसे मेरी जांच करना ठीक नहीं इसी प्रकार मेरे विचारसे तुम्हारी जाच करना भूल है । सेबके वृक्षको वर्गदके वृक्षसे क्या सम्बन्ध सेबका वर्गदसे कुछ सम्बन्धही नहीं सेबके वृक्षको नापनेके लिये सेबके वृक्षका पैमाना होना चाहिये और इसी प्रकार बर्गदके वृक्षके लिये वर्गदका पैमाना होना आवश्यक है । बस यही दशा हम सबकी भी है ।

सृष्टिमें अन्तर भी है और समानता भी । चाहें स्त्री पुरुष कितनेही भिन्न प्रकृतिवाले हो कितनेही रूप रगवाले क्यों न हों; तथापि उनमे एक प्रकारकी समानता है । स्त्री पुरुषोंके चालचलन और उनके कामोंमें भेद दृष्टिगत होगा इसीलिये हर मनुष्यका एकही पैमाना न करना चाहिये जो जैसा है उसकी नाप, वैसीही होनी चाहिये "टके सेर भाजी टके सेर खाजा" अन्धेर खातेकी बात है । ऐसा होनेपर यह परिणाम होगा कि हर मनुष्य अपनेसे घृणा करने लगेगा और उसके धार्मिक कामोंमें अनेक विघ्न उपस्थित होजायगे । हमारा यह धर्म्म होना चाहिये कि हम हरमनुष्यको उसके आइडियल (Ideal) के अनुसार शिक्षा देतेरहे और जहातक सम्भव हो उसीके विचार और रग-ढगके अनुसार उसको सत्पथपर पहुचानेकी चेष्टा करें ।

हिन्दुसाहित्य, बहुत प्राचीन समयसे इस बातसे परिचित है । उनके श्रुति स्मृति तथा अन्य धर्म्म एवं नीतिशास्त्रोंमें विविध समाजोमे रहनेवाले मनुष्योंके

लिये भिन्न २ नियम बताए गए हैं । हमारे यहां गृहस्थोंके धर्म सन्यासियों- ...से नितान्त भिन्न हैं, इसी प्रकार ब्रह्मचारीके नियम वानप्रस्थके नियमोंसे बिलकुल नहीं मिलते ।

हिन्दुओंकी पवित्र पुस्तकोंके अनुसार हर आश्रमके जीवनके कर्म एक दूसरेसे ... पृथक् समझे गये हैं, हिन्दू अपना जीवन ब्रह्मचर्य आश्रमसे प्रारम्भ करता ... और इसकी समाप्ति पर विवाह करके गृहस्थाश्रममें प्रवेश करता है फिर ...चास वर्षकी आयु होजाने पर एकान्तवास कर आत्मविचार करता है और जीवनके अन्तिमभागमें "सन्यासी" होकर संसारको त्याग देता है । जीवनके इन चारों आश्रमोंके धर्म्म भिन्न भिन्न हैं किसी एकका जीवन किसी दूसरेसे बड़ा नहीं है गृहस्थाश्रम उतनाही आवश्यक है जितना ब्रह्मचर्य्य किन्तु दोनों अपने २ धर्म्मको पूर्ण रीतिसे पालते हो तब । सिंहासन पर सुशोभित राजा भी उतना ही तेजस्वी है जितना गलियोंमें घूमनेवाला भिखारी । जरा इनको सिंहासनच्युत करके भिखारीका काम देदीजिये और देखिये वह किस प्रकार ...रता है । इसीप्रकार भिक्षुकको राज्यासन पर बिठा दीजिये और फिर देखिये ... इसका ढंग क्या है यह कहना कि गृहस्थीसे सन्यासी अतिशय उत्तम ...च है बिलकुल वृथा और निरर्थक बात है । घरमें रहकर ईश्वरोपासना करना ...गलके सुखपूर्ण जीवनसे महादुस्तर है आजकल हिन्दोस्थानमें केवल दो आश्रम अर्थात् गृहस्थी और सन्यासी रहगए हैं । गृहस्थी विवाह करके अपना घरका काम काज करताहै और सन्यासी अपना जीवन धर्म्मसम्बन्धी पुस्तकावलोकन व्याख्यान, और उपदेशमें व्यतीत करदेता है । अब विचारिये किसका जीवन कठिन है । मैं आपके मनोरंजनकेलिये "महा निर्वाण तंत्र"के कुछ श्लोकोंका अर्थ सुनाता हूं जिससे ज्ञात होगा कि गृहस्थी बनना कितना कठिन काम है । "गृहस्थी ईश्वरभक्त हो और वह ईश्वरीय ज्ञानको अपने जीवनका उद्देश समझे तथापि वह अपने कर्त्तव्योंको भी पालन करता रहे, वह जो काम करे ...रके लिये करै" ।

"इस संसारमें किसी कामको करके उसके फलकी आकांक्षा न करना महान् कठिन है किसीको सहायता देना और साथही इस बातकी कभी अभिलाषा

करना कि वह हमको धन्यवाद दे सुगम नहीं है। काम करना परन्तु प्रसिद्धि या धनके लोभको मनमें न आनेदेना सब किसीका काम नहीं होसक्ता। कायरसे कायर मनुष्यको नाम और दामके लिये जोश आजाताहै। जब समाज किसी मूर्खसे मूर्ख मनुष्यकी प्रसंशा करने लगता है तब वह भी बडे बडे काम करनेको प्रस्तुत होजाता है। किन्तु वह मनुष्य जो निष्काम होकर शुभ काम करता है और किसीकी प्रसन्नता या अप्रसन्नताकी चिन्ता नहीं करता वास्तवमें निवृत्तिका अच्छा उदाहरण है। गृहस्थीका धर्म्म धनोपार्जन करना है, किन्तु इसको विश्वास रखना चाहिये कि इसको झूठ या पापसे कुछ प्राप्त नहीं होगा न इसको लूट मारसे लाभ होगा। उसको स्मरण रखना चाहिये कि उसका जीवन ईश्वर भक्तिके लिये है और इसका धर्म्म है कि दीनोकी सहायता करता रहै।'

"माता पिता ही देवता है, यह समझकर उनको प्रसन्न रखनेके लिये मनुष्यको सदा दत्तचित्त रहना चाहिये, यदि माता पिता प्रसन्न है तब ईश्वर भी प्रसन्न होगा वह वास्तवमें सुपुत्र है जो अपने माता पितासे कटु वचन नहीं बोलता। माता पिताके समक्ष हसी ढिल्लगी करना निषिद्ध है। न किसी बातके लिये हठ क्रोध या जल्दी करना ही उचित है। पुत्रको उचित है कि माता पिताके सामने बहुत सभ्यतासे रहै और जबतक वे बैठ न जाय तबतक खडा रहै।'

यदि कोई गृहस्थ बिना अपने माता पिता पुत्र, स्त्री, भाई और अतिथिको दिये हुए भोजन करता है या वस्त्र पहिनता है तब पाप करता है। माता पिता ही इसके जन्मदाता हैं इसी लिये इसको माता पिताके प्रसन्न करनेके लिये यदि हजार विपत्तियोंको भी झेलना पडे तब प्रसन्नतासे सहन करना चाहिये।

इसी प्रकार इसकी स्त्रीके और इसके कर्त्तव्य है, इसकी भी हर प्रकार शुश्रूषा करनी चाहिये और चाहे वह कितने ही विपत्ति सागरमे मग्न हो उसके ऊपर क्रोध न करना चाहिये, इसकी भी माताके समान शुश्रूषा करे और अन्य स्त्रियोंको भी मातृसदृश समझे यदि इसके मनमे भी पाप विचार उत्पन्न होता है तब भी वह नरकगामी होगा। एकान्तमे भी किसी स्त्रीका स्पर्श न करे, अपनी स्त्रीके अतिरिक्त और किसीके वस्त्र न छुए।

"स्त्रियोंके सन्मुख वह कभी अनुचित वार्त्तालाप न करे और न अपने बलकी प्रशंसा करे और यह भी न कहे कि 'मैंने यह किया मैंने वह किया'"

गृहस्थको उचित है कि अपनी स्त्रीको धन, आभूषण और प्रेम द्वारा सदा प्रसन्न रक्खे और कभी ऐसा कर्म्म न करे जिससे इसके चित्तको दुःख पहुंचे जिस पुरुषने अपनी पतिव्रता स्त्रीका प्रेम प्राप्त करलिया मानो उसने धर्म्म-कर्म्ममें सफलता प्राप्त करली।

बालकोंके साथ इसका वर्त्ताव इस प्रकार हो.—

"जबतक लडकेकी अवस्था ४ वर्षकी न होजाय उसका लालन पालन ध्यान-पूर्वक करना चाहिये, तदनन्तर जब वह विद्योपार्जन कर चुके और उसकी अवस्था २० वर्षकी होजाय तब "पुत्र मित्रवदाचरेत्" उसको पुत्र न समझ कर मित्रके समान व्यवहार करे क्योंकि अब वह भी गृहस्थ होगया, इसी प्रकार पुत्रियोंका लालन पालन करे और उनको उचित शिक्षा देकर उनका विवाह करदे और विवाहमे उनको भी आभूषण और धन दे।"

इसकेबाद उसका धर्म्म है कि अपने भाई और बहिनो तथा उनकी संतानोंकी रक्षा करे, अपने कुटुम्बी और नौकरो और मित्रोंका धनसे मान करै इसका यह भी कर्त्तव्य है कि ग्रामनिवासी, निर्धन और दीन मनुष्योंका रक्षा करे यदि गृहस्थी धनवान् है और वह अपने कुटुम्बी एवं दीनोंकी सहायता नहीं करता तब वह मनुष्य नहीं किन्तु पशु है।

खाने, पीने, वस्त्र पहिनने, शरीरको सजाने, माग काढने या बाल सवारनेके कामोंमें आवश्यकतासे अधिक ध्यान न देना चाहिये गृहस्थ मनुष्यको शरीर और मन दोनोको शुद्ध रखना चाहिये और सर्व्व काल कर्म्मोंमें लगा रहना चाहिये।

वह शत्रुओंको वीरतासे पराजित नहीं करता तब वह अपना धर्म्म पालन नहीं करता। परन्तु मित्र और कुटुम्बियोंके सामने इसको मेमने (बकरीके बच्चे) की समान नम्रतासे पेश आना चाहिये।

" गृहस्थको चाहिये कि वह बुरे आदमीकी प्रतिष्ठा न करे क्योंकि यदि वह बुरे आदमीकी प्रतिष्ठा करता है तब वह उसकी बुराईमें सम्मिलित होताहै और यदि वह योग्य पुरुषोंकी प्रतिष्ठा नहीं करता तब इसकी बडी भूल है। मित्रता खूब सोच विचारकर करनी चाहिये यह नहीं कि हर जगह मित्र ही करता फिरै, जिससे इसकी मित्रता हो उसके साथ इसको एक सरक्षकी भांति रहना चाहिये इसको विचार रखना चाहिये कि इसके मित्र कैसे मनुष्योंसे मिलते हैं इन सब बातोंको विचार कर उसको मित्रता करनी चाहिये।"

"तीनबातोंपर गृहस्थको कभी न बोलना चाहिये। एक अपनी प्रसिद्धि दूसरे अधिकार और तीसरी धनकी बडाई। जो बात भेदकी हो उसको भी कभी प्रकट न करै।"

यदि इसने भूलकी है और यदि वह ऐसा काम कर रहा है जिसमें सफलताकी आशा नहीं है तब चाहिये कि इसका वृत्तान्त सर्वसाधारणमें न कहे और न पब्लिकमें कभी इसका जिक्र आने दे "संसारको किसीकी भूल दिखानेसे क्या लाभ है? जो होगया, सो होगया जो कुछ इसने किया है उसके लिये दण्ड पायेगा गृहस्थीकी दशामें, मनुष्यको अपने लिये भलाई करना चाहिये। संसार उनके साथ सहानुभूति रखता है जो शक्तिशाली और योग्य होते हैं।"

"यह कभी न कहना चाहिये कि "मैं गरीब हूं" या "धनवान् हूं" सम्पत्ति या विपत्तिका वृत्तान्त घृणित होता है, वह अपनी बातें आपही तक रखे, बस यही उसका धर्म्म कर्म्म है" यह संसार सब ज्ञानकाही नहीं है प्रत्युत कर्म्मका भी संसार है और जो मनुष्य कर्म्म नहीं करता वह अज्ञानी और पापी है।

"गृहस्थी" समाजका आभूषण है, उसीकी कमाईसे सबका काम चलता है। दीन स्त्री पुत्र भाई आदि सब उसीके आधीन हैं ये स्वयं कुछ नहीं कर सकते। इसलिये इसके आधीन कई प्रकारके कर्त्तव्य हैं जिनका पालन करना उसके लिये आवश्यकीय है, अपने उद्देशको अपने सम्मुख रखना चाहिये, और इसीलिये

कितना आवश्यकीय है कि यदि उससे कोई भूल होगई है तब उसको सर्व-साधारणमें प्रकट न करे। और न अपनी असफलतापर दुःखी हो। इस प्रकारकी निर्वलता अनावश्यक ही नहीं है प्रत्युत उसको अपने कर्त्तव्यसे सुस्त करनेवाली है। इसको दो पदार्थ प्राप्त करनेके लिये उद्यत रहना चाहिये प्रथम ज्ञान दूसरे सम्पत्ति। यह इसका धर्म्म है। और यदि वह धर्म्मका पालन नहीं करता तब उसकी कुछ प्रतिष्टा न होगी। जो गृहस्थ सम्पत्तिके लिये उद्योग नहीं करता, वह ससारमें असभ्य है। यदि सुस्त है और सुस्तीसे अपना जीवन काटता है तब पापी है। क्योंकि इसकी कमाईमें सैकडोंका भाग है, यदि वह धनोपार्जन करता है तो सैकडोंको लाभ पहुंचता है। यदि इस नगरके मनुष्य सैकडोंकी सख्यामें धनवान् नहीं होते या धनवान् होनेकी चेष्टा नहीं करते, तब यह सभ्यता कहांसे आती? और अनाथालय आदि कैसे बनते?

इस दशामे, धन कमाना बुरा नहीं है, क्योकि सम्पत्ति दानके लिये है। गृहस्थी, जीवन और समाजका केन्द्र है धन कमाना और अच्छे कर्म्ममे खर्च करना इसके लिये एक प्रकारकी उपासनाहै, क्योंकि जो गृहस्थ उचित रीतिसे शुभ काम करनेके लिये धन कमाता है वह एक प्रकारसे मोक्षके लिये चेष्टा कर रहा है। उसमे और गुफामे वैठनेवाले योगीमे कुछ भी अन्तर नहीं है। दोनो हीमे त्याग और ईश्वरभक्ति है। केवल कर्म्म करनेका विधान भिन्न २ है।

"गृहस्थको हर प्रकारकी प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिये। हां! जुआ खेलने, झूठ बोलने और दूसरोंको कष्ट पहुचानेसे सदा बचा रहना चाहिये।"

प्राय. मनुष्य ऐसा काम करते हैं जिसके पूर्ण करनेमे वे असमर्थ हैं। परिणाम यह होता है कि वे, धोखे और कपटसे कामलेने लगते हैं यह बडी भारी भूल है। साथही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि जिस परिणामको हम अपूर्ण समझते है वही वास्तवमे अन्तको पूर्ण निकलता है।

"गृहस्थको सच बोलना चाहिये। नम्रतासे सब काम करने चाहिये, सत्य भी प्रियहो जिसको सुनकर मनुष्योंका चित्त प्रसन्न हो और जिसके द्वारा मनुष्योंका भला हो। अपनी प्रसशा और दूसरोंके छिद्र वर्णन करना महापाप है"

१ अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्। २ New York

"गृहस्थको चाहिये कि वह पानीके लिये तालाब खुदवाये, सडकोंके किनारे वृक्ष लगवाये। अनाथालय बनवाये और क्या मनुष्य क्या पशु, सबकी भलाईके लिये प्रयत्न करे। नदियोपर पुल बनवा दे। यदि गृहस्थी इसप्रकार कर्म्म करता है तब वह पूर्ण योगी है"।

" तेजीके साथ काम करना "कर्म्मयोग" का सबसे बडा साधन है, यह भी लिखा है कि सच्चा देशहितैषी एव स्वजाति सेवी गृहस्थ भी उसी पदको प्राप्त होता है जिसको योगीजन चाहते हें" इससे प्रकट है कि एकका धर्म्म दूसरेके धर्म्मसे भिन्नहै। यह कभी न कहना चाहिये कि एकका धर्म्म अच्छा और दूसरेका बुरा है। अपनी २ जगह पर सब बडे और महत्वपूर्ण है। हमको अपनी दशाके अनुसार अपने कर्तव्यो और धर्म्मोंका पालन करना चाहिये।

इन सब बातो पर विचारनेसे एक भाव उत्पन्न होता है वह यह है कि सब प्रकारकी दुर्बलता पाप है, यह एक मुख्य शिक्षा है जो हमको धर्म्म और कर्म्म-की (Philosophy) फिलोसोफीसे मिलती है। यदि तुम वेदोका अवलोकन करो तब तुमको ज्ञात होगा कि वेदोने निर्भय रहनेका सदैव उपदेश किया है। "भय" हमारे मनकी सबसे बडी निर्बलता है। मनुष्यको चाहिये कि निर्भय होकर मानापमानके विचारको छोडकर अपने काममे लगा रहे।

जो मनुष्य ससारको त्यागकर ईश्वरकी उपासना करता है उसको यह कभी न विचारना चाहिये कि जो पुरुष ससारमे रहकर ससारका उपकार कर रहे है वह ईश्वरकी उपासना नहीं करते और न गृहस्थियोको यह समझना चाहिये कि जो विरक्त होगये है वह केवल पेटपालू और दुराचारी ही है। हर मनुष्य अपनी २ जगहमे बडा है। मै इसको एक कथानक द्वारा समझाता हूँ —

"एक राजा था जब कोई संन्यासी इसके पास आता तब वह पूछता कि गृहस्थ अच्छे हैं या विरक्त ? बहुतसे बुद्धिमानोने इस प्रश्नको हल करना चाहा, कुछने कहा "सन्यासी उत्तम है" उनसे वह राजा कहता कि ' इसको युक्ति-द्वारा सिद्ध करो" यदि वे इसको युक्तिद्वारा सिद्ध न कर सकते तब वह उनको गृहस्थाश्रममे भरती होनेके लिये विवश करता, कुछ कहा करते कि गृहस्थी

अच्छे हैं" इनसे भी राजा प्रमाण मांगता और प्रमाण न मिलनेपर इनको भी गृहस्थी बना देता था ।

एक नवयुवक सन्यासीने इस वृत्तातको सुना और वह राजाके पास आया, राजाने इससे भी वही प्रश्न किया, इसने उत्तर दिया "राजन्! अपनी अपनी जगह पर सब अच्छे हैं" राजाने कहा इसको सिद्ध करो, सन्यासीने कहा बहुत अच्छा, मैं इसको सिद्ध करूंगा, परन्तु कुछ दिनोंके लिये आपका मेरे साथ रहना आवश्यक है, राजाने स्वीकार करलिया और सन्यासीके साथ अपनी राजधानीसे चलदिया। ये दोनो एक और राजाके राज्यमे पहुंचे वहांका राजा अपनी कन्याका स्वयवर कररहा था, उस दिन उस राजाकी राजधानीमे बडी शोभा थी, जहॉ तहॉ बाजे बजरहे थे, हर मनुष्य प्रसन्नवदन था, दूर २ के राजकुमार आएहुए थे. चहुओर आनद ही आनद दिखाई देता था ।

पहिले हिन्दोस्थानमें यह रीति थी कि राजकुमारिया अपनी इच्छानुसार पति चुन लेती थीं. किसीको स्वरूपवान्, किसीको विद्वान्, किसीको बलवान्, और किसीको धनवान् पतिके प्राप्त करनेकी अभिलाषा हुआ करती थी। राजकुमारी हाथमे जयमाल लिये हुए समाजमे आती थी जहा सब देशदेशान्तरोंके राजकुमार एकत्र होते थे, अपनी इच्छानुसार जिसको वह जयमाल पहिना देती थी वही उसका पति होजाया करता था । इसबार भी राजकुमारी इसी प्रकार घूमरही थी । राजकन्या बडी स्वरूपवती थी. वह सब ओर घूमआई किन्तु उसको कोई पसन्द नहीं आया स्वरूपवती होनेके अतिरिक्त इस स्वयम्बरमे एक यह मुख्य बात थी कि जिसको राजकन्या पति बनाये उसको वहाका आधा राज्य तत्काल मिलजायगा और शेष आधा राज्य राजाके मरनेपर मिलेगा। उसने कईवार चक्कर लगाए परन्तु उसकी दृष्टिमें कोई नहीं समाया । दैवयोगसे इसकी दृष्टि एक सन्यासी पर पडी वह इसके सुन्दर स्वरूपको देखकर मुग्ध होगई और इसके गलेमे जयमाल डालदी, सन्यासीने घबडाकर कहा "यह क्या अनुचित बात है. मै सन्यासी हूँ, मेरा विवाह नहीं होसकता" यह कह उसने माला गलेसे निकालकर फेंकदी । राजाने समझा यह [illegible] है और गृहस्थके बखेडेसे घबडाता होगा इस लिये उसको सम्बो

"इस कन्याके साथ तुमको आधा राज्यभी मिलेगा" राजकुमारीने फिर दोबारा उसको जयमाला पहिनादी, उसने फिर उतारकर कहा "मे विवाह करना नहीं चाहता" और वहासे भाग निकला।

राजकुमारी सन्यासीपर इतनी आसक्त होगई थी कि "उसने प्रतिज्ञाके साथ कहा या तो मैं इसके साथ विवाह करूगी अन्यथा प्राणात्याग दूगी" और वह भी इसके पीछे भाग निकली। राजा और सन्यासी भी जो इस दृश्यको देख रहे थे इनके पीछे चले, वह सन्यासी कई मील तक भागा हुआ चला-गया और अन्तमें एक जगलमें पहुचकर अन्तर्धान होगया और राजकुमारीको नहीं दीखसका, यह एक वृक्षके नीचे बैठकर बुरी तरह रोनेलगी, राजा और इसका साथी सन्यासी दोनों इसके निकट आये, इसको आश्वासन करनेलगे "बेटी! अब रोना बेकार है वह मनुष्य अब हाथ न आयेगा, इस समय संध्याकाल होगया है अन्धेरी भी होचली है प्रातःकाल हम तुमको नगरमें पहुंचादेंगे रात्रिभर इसी वृक्षके नीचे आराम करो"

इस वृक्षके ऊपर एक पक्षीका जोडा अपने तीन छोटे २ बच्चों सहित रहा-करता था। इसने इन आदमियोको देखा। नरने मादासे कहा 'प्रिये' अब क्या करना चाहिये, शरदऋतु है ये हमारे अतिथि हैं इनके लिये आग लाना चाहिये" इतना कह कर नर उडगया और अपनी चोचसे लकडिया इकट्ठी कर कहींसे अग्निकी एक चिंगारी लाकर उसमे रखदी, आग जलने लगी, और इन तीनो प्राणियोंको सर्दीके दुःखसे छुट्टी मिली। पक्षीने फिर स्त्रीसे कहा "प्रिये अब क्या करना चाहिये? अतिथि आए हुऐ हैं और भूखे है, हम गृहस्थी हे, हमको धर्मकी रक्षा करनी चाहिये इसलिये मैं अग्निमे कूदता हू जिससे कि ये मेरे घर आकर भूखे न रहें" इतना कहकर वह अग्निमे कूदपडा, राजा और सन्यासीने इसको बचाना चाहा परन्तु वह बडा चतुर था, इसप्रकार अग्निमें गिरा कि गिरते ही स्वाहा होगया।

उसकी स्त्रीने अपने पतिकी सब दशा देखी इसने अपने मनमें कहा "ये तीन आदमी हैं एक पक्षीके कबाबसे इनका क्या भला होगा मैं इस वरकी

गृहिणी हू मैभी क्यो न अपने पतिका अनुकरण करू जिससे कि, ये मेरे मासको खाकर क्षुधा निवारण करले ” यह सोचकर वह भी अग्निमे गिरकर भस्मसात् हो गई ।

तीनों बच्चोने अपने माता पिताकी बलि देखी तब वे भी आपसमे कहने लगे “ मा बापने तो धर्म्मका पालन किया, अब हम इस घरके स्वामी हैं हमारा धर्म्म है कि हम अतिथि सेवा करै भोजन अभी तक कम है चलो, हम भी चलकर गिरपडें जिससे कि इनकी क्षुधा निवृत्ति होजाय ” यह कह वे भी आगमे गिरकर भस्म होगये ।

उन तीनों मनुष्योंने इनका मास नहीं खाया किन्तु उन पक्षियोंके कर्म्मको देखकर उन्हे बडा कौतूहल हुआ, ज्यू त्यू करके रात काटी प्रातःकाल होनेपर राजकुमारीको उसके नगरमे पहुचादिया तदनन्तर सन्यासीने राजासे कहा महाराज ! आपने देखा हर मनुष्य अपनी २ जगह पर महत्व रखता है यदि आप गृहस्थी बनकर इन पक्षियोंके समान रहसक्ते हो और दूसरोंके लिये अपने को बलि देसकते हो तो इससे उत्तम और क्या बात है । यदि आप ससार छोडना चाहतेहैं तब इस नवयुवक सन्यासीकी विरक्ततासे शिक्षा ग्रहण कीजिये जिसने एक सुन्दरी राजकन्या और विशाल राज्यपर लात मारदी यदि गृहस्थी बनना है तब अपना जीवन दूसरोंके उपकारके लिये देडालिये भला होगा । और यदि विरक्त बनना अभीष्ट है तब रूप, रग, धन, सम्पत्ति, बल और शक्ति पर दृग्पात न कीजिये, अन्तर्मुखीन होकर अपने पर ही दृष्टि डालिये, उसीका विचार कीजिये सब ओर वासना खींचकर मनको आत्माकी अग्निमे स्वाहा करदीजिये राजन् ! दोनों अपनी २ जगह पर बडे हैं परन्तु एकका कर्त्तव्य दूसरेके कर्त्तव्यसे नहीं मिलता । हा ! परिणाम दोनोंका एक है किन्तु साधनोंमे भिन्नता है इसी लिये कहता हू कि हर मनुष्य अपनी २ जगह पर [illegible]

इति द्वितीय परिच्छेद समाप्त ।

तृतीय परिच्छेद ।

निष्काम उदारता कर्म्म पूर्त्ति करनेका गुप्त रहस्य है ।

दूसरोंको शारीरिक सहायता देना उनकी शारीरिक आवश्यकताओंका पूर्ण करते रहना बहुत बडी बात है किन्तु वह सहायता जो आवश्यकताके अनुसार दी जाती है अधिक महत्व रखती है और जितना इसका फल अपने प्रभावानुसार अति दूर २ स्थानोंमे पहुंचनेवाला होगा उसका महत्व उतनाही बढता जायगा । यदि किसी मनुष्यकी आवश्यकता एक घण्टेके लिये दूर करदी जाय तब यह अवश्य साहाय्य कहलायेगा किन्तु यदि इसकी आवश्यकता एक वर्षके लिये दूर करदीगई तब इससे यह हजारों गुना अच्छा है और एक घण्टेकी सहायताकी अपेक्षा उसको बहुत अधिक सहायता दीगई परन्तु यदि इसकी आवश्यकता सदाके लिये दूर करदी गई तब इसका क्या कहना है । यह सबसे प्रबल, सबसे बडी और सबसे अधिक लाभदायक सहायता है, आत्मिक ज्ञानही एक ऐसा पदार्थ है कि जिससे सदाके लिये हमारी समस्त विपत्तियोंकी इतिश्री होजाती है अन्य प्रकारके ज्ञानोसे केवल कुछ समयके लिये सहायता मिलती है और यदि इसको प्रकृति ही बदल दीजाय तब इसकी सब आवश्यकतायें सदाके लिये लुप्त होजायँगी केवल आत्मज्ञानही एक ऐसी चीज है जिससे मनुष्यके समस्त दुःखोकी अन्त्येष्टि होजाती है. इसलिये आत्मिक सहायता सब सहायताओंसे महत्वपूर्ण और अमूल्य सहायता है । जो मनुष्य इस प्रकारकी सहायता देसक्ता है वह मनुष्य सच्चा शुभचिन्तक और सरक्षक है और इसलिये हम देखते हैं कि वे महानुभाव जिन्होने मनुष्योको आत्मोपदेश किया है बहुत बडे शक्तिशाली हुए हैं और उनकी सहायता बहुत लाभदायक प्रतीत हुई है । आत्मज्ञान ही हमारी समस्त चेष्टाओका फल होना चाहिये, यदि कोई आत्मज्ञानी किसी सासारिक विषयके लिये भी इच्छा करै तब वह बहुत शीघ्र प्राप्त करसकता है और यदि मनुष्यमे आत्मभाव उत्पन्न नहीं हुआ है तब इसकी शारीरक और सासारिक किसी आवश्यकताके भी दूर होनेका विश्वास नहीं है आत्मिक सहायताके बाद बुद्धि और मस्तिष्क सम्बन्धी ज्ञानकी सहायताका नम्बर है इस प्रकारकी

...यता भोजन या वस्त्र देनेसे कहीं अधिक बडी है प्रत्युत किसी मनुष्यको विद्यादान देनेसे भी इस प्रकारकी सहायता बडी है क्योकि मनुष्य जीवनका ...उद्देश्यही ज्ञान प्राप्ति है अज्ञान मृत्यु है, ज्ञान जीवन है । यदि मनुष्य ...ज्ञानमे है और वह अन्धकारमे टक्कर मारता फिरता है तब इसका जीवन ...था है इसके पश्चात् फिर शारीरिक सहायताका नम्बर आता है इसलिये हमको दूसरोकी सहायता करते समय इस भूलमे न पडना चाहिये कि शारीरिक सहायता ही सब कुछ है शारीरिक सहायता अन्तिम सहायता है। क्योकि इससे सदाके लिये शाति प्राप्त नहीं होती । भूखका दुःख भोजन करलेनेसे दूर होजाता है किन्तु फिर भूखकी यत्रणा वापिस आजातीहै हमको केवल उस समय शान्ति मिल सकती है कि जब सदाके लिये हमारी आवश्यकताये दूर होजाय फिर हमको भूख प्यास दुःख दारिद्र कोई भी दुःखी न कर सकेगा । जिस सहायतासे मनुष्यमे आत्मिक भाव उत्पन्न होजाय और वह आत्मिक बलको प्राप्त होकर बलवान् बनजाय वही सबसे अधिक लाभदायक और अमूल्य है इसके बाद ज्ञान और तत्सम्बन्धी सहायताका नम्बर है और तदनतर शारीरिक सहायता है ।

केवल शारीरिक सहायता देनेसे ससारकी विपत्ति और दुःख कम नहीं होसकते । यावत् मनुष्यके गुण और स्वभावमें परिवर्त्तन न हो, तबतक शारीरिक दुःख अवश्य सताते रहेगे और वह दुःखोसे दुःखी होता रहेगा, कितनीही अधिक इमको शारीरिक सहायता दीजाय परन्तु समस्त क्लेशोंका दूर होना असम्भव है । समस्त दुःख तब दूर होंगे जब मनुष्य शुद्ध बन जायगा अज्ञानही समस्त दुःख और बुराइयोकी जड है मनुष्यको प्रकाश दो, उससे कहो कि वह अपनेमे आत्मिक बल उत्पन्न करे । यदि यह बात प्राप्त होजाय, सब शुद्ध और पवित्र बन जाय, यदि उनको उत्तम शिक्षा मिलजाय तब समस्त विपत्ति योकी समाप्ति हो जायगी । सम्भव है हम समस्त देशको अनाथालयोंसे भरदें, हर जगह चिकित्सालय बनवादें परन्तु जबतक सबका चाल चलन ... तबतक कुछ न होसकेगा ।

गीता वार २ उपदेश करती है कि कर्म्म करो परन्तु कर्म्म-फलकी आकांक्षा न करो और न कर्म्ममें ही लिप्त हो। कोई कर्म्म ऐसा नहीं जिसमें बिलकुल भलाई या बुराई न हो, जो कर्म्म किया जायगा उसमें अवश्य भलाई और बुराई मिली होंगी यावत् हम निष्काम कर्म न करेंगे तावत् भलाई और बुराई दोनोंका हम पर प्रभाव पडेगा मनुष्यकी कामना एक तालावके समान है जिसमे लहरें उठा करती है, माना कि ये लहरे कभी शात होजाय किन्तु सदाके लिये नहीं मरतीं, प्रत्युत अपने लय होजानेपर अपने चिह्न छोड जाती हैं ये चिह्न सस्कार हैं, इन चिह्नोंसे अन्य लहरे उत्पन्न होनेकी भी सभावना रहती है। जो कर्म्म हम करते हैं चाहे वह शारीरिक हो या मनका विचार मात्रही हो उसका चित्र हमारे मनपर खिंचजाता है, यह चित्र दिखाई नहीं देता परन्तु भीतरही काम करता रहता है हमारा वर्त्तमान जीवन गत सस्कारों या पिछले कर्म्म एवं विचारोका फल स्वरूप है। हर मनुष्यका चालचलन इन्हीं सस्कारोंसे वना हुआ है यदि सस्कार उत्तम हैं, तो चालचलन भी उत्तम होगा और जो सस्कार बुरे हैं, तो चालचलन भी बुरा होगा जो मनुष्य बुरी बातें सुना करता है बुरे विचार मनमे रखता है बुरे कर्म्म करता है उसका मन बुरे सस्कारोंसे भरा रहैगा और उनसे उसी प्रकारके काम, विचार और बातोका प्रकाश होता रहैगा और उसकी प्रकृति भी इसीके समान होगी वास्तवमें ये सस्कार अपना काम करते रहते हैं यही मनुष्यको बुरा बनादेते है मनुष्य विवश होजायगा और वह सस्कारोंके चक्रमें पडकर बुरा काम करने लगेगा। मनुष्यकी दशा एक यत्र Machine की समान होगी जैसे उसका चलाने वाला चाहेगा, चलेगा। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य अच्छे विचार रखता है। अच्छे काम करता है, अच्छी बातें बोलता है, तब इसके सस्कार अच्छे होगे और वे इसको विवशतया भलाईकी ओर ले जायंगे यदि वह बुराई करना चाहता है तव भी बुराई न कर सकेगा जब भलाई करते २ अच्छे विचार मनमें रखते २ उसका स्वभाव अच्छा बनगया तब वह बुराईके भूतसे दूर होजायगा। और इसका मन फिर बुराईकी ओर प्रवृत्त ही न होगा वह नितान्त शुद्ध और बुद्ध होगा, ये शुभसस्कार उसको

बनादेंगे जब यह दशा होगी तब उसका चालचलन पत्थरकी समान होजायगा ।

जिस प्रकार कछुआ अपने हाथ, पैर और शिरको अपने कोटरमे सिकोड लिया है और आप कितना ही दुःख उसको दे पर वह अपना शिर बाहर नहीं निकालता है इसी प्रकार जिसका चालचलन बनगया है और जिसने अपने मनको वशमें करलिया है वह भी कभी कर्त्तव्यच्युत न होगा । अपनी समस्त गुप्त शक्तियो पर उसको अधिकार है और किसी प्रकारकी विवशता उसको उसके धर्म्मसे नहीं डिगा सकती । भलाई करते २ वह भला बन गया है और उसने इन्द्रियोको जीत लिया है, चालचलन इसी प्रकार बना करता है इसी प्रकार मनुष्यको सचाई मिलती है और ऐसा मनुष्य ही सदाके लिये सुरक्षित होजाता है फिर उससे बुरा काम नहीं बनता चाहै आप उसे कहीं भेज दीजिये चाहै वह कैसी ही बुरी संगतिमें बैठे, उसके लिये भय नहीं है, शुद्ध और सदाचारी बननेसे एक और कक्षा ऊची है जो "मोक्षपद" अर्थात् मुक्तिकी इच्छा है। तुमको याद रखना चाहिये कि सब प्रकारके योगका फल "मोक्ष" ही है "कर्म्मयोग" हो या "ज्ञानयोग" दोनोंका लक्ष्य एक ही है । कर्म्म करनेसे मनुष्य उसी पदको प्राप्त होगा जिसको ध्यान द्वारा बुद्ध भगवान् और प्रार्थना द्वारा क्राइस्ट (Christ) अर्थात् मसीह प्राप्त हुए थे परन्तु कठिनाई यह है कि मोक्षका अर्थ पूर्ण स्वतत्रता है, यह स्वतत्रता, भलाई और बुराई दोनोंसे परे है, न भलाईका बधन हो और न बुराईका । बेडी चाहैं सोनेकी हो या लोहेकी दोनों बुरी हैं । मान लो मेरे हाथमे काटा लग गया और मैने काटा निकालनेके लिये एक दूसरा काटा हाथमें लेलिया, जब काटा निकलगया तब दोनो काटे फेंक देताहू मुझको दूसरे कांटेके रखनेकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि वे है तो दोनों काटे ही । इसी प्रकार अच्छी वृत्तिया बुरी वृत्तियोंमे दूर होती हैं बुराईका सस्कार अच्छे सस्कारो द्वारा शुद्ध करदिया जाता है जब बुरे सस्कार दब गए या नष्ट होगए तब अच्छे सस्कारोसे भी [illegible] चाहिये केवल एक यही साधन "मुक्ति" प्राप्त करनेका है "कर्म करते हुए [illegible] अलग रहो" ये तुम्हारे मनपर कोई चित्र न खींचसकें । [illegible] [illegible] द्वारा ससारके बडे २ काम बनते रहे परन्तु सा[illegible]

आत्मामें कुछ विकार न आने पावे, यह किस प्रकार होसकता है ? हम साधारणतया जानते हैं कि उस कर्मका जिससे हमारा गहरा सम्बन्ध है प्रभाव हमारे मनपर बाकी रहजाता है।

दिनमे सहस्रो आदमियोंसे हमारी भेट होती है, और ऐसे आदमियोंको देखनेका भी अवसर प्राप्त होता है जिनसे हम प्रेम करते है परन्तु जब हम रात्रिको एकान्तमे उनकी सूरतोका ध्यान करनेलगते है तब हम केवल उन्हीं सूरतोको देखते हैं जिनसे हम प्रेम करते है चाहे ये सूरते एक क्षण ही के लिये दिखाई दी हों, परन्तु प्रेमका सम्बन्ध होगया इसलिये इन्हींका प्रभाव मनपर शेष रहता है अन्य सब लुप्त होजाती है। जिससे जितना गहरा सम्बन्ध होगा उसका उतना ही ध्यान रहेगा। यों तो सब सूरतोका प्रतिबिम्ब एकसाही मनपर पडा सबकी तस्वीरें मनपटल पर खिच गई परन्तु देखो, फल एकसा नहीं रहा किन्तु सम्भव है कि किसी सूरतको केवल क्षणभरके लिये देखा हो परन्तु इस ओर मनका झुकाव अधिक है इसलिये इसका प्रभाव शेष रहा सम्भव है इस सूरतका ध्यान वर्षोंसे हमारे चित्तमे हो, हमने इसके सम्बन्धकी बहुतसी बातें सोच रखी हो, मनके आवरणमें न मालूम कितने विचार उसके लिये रहेहो यही कारण है कि इसका प्रभाव औरोकी अपेक्षा सहस्रो गुना अधिक था, औरोका केवल नाममात्र ध्यान था।

इसलिये तुम असगी बनो, कर्म होनेदो मस्तिष्कको काम करनेदो बराबर काम किया करो, परन्तु सावधान रहो कि एक लहर भी मनको मोहित न करने पाए, अजनबी या अतिथिकी समान काम करो, रातदिन काम करो, परन्तु सासारिक किसी पदार्थसे अपनेको एक न होनेदो, बंधन बडी भयानक चीज है, यह ससार हमारे रहनेका स्थान नहीं है, यह केवल हमारे रास्तेमे एक सीढी है, सुनो साख्य कहता है “ समस्त प्रकृति (Natuie) आत्माके लिये है आत्मा, प्रकृतिके लिये नहीं है” प्रकृतिकी सत्ता आत्माकी पूर्त्तिके लिये है, इसके अतिरिक्त उससे और कोई प्रयोजन नहीं है, प्रकृति इसलिये है कि उससे आत्माको ज्ञान प्राप्त हो और ज्ञान प्राप्त करके वह मोक्षपदको प्राप्त करले। यदि हम इस बातको सदा ध्यानमें रखेंगे तब हमको कभी प्रकृतिसे

न्बध न होगा हम समझते रहेंगे कि प्रकृति केवल एक पुस्तक है जिसको पढना है और जहा हमको विद्याकी प्राप्ति होगई फिर पुस्तककी कोई आवश्यकता नहीं परन्तु विरुद्ध इसके हम अपने आपको प्रकृति समझ लेते हं हम विचारने लगते हैं कि आत्मा प्रकृतिके लिये है अस्थि चर्म्म ही आत्मा है, जीवन भोजनके लिये है और भोजन जीवनके लिये नहीं है । रात दिन हम भूल करते हं हम अपने आपको प्रकृति ही मानरहे है । इसीके बधनमे फसजाते हैं और जहा गहरा सम्बन्ध हुआ फिर हम मुक्तिके लिये नहीं बल्कि प्रकृतिके दास बनकर काम करते हैं ।

इस सबका आशय यह है कि तुम स्वामी बनकर स्वामीकी समान काम करो काम सदा करते रहो, परन्तु वह दासोका काम न हो । क्या तुम नहीं देखते प्रति मनुष्य किस प्रकार काम करता है ? किसीको चेत नहीं है सौमें नब्बे दासोंकी समान काम करते हे और उसका परिणाम दुःख होता है क्योंकि उनके कामोंमें स्वार्थ भराहुआ हे । काम, स्वतत्रता और प्रेमसे होना चाहिये प्रेमका समझना बहुत कठिन हे और जब तक स्वतत्रता न हो प्रेम उत्पन्न नहीं होसकता दासमे कभी सच्चा प्रेम नहीं होता, यह नितान्त असम्भव है यदि तुम किसी दासको खरीदो और जजीरोमे बाधकर उससे काम लेते रहो तब वह काम तो करता रहेगा परन्तु इसका काम प्रेमका काम न होगा । बस इसी प्रकार यदि हम ससारिक पदार्थोके लिये दासोंकी भान्ति काम करते रहें तब हमको प्रेम उत्पन्न नहीं होगा वह हमारा काम सच्चा काम न होगा इसी प्रकार जो काम मित्रों और कुटुम्बियोंके लिये कियाजाता है इसकी भी वही दशा है जो अपने लिये किया जाता है । स्वार्थसे किया हुआ कर्म्म दासोके कर्म्मकी समान है और यहा ही आकर उसका पता लगजाता है कि इसमे स्वार्थ भाव है या नहीं, प्रेमके हरकाममें प्रसन्नता रहती है जिस काममे प्रसन्नता न होगी प्रेम न होगा उसमे कभी सच्ची शान्ति, सच्चा आनन्द और सच्चा सुख न होगा, सच्चा जीवन सच्चा प्रेम और सच्चा ज्ञान आपसमें एक दूसरेसे मिले हुए हैं, वास्तवमें ये तीनों एक है जहां एक होगा वहा दूसरे भी अवश्य होंगे वे वास्तवमें एकही पदार्थके तीन टुकडे हैं सत् चित् आनन्द । जब समजीवन मिलता है तब हम वास्तविक जीवनको जानते हैं ज्ञान सचाइसे मिलजाता है और आनद सच्चे प्रेमका मूल बनजाता है, जो

मनुष्यके मनमे प्रतीत होता हे इसीलिये सच्चे प्रेममे प्रेम करनेवालेको या जिससे प्रेम किया जाय दुःख नहीं होता। मानलो कि एक पुरुष किसी स्त्रीसे प्रेम करता है और वह चाहता है कि वह स्त्री इसके अतिरिक्त और किसीको न देखे, तब उसका मन दुर्बल है, यह चाहता है कि वह स्त्री उसीके पास बैठी रहे, उसीके पास खडी रहे उसीके साथ खाए, पिए, और उसीकी दासी बनी रहे वह उसका दास है और इस स्त्रीको भी दासीकी कोटिमें रखना चाहता है यह प्रेम नहीं है प्रत्युत यह उस गुलामकी मूर्खता–पूर्ण और सडेहुए प्रेमका उदाहरण है इससे प्रेमका अपमान होता है, यह प्रेम नहीं है । क्योंकि यह दु.खदाई है यदि वह (स्त्री) इसकी इच्छानुसार काम नहीं करती तब उसको दु ख होता है प्रेममें दुःख नहीं है प्रेममें आनद ही आनद है इसे कदापि प्रेम न कहो यहा प्रेमके विषयमे बडी भारी भूल होरही है। जब तुम अपने पति, स्त्री, पुत्र, भाई और मित्रों आदिसे प्रेम करनेमें इस प्रकार सफल मनोरथ होसको कि तुमको दु ख या सन्ताप उत्पन्न न हो और न स्वार्थके नीच विचार ही तुम्हारे मनमे आये, तभी तुम स्वतत्र और निर्बंध होसकते हो ।

कृष्ण भगवान् गीतामे कहते हे "हे अर्जुन ! मेरी ओर देख ! यदि मैं एक क्षणके लिये कर्म्म करना बन्द करदू तब यह सारा जगत् नष्ट होजाय । यद्यपि मुझको इस जगत्से कोई लाभ नहीं है, मैं एक हू, इसका स्वामी हूॅ मुझको कर्म्मसे कुछ फल नहीं मिलता तथापि मैं कर्म्म किया करता हू क्योंकि मुझको जगत्से प्रेम है" इसी प्रकारके सच्चे प्रेमसे असगता उत्पन्न होती है, जहा सासारिक सबध होता है, जहा लोग सासारिक सबधमे जकडे होते हे वहा शारीरक लगाव रहता है शरीरके परमाणुओंमे आकर्पणशक्ति उत्पन्न होती है और इसके कारण दो शरीर कुछ देरके लिये एक दूसरेके निकट आते है और यदि उनको निकटता नहीं मिलती तब दुःख उत्पन्न होता हे परन्तु जहा सच्चा प्रेम होता है वहा शारीरक प्रेमका विचार तक उत्पन्न नहीं होता। प्यार करनेवाले मनुष्य सहस्रों कोसकी दूरी पर रहते हो परन्तु उनके प्रेमकी दशा एकसी होगी, ऐसा प्रेम मरता नहीं और न इस प्रेमसे किसी प्रकारका दु ख उत्पन्न होता है।

जीवन व्यतीत होजाते हैं तब कहीं जाकर असंगता उत्पन्न होती है परन्तु इसके उत्पन्न होतेही अभीष्ट पद मिलजाता है प्रेमकी सम्पत्ति हाथ आगई और हम "स्वतन्त्र" होगये प्रकृतिकी जंजीर अलग जापडी, बस हम प्रकृतिको उसके वास्तविक रूपरंगमे देखने लगते है और फिर वह हमारे बांधनेके लिये नई २ कडिया न बना सकेगी, हम बिलकुल स्वतन्त्र होजायँगे और कर्म्म फलका विचार क मनमें उत्पन्न नहीं होने देंगे फिर किसीको क्या पर्वाह है कि कर्म्मका क्या परिणाम होगा इसको सोचें जो मनुष्य प्रेम और प्रसन्नताके साथ कर्म्म करता है उसको फलकी अभिलाषा क्यो उत्पन्न हो ? यतः वह स्वयं निःस्वार्थ है इसलिये उसको कर्म्मके फल दुःखदायी नहीं होते।

क्या तुम कभी अपने लडकेवालोंसेभी प्रेमका बदला चाहते हो ? यह तुम्हारा धर्म है कि तुम इनके लिये कर्म्म करो और बस। यहांतक तुम्हारा धर्म्म है जहां कहीं तुमको किसी मुख्य मनुष्य या किसी मुख्य देशके लिये काम करनेकी आवश्यकता हो हर प्रकारसे काम करो परन्तु इसके साथ भी तुम्हारा वर्त्ताव वैसाही हो जैसा कि लडकोंके साथ हुआकरता है। प्रतीकार, बदला या फलकी इच्छा न करो, यदि तुम निष्काम होकर संसारका उपकार कररहे हो, दान दे रहे हो उसके फलमें तुम्हारी दृष्टि नहीं लग रही है तब तुम्हारा कर्म्म किसी बन्धनका हेतु न होगा, बंधन केवल वहा होता है जहा फलकी इच्छा होती है।

गुलामोंकी समान काम करनेमें स्वार्थ रहता है और इसका परिणाम बन्धन होता है यदि तुम स्वामीके समान काम करो तब तुमको इस कामसे आनंद और शांति लाभ होगी, हम प्राय. न्याय और अधिकारके लिये वादविवाद करते रहते हैं परन्तु हम देखते हैं कि संसारमे न्याय और अधिकारकी बाते बालकोंकी बकवादसे अधिक मूल्य नहीं रखतीं। केवल दो बातें मनुष्यके चालचलनकी पथ प्रदर्शक है एक दया और दूसरा बल। बलके घमंडमें रहना और उसकी चेष्टा करना स्वार्थ है सब नर नारी अपने २ अधिकारसे लाभ उठानेकी धुनमें लगे रहते हैं। दया स्वर्ग है जिसको अच्छा बननेकी इच्छा है वह दया किया करे अधिकार शासन और न्याय इन सबका संबंध भी दयाहीसे है। कर्म्मका

चाहना आत्मिक उन्नतिके मार्गमें विघ्न उपस्थित करता है और अन्तमे इसीके कारण दुःख मिलता है केवल कर्म्म करने और उदारताके साथ संसारको दान देनेमे बन्धन नहीं होता एक और साधन है जिसके द्वारा दया और निष्काम उदारताको कार्य्यमें परिणत किया जासक्ता है, वह यह है "कर्म्मकी उपासना" समझ कर करो कर्म्मका फल ईश्वरके अर्पण करो जब तुम ईश्वरके अनुचर हो तब तुमको कब अधिकार है कि फलकी आकांक्षा करो ? जो तुम संसारके लिये कर रहे हो, ईश्वर स्वयं बिना किसी अभिलाषा या सम्बन्धके कर्म्म करता है उसके लिये कर्म्म बन्धन नहीं होते, निष्काम कर्म्मकर्त्ता "पद्मपत्रमिवांभसा" कर्म्मसे अलग रहते हैं, निष्काम कर्म्मका करनेवाला किसी बुरेसे बुरे देशमें रहै पापियोंमे बसे परन्तु वह पाप न करेगा निम्नलिखित वृत्तान्त इसपर प्रकाश डालता है। जब कुरुक्षेत्रका युद्ध समाप्त होगया पाण्डवोंने बहुत बड़ा यज्ञ किया जिसमें निर्धनोंको बहुत धन बांटागया सबको आश्चर्य हुआ क्योंकि कहीं भी इतना दान नहीं दियागया था और न किसी राजाने पहिले इतना बड़ा यज्ञ किया था। जब यज्ञ समाप्त होगया तब एक न्योला वहा आया, इसका आधा शरीर सुवर्णका था और आधा सफेद रंगका था वह यज्ञमे आकर लोटने लगा, और इसके बाद यज्ञ करनेवालोंको सम्बोधन कर कहने लगा "तुम सबके सब झूठे हो यह यज्ञ नहीं है" उन लोगोने कहा "क्यो ! तुम क्या कहते हो, क्या कभी पहिले किसी यज्ञमे इतना धन और अमूल्य रत्न निर्धनोको मिला था देखते नहीं कोई निर्धन नहीं रहा सब धनवान् बनगए इससे उत्तम यज्ञ आजतक नहीं रचा गया" न्योलेने उत्तर दिया "सुनो ! एक छोटा ग्राम था, जिसमें एक ब्राह्मण अपने स्त्री पुत्र सहित रहा करता था, यह अपना पालन भिक्षावृत्तिसे किया करता था दैवयोगसे देशमें तीन सालतक घोर अकाल पड़ा। विचारा ब्राह्मण निर्धन था वह महान् दुःखी हुआ पाच दिनतक विचारेने निराहार व्रत किया छठे दिन किसीने उनको थोडेसे जौ दिये जिसके सत्तू बनाए गए और थोडा २ चारों मनुष्योने विभक्त करलिया जब वह पुत्रादि सहित भोजनके लिये बैठा द्वार पर किसी आदमीने आवाज दी बापने द्वार खोलदिया और अतिथिसे घरमें आनेके लिये निवेदन किया हिन्दोस्थानमें पहिले समयसे यह रीति चली आई

कि कभी २ आप भूखे रहजाते हे और अतिथिको भोजन देदेते हे, गरीब
ालगने अतिथिसे कहा "भगवन्! आइये आप खूब आये" और इसके सामने
नूका भाग रख दिया अतिथि भूखा था सब सत्तू खागया और बोला "तुमने
मुझे मारडाला, में दसदिनसे भूखा हू इतना सत्तू देकर तुमने मेरी भूंखको और
भी बढा दिया, तब ब्राह्मणकी स्त्रीने पतिसे कहा मेरा भाग भी इनको देदीजिये"
पतिने कहा नहीं तब स्त्री हठ करने लगी "देखो यह निर्धन मनुष्य आज हमारा
अतिथि हे भूखा है, हमारा धर्म्म हे कि इसको भोजन दे, में तुम्हारी स्त्री हू
मुझको अधिकार है कि अतिथि सत्कारमे मैभी भाग लू इसलिये मेरा भाग भी
इसको दे दीजिये" यह कहकर स्त्रीने भी अपना भाग अतिथिको अर्पण किया
तब अतिथि बोला 'अब भी मेरी क्षुधा निवृत्त नहीं हुई" तब लडकेने कहा
"मेरा भाग भी लेलीजिये क्योकि मैं इस घरका लडका हू पिताका अनुकरण
करना मेरा धर्म्म है" जब इसके भागसे भी उसकी तृती नहीं हुई तब पुत्र वधूने
भी अपना भाग उठाकर देदिया और इस अतिथिका उदर पूर्ण किया, वह
आशीर्वाद देकर वहासे विदा हुआ छः दिनसे न खानेके कारण ये मृतप्राय होगये
थे भूखकी यत्रणासे आज इन चारोंने अपना शरीर छोडदिया । इस सत्तूकी
भूसी वहा पृथ्वीपर पडी हुई थी, मैं उसपर लोटने लगा और मेरा आधा शरीर
जैसा कि तुम देखते हो सुवर्णका होगया उस समयसे बराबर मै पृथ्वीपर घूम
रहा हू इसलिये कि यदि कहीं भी ऐसा यज्ञ हुआ हो तो वहा लोट लगाकर बाकी
आधा शरीर भी सुवर्णका करलू इसी कारण मैंने तुमसे कहा कि तुम झूंठे हो यह
यज्ञ नहीं हे ।"

भारत निवासी इस आदर्शसे दिन दिन नीचेको गिर रहे हे सच्ची उदारता और
सच्चे दानकी महिमाको भूल रहे हैं । जब मैंने पहिले अंग्रेजी पढना आरम्भ किया
तब मैंने एक कहानी पढी थी कि एक लडका परदेश गया हुआ था वहासे रुपया
कमाकर अपनी माताके पास उसके गुजारेके लिये भेजता रहा और उसका पालन
करता रहा बस इसीके लिये पुस्तकके पूरे चार पृष्ठ उसकी प्रशसामें रगे गए
परन्तु वास्तवमे इसकी क्या प्रशसाकी बाते हें? कोई हिन्दू बालक इस काम ?
इतना महत्व न देगा, यह एक बडी साधारण बात है । योरपमे

शिक्षादी जाती है कि हरएकको अपनी चिन्ता आप करनी चाहिये । अब जाकर मैंने समझा कि क्यों इस लडकेकी इतनी प्रशसा की गई योरुपमें कुछ लोग अपनेही शरीरका भरण पोषण करते हे और उनको कभी यहभी विचार नहीं रहता कि उनके माता, पिता, और स्त्री पुत्रकी क्या दशा होगी यह बडी घृणित रीति है किसी गृहस्थीका यह आदर्श नहीं होना चाहिये ।

अब तुम विचारो कि कर्म्मयोग किसे कहतेहैं मरणपर्यन्त दूसरोकी सहायता करना पर कभी प्रतीकार या फलके शब्दको मुहपर न लाना वास्तविक "कर्म्म-योग है लोग हजार वार धोखा दें, कुछ पर्वाह नहीं निर्धनोंका भला करके उनसे धन्यवादकी अभिलाषा न करो प्रत्युत तुम स्वय उनका धन्यवाद करो जिनके कारण तुम्हे उदारतासे काम लेनेका अवसर प्राप्त हुआ इससे स्पष्टतया सिद्ध है कि गार्हस्थ्य धर्म्म, सन्यासीके धर्म्मसे बहुत कठिन और महत्व पूर्ण है कर्म्मका सच्चा जीवन स्वय सच्चे त्यागके जीवनसे हजारोगुणा दुस्तर है। इसी लिये कहताहूँ कि निष्काम उदारता कर्म्म पूर्ति करनेका गुप्त रहस्य है ।

Unselfish charity is the secret of saving work

॥ इति तृतीयपरिच्छेद समाप्त ॥

अथ चतुर्थ-परिच्छेद ।

धर्म्म क्या है ?

कर्म्मयोगके पढनेसे पहिले यह जानलेना चाहिये कि धर्म्म क्या है ? यदि मुझको कुछ काम करना है तब काम करनेसे पहिले यह जानलेना आवश्यक है कि मेरा धर्म्म क्या है ? तदनन्तर कदाचित् मै उसको अच्छी प्रकार करसकूगा । अनेक जातियोंके धर्म्मके लिये अनेक विचार हैं मुसलमान कहते हैं कि जो कुछ कुरानमें लिखा हुआ है वही उनका धर्म्म है । हिन्दू कहते हें कि वेदोंका उपदेशही धर्म्म है, ईसाई अपनी इजीलमे लिखित धर्म्मको धर्म बताते है । इसपर विचार करनेसे हम इस परिणाम पर पहुचते हे कि ससारके अनेक इति-हासोंमे और अनेक जातियोंमें अवस्थाके अनेक भागोमे धर्म्मकी समझ भी

अनेक हैं । और विषयोंके विवेचनकी अपेक्षा इसकी विवेचना करना सुलभ नहीं है हम केवल निकटके वृत्तान्तोपर दृक्पात करके और कर्म्मके वास्तविक फलको विचारकर धर्म्मकी कुछ विवेचना कर सकते हैं । जिस समय हमारे सामने कोई विषय प्रकट होता है हमको एक मुख्यताके साथ इसकी ओर दृक्पात करनेकी आवश्यकता होती है, और जब मनमे उद्वेग होताहै मन विवशतया उसके विचारनेको उद्यत होता है । कभी वह विचारता है कि इस दशामें काम करना ठीक होगा, दूसरे समय इसके विरुद्ध सोचता है । हर जगह धर्म्मके लिये प्रायः यही विचार है कि मनुष्यको अपने मनके अनुसार काम करना चाहिये किन्तु प्रश्न यह है कि वह क्या चीज है हमारे कर्म्मको धर्म्मके वस्त्र पहिनाती है ? यदि किसी ईसाईको गोमास मिलजाय और वह अपना जीवन बचानेके लिये इसको न खावे, तब वह समझेगा कि उसने पाप किया । किन्तु यदि किसी हिन्दूसे ऐसा काम बन जाय और वह किसीको ऐसा निंदित मास खानेके लिये देदे तब वह समझेगा कि मैंने धर्म्मका काम नहीं किया । ये समस्त बाते जैसा सिखाया पढाया गया है उसका फल मात्र है, अन्तिम शताब्दीमे हिन्दोस्थानमें लुटेरोंका समूह रहता था, उनको ठग कहते थे, वह दूसरोंके प्राण और धन लूटनेको ही अपना धर्म्म समझते थे वे जितने अधिक मनुष्य मारते उतनाही अधिक धर्म्म समझते थे, साधारणतया यदि कोई मनुष्य किसी आदमीके गली कूचेमे गोली मार दे तब वह समझेगा कि मैंने पाप किया किन्तु यदि वही आदमी सिपाही बनकर युद्धक्षेत्रमे जाय तो एक दो नहीं बीसो आदमियोंको मार गिरायेगा और गौरवसे कहेगा कि मैंने धर्म्मका काम किया है । इसलिये धर्म्मके विषयमें हर अवसर और समय पर एक ही आज्ञा देनी भूल होगी, यद्यपि बहुत कठिन है तथापि धर्म्मकी विवेचना होसकती है । जिन कामोंके करनेसे हम ईश्वरकी ओर जाते है या उसके निकट होते हैं वे कर्म्म शुभ है । और जिन कर्म्मोंसे हम नीचे गिर जाते है वे बुरे हैं और वे कर्म्म धर्म नहीं हैं । कुछ काम ऐसे है जिनमे हम अच्छे बनते हैं कुछ ऐसे हे जिनके कारण हम पशु बनजाते है किन्तु हर मनुष्यके लिये हर अवसर पर यह कहदेना कि एक किसी मुख्य काममे उसमें भलाई

आजायगी बहुत कठिन है। संस्कृतमे एक श्लोक है जिसको हर देशके निवासियोने पसन्द किया है उसका अर्थ यह है "किसीको मत सताओ, सताना या हिंसा करना पाप है" केवल इतनी ही धर्मकी विवेचना है इससे अधिक कुछ कहना कठिन है।

गीताने बार २ जन्म और दशाके अनुसार धर्म्म करनेका उपदेश किया है जन्मदशा और समाजमें अपनी मुख्य हालतको देखते हुए सामाजिक या अन्य प्रकारकी उन्नतिका फैसला सुगमतासे हो सकता है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम ऐसे काम करें जिससे हम शुद्ध और पुण्यात्मा बनें और जो हमारी समाजके अनुकूलहो, परन्तु इसको स्मरण रखना चाहिये कि हर समाज या हर देशके उद्देश्य एकसे नही होते, चूंकि हमको इस विषयसे विज्ञप्ति नहीं होती इसलिये हम एक दूसरेके साथ घृणा करते हैं। अमेरिका वालोंका विचार है कि जो कुछ वे अपने देशकी रीत्यनुसार करते हैं ठीक है। और जिनके यहा वह रीति नहीं है वे अच्छे आदमी नहीं है। एक हिन्दू कहता है कि उसीके कर्म्म धर्म्म अच्छे है औरोंके बुरे हैं। यह एक साधारण भूल है इस भूलसे बडी हानि पहुंचती है और इसीके कारण अनैक्यता फैलगई है। खाना, पीना, वस्त्र और आचरण सबका यही हाल है। इसी अन्तरके कारण एक देशके निवासी दूसरे देशवालोको बुरा कहते रहते हैं।

इसलिये हमको यह स्मरण रखना चाहिये कि दूसरोंके धर्म्मकर्मका भी ध्यान रहै और हम उनके खान पानका अनुमान अपनी रीतिके अनुसार कभी न लगावें। "मैं समस्त ससारका किसी दशामे शिक्षक नहीं होसक्ता" यह बहुत बडी शिक्षा है जो हमको ग्रहण करनी चाहिये। हमको ध्यान रखना चाहिये कि यह ससार है और सब ससारमे एक नियम जारी नहीं होसक्ता। निकटके पदार्थोंसे धर्म्ममे परिवर्त्तन होजाता है। किसी समय जो कर्म्म उचित और युक्त हो वही धर्म्म है जन्मके अनुसार जो कुछ हमारा धर्म्म है उसी पर स्थित रहैं और उसके बाद समाजमे अपनी दशा और जीवनके धर्म्मपर विश्वास करैं, जीवनमे हर मनुष्यकी कुछ न कुछ दशा है। इसको उसी दशामे काम करना चाहिये ससारमे उस मनुष्यके लिये बहुत कुछ भय है जो भलीप्रकार अपनी दशाको नहीं

देखता, वह सोचता है कि मुझमे भी वही गुण हैं जो एक महाराजामें हैं यदि वास्तवमे ऐसा ही हो तब इसको अपने जन्म या पैदायशके धर्म्मको उत्तमतासे करके दिखादेना चाहिये कि इसमे उत्तम गुण विद्यमान हैं तदनन्तर उत्तम धर्म्म स्वय उसको प्राप्त होगा । यदि मनुष्य अपने छोटे २ कामोको उत्तमताके साथ करता है तब इसको अवश्य कोई वडा काम मिलजायगा जब हम ससारमे सचाईके साथ काम करने लगते हैं तब प्रकृति हमारे दाहिने बाये चारो ओरसे बता देती है कि किस प्रकारका जीवन हमारे लिये उपयोगी है यदि कोई मनुष्य किसी कामके योग्य नहीं है तब वह बहुत दिनो तक उस पर स्थित नहीं रहसकेगा । प्रकृतिके फैसलेके विरुद्ध शिकायत करना वृथा है जिसको छोटा काम मिला हुआ है वह नीचा या छोटा नहीं है । किसी मनुष्यका अनुमान उसके कामसे न करना चाहिये प्रत्युत यह देखना चाहिये कि वह अपने कामको किसप्रकार अजाम देताहै ।

धीरे धीरे हम यह भी देखेंगे कि धर्म्म विषयक उसके विचार भी बदलते जाते हैं, सबसे उत्तम काम वे हैं, जिनमे स्वार्थका लेश नहीं है, काम पूजाकी समान करो, जब यह दशा होगी काम स्वय शुद्ध होगा, परन्तु यह कर्म्मका आदर्श है । धर्म्मके सब कामोंमें यह विचार मिलेगा कि जहा प्रेम है जहा आत्माको कर्ममे प्रकाश मिलता है वही कर्म्म शुभ कर्म है यह बात केवल उस समय होसकती है जब सासारिक वासनाओका नाश होता जाय और एक धर्म्महीका विचार मनमे रहे, और स्वार्थका प्रभाव मनमें न रहै । इस प्रकार समस्त समाजकी उन्नति कर्म्मपर निर्भर है, जहा स्वार्थको छोडकर काम किये जाते है वहा मनुष्यमे तेज चमकने लगताहै । अनिष्ट इच्छाए, और स्वार्थ पापकी ओर लेजाते है । निःस्वार्थ प्रेम और भजन मनुष्यकी उन्नतिके साधन हैं और धर्म्ममें कभी ही प्रसन्नता मिलती है । जिस समय इसके पहियोंको प्रेमका तेल लगाया जाताहै वह चलने लगता है वरन् कदम २ पर रगडे झगडेसे काम रहता है, पिताका अपने पुत्रोके साथ क्या धर्म्म है ? पतिको पत्नीके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिये ? पत्नीको पतिके साथ किस प्रकार वर्तना चाहिये ? क्या आप नहीं जानते कि ये सदा जीवनपर्यन्त लडते झगडते रहते हैं किन्तु जहा प्रेम होता [illegible] और‌ही दृश्य दिखाई देते हैं प्रेम केवल [illegible] [illegible] ।

प्रेमही धर्म्मको मीठा बनादेताहै क्या काम क्रोध लोभ मोह और इंद्रियोंका दास बनजाना स्वतन्त्रता है? हम इन बातोंको नित्यप्रतिही देखते हैं कि वे ही सच्चे स्वतन्त्र हैं जो प्रसन्नताके साथ दूसरोंको क्षमा करदेते हैं, चिडचिडे स्वभावकी स्त्रियां अपने पतिको सदा घुडकती हैं और इस प्रकार उनपर अपनी स्वतन्त्रता प्रकट करती हैं यद्यपि वास्तवमें वे अपने स्वभावसे अपने दासी होनेका प्रमाण देतीहैं, यही दशा उन पतियो की है जो अपनी स्त्रियोंके अवगुण देखा करते हैं। सत्य और शुद्धता स्त्री पुरुषका पहिला गुण होना चाहिये। जो पति पथभ्रष्ट होगए कोई पतिव्रता स्त्री कठिनाईसे उसको सन्मार्गपर लासकेगी ऐसा भी बहुत कम होगा। आजकल ससारमे ऐसे दुष्ट पतियोकी बडी शिकायत है और न ऐसी स्त्रियोकी ही कमी है। यदि स्त्री सचमुच शुद्ध एवं धर्म्मात्मा हो तब पतिमें कभी न कभी सुधार कर सकती है। शुद्धता और नम्रता पाषाण हृदयपतियोंको भी मनुष्य बना देती है। यदि स्त्री पतिव्रता है और अपने पतिके अतिरिक्त सब मनुष्योको भाई पिता पुत्रकी समान देखती है तब स्मरण रक्खो, कोई पुरुष उसके धर्म्मनाश करनेका साहस नहीं करसक्ता इसी प्रकार यदि हर पति अपनी स्त्रीके अतिरिक्त अन्य स्त्रियोंको माता बहिन और पुत्रियोकी समान देखता है तब भी कभी किसी प्रकारकी बुराई पेश न आएगी ससारमे जो मनुष्य अपनेको "शिक्षक" समझता है उसको कमसे कम सब स्त्रियोको माताकी समान जानना चाहिये।

ससारमें माताका पद सबसे बडा है मातासे अधिक कोई निस्वार्थ नहीं होता, माताके प्रेमको केवल ईश्वरके प्रेमसे कमी दीगई है और सब प्रेम इस प्रेमसे नीचे है। माताका धर्म्म है कि पहिले पुत्रका ध्यान करे बादको अपना। किन्तु यदि इसके विरुद्ध माता पिता अपने सुखोका ध्यान पहिले करते हे अर्थात् खाने पीने पहिनने लेने और देनेमें अपनी सन्तानका पहिले विचार नहीं करते तब ऐसे मातापिताओंकी सन्तान पशु पक्षियोकी सन्तानके समान होजायगी जो पर निकलने पर अपने मातापिताको पहिचानेगे भी नहीं। वह मनुष्य धन्य है जो मातृभक्तिको ईश्वर भक्ति समझता है वह स्त्री धन्य है जो पतिमे ईश्वरभाव रखती है और वे लडके धन्य हे जो मातापिताको ईश्वरवत् पूजते हैं।

उन्नति करनेका वास्तवमे यही भेद है कि अपने कर्त्तव्योकी सुधि हर समय बनी रहे । और अपने आपको नित्यप्रति बलवान् बनायाजाय, जिससे कि धीरे २ उन्नति करते हुए हमको अपना अभीष्ट पद मिलजाय किसी प्रकारके कर्त्तव्यसे घृणा न करो मै भी कहता हूं जो मनुष्य नीचे काम करता है वह नीच नहीं है मनुष्यकी बडाईका अनुमान उसके कामोंसे न लगाना चाहिये बल्कि उसके काम करनेके ढगसे लगाना चाहिये इसका ढंग और कर्त्तव्य पालन प्रणाली ही इसके जाचनेकी सबसे उत्तम कसौटी है । एक चमार जो थोडी देरमे मजबूत और अच्छा जूता बनालेता है उस विद्वान् प्रोफेसरसे अच्छा है जो रातदिन वृथा बकता रहता है ।

कोई सन्यासी जगलमें जाकर बहुत दिनोतक योग करता रहा, बारह वर्ष तक एकही आसन पर उसने योग किया एक दिन जब वह बैठा हुआ था इसके शिरपर कई सूखे पत्ते गिरे इसने ऊपरकी ओर देखा तो दो कव्वे आपसमे लड रहे थे योगीको क्रोध आगया वह बोला "हा ! तुमको इतना साहस हुआ कि तुमने मेरे ऊपर सूखे पत्ते डाले" और वे इसी समय इसकी क्रोधाग्निमे जलकर नीचे आ गिरे । योगी मनमें बडा प्रसन्न हुआ क्योंकि इसमें सिद्धि शक्ति आगई थी वह केवल एक दृष्टिसे कव्वोंको भस्म करसकता था । कुछ दिनों बाद वह सन्यासी किसी ग्राममें भिक्षा मागने गया और एक स्त्रीके द्वार पर जा उसने भिक्षा मागी "मातः ! भिक्षा देजा" भीतरसे आवाज आई "जरा देर थम जाइए" योगीने मनमें कहा "दुर्भाग्य स्त्री ! तू मेरे योगबलको नहीं जानती, मुझसे प्रतीक्षा करवाती है" अभी यह सोच ही रहा था कि अन्दरसे आवाज आई "बेटा ! गर्व मत करो. यहा कव्वे नहीं बसते हैं" योगीको बडा आश्चर्य हुआ और अब वह शान्तिसे उस स्त्रीकी प्रतीक्षा करने लगा अन्ततः एक स्त्री मकानसे बाहर आई तो योगी उसके चरणोंपर गिर पडा और कहने लगा "मातः ! तूने कैसे जाना" उसने कहा" बेटा ! मै तेरे योगाभ्याससे परिचित नहीं हूं मै केवल एक साधारण स्त्री हूं मैंने इसलिये तुझको ठहरनेके लिये कहा कि मेरा पति बीमार है मै उसकी सेवा कर रही थी जो मेरा मुख्य धर्म्म था मै धर्म्मके लिये जीवन पर्य्यन्त कर्म्म करती रही हू जब मै कुमारी थी तबभी धर्म्मका विचार कि

मनमे था, अब विवाहिता होने पर भी धर्मका विचार रहता है मैं बस यही योग करती हू चूंकि मेरा मन दर्पणवत् शुद्ध है इसीलिये मैं तेरे विचारको समझ गई यदि तुझको अधिक जाननेकी आवश्यकता है तब तू अमुक ग्रामके बाजारमें चला जा वहा एक कसाई रहता है तू उससे उचित और उत्तम शिक्षा प्राप्त करेगा। सन्यासीने सोचा कि "मैं क्यो उस चाण्डालके पास जाऊ जिसके स्पर्शसे पाप होता है"

किन्तु वह स्त्रीकी सिद्धिशक्ति देख चुका था उसकी आंखे खुल गई थीं जिस समय वह इस नगरमे पहुचा उसको एक मोटा ताजा कसाई मिला जो मास बेचा करता था योगीने कहा "ईश्वर अनुग्रह करे यह भला मुझको क्या योग सिखायेगा यह तो राक्षस है" इसी क्षण कसाईकी दृष्टि इस योगी पर पडी और उसने आख उठाकर कहा "स्वामिन्! तुमको उस पुण्यात्मा स्त्रीने ज्ञान सीखनेके लिये भेजा है आप कुछ देर वृक्षके नीचे बैठे मैं अभी निबटा जाताहू" सन्यासीने सोचा कि "अरे! यह क्या बात है, देखो इससे क्या मिलता है" यह कहकर वह बैठ-गया, परन्तु कसाई अपना काम वैसे ही करता रहा जब काम समाप्त होचुका उसने रुपया आदि सम्भाल लिया तब सन्यासीको सबोधन कर बोला महाराज! आइये, अब मेरे साथ घर चलिये" निदान दोनो घरकी ओर चले जब घर पहुचे तब कसाईने इसको एक जगह बिठाकर कहा "आप यहा थोडी देरके लिये आराम कीजिये तदनन्तर वह घरमे चलागया जहा इसके माता पिता रहते थे, इसने उनको स्नान आदि कराकर भोजन कराया और फिर सन्यासीके निकट आनकर कहने लगा "स्वामिन्! आप कहिये मैं आपकी क्या सेवा करू" तब सन्यासीने कई प्रश्न ईश्वर और जीवके सम्बन्धमे किये कसाईने इसको अत्यत मनोरञ्जक उपदेश दिया जो आजतक व्याधगीताके नामसे प्रसिद्ध है और जिसको लोग बडे प्रेमसे पढते सुनते हैं वेदान्तकी अनेक महत्व पूर्ण बाते उसमें लिखीगई है तुमने भगवद्गीता पढी है, व्याधगीता भी पढो और देखो वेदान्तके कैसे गुप्त रहस्य उसमें भरे हुए हैं जब कसाई लेक्चर सुनाचुका तब सन्यासीने कहा "आपके व्याख्यानको सुनकर बडा आश्चर्य्य और आनन्द हुआ परन्तु यह तो बताइये कि आप इस शरीरमे क्यो रहते हो? जब आपको इतना ज्ञान है तब आप इस

अपने कामको क्यों करते हे उसने कहा "बेटा! कोई काम बुरा नहीं है न कोई धर्म्म अशुद्ध है, मेरा जन्म मेरे सम्बन्ध और मेरे अन्य वृत्तान्त और प्रकारके हे बाल्यावस्थामे मैंने यह काम सीखा. मुझको इसका बन्धन नहीं है मैं केवल अपना काम सच्चाई और चतुराईसे करना चाहता हूँ गृहस्थीकी दशामें मैं गृहस्थीके धर्म्म पालन करताहूँ और अपने मातापिताकी सेवा करता हूँ न मैं योग जानता हूँ न सन्यास जानता हूं और न कभी वन गया हूँ, न संसारका भ्रमण ही किया है तथापि तुमने सुनलिया मैं क्या कुछ जानता हूँ और तुमने देख लिया कि मुझको किसी प्रकारका बंधन भी नहीं है मैं अपनी दशा और कामके अनुकूल धर्म्मका आचरण करता हूं।

हिन्दोस्थानमें एक बहुत बडा योगी है यह एक अद्भुत पुरुष है मैंने एक बार इसका दर्शन किया वह एक मुख्य आत्मा है न वह किसीको पढाता है न किसीके प्रश्नका उत्तर देता है वह उपदेशक या सन्यासीके कामको करना पसंद नहीं करता यदि तुम इससे कोई प्रश्न करो और कई दिन प्रतीक्षा करो तब वार्त्तालापमें ही उस प्रश्नका उत्तर भी आजायगा और तुमको अद्भुत प्रकाश मिल जायगा वरन् तुम सहस्रों चेष्टाएं करो सब बेकार होंगी। इसने मुझसे एकबार कर्म्मके महत्वके सम्बन्धमे यह कहा "उद्देश और उद्देशके साधनको एक करदो तुम कर्म्मके रहस्यको स्वयं समझ जाओगे" जब तुम कोई काम कररहे हो उसके अतिरिक्त और कोई विचार मनमे न लाओ, समझलो यही आराधना है यही उपासना है और अपनी समस्त शक्ति उसी कर्म्ममें लगा दो, यह कर्म्मकी पूजा अपनी निराला महत्व रखती है। उक्त कहानीमे कसाई और वह स्त्री अपने २ कामको एक चित्त हो शान्तिसे करते थे और इसका यह परिणाम हुआ कि उनको आत्मिक प्रकाश मिला। हर प्रकार का धर्म्म शुभ है और धर्म्मका पालन करना ईश्वरपूजाका सबमें उत्तम साधन है इससे बडी सहायता मिलती है। मन प्रकाशसे भर जाता है और जो जीव अज्ञानान्धकारमे पडे हुए है उनको प्रकाश और शान्ति मिलती है इस कथानकसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्य चाहे जीवनके किसी भागमें और किसी दशामे हो यदि वह कर्म्म करताहुआ कर्म्मफल पर दृष्टि नहीं रखता तब उसको एक न एक दिन आत्माका साक्षात्कार हो ही जाता है।

चहुओरके सम्बन्धको देखकर हमको धर्म्म और कर्म्मकी समझ आती है ऊंचा या नीचा, कर्म्म दोनो समान हैं जिसको कर्म्म फलकी इच्छा होती है वही शिकायत किया करता है और अपने भाग्य पर विश्वास नहीं करता और जिन मनुष्योंने अपने भाग्यको इस बंधनसे स्वतन्त्र कर रक्खा है उनके लिये कोई कर्म्म न ऊंचा है न नीचा प्रत्युत सभी अच्छे हैं, उन्होंने स्वार्थ और सम्बन्धकी जडको काट दिया है और उनकी आत्मा हंसकी समान स्वतन्त्रता रूपी आकाशमें उडा करती है और कोई इसको बन्धनमें नहीं डाल सकता हममें यह बहुत बडा दोष है कि अपने आपको बडा समझते हैं जब मैं बालक था तो मैं स्वप्नमें देखा करता था कि मैं महाराजा होगया हूं और मुझमें यह बडाई है वह बडाई है आदि । कदाचित् आपको भी ऐसे स्वप्न दिखाई देते हों परन्तु अन्तमें स्वप्न ही है । प्रकृतिके काममें हर जगह न्यायकी कठिनाइयां दीखती हैं इसलिये हमारे धर्म्म चाहे वे कुछ ही क्यों न हों हमारा ध्यान अवश्य उन पर होना चाहिये । यदि हम अपने धर्म्मको भलीप्रकार पालें तब इस समय जो काम हमारे हाथमें है हमको खूब मजबूत बना देगा और धीरे २ हम किसी ऐसे पदको प्राप्त होंगे जिसका समाजमें बडा मान है । मुकाबला या सन्ताप करनेसे सन्तापाग्नि मनको भस्म करती है शिकायत करनेवाले सदा शिकायत करते रहते है उनको चुप या शान्त करदेना कठिन है और उनका समस्त जीवन निष्फलता या असफलतासे पूर्ण होजाता है । आओ हम तुम सब लोग अपना २ कर्म्म करें जो हमारा धर्म्म है उसको दृढतासे पकडलें चलते हुए पहियोंमे कधोंको लगाकर जोरसे गर्दिश दे इस समय हमको स्वय प्रकाश मिलजायगा और हमारी आत्मा प्रकाश और आनन्दसे पूर्ण होजायगी । ॥ इति चतुर्थ परिच्छेद समाप्त ॥

॥ इति प्रथम भाग समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

॥ श्री ॥

सांगीत कामकन्दला.

जिसको

पाली निवासी सुबेदार मन्नालाल मिश्र आत्मज शारदाप्रसादने कानपुर निवासी वंदी खली फा की अनुमतिसे चौबोला, ख्याल गजल, दादरा, कौव्वाली, भजन, लावनी छंद आदि अनेक रागोंमें रशिक जनोंके चित्त प्रसन्नार्थ रचा.

जिसको

गजानन्द मोदी ने

निज "नागरी" प्रेस हीराबाग बम्बईमें

छपाकर प्रकाशित किया

संवत् १९६५ सन १९०८ ई०

॥ श्री ॥

सांगीत कामकन्दला.

जिसको

पाली निवासी सुवेदार मन्नालाल मिश्र आत्मज शारदाप्रसादने कानपुर निवासी वंदी खली-फा की अनुमतिसे चौबोला, ख्याल गजल, दादरा. कौव्वाली, भजन, लावनी छंद आदि अनेक रागोंमें रशिक जनोंके चित्त प्रसन्नार्थ रचा

जिसको

गजानन्द मोदी ने

निज "नागरी" प्रेस हीराबाग बम्बईमें

छपाकर प्रकाशित किया.

संवत् १९६५ सन १९०८ ई०

|

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

सांगीत कामकन्दला.

स्तुति ॥

दोहा—जैकाली कलिमल दहन। कंकाली भुज चारि॥
कर कपाल संग केहरी । जैत्रिपुरारि पियारि ॥
चौबोला—जैत्रिपुरारि पियारि गले मुंडनकी
माला न्यारी । अरुन नयन शशि भाल बाल कर
राजतसिंह सवारी । खल दल प्रबल संहारि मारि
असुरन जग कीर्ति पसारी । होदयाल दुख टाल
मातुमैं अस्तुति करूं तिहारी ॥
टूट—गजानन मातु भवानी । वेद तत्र पारन
जानी । संत सेवक सुख दानी ।रख बादल की
लाज आज तू हिंगलाज महारानी ॥ १ ॥

मंगला चरण

दोहा—आनन्दी आनंदकरन हरण सकल दुख शूल ।
जन रक्षक भक्षक खलन जग जननी सुख मूल॥

चौबोला—जग जननी सुख मूल दुष्ट खल दलन मलन जगदम्बा। शिवा शक्ति रुद्रानी बुधि विद्या वरदानी अम्बा। रक्त बीज मधुकैटभारि कंकाली कलिकी शम्बा। चापचक्रधरि समशत्रु संहारो नकरु बिलम्बा॥

टूट—गण अगण दोष न जानू। शुभाशुभ नहिं पहिंचानू। छन्द की रचना करता। रख बादल की लाज सीस चरणों में माता धरता॥ २॥

शायरका महिफिल से कहना।

दोहा—जल्से में जो इस वक्त हैं मौजूद तमाम।
सब से मेरी आरजू सुनियो खासो आम॥

चौ० सुनियो खासो आम स्वांग क्या नया आज दिखलाता। नीति ज्ञान सांगीत इश्क मजमूं जबान परलाता। हिन्दूऔर मुसलमां सब से सखुन यही फुरमाता। कान लगा चुपचाप सुनो दिलचस्प ख्याल जो गाता॥

कड़ा—प्यारेजी हाथ जोड़कर कहुं नहीं बस और हमारा। अगर रहो खामोश सुनाऊं शुक्र तुम्हारा॥

दुबोला—प्यार अगर चक चक बक बक ऊधम गुलशोर करोगे॥ स्वांग होयगा बन्द मजा नहि पावो घर डगरोगे।

टूट—स्वांग क्या अजबहसारा । गोयाखिल रहा सितारा । शारदासीस नवाये । कामकन्दला माधो नलका स्वांग समासें गाये ।

॥ शायर ॥

दो०—मुल्क एसियाके विषे हिन्दूस्तांमशहूर ॥
सुभग नगर पुष्पावती । विद्या में भरपूर ॥

चौ०विद्या में भरपूर तहांका ब्राह्मण माधोवासी॥ चतुर्वेद षटशास्त्र अठारहु पुराणका परकासी । नीति निपुण गुण धाम नृरलखिहूरें होत उदासी । पर गर्दिस किस्मतके फेर से भटके कोस अठासी ॥

शेर—वसता श्यामसे लेकर चीन जापान फिर आया । शहर काश्मीर काशीमें ठहरने तक नहीं पाया । सिन्ध सूरत बलूचिस्तान औरइंगान सब छाना ॥ कटक नेपाल तिब्बत में कहीं लगता न ठीकाना ॥ भटकता पूर्व से पश्चिम नगरकामावती आया । महीपति कामसेन वहां का तहां दिल अपना बहलाया ।

टूट—देख नगरी नमासको । फेर कुछ कर अगमको । पासेदेवढ़ीके आया । द्वारपाल ने माधोनल यह सखुन जबांपर लाया ॥ १ ॥

जवाब माधोनलका द्वारपालसे ॥

दो०—द्वारपाल जो मैं कहुं । बात मैरी सुन लेहु ॥
राजासे दरवार में । जाकर यह कह देहु ॥

चौ० जाकर यह कह देहू एक ब्राह्मण है देवढ़ी आया । मुल्क २ में कामावति नगरीपतिका यश छाया । कर मंजिलदर मुकाम मैंने अति तकलीफ उठाया । आशिर्वाद देन राजाको दिल में यह ठहराया ॥

टूट—वहुत तकलीफ उठाकर । यहां पर पहुंचा आकर । हुक्म राजाका पाऊं । देखूं सभा महीपति की दिलका अरमान मिटाऊं ॥ ५ ॥

जवाब । द्वारपालका माधोनलसे ॥

दो० महाराज तुमसे कहूं । सत्य २ इस वार ।
इस मौके पर आपका । जाना है दुशवार ॥

चौ० जाना है दुश्वार हुक्म नहि कामापति नगरीका । महिफिलके दरम्यांन नाच जब होता रश्क परीका । करूं सिफत क्या बयां हुश्न जो देखा सितमगरीका । होनिहाल तज जान माल सब त्यागै बिरादरीका ॥

टूट— बताया जो ये हाल मैं । करूं नहि तुमसे

चाल मैं। करो जो दिल में आवै ॥ वक्तनाच महि-
फिल में गैर कोई जाने नहिं पावै ॥

जवाब माधोनल ॥

दो० द्वारपाल के सुन वचन। मैं होगया खमोश।
पै सुन ताल मृदंगकी। दिलमें आया जोश॥
चौ० दिल में आया जोश होशका ना रह
गया ठिकाना। तिल्लाने की एक तान पै खिला
कमल कुम्हिलाना। गुस्सा होकर कहा सभा
क्या गोया है बुतखाना। नहीं तालका ज्ञान किसी
को करते मनका माना॥

टूट —मूर्ख हैं सबदरबारी। है राजा सहित अनारी।
तालका हाल न जाने। पूरबादिशिका मृदंग वाला
कौन तान पर ताने॥ ७ ॥

। जवाब । द्वारपालका राजासे।

दो०क्षितिपतिरतिपतिछत्रपतिनरपतिपतिशिरताज
जान बख्श होवे मेरी। तो अरज करूं इक आज।
चौ० अरज करूं इक आज जो हुक्म आपका
पावें। ब्राह्मण ठाढ़ा द्वार एक उसका सब हाल बतावें।
बिन कहेनसे बनै नहीं और कहते में सरमावें।
नकल सभाको मूरख कहना सत्य सत्य बतलावें।

टूट—बात सच तुम्हें बताया । जरा नहिं हाल छिपाया । आपकी दहेशत खाऊं । जो होवै गर हुक्म सभामें उसे लिवाकर लाऊं ॥ ८ ॥

जवाब राजाका ॥

दो० सैना मेरी बात सुन जो कहेता समुझाय ।
ब्राह्मण जो द्वारे खड़ा । उसको लाउलिवाय॥

जवाब द्वारपालका माधवनल से॥

दो० श्रीपंडित महाराजजी । मानो मेरी बात
याद कियो राजा तुम्हें चलो हमारे साथ१०

जवाब शायरका ।

दो० द्वारपालके संगमें । माधो चला तुरन्त ।
द्वार नांघि भीतर गयो । जहां देउढ़ीको अन्त

चौ० जहां देवढ़ीको अन्त जायकर पहुंच्यो सभा मंझारी । बैठे शूरवीर सब क्षत्री, नग्नतेग करधारी । भरा हुआ दरबार चतुर्दिश माधोरहा निहारी । देकर आशिर्वाद फेर राजाके खड़ा अगारी ।

टूट—नृपात बैठारो नेरे । पास सिंहासन केरे । बहुत विधि आदर कीन्हा । माधवनेलस कामसेन भूपति जबाबयों दीन्हा ॥ ११ ॥

ज० राजाकामाधव नलसे।

दो० कहां से आना आपका हुआ विप्रमहाराज ।
कौन वतन क्या नाम है हमें बतावो आज ।

चौ० हमें बतावो आज आप किस दिमागमें छाये। सकल सभाको मूरख कहते कौन भेद तुम पाये। गुणी अनेकन बैठे तिन सबमें तुम बड़े कहाये। सत्य बतावो हाल नहीं तुम काल साथमें लाये॥

टूट—मूर्ख किस लिये बनाया। भेद इसका हम पाया। न कीजो हमसे बहाना। अगर झूंठ तुम कहो सुबह मर्घट पै लगै ठिकाना॥ १२॥

ज० माधवनलका।

दो० रहेताहूं पुष्पावती माधोमेरानाम॥
यश प्रताप वल आपका है जहान सरनाम॥

चौ० है जहान सरनाप वयां कुछ कर जवान नहिं पाई। क्या अजीब नाचती परीपैकर दिललिया चुराई। शम्शो कमर गुलबदन नाजनी लखि दिल में ठहेराई। रूम्भ रति मैनका उर्वसी अमर पुरीसे आई।

शेर— सुना जब तान तिल्लाने की दिलमें अपने अज आया। समां क्या बंध रहा महिफिलमें रंग दूना नजर आया। आज सर टीक बजताहै मगर एक

हुशियारी । हर एक जानिवमें जो हैं चार सबका रंग अनूठाहै । पूर्वके एक पखावजी के हाथ में नाहिं अंगूठाहै । इसीसे उसके तबलेपर अधूरी थाप पड़ती है । मगर सब बैठे हें आकिल किसीकी अक्ल लड़ती है

टूट—आप बुलवाकर देखो । झूठ सच इसमें लेखो। करो जो मनको माने । पूरब दिशिका मृदंग वाला पौन तान पर ताने ॥ १३ ॥

ज० कामसेनका॥

दो० बात आपने जो कही । है दुरुस्त सब हाल
बुलवाकर देखा हमने । पखावजी का जाल ॥

चौ० पखावजी का जाल आपकी क्या तारीफ बताऊं ।होसांगीत इल्ममें पूरे तुम को क्या अजमाऊं। जरोजवाहर दौलत लीजै इनाम जो दिलवाऊं । आज सकल दरबार का अपने अफसर तुम्हें बनाऊं ॥

टूट—खिल । यह पहिनो मेरा । करो मत इसमें देरी । राजदरबार मेंआना ॥ जरा नहिं दहेशत खाना

साफ तुमसे बतलाया। सकल इल्म दारों का मैंने अफसर तुम्हें बनाया ॥ ४ ॥

दूत—खिलत यह पहिनो मेरी । करोमत इसमें देरी । रोज दरवारमें आना। जरा नहिं दहेशत खाना ।साफ तुमसे वतलाया । सकल इलमदारों का मैने अफसर तुम्हें वनाया ॥ १४ ॥

ज० ॥ शायरका ॥

दो० माधोको इनआमदे। महिफिल कीया तमाम।
सिंहासनसे उठ तुरत । आया अपने धाम ॥

छुन्द—आया वह अपने धाम सव दरवारी अपने घर गये । राजाभी खाना खायकर रनवास में वह सो गये । होते फजर सोकर उठे स्नान पूजा करलिया । मेवा मिठाई खायकर दरवारकी रस्ता लिया । वादल कहें सव लोग आ दरवारमें हाजिर हुये । राजा सिंहासन पै विराजे हुक्म यह देत भये ॥ १५ ॥

ज० ॥ कामसेनका ॥

दो० सेना जल्दी जायकर । करदे मेरा काम ।
पातुरको जा वुलाला । कामकन्दला नाम ॥

ज० ॥ सना[illegible] ॥

दो० कामकन्दलाहो जलद । सजधजकर तय्यार ।
राजा वुलवाया तुझे।भरा हुआ दरवार ॥१६

ज० ॥ गायरका लावनी ॥

दो० सुनकर इतनी बातको । कामकन्दला नार ।
लगा उबटना न्हाइकर।साजति सब शृंगार॥

लावनी—रखकर ऐना पाटी दोऊ खूब संवारी। गजमुक्ता मांगमें देत शोभा अधिकारी। मेरी जान लगाया बेंदी वेना सुधार । अजब जड़ाऊ पहिन लिया क्या झूमर झब्बेदार । कानोंमें झूमका करन फुल हैं भारी। बाली वाले और पातोंकी छवि न्यारी। मेरी जान नाकमें नकवेसर लई डार । बुलाक पहिनी आवदार क्या देती अजव वहार ॥ दुलड़ी तिलड़ी पंचलड़ी गलेमें डाला । क्या चन्द्रहार और हमेल मोहन माला । मेरी जान जड़ाऊ पहिन नौलखाहार। अंगिया कनि खावकी पहिनी कुचपर देत बहार ॥ भुजपर टड़िया नौनगा चमकत हीरा। बाजू व बजुल्ला पट्टी जोशन तीरा। मेरी जान पहिन लिया कंगना खारीदार । छन्नी पछेला निगुरही क्या पहुंची मीनेकार ॥ क्या वांक आरसी छल्ले छाप नगीना । अंगुलीमें पोरिया जडाऊ अंगूठी पहिना । मेरी जान करधनी कम्मर लिया दबाय। कटि पतली केहरि सी चलतमें तीन २ बल खाय ॥ क्या कड़े छड़े पायजेब पैरमैं पहिना। नखसे शिखतक सब

जड़ा जड़ाऊ गहिना । मेरी जान पहिन चौरासी वजनेदार ॥ छमछम बजैं चहुं दिशि भौंचक रही निहार ॥ झट पहिन लई पेशवाज घे र तारीका । । और ओढ़ा दुपट्टा बनारसी जारीका । मेरी जान पानका बीड़ा मुखमें खाय । अनियारे कारे नैनोंमें सुर्मा लेत लगाय ॥ चलभई तुरत दरबारमें पहुंची आके । और सात कदमसे मुजरा सबको बजाके । मेरी जान बादलके बन्दी कहें पुकार । कहैं शारदा प्रसाद बैठगई कामकन्दला नार ॥ १८ ॥

ज ॥ राजाका ॥

दो० ऐ पातुर चातुर बड़ी । आतुर होउतयार । नाच दिखावो आपना । आजसरे दरबार ॥

चौ० आजसरे दरबार यह माधो है गुणियन में आला । इसके आगे प्रगट करो अपना गुण नया निराला । अजब तरह का तुममें प्यारी है सांगीत मसाला । तेरा हुनर कसंद फंद त्रिभुवन वश करने वाला ॥

टूट—साज सब ठीक वजावो । रागिनी प्यारी गावो । नया नमकीन मसाला । स्वर विलन्दका दुचंद इस दस सांचे काला ढाला ॥ १९ ॥

गाना कामकन्दलाका ।

नायन सुहायन सखी लागीं गावन कर करके मो

लहों शृंगाररे ॥ बागमें प्यारी खिली हैंगी क्यारी देखो तुम चलके बहाररे। पियाकी दुलारी झूले हैं सारी गाती हैं हिल मिल मलाररे ॥ १ ॥ कोई ओढ़े धानी कोई आसमानी कोई ओढ़े गुलेनाररे। कोई जाफरानीकी चूनर सुहानी जोबन पै है जां निसार-रे ॥२॥ पानी है बर्षे जिया मोरातरसै चलती है ठंढी बयाररे। जाती मैं घरसे लगा ध्यान हरसे देखूंगी सबको निहाररे ॥३॥ बादल हैं छाये घुमड नभमें आये कहते यह बन्दी पुकाररे। वहूं शरमाये खड़े मुंह छिपाये सुनके सखुन पुरकाररे ॥ ४ ॥

ज०। माधोनलका कामकन्दलासे ॥

दो० मृगानैनी चंपक बदनि। अजब गजबतुमकीन्ह।
नैन सैन पैनी अनीसो। हिरदेमें हनि दीन्ह।

चौ० हिरदेमें हनि दीन्ह ताननतीखी का बना नि-शाना। मुख मयंक सुचिरूप रूपथे जिस्मो जिगर समाना। मन अन मोलमोल बिन सुन्दरि तेरेइ हांथ बिकाना। हूं गुलाम गुलफबन सनम तू करले मनका माना।

टूट० ये दिल छल लिया हमारा। गोया कुछ जादू डारा। दिखाकर नाजो नखडा। सर्वेकद गुल बदन मेहलका हो आफतका टुकड़ा।

कड़ा० जरो जवाहर दौलत लीजे राजाने जो कल मुझे दिया । मैं खुद फर्माबर्दार तेरा तन मन तुझ पै कुर्बान किया ॥ २० ॥

ज० । राजाका माधोनलसे ।

दो० ऐ वेहूदाबेअदब । क्या कुछ पिया शरूर ।
कौन बातका इस समय । छाया तुझे गरूर ॥

चौ० छाया तुझे गरूर बताबो बात तुझे समझाऊं । वेश्यापर आशिक होनेका तुझको मजा चखाऊं । अभीकनास बुलाय तेरा सिर धड़से कलम कराऊं । शूलीपर चढ़वाय तुझे में मुल्के अदम पहुंचाऊं ॥

टूट० नेक बख्तोंका यारहूं । बदोंमें बदशुमारहूं । खौफ नहि मेरा माना । दे दिया खिलत महाना । बना आशिक मस्ताना । देख हरामी तेरा सुबह मर्घट पै लगै ठिकाना ॥ २१ ॥

ज० । माधोनलका ।

दो० दीन बन्धु महाराजजी । सुन लीजे सबहाल ।
वेश्याके इल्मो हुनर । नहीं आपको ख्याल ॥

चौ० नहीं आपको ख्याल हालजो उसने अजब किया है । कुच कमलों पर बैठ एकभवंरा रस चूस लिया है । खौफ आपका मानिनाल स्वस्स नहिं जुग

लहों श्रृंगाररे ॥ बागोंमें प्यारी खिली हैंगी क्यारी देखो तुम चलके बहाररे । पियाकी दुलारी झूले हैं सारी गाती हैं हिल मिल मलाररे ॥ १ ॥ कोई ओढ़े धानी कोई आसमानी कोई ओढ़े गुलेनाररे । कोई जाफरानीकी चूनर सुहानी जोबन पै है जां निसार-रे ॥२॥ पानी है बर्षे जिया मोरातरसै चलती है ठंढी बयाररे । जाती मैं घरसे लगा ध्यान हरसे देखूंगी सबको निहाररे ॥३॥ बादल हैं छाये घुमड नभमें आये कहते यह बन्दी पुकाररे । बदू शरमाये खड़े मुंह छिपाये सुनके सखुन पुरकाररे ॥ ४ ॥

ज० । माधोनलका कामकन्दलासे ॥

दो० मृगानैनी चंपक बदनि। अजब गजबतुमकीन्ह ।
नैन सैन पैनी अनीसो। हिरदेमें हनि दीन्ह ।

चौ० हिरदेमें हनि दीन्ह तानतीखी का बना नि-शाना । मुख मयंक सुचिरूप रूपये जिस्मो जिगर समाना । मन अन मोलमोल विन सुन्दरि तेरेइ हांथ बिकाना । हूं गुलाम गुलफबन सनम तू करले मनका माना ।

टूट० ये दिल छल लिया हमारा । गोया कुछ जादू डारा । दिखाकर नाजो नखडा । सर्वेकद गुल बदन मेहलका हो आफतका टुकड़ा ।

कड़ा० जरो जवाहर दौलत लीजे राजाने जो कल मुझे दिया। मैं खुद फर्माबर्दार तेरा तन मन तुझ पै कुर्बान किया ॥ २० ॥

ज० । राजाका माधोनलसे ।

दो० ऐ वेहूदाबेअदव । क्या कुछ पिया शरूर ।
कौन बातका इस समय । छाया तुझे गरूर॥
चौ० छाया तुझे गरूर बतावो बात तुझे समझाउं । वेश्यापर आशिक होनेका तुझको मजा चखाऊं। अभीकनास बुलाय तेरा सिर घड़से कलम कराऊं। शूलीपर चढ़वाय तुझे मैं मुल्के अदम पहुंचाऊं ॥
टूट० नेक वख्तोंका यारहूं । वदोंमें वदशुमारहूं । खौफ नहि मेरा माना । दे दिया खिलत सहाना। वना आशिक मस्ताना । देख हरामी तेरा सुवह मर्घट पै लगै ठिकाना ॥ २१ ॥

ज० । माधोनलका ।

दो० दीन वन्धु महाराजजी । सुन लीजे सवहाल।
वेश्याके इल्मो हुनर। नहीं आपको ख्याल ॥
चौ० नहीं आपको ख्याल हालजो उसने अजब किया है। कुच कमलों पर वैठ एकभवंरा रस चूस लिया है। खौफ आपका मानिनाल स्वरसे नहिं जुदा

किया है ॥ स्वांस रोंकि कर कुच जरियेसे भंवर उड़ाय दिया है ॥

टूट० ये दिल छल लियाहमारा । गोया कुछ जादू डारा । दिखाकर नाजो नखड़ा । सर्वेक़द गुलबदन मेहलका है आफतका टुकड़ा ॥ २२ ॥

ज० । राजाका जल्लादोंसे॥

दो० आप सयाना है बनें कहेताहमें गंवार।
बातों में वहेलावता आजसरे दरबार ॥

चौ० आजसरे दरवार मेरे जल्दी जल्लादो आवो। हाथ हथकड़ी पैरमें बेड़ी गले तौंक डलवावो । इस बे अदब बेहूदाको मस्तीका मज़ा चखावो । वियाबानमें जाय इसे तुम मार कत्लकर आवो ॥

टूट० खौफ नहिं मेरा माना । बना आशिक मस्ताना । इसे शूली दै देना । चाहै तेग आपनीसे इसको मारढेर करदेना ॥ २३ ॥

ज० जल्लादोंका ।

दो० डाली बेड़ी हथकड़ी । गले तौंक जंजीर ।
झटपट इसको ले चलूं । करदूं अभी अखीर॥

चौ० करदूं अभी अखीर खून पीनेको जी ललचाता। कच्चा मांस आदमी का खानेको मन लहेराता । टुकड़े २ करूं बदनके मुझको रहेम न आता॥

वहुत त्रास तकलीफ दे इसे मुल्के अदम पहुंचाता । टूट—तेगसे सीना तोडूं । शीश खंजरसे फोडूं । दया नहिं नेक हमारे । वाप हमारे हते वडे नामी काफिर हत्यारे ॥ २४ ॥

ज० ।माधो नलका राजासे । लावनी।

दो० महाराज कुछ आपने । किया नहीं इन्साफ ।
हाथ जोड विनती करूं । होकसूर अब माफ ॥

लावनी०क्या कसूर मुझसे हुआ जो जान मरावो । मुझ गरीब की हालत पर रहेम न लावो ॥ महाराज देवगे क्यामालिक से जवाव। वेकसूर को शूलीदेकर लूटो वडा सवाव ॥ २५ ॥

ज० । राजाका ।

लावनी० तूबडा हुआ वदकार खौफ नहिं माना । और भरीसभामें वना आशिक मस्ताना । महाराज चढ़ाहै तुझको इश्क शरूर । चोर छिनार डकैतों को यां शूली लगे जरूर ॥

ज० ॥ माधोनलका ॥

लावनी० क्या शूली दिलाकर मुझेनफा पावोगे । मुझको कत्लपाकर तुमभी न कल पावोगे । महाराज आपने किया न कुछ इन्साफ । वेकसूरको शूलीदेकर क्या यश लूटो आप ॥ २७ ॥

ज़॰ ॥ राजाका जल्लादोंसे ॥

लावनी॰ तुमपाजी बड़े जल्लाद क्यों देर लगावो। जंगलमें जाकर इसे कत्ल कर आवो । महाराज बाद लके बन्दी कहैं पुकार । गर छोडोगे इसे तुम्हारा जनिाहै दुश्वार ॥ २८ ॥

ज॰ ॥ माधोनलका परमेश्वरसे ॥

लावनी॰ हे कमलापति गोविन्द नन्दके लाला । तुम विन नहिं मेरो कोई प्राण रखवाला । महाराज दासको संकट विकट महान । मो अनाथके नाथ आज रखलीजे मेरे प्राण ॥ तुम जाय भक्त प्रहलादके संकट टारा । और खंभफोरके हरनाकुशको मारा । खींचत द्रौपदीका चीर दुशासन हारा। जल अथाह में बूडत गजराज उवारा । मेरेनाथ शारदाकी सुन लिजेटेर । अधम उधारन नाम देर क्यों करी हमारी वरे ॥

दो॰ आखीर हमारी आगई । सुनियो लोगतमाम।
मुसलमानको वंदगी । हिन्दूको सीता राम ॥

छंद—जितने हैं, खासो आम सवसे आखरी प्रणाम है । कीजो खता मेरी माफ सवको मेरी जै हर नाम है । इश्ककी मंजिलमें आशूली सवारी चढ़चले । मौतके महिमान हो मुल्के अदमके घर

चले । बादल कहैं मेरी नसीहत को कभी मत भूलना । इश्क बाजोंको पड़ै शूलीका झूला झूलना ॥

दु० इश्ककी मंजिल कठिनहै यारो रूलाके पीछा छोड़ेगी । सोच समझलो यारये कबुर में सुलाके पीछा छोड़ेगी ॥ २९॥

ज० ॥ जल्लादोंका कव्वाली ॥

कव्वाली—अबतो आया तेरा काल तुतो पडा हमारे पाले । तूलड़का बदकार तुझको जाने लोग हजार । तेरी निगह तेज तलवार । तूने लाखोंके घर घाले॥ १॥देख मुये तुझे दार चढाऊं । अभी हरामी मजा चखाऊं । वोटी २ काट गिराऊं । शामत आई बैठे ठाले ॥ २ ॥ कहा मानले अबतू मेरा । वक्त आखिरी आया तेरा । मौतने तुझको आकर घेरा । मुल्के अदमको जानेवाले ॥ ३ ॥ बादलके चेले कहैं वन्दी । दंगलमे गाते ये चंदी । स्वांग नया कथके चौवन्दी । शारदाके मजमून निराले ॥ ४ ॥ अब तो आया तेरा काल तू तो पड़ा हमारे पाले ॥ ३०॥

ज० ॥ माधोनलका ॥

मलार—मुझे सल्कुल मौत वुलावैरे । हाय स्वासी मवरवैसे आवै । शोक अथाह सिन्धुसे है । नैया बेड़ाको पार लगावैरे ॥ हाय । १ । आन पंगा

मंझधार भंवर विच । रहि २ जिय घवड़ावैरे। हाय ।२। मारनको जल्लाद खड़े हैं । तेगा करमें दिखावैरे ॥ हाय ॥३॥ वादल कहें एक तेरो भरोसा । क्यों नहिं आन वचावैरे ॥ हायस्वामी ॥ ४ ॥

दादरा कव्वाली— लज्जा राखो मेरी श्याम नखपर गिरवर धरने वाले । किया इन्दरने कोप कराल छाये वृज वद्दल विकाल । पलमें दिया आपने टाल, लीला अद्भुत करने वाले ॥ १ ॥ गजने जलमें करी पुकार, धायेतज रुक्मिणीसी नार । क्षणमें दियो ग्राहको मार भक्तन हित औतरने वाले ॥ २ ॥ पड़ गई द्रुपद सुतापर भीर, खींचन लगा दुशासन चीर । तुम्हींने जाकर बंधाई धीर, हो दुष्टन मद दलने वाले ॥ ३ ॥ वादल के तुम प्राण अधार बंदी कहते बारम्वार । क्यों नहिं आके लगो गुहार मेरे संकट हरने वाले ॥ ४ ॥

ज० कामकन्दला ॥

दो० उतमाधोको लेचले कस मुस्कें जल्लाद ।
इतमें भी घरको चली । कर माधोकी याद ॥

चौ० कर माधो कीयाद तुरत पहुंचीघर अपने जाके । आह शर्द मुख जर्द वचन बांदी से कहा

सुनाके। इश्क तीर माधोनलका मेरे दिल गयासमाके कर सीनेको पार चित्त चंचल लेगया चुराके॥

कड़ा—बांदीरी क्या मैं तुझसे कहूं न भावे खाना पीना। उसको होवै दार मुझे धिरकार है जीना॥

दुवोला—वही मेरा बस प्यारा है। मैने उसको दिल्दार किया। तनमन उसपै कुर्बान किया अपने मनका मुक्तार किया॥

लावनी—अब देर भई चल देखूं प्रीतमप्यारा। जंगल में वह शूलीपै जायगा मारा। मेरी जान लऊं सामान निरालाजी। और एक हाथ में तेग एक में शमका प्यालाजी॥ जिसवक्त मेरे प्यारेको शूली होवैगी। उस वक्त जान वांदी भी अपनी खोवेगी॥ मेरी जान तेग शूलीपै करूं घनघोर। और पहिले मारूं जल्लादोंको फिर पिऊं हलाहल घोर॥

टूट—वही बस यार हमारा। सनम दिल्दार हमारा न उसके विन जीऊंगी उसको होवै दार जहरका प्याला मैं पीऊंगी॥ ३२॥

ज० वांदीका॥

दो० ऐप्यारी जो मैं कहूं। कहाले मेरामान।
सबर तहम्मुल कीजिये। क्यों होनीहैरान॥

चौ० क्यों होती हैरान बुरा कलमा जबान परलाती। इश्क बुरा जंजाल मुफ्त क्यों अपनी जान फंसाती। एक समां बीसों परवानोंकी नितजान जलाती। सोच समझ दिल बीच समां किसपै जलने को जाती॥

टूट—जरा तुम होश सम्हालो।नऐसेसखुन निकालो। हैं मतलबकी हम साथी। एक मर्दकी कौन वेश्या बीसों मर्द बनाती॥३३॥

ज० कामकन्दलाका॥

दो० ऐ बांदी क्या बकरही जरा जबान सम्हाल।
मैं उनवेश्यों में मैं नहीं जिनका कहेती हाल॥

चौ०जिनका कहेती हाल हमैं तूनाहकको समझाती। उस गबरूका तीर हमारे लगा सबर ना आती। आज तलक मैं मर्दों से बातें करते शरमाती। वो माधो दिलदार सनमचढ़ रह्यो हमारी छाती॥

दु० वही मेरा बस प्याराहै मैंने उसको दिल्दार किया। तनमन उसपै कुर्बान किया अपने मनका मुख्तार किया॥

टूट—वही बस यार हमारा। सनम दिल्दार हमारा। न उसके बिन जीऊंगी। उसको होवै दार। जहेरका प्याला मैं पीऊंगी॥३४॥

ज० बांदिका ॥

दो० एकमेरी मानै नहीं मैं कहती हरवार।
करूं कोई तदबीर अब होश हवास सम्हाल॥

दादरा—प्यारी होश सम्हाररी अब रोवैमतीना। चलके कोई तदवीर करूं अब क्यों होती वेजाररी ॥ १ ॥ रिशवत देकर जल्लादोंको उसकी छुड़ाऊं दाररी ॥ २ ॥ अगर नाछोड़े इस हिकमत से आऊं सबको माररी ॥ ३ ॥ बादल कहैं मैं तुझसे मिलादूं तेरा वह दिल्दाररी ॥ ४ ॥ अब रोवै मतीना ॥ ३५ ॥

जा० शायरका ॥

दो० कामकन्दला चल हुई । ले बांदीको सात।
जंगलकी रस्ता लिया दिल अतिही घवड़ात॥

चौ० दिल अतिही घवड़ात पहुंच गई वियावां में जाके। कहीं न लागे पता चहुं दिशि देखै नजर उठाके।मिले मुसाफिर कोई उसीसे पूंछे पता लगाके। कहां दारपै चढ़े सनम कोई मुझे वतावो आके ॥

टूट—वहोत तकलीफ उठाके। पहुंची शूली ढ़िगजाके। देखहालत हम दमकी गिरीधरन मुरझाय रही कुछ खवर नातनो वदनकी ॥ ३५ ॥

जवाव माधोनलका कामकन्दलासे ।

दो० ऐप्यारी तेरे लिये देखजारही जान।

दिलकी दिलमें रहिगई नहि निकले अरमान ॥

चौ० नहिं निकले अरमान आनके कजाने मुझको घेरा। लो आखिरी सलामकूचहै मेरा यहां से डेरा। था इस्त्याक दीद दिलवरका सोवरआया मेरा। कत्लकरो जल्लाद जल्द मरघटपै पड़े बसेरा।

दु० वो पदवीमंसूर नपाया जोपदवी मैं पाऊंगा।परियों के तख्तपर सवारहो जिन्नत को सीधा जाऊंगा॥

टूट० मेरा सिर कलम करोतुम। न इसमें विलम करोतुम। दर्द मत दिलमें तूला। कहें शारदा यार इश्कबाजों काशूली झूला॥ ३७॥

जo। कामकन्दलाका कौवाली॥

कव्वाली० दिलदारमेरे घवड़ावैमती मैं तुझको यह समझातीहूं। देखूंको दार चढ़ावैगा। और कौन सामने आवैगा। मैं उसका काम तमाम करूं। खंजर अपना अजमातीहूं॥ तुम विन नहि इकपल जीऊंगी। और घोर हलाहल पीऊंगी। जीनामेराधिर कार सनम। मैं तुमसे साफ बतातीहूं॥ २ ॥ तूही दिलदार हमाराहै। और मेरी आंखका तारा है। तुम बिन पल छिन कलनहिंपड़ैनहि यादतुह्मारीभुलातीहूं३॥ शूलीपर कहर मचाऊंगी। जानासंगजान गमाऊंगी। दुनियांमें नामरहेमेरा। वादलकी रागनी गातीहूं॥३७॥

जवाब । माधोनलका ।

कव्वाली० प्यारी नाहक समझावै मुझे अब धीरजरा नहिं आतीहै।शूलीका हुक्म देदीन्हाहै । इन्साफ जरा नहिं कीन्हा है। राजाकाहुक्मनहिं टलसक्ता। इससेतबि अत घवड़ातीहै ॥१॥ अव कजाने मुझको घेराहै । वस कूंचयहां से डेराहै ।दोऊ तर्फ मेरे जल्लाद खड़े । मुझे मल्कुल मौत बुलातीहै ॥ २ ॥ दिलके दिलमें अर मान रहे । सदमें दिलने हरएक सहे। वसलो आखिरी सलाम मेरा । मेरी रूह कुदिसको जातीहै ॥ ३ ॥ बादलके बन्दी बनातेहैं । दंगलमें सबको सुनातेहैं । सुनरामनरायण के सिसरे । दुश्मन की जान चकरा-तीहै ॥ ३९ ॥

ज० कामकन्दला का जल्लादों से ।

दो० जल्लाद इसे तुमछोड़दो । कहालो मेरामान ।
यहीहै बस प्यारा मेरा । यहीहै मेरी जान ॥
छंद० जान मेरीहै यही दिल्दार मैं इसको किया ॥
मतकत्ल तुम इसको करो भरतारमैं इसको किया ॥
इसके विनाइकपल न जीऊंगी मुझे ना धीरहै । पल पल वरस सम कट रहा उठती कलेजे पीरहै ॥ नौ लाखका यह हार तुम रिशवतमें हमसे लीजिये । बादलकहैं इसेछोड़के अब रहम हमपर कीजिये ॥४०॥

ज० । जल्लादका ॥

दो० प्यारी तेरी वात सवहै मुझको मंजूर ।
हुक्म आपका चाहिये । करनाहमें जरूर॥
छंद० करना हमेंहै जरूर प्यारी हुक्मनहिं टालूंतेरा। माधोको लेजावो अभी कुछ उज्रनहिं तुझसे मेरा ॥इनको यहां रखना नहीं राजा अगर सुनपावेगा । जानवच्चों-को मेरे इनके सहित मरवावेगा ॥ बात मैंने जोकही कहा मान मेरा लीजिये ।वादलकहें यह हार रिशवत में हमैं देदीजिये ॥ ४१ ॥

ज० । कामकन्दलाका माधोसे ।

दो० प्रीतमप्यारे मेरे चलोहमारे संग ।
उठें तरंग अनंगकी करलो डटके जंग ॥
चौ० करलो डटके जंग ये योवन मस्त गयंद नमानें । मदनमरोरा देत काम धर धर कमानको ताने । खोलो तरकस बाण तानके मारो सनम निशा ने। कतह करो मैदान इश्क आतिशबुझाय दिलजाने। टू० लिपटके गले लगाले। वस्लके मजेउड़ाले ।बगलमें मुझे दबाले । योवन कहेर लहेरदीरयामें गोता सनम लगाले ॥ ४२ ॥

ज० । माधो नलका ।

दो० प्यारी मैं तेराकभी भूलूं नहिं एहसान ।

जल्लादों के हांथसे मेरी वचाई जान ॥

चौ० मेरी वचाई जान न यह गुण सात जन्म लौं भूलूं मैं । तेरामैं एहसान खुदासे लाखों बार कबूलूंमैं । तावां हसर रहूं मै कर्जी अता नकर सक्ताहूं मैं ॥ बेंच लीजिये देह न इसमें उजुर कभी करसक्ताहूंमैं॥

दु० तुम सबर करो कुछ रोज वाद दिलके अर मान मिटावैंगे। जोहमारी तुह्मारी जिन्दगी है तो ईश्वर फेर मिलावैंगे ॥

टूट० यह मन मतंग मतवारो । ज्ञान का अंकुश मारो । सवरके ‑गमें लामें। रहेना सनम सवारहमेशः हिम्मतके होदामें ॥ ४३ ॥

उ० । कामकन्दलाका ।

दो० गजव कर दियो कामने मारत मदन हिलोर ।
उमग्यो योवन सिन्धुसम चोली पड़दाफोर ॥

चौ० चोली पड़दाफोर विरहके भंवर तहां क्यान्यारे । उठें तरंग अनंग सनम नहिं ताके कहीं किनारे । बूड़ रही मंझधार ये दिलवर सव तोफान वचारे । चढ़ योवन जहाज पै प्यारे दिलजान पार लगारे ॥

टूट० लिपटके गले लगाले । वस्ल के मजे उड़ाले।

बगलमें मुझे सुलाले। योवन कहेर लहेर दरियामें गोता सनम लगाले ॥ ४४ ॥

ज० । माधोनलका ।

दो० धीरज धरियो आपने प्यारी मनके मांहि ।
सबर करो कुछ रोजमें हम तुम दोऊ मिलजांहि॥

चौ० हम तुम दोउ मिल जांहि नयेहै वक्त वश्लका प्यारी। राजा गर सुनलेइ तो फिर भी जान हमारी। पकड़ मंगावै मुझे तेरी भी करै निहायत ख्वारी। दोनों बनें माहिमान मौतके यह क्या दिलमें विचारी॥

टूट—यह मन मतंग मतवारो। ज्ञानका अंकुश मारो ॥ सबरके मगमें लामें। रहेना सनम सवार हमेशः हिम्मतके हौदामें ॥ ४५ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

दो० यह योवन के चमन में अति विचित्र क्या फूल।
इन छतियन पर कुच मेरे रहेसंतरे झूल ॥

चौ० रहे संतरे झूल फूल फल से क्यासजीहै डाली। कुंदकली से दंत गुलाबी गालन खिली निराली। नीलकमल सम नैन मैन इसका रखवाला माली। तूहीकरलेसैर कंचुकी कटी रौस हरियाली ॥

टूट—लिपटके गले लगाले। वश्लके मजेउड़ाले ॥

बगलमें मुझे सुलाले । योवन कहेर लहेर दरियामें
गोता सनम लगाले ॥ ४६ ॥

ज० माधोनलका ॥

दो० प्यारी मेरी वालको दिलसे करले ध्यान ।
जो कुछ मैं तुझसे कहूं कहाले मेरा मान ॥
चौ० कहाले मेरा मान जान मन मैं कहता समु
झाई । अन्न नीर खानेकी मैंने कसम यहां पै
खाई । करूं ऐश आराम मेरा सब जावे
धर्म नसाई ॥ चंद रोज कर सबर खुदा हम तुमको
देय मिलाई ॥

टूट—यह मन मतंग मत वारो । ज्ञान का अंकुश
मारो । सबर के मगमें लामें । रहेना सनम सवार हमेशः
हिम्मतके हौदानें ॥ ४७ ॥

ज० कामकन्दला ॥

दादरा—दिलबर योवन उमगावे । रहा नहिं
जावै । यह मदन सतावे । चोली तड़के हमार ।
दिलबर ॥ योवन मस्त दोऊ हाथी । फिरूं मद मार्ना ।
ार अंकुशछाती ।होजा असवार॥ दिलबर॥पतली मेरी
करिहैयां । डालगले बहियां । पड़ूंतेरी पैयां । मतकर
लहेचार ॥ दिलबर॥फूलोंसे सेज बिछाऊं । नदर लगाऊं।
लिपट गले जाऊं । चलके करलो वहार ॥ दिलबर ॥

बादल मैं नार तुह्मारी । जाऊं वलिहारी । नकर इन्कारी । कहेती हर वार ॥ दिलवर ॥ ४८ ॥

ज० माधोनलका ॥

दादरा—प्यारी बात नहिं माने । नदिलहै ठिकाने । ठानक्या ठाने । कहेती हर वार ॥ प्यारी ॥ राजा अगर सुन पावै । तोकत्ल करावे । नादेर लगावै । तुझ कोभी दे दार ॥ प्यारी ॥ राजा विक्रम बलधारी । वह पर उपकारी । सहायहमारी । कर लेतलवार ॥ प्यारी ॥ उसकी शरण मैं जाऊं । फौज संगलाऊं । तोयुद्ध मचाऊं । कर दऊं धुवां धार ॥ प्यारी ॥ बादल अब रुखसत दीजे । देर नकिजे । सबर दिल लीजै । यही अरज हमार ॥ प्यारी ॥

ज० । कामकन्दलाका. । रंगत डेढ खम्भी ।

ख्याल—प्यारे कहेना मान जान मन मेरा । मत बन नादान॥प्यारे॥प्यारे इसदम जावो नाघरसे। चढ़ा हुस्न मेरे भरपूर ।डाल गले गल वांह सेजपै लूटो मजे जरूर। मदनतन उमगे। दोऊ ओर से तान ॥ प्यारे॥ ५०॥

ज० । माधोनलका ।

ख्याल—नकर मुझे हैरान कहुं मैं तुमसे । दिलवर दिल जान ॥ नकर ॥ तुझको इश्क शरूरचढ़ा । और

मुझे खौफ हैगा इसबेर ॥ अगर नृपति को खबर लगै तो करै बहुतही जेर । मुफतमें तुम भी होगी बदनाम ॥ नकर ॥ ५१ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

ख्याल—खौफ जरा मत दिलमें लावो छिपो जिगर के तुम अन्दर । पलकों पड़दा औ बिछा पुतली पलंग सुन्दर । जान मन दिलके । निकलें अर मान ॥ प्यारे ॥ ५२ ॥

ज० माधोनलका ॥

ख्याल—ठान आपनी ही तुम ठानौं नहीं मानती त ।अपनी जिद्दकर करके प्यारी पीछे मलोगी हांत। ानमन मेरा लो कहेना मान ॥ नकर मुझे ॥५३॥

ज० कामकन्दलाका ॥

ख्याल– जख्मी जिगर मेरे के लीये तेरा वस्ल यह है मरहम । दिलोजान तुझपर निसार है तूहीं मेरा हमदम । गलेसे लगजा । अब नकर गुमान ॥ प्यारे कहेना आन ॥ ५४ ॥

ज० ॥ माधोनलका ॥

ख्याल—सबर करो कुछ रोज जान मन राजाका ं करदूं भोर । चढ़ा फौज विक्रम की लाऊं होगा युद्ध घनघोर । मिटादउं जगसे । मैं नाम व निशान॥ न कर मुझे ॥ ५५ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

ख्याल—देख निहार यार यह योवन जवाहरात से भी अनमोल। चलो पलंग पै आन पियारे ले कांटे पर तौल। मोलमत दीजे। मेरे दिलजान॥ प्यारे कहेना मान॥ ५६॥

ज० माधोनलका ॥

ख्याल—कहां ऐश आरामको कहती अन्ननीरकी किया कसम। करूं जेर भूपतिको जब मैं मिटे यह दिलका गम। जभी यह दिलके। निकलें अरमान। नकर मुझे॥ ५७॥

ज० कामकन्दलाका ॥

ख्याल—लिपट गले से गुलंदाम तू अबना कर मुझको लाचार। बेनी माधो कहें आप फिर होमनके मुखत्यार। बिरहसे ब्याकुल। है मेरी जान॥ प्यारे कहेना मान॥ ५८॥

ज० माधोनलका ॥

ख्याल—लालमाधोका कहेना मानो प्यारी क्यों दिलमें घबड़ात।एकरातकी कहा वश्लके लूटैं मजे दिन रात।चंद मुद्दत में तू दिलसै जान॥ नकरमुझे॥५९॥

ज० कामकन्दलाका खम्शा ॥

खम्शा—लूटो लूटो योवनकी बहार सैयां॥

शेर—मैंने हरचंद कहा की न रसाई तूने। इश्ककी

आग मेरे दूनी जलाई तूने ॥ धधक सीना रहा इसको न बुझाई तूने। सरावे वस्ल ना इक बूंद पिलाई तूने॥ दिलकी तपिश बुझादे हमार सैंयां ॥ १ ॥ लूटो लूटो ॥ १ ॥

तुम्हीं जानी हो मेरे दिलके चुरानेवाले । गुले रुखसारकी बू मुझको सुंघाने वाले। लबेशीरींका मजा मुझको चखानेवाले । तुम्ही दीवाना मैरे दिलको बनाने वाले ॥ दिलकी ख्वाहिश मिटादें हमारे सैंयां॥ लूटो लूटो ॥ २ ॥

कलीचुन चुनके मैं अपना पलंग बिछाऊंगी । इतर केवडा गुलाव सेवती मंगाऊंगी। लिपटके तुझको गलेसे मजे उडाऊंगी।शरावेवस्लकीभरभरके मैं पिलाऊं गी । चिपट जा सीनेसे मेरे दिलदार सैंयां ॥ ३ ॥ लूटोलूटो ॥

लिपटके खूब पलंग पे मुझे लेप्यार करो । डालगलबांह मुझे बस गलेका हार करो ॥ खिला योवन यह चमन इसकी लोयहार करो । मेरे दिलवर मेरेकहनेसे ना इन्कारकरो ॥ सीख बादलकी मानले मेरे भरतार सैंयां ॥ लूटो लूटो ॥ ४ ॥

ज० । माधोनलका ॥

खम्झा–मानो मानो कहना तु हमार प्यारी ।

शेर—गर्म खानाहै यह लज्जत जरा न आवैगी । सोच दिल बीच यह जवान भी जलजावेगी । मान कहना नहींपीछेको फिर पछितावेगी । जानजावे मेरी तूहाथ लम रहजावैगी ॥ इसीसे दिलमें जरा धीरज तु धार प्यारी ॥ मानो मानो ॥ मदनने तुमको सनम इस कदर से घेराहै । कियाहर तर्फसे आगे तेरे अंधेराहै । सुबह होतेही कूंच अब यहां से डेराहै । जियें तो फिर मिलैं नहिं लो सलाम मेराहै । अरज यही है तुमसे हमार प्यारी ॥ मानो मानो ॥ यहां से अब किसी राजा कि शरण जाऊंगा । फौज सबसाथ मैं उसकी यहां लेआऊंगा । बजाके डंका मैं राजा से जंग मचाऊंगा । किला कामावतीका गर्द में मिलाऊंगा ॥ कामावती को करदूं धुवा धार प्यारी ॥ मानो मानो ॥ रुखसत अब दीजिये हमको तोदूर जानाहै । सबरादिलमें करो कुछरोजमें फिर आनाहै । बादलके बंदीनेदेखा सकलजमानाहै। ख्याल जगदम्बा कासुनकर ददूं चकरानाहै ॥ हैं मिसरे कुंवरसिंह के पुकार प्यारी ॥ मानो मानो ॥ ६१ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

बंजारा० मेरी चढ़ी है मस्त जवानी । तुम करलो मनकीमानी ॥ मुझको अब मदन सतावे । और

चोलीतड़का खावैजी । मैं तुमपर हुई दिवानी ॥ तुम ॥ योवन अति जोर करे है । मनधीरज नहिं धरै है जी । दोऊ छतियां यह उमगानी ॥ तुम ॥ अब चलो सेजपै प्यारे । मैं पैयां पडूंतुम्हारेजी। यह ठान तुम ने क्या ठानी ॥ तुम ॥ बादलके बंदी बनाया । शिवसंगल इसको गायाजी । दुश्मन की रूई घबड़ानी ॥ तुम करलो॥ ६२ ॥

ज० माधोनलका ॥

बंजारा—प्यारी मेरी नसीहत मानो । मत जिद्द आपनी ठानो ॥ तुम बात मेरी चित लावो । मत नैनन आंसु बहावो जी ॥ तुम धीरज मनमें आनो ॥ मति जिद्द ॥ तू जारजार क्यों रोवै । और जी जामे को खोवैजी । तुम सीख हमारी मानो ॥ मत जिद्द । अब रुखसत हम को दीजे । और सलाम मेरा लीजिजी । होगया सुबह अब जानो ॥ मत जिद्द ॥ बंदीसे हुनरको पाया । शारदा ने कथके गाया जी । यह गानाहै मरदानो ॥ मत जिद्द ॥ ६३ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

दो० ऐ दिलबर फुंचेदहन । मैं तुमपर कुरबान ।
हाथ जोड़ विनती करूं सनकर अब हैरान ॥

चौ० सतकर अब हैरान लिपट कर सीने मुझे लगाले। मिला वदन से वदन बगलके प्याले सनम पिलाले। डाल गले गल बांह यार योवन की जंग मचाले। कटिसें झटकासार अलक झूला गुल वदन झुलाले॥

टूट—लिपट के गले लगाले। बगलके मजे उड़ाले। बगलमें मुझे दबाले। योवन कहर लहेर दरियासें गोता सनम लगाले॥ ६४

ज० माधोनलका।

दो० ऐप्यारी दिलसें जरा सबर तहम्मुल आन।
चंद रोज के बाद यह निकलें दिल अरमान॥

चौ० निकलें दिल अरमान जान मन कहा मान लेमेरा। देख छिप गया चांद मुर्ग बोले हो गया सबेरा। करो इजाजत मुझे फजर गर पता लग गया मेरा। मुफ्त जायगी जान दोउ फिर होय न दिलवरतेरा॥

टूट—यह मन मतंग मतवारो। ज्ञानका अंकुश मारो। सबर के मगमें डारो। रहेना सनम सवार हमेश: हिम्मत के होदारो॥ ६५॥

ज०' कामकन्दलाका।

दो० मेरी एक मानो नहीं हो मनके मुखतार।
पीठ दिखाके जातहो तो मुख दिखलाना यार॥६६॥

ज० माधोनलका ॥

दो० महेलमें रोती छोड़दी । वह प्यारी दिलदार ।
जंगल की रस्ता लिया । तनक नकरी अवार ॥

चौ० तनक नकरी अवार अन्न जल सब मैंने बिसराया । सात रोजकी मंजिल कर उज्जैन शहर में आया । शिवजी के मंदिर में मैंने यह लिखके चिपकाया । वीर विक्रमादित्य तेरा यशहै जहानमें छाया॥

छूट—मैंहूं एक विरह वियोगी । फिरूं वन २ में योगी । तुही दुःख मेटन हारा । आया तेरे शहर नृपति जी सुनके नाम तुम्हारा ॥

दु० जोहै सच्चा तू परउपकारी तो तुझको अजमाऊंगा। अगर न निकला काम मेरा तो पेट मार मर जाऊंगा ॥ ६७ ॥

ज० विक्रमादित्यका ॥

दो० घोड़ेको कसवायके तुरत वजीर खुश हाल ।
शिव दर्शण को रोजमें जाता सायंकाल ॥

चौ० जाला सायंकाल तुरत घोड़ेकी वाग उठाया । उछल कूद सह गास छोड़ शिवजी के मंदिर आया। उतर अश्वसे दर्शन को मैं मन कदम बढ़ाया । दर्शन कर द्वारे पर एक कागज देखा चिपकाया ॥

शेर—हकीकत खबरदी मैंने तुरत अस्तनका आया।

कचहरीमें बुलाकर दूत यह इर्शाद फरमाया । शि-
वाले के जो दरवाजेपे इक रुक्काहै चिपकाया । पता
उसके लगाने को तुम्हें मैं आज बुलवाया ॥
टूट—शहरमें चहुं दिशि जावो। घूम फिर पता लगावो।
ढूंढ जो उसको लावे ॥ इतना दऊं इनाम जिन्दगी
भर वह अपनी खावे ॥ ६८ ॥

ज० दूतों का राजासे ॥

दो० महाराज के हुक्मसे ढूंढा सकल जहान ।
बेनिशान का ठीकहै, लगता नहीं निशान ॥
चौ० लगता नहीं निशान चहूं दिशि वियाबांमें
जाकर । कोहकाफ और परिस्तान सब ढूंढा नजर
उठा कर । देखा शहर तमाम गली कूचे को खूब मझा
कर ॥ रही न हममें ताब हार गई हिम्मत पता लगा
कर ॥
टूट—ढूंढ मैं चहुं दिशि आया । मगर कहीं पता
नपाया । पता वो उसका पावै । बेनिशान के निशान
में अपना बेनिशां बनावै ॥ ६९ ॥

ज० विक्रमादित्यका वजीरसे । धुन मुरादाबादी ॥

दो० ऐ वजीर मेरे चतुर अब मत करै अबार ।
बुला दूतियां शहर की हों फनमें होशियार ॥
चौ० हों फनमें होशियार फूसमें आग छिपाने

वाली हों। अपने इल्मो हुनर से जल में खाक उड़ाने वाली हों। कि वजीररे जाल फरेव मक्करसे अपने दाममें लानेवाली हों। कि वजीरे जहेर बुझाई वातें हों मूरत में भोली भाली हों। जाहिर हमसे करें हुनर जो जो फनकी जो हों हुशियार। इनाम पावें वहुत काम कर लावें गर मेरा इसवार॥ ७०॥

ज० वजीर का दूतियो से॥

दो० अरी दूतियों जो कहूं बात मेरी सुन लेहु।
राजा बुलवाया तुम्हें साथ मेरे चलदेहु॥

चौ० साथ मेरे चलदेहु देर अव इसमें मती लगावो। तुम्हें कियाहै याद साथ मेरे तुम जल्दी आवो। चलके सरे दरवार हुनर अपना तुम आज दिखावो। अपना हुनर दिखायशाह से इनाम भारी पावो॥

टूट—काम कुछ अटका आके। कहूं तुम से समझाके। काम जो वजाके लावे। मुल्क खजाना धन दौलत से माला माल होजावे॥ ७१॥

ज० दूतीका राजा से।

दो० हाजिरहैं हम दूतियां अय हाकिम सरनाज।
ऐसी क्या मुशकिल पड़ी हमें बुलाया आज॥

चौ० हमें बुलाया आज कौनसा काज हमें कर लाना है। है मुझ में सब ताव हमारा देखा सकल

जमाना है। कि राजाजी अगर हुक्म पावैं बादल में चखती लगावैं। कि राजाजी अगर इजाजत होय इन्द्र की परियां लावैं। हूं मैं कमशिन मगर फूलमें आग छिपाने वाली हूं। जलमें लगाऊं आग फलक के तारे तोड़ने वाली हूं॥ ७२॥

दादरा—मैं सबमें चालांक राजा। आग छिपाऊं फूसके अन्दर जलमें उडाऊं खाक राजा॥ १॥ चखती लगाऊं मैं बादलमें करूं आसमांचाक राजा॥२॥तारे तोडूं जाय फलकके यह मत समझो मजाक राजा॥ ३॥ कहैं चंदिका सब दूतिनमें हूं शोहरे आफाकराजा७३॥

ज० विक्रमादित्यका धुन आगरा।

दो० ऐदूती तुम जायकर ढूंढो शहर तमाम।
वह कातिब हैगा कहां बिरह वियोगीनाम॥

चौ० बिरह वियोगीनाम जायके उसकापताळगावो। कूचा गली बाजार वियवां मैं तुम जल्दी जावोजी अब देर करोना। देर करोना सुन तू दूती मेरा हुक्म बजावो। दाना पानी हराम है जबतक नहिं उसको लावोजी।यह कौल हमारा। कौल हमारा मान जान दिलसे तुमपता लगावो। इतना दऊं इनाम जिंदगी भर घर बैठे खावोजी। फिर जाब कहींना। जावकहीं

ना द्वार पराये सुखसे उम्र वितावो । सत्यनारायण कहैं हमारीधुन आगेरकीगावोजी ॥ ता तडाकताथेई ॥७४॥

ज० नायकका ॥

दो० दूती वहां से चल भई मतलब कहूं मैंखास॥
ढूंढ शहर हरतर्फसे गई मंदिरके पास ॥

चौ० गई मंदिरके पास छिपा दिन नैय्यर नजर न आया। बैठगई खासे। शा ख्याल हरएक तरफ दौड़ाया। हुआ शामका वक्त जान माधो भी वोंहीं आया। आह सर्द सुम्बजर्द इश्क आतिशने जिगर जलाया॥

टूट—और दर दिल अनुमाना। हो नहो यही दिवाना। बराबर बैठी जाके। सा भोनल से दूतीने यह सखुन कहे समझाके॥ ७५ ॥

ज० दूतीका॥

दो० भेप आपका है सही पूरे सन्त फकीर।
मगर हाल जाहिर करे होकोई इश्क असीर॥

चौ० होकोई इश्क असीर कहो तुम पै क्या पड़ा सितमहै। आफताब सहताब ने मुखड़े पर क्या छाया गमहै। गुल गुलाब केआब खुश्क क्यो स्याम चले धम धमहै। यता हाल फिलहाल कसाने दिलको रंज अलमहै।

टूट—अश्क चश्मों से हर्गी। दमबदमहिलकी

भरती। कहो क्या सदमा छाया। कर दूंगी वह काम अगर जो कुछ मुझसे वन आया ॥ ७६ ॥

ज० माधोनलका ॥

दो० अपनी मुसीवत कहनेको नहीं जवां में ताव।
दिल विस्मिल घवडा रहा चूंमाही वेआव॥

चौ० चूंमाही वेआव न भावै मुझको पीना खाना। कामकन्दला प्यारीका मैंहूं आशिक दीवाना। रोम रोममें रमी वही दिल अन्दर अक्स समाना। वह मेरी दिल जान उसीका मैं हो रहा फिसाना ॥

टूट—उसीके वियोग सेरी। हुई हालत यह मेरी। रहेम जो दिलमें लावो। गर कोई तदवीर तुम्हें सूझे तो तुम्ही बतावो ॥ ७७ ॥

गजल—नकोई मिला दिललगानेके काविल। कहेरकी लेहरको मिटानेके काविल। वह मेरी शमां है मैं परवाना उसका। फकत वही है गम जलानेके काविल ॥मैं बीमार उसका मसीहावो मेरी। दवादीद प्यालापिलानेकेकाविल ॥ वह है अक्स मेरी मुसव्विर मैं उसका जीगर मेहै फोटोखिंचानेके काविल ॥ नहीं आव गौहर में कुछ भी है वन्दी। नगीना है दिलवर जडाने के काविल ॥ ७८ ॥

ज० दूतीका ॥

गजल—फिसाना तेरा सिर्फ गानेके काबिल। हिकायत तेरी है सुनानेके काबिल ॥ बुलायाहै राजा तु चल साथ मेरे। वह दाता तेरा गम मिटानेके काबिल। तुझे ढूंढती चंद मुद्दत से मैं हूं। न तेरा पताथा लगाने के काबिल ॥ मुराद आवेगी वर जो दिलमें है तेरे। वह हातिम है दूजा कहाने के काबिल ॥ कहैं शिवरतन तुझको ख्वाहिशहो जरकी। यह मिसरा जवां परहै लानेके काबिल ॥ ७९ ॥

॥ ज० शायरका॥

दो० माधो को ले संगमें। दूतीकिया पयान॥
हांथ जोड़ यों अर्जकी। दरबारे दरम्यान॥८० ॥

॥ ज० दूती का राजा विक्रमादित्यसे ॥

दो० महाराजका हुक्म मैं लाई बजाके आज।
खुदा मेहर हम पर करी रखली मेरी लाज ॥

चौ०रखली मेरी लाज का ज सब पूरन हुआ हमारा इसके निशान का मैंने हिम्मत से पता गुजारा। ढूंढा शहेरां शहर बड़ी मुशकिल से आज निकारा इअक दिवाना जंगल में फिरता था मारामारा॥

टूट—मुझे इनाम दिलावो। न पलकी देर लगावो।

देखली मेरी सफाई। जितनी मैं तारीफ किया उससे ज्यादा कर लाई॥ ८१॥

ज० राजाका॥

दो० ऐ वजीर जो मैं कहूं। करो जल्द यह काम॥
दूतीको रुखसत करो। देकर के इनआम॥
देख तुह्मारे हालको। दिल मेरा घवड़ाय॥
कौन विपति तुमपै पड़ी सो दीजे साफ बताय॥

चौ० दीजे साफ बताय जरा तुम पास हमारे आवो कौन जात क्या नाम वतन क्या हैगा हमें बतावो। है वह कौनसा काज जिस लिये तुम तकलीफ उठावो। कहो जल्द अहेवाल जरा मत दिलमें दहेशत खावो॥ ८२॥

टूट—मुझे सब हाल बतावो। न इसमें जरा छिपावो। रंज मत दिलमें लावो। पूरा करूं सवाल आपने दिलकी मुराद पावो॥

ज० माधोनलका॥ कड़ा॥

कड़ा—तुमसे बतलाया मानो यह राजा मेरी बातको। पुष्पावती है वतन हमारा जातहै ब्राह्मण मेरी। नामहै माधोनल खादिम का यह समझो दिल सेरी। किसमतकी गर्दिशके फेरने क्या क्या नाच नचाया॥ तुमसे॥ कामावती नगरी का भूपति

कामसेन वलधारी । कामकन्दला पातुर उसकी कोटि काम वलिहारी । फिरा भटकता मैं चंहु दिशिसे उसकी सभामें आया ॥ तुमसे ॥ देख रूप गुंचे दहेनी का इश्क असर दिल कीन्हा । हालत मेरी देख भूपने हुक्म दारका दीन्हा । वही महेलका रिशवत देकर मेरे प्राण वचाया ॥ तुमसे ॥ उसी नाजनी काहै मेरे दिलमें अक्स समाना । वही मेरी दिल्दार उसी पर हूंगामैं दीवाना । शिव अधार तूं उसे मिलादे तेरी शरण अव आया ॥ तुमसे ॥ ८३ ॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥ कड़ा ॥

कड़ा—सुन मेरा कहना तुमको समझाऊं प्यारे आजमैं ॥ उत्तम जात तेरी ब्राह्मणकी क्यों तूं दाग लगावे । सवसे नीच कौम वेश्या की धर्म नष्ट होजावे। मान हमारी सीखले माधो नाम न उसका लेना । सुन मेरा कहना ॥ वेश्या कभी नहीं है अपनी तू क्यों हुआ दिवाना । वहींहै उनका यार पासमें देखें जिसके खजाना ॥ जव पैसा नहिं रहे पास में वात पूंछती हैना ॥ सुन मेरा कहना॥ अगर तुझे हो चाह व्याहकी तेरा अभी कराऊं । करो ऐश आराम महलोंमें तेरे लिये वनवाऊं । जिकर ना उसकी हरगिज कीजे और लेजो कुछ चैना ॥ सुन मेरा कहना ।इश्क

बुराहै फंद समझले नाहक गला फंसावै । किसीने पाया नफा न इसमें क्यों तूं जान गमावें । शिव-बालक कहें यार इश्कमें पड़े मुसीवत सैना । सुन मेरा कहना ॥८४॥

ज० माधोनलका॥

दो० ऐ भूपति मेरे वचन सत्य समझ मन मांहिं।
उस प्यारीके बिनमुझे पल २ युग सम जाहिं॥

चौ० पल २ युग सम जाहिं नृपति दुश्वार हमारो जीना । लगी चश्मकी चोट चाक हो गया हमारा सीना । तड़प रहा ज्यों मीन नीर बिन भावे न खाना पीना ॥ उसी गुंचे दहनीके नाम का योग हमने लीना ॥

टूट—लगे जब नैन करारे । तेज तीखे अनियारे होश कबरहे ठिकाने । जिसके पैर बिवाई ना क्या पीर पराई जाने ॥ ८५ ॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥

दो० समझ सोच दिलमें जरा मत बन तू नादान।
वेश्या पर तू मुफ्तमें क्यों खोवैहै जान ॥

चौ० क्यों खोवैहै जान मानले इश्क बुरा होताहै। लग गया जिसके इश्क यार वह जारजार रोताहै। सुबह शाम कल नहीं रातको नींद नहीं सोताहै। नादानों का काम जानकर क्यों कांटे बोताहै ॥

टूट—सखुन मति ऐसे बोलै । धरणि नभ डगमग डोलै । मानले अबभी कहना । इश्क बुरा आजार नित नई पडें मुसीबत सहना ॥ ८६ ॥

ज० माधोनलका ॥

दो० शायर कोई कह गया है जहान के बीच ।
जात न बूझे इश्कमें कहां ऊंच क्या नीच ॥

चौ० कहा ऊंच क्या नीच उसीका चेहरा जिगर बसाहै । सूरत रही झूम नजरोंमें फंदा बुरा फंसाहै । चोटी चोट लगी लट नागिन कीलीने मुझे डसाहै । प्याला वश्ल पीचुका हूं रगरगमें छाया नशाहै ॥

टूट—लगें जब नैन करारे । तेज तीखे अनियारे । होश कबरहे ठिकाने । जिसके पैर विवाई ना क्या पीर पराई जाने ॥ ८७ ॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥

दो—माधो मेरी बातको दिलमें करले याद ।
काफिर इश्कने कर दिया लाखों को बरबाद ॥

चौ० लाखों को बार्बाद देख मंसूरने शूली पाया । शीरीं पर आशिक होकर फरहाद ने जान गमाया । बे नजीर ने सहा अलम बदरमुनीर को चाया ॥ जान अलमको यार मौत अपना महिमान बनाया ॥

कड़ा—प्यारेजी लैली परहो आशिक मजनूनें रंज उठाया॥ रांझा हीर और नलोदमन ने अजाव पाय ॥

दु०—रतनसिंह और यूसुफजूलेखां क्या क्या मुसीवत पाईहै । नहो मुफ़्त लादाम वलामें इश्क बुरा सौदाई है ॥

टूट—सखुन मति ऐसे वोलै । धरणि नभडगमग डोलै । मानले अव भी कहना । इश्क बुरा आजार नित नई पडें मुसीवत सहना ॥ ८८ ॥

ज० माधोमलका ॥

दो० सब नसीहत मैंने सुनी । कहा आपने ठीक।
मगर जो सच्चा इश्कहै । दर्जा सबसे नीक ॥

चौ० दर्जा सबसे नीक इश्कको क्या मूरख पहिचाने।पैर ना जिसके लगा कांटा वह तेग घाव क्या जाने । दिलके नहीं जवान जवां वेदिल है कौन वखाने । जिगर मैरेका दर्द कोई सच्चा आशिक पहि-चाने ॥

कड़ा—प्यारेजी क्या कर सके तवीव दवा आजार इश्ककी । विस्मिल ही जानता पीर वदकार इश्ककी ॥

दु० जो हुआ जमीमें पैदा वह ना पैद इक दिन होजावैगा । अमर न कोई हुआ फकृत इक नाम अमर रह जावैगा ॥

टूट—लगे जब नैन करारे। तेज तीखे अनियारे। होश कब रहे ठिकाने। जिसके पैर विवाई ना क्या पीर पराई जाने ॥ ८९ ॥

जं० राजा विक्रमादित्यका ॥

भजन—मानले अब भी बात हमारी। नाहक माधो बनेहै अनारी ॥ वेश्याके संग धर्म गमावै॥ किसने है तेरी मतिमारी ॥ १ ॥ हसेंगे सारे लोग जगतके। कैसी यह तूने बुद्धि विचारी ॥ २ ॥ डंका पिट जाय दसहू दिशन मैं। ब्राह्मणने करी वेश्यासों यारी ॥ कहैं शिवदुलारे हरि गुणगावो। वहीलेंगे खबर तुम्हारी ॥ ४ ॥ ९० ॥

जं० माधोनलका ॥

भजन—बातना दिलपर आती तुम्हारी। मनमें बसी वही प्राण पियारी। बिन उसके अब मैं नहिं जीऊं। लग गई हिरदे काम कटारी ॥ १ ॥ जबसे देख लई वह सूरत। मों अंखियन सों टरतना टारी ॥ २ ॥ हांथ सुमरनी खाक मली तनमें। हरदम ना उसीका जारी ॥ ३ ॥ मानादीन कल हाय पड़ना जल बिन मीन सो गति है हमारी ॥ ४ ॥ ९१ ॥

जं० राजा विक्रमादित्यका ॥

दो० मैं जो कुछ तुझसे कहूं। कहाले मेरा मान।

किसी सुन्दरी सेतेरी । शादी कराऊं आन ॥

चौ० शादी कराऊं आन महल में वैठे मौज उ-
ड़ावौ । करो ऐश आराम न उसका जिकर जबांपर
लावो । जो तेरे मन वसी वेश्या पास हमारे आवो ।
एक सहस्त्र वेश्या मेरे कर पसंद दिलकी पावो ॥

दु० चलो संग रनवास मेरी रानीहैं एकसे एक
आला । हूर नूरमें चूर सुघड़ सूरत हैं वैस थोड़ी वाला

टूट—सखुन माति ऐसे वोलै । धरणि नभडग
मग डोलै । मानले अब भी कहना।इश्क वुरा आजार
नित नई पड़े मुसीबत सहना ॥ ९२ ॥

ज० माधोनलका ॥

दो० मुझे न जरकी चाहहै । नहीं वेश्यों से काम ॥
रानी आपकी सुन्दरी । मतलो उनका नाम ॥

चौ० मतलो उनका नाम मुझे नहिं चाह व्याहकी
जाके । कामकन्दला प्यारी हमारे नैनन गई समाके ।
पल २ कल नहिं पड़े ऐश आराम दिया विसराके ।
मिले जभी वह वाम हौंसले निकलें कामकलाके॥

कड़ा —राजाजी अगर मदद कुछ करो सत्य
हमसे बतलावो । नहीं साफदो ज्वाव नाहक मुझको
बहेलावो ॥

दु० भेज दूतियोंको जंगलसें मेरा पता लगाया था । हातिम से भी दूनी सखावत तेरी सुन आयाथा ॥

टूट—लगें जब नैन करारे। तेज तीखे अनियारे। होश कब रहै ठिकाने । जिसके पैर बिबाई ना क्या पीर पराई जाने ॥ ९३ ॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥

दो० समझाया मैंने बहुत नहीं मानता एक ।
मनसा पूरी करूंगा तू रख अपनी टेक ॥

चौ० तू रख अपनी टेक कूचका अभी बजाहूं डंका । कामसेनसे करूं जंगदेखूं कैसो भटबंका । मुश्क बांधि भूपतिकी कंदला लाऊं करो मति शंका। धुवांधार करदऊं किलेको फूंक दऊं जस लंका ॥

टूट—लऊं जिस दमें दुबारा। सहेको चोट हमारा। कौन सामने बचैगो । करूं युद्ध घनघोर समरमें हाहाकार मचैगो ॥ ९४ ॥

ज० राजा विक्रमका वजीरसे ॥

दो० सुनवजीर गर तू जल्द । लश्कर करलेतयार ॥
गजरथ शुतर सजायलो । पैदल और सवार॥

चौ० पैदल और सवार कूचका डंका करदियो। । कामावती सें कामसेनसे भारी जंग छुडैयो। । साथोलश्कर

के लिये सकल लोथों से भूमि पटैगो । कामकन्दला मिलै जभी दिलका अरमान मिटैगो ॥

टूट—वचन मैं इसको दीन्हा। न भावै खाना पीना। कौलपूरा करदूंगा। कामसेन की दंड बांधि वेश्याको मैं लेलूंगा ॥ ९५ ॥

ज० वजीरका ॥

दो० सेनापति मेरी बातको दिलमें करो कबूल ।
राजाने दीन्हा हुकम होवै जल्द वसुल ॥

चौ० होवै जल्द वसूल सकल सेनाको हुक्म सुनादो। तोपैं भारी अष्ट धातुकी चरखिन ऊपर धरादो। पैदल शुतर अश्व फीलन पै हौदा जल्द कसादो ॥ कलह होयगा कूच सुनादी का डंका पिटवादो ॥

टूट—तयार हो लश्कर सारा। कूचका बजेनकारा। शूरसामन्त सम्हरके । इन्तजाम संग्राम हेत अपना तमाम लाकरके ॥ ९६ ॥

ज० शायरका ख्याल रगत खडी ॥

ख्याल—इन्तजाम कर तमाम विक्रमने डंका बजबायाहै ॥ कामसेनसे जंगकरनको लश्कर सकल सजायाहै ॥ टेक ॥ सजी अनी चतुरंग सुघड़ फीलों पै सोहैं अम्वारी। इकदन्त। वड़दन्ता मकुना नैन पडीहैं

अंधियारी । सजे स्वेत गजराज छटा जिनकी ऐरावतसे न्यारी । चलत धरणि डगमगै महावतके करमें अंकुश भारी । काले मस्त गयन्दन पै सुवरण हौदा कसवायाहै ॥ १ ॥ अश्व काठियावाड नीला सब्जा अर्बी संगवायाहै।सुर्खा तुर्की नुकुरह अबलख और मुश्की सजवायाहै । कुम्मेता दरियाई इराकी पै काठी धरवायाहै । गर्रा टांगन तातारिनको सुवरण तंग कसायाहै । वेलर और अनेक जंगली अपना रक्श खिंचायाहै ॥ २ ॥ करूं सिफत क्या बयां शुतर बुगदादी साजे साठ हजार। बीकानेरी सजे डीलमें थे बुलंद दरखत अनुहार । सजी सांडिनी जेसलमेरी सांगानेरी बेशुम्मार । जंगी ऊंटन पै लदवाया खीमा और सकल हथियार । बडे २ ऊंटन पै काठी रंग विरंग कसायाहै ॥ ३ ॥ सजी तोपें घन घोर गरजन विजुली तर्जन विकालैं । छे छे हाथी जुते फेर दगते धरणी डगमग हालैं । गर्भ गिरावन किला ढहावन हाहाकरण जवचालैं । प्रलै करन संहार शत्रुदल अरिमर्दन घमंड टालैं भारी । तोपें अष्ट धातुकी चर-खिन पै जुतवायाहै ॥ ४ ॥ सकल शूर सामन्त सज गये करमें नग्न दुधाराहै । बाये कन्धे ढाल गेंडे की

कम्मर पेशकटाराहै । कडाबीन पिस्तौल कोई कोई तीर कमान सुधाराहै । तोमर फरसा शूल चक्र क्या करमें सोहत न्याराहै । कारीगरको बुला सकल हथियार दुरुस्त करवाराहै ॥ ५ ॥ बुला नकाड-चीको सेनापतिने डंका पिटवायाहै।सुनत शोर घनघोर सकल लशकर मैदांसें आयाहै । कोई अश्व गज शुतर पालकी रथपर कोई चढ धायाहै । मना गौरि गनेश इष्टदेवनको कोई शिर नायाहै । नव्वे लाख लशकर ले विक्रमने फिर कूच करायाहै ॥ ६ ॥ चली अनी चतुरंग धूरिसों सूरज नजर न आयाहै । दिशन अंधेरी छई धरा धसकी दिग्गज दहेलायाहै । पड़ी खलबली इन्द्रलोक लशकर जब कदम बढ़ायाहै। । सातरोज की मंजील कर कामानगरी नगचायाहै । कामावती नगरीके धूरे पर डेरा डलवाया है ॥ ७ ॥ सकल सेन विश्राम किया विक्रमने मन अनुमाना है । माधो को जंच लिया कामकंदला को भी अज-मानाहै । बना हकीमी ठाठ तुरत खेमे से हुआ रवाना है । बैद २ हरतर्फ टेर रंडीका महल दिखानाहै । देवीचरण बनवारीलालसे दुश्मन फतह न पायाहै ॥ ८ ॥ कामसेनसे जंग करनको लशकर सक-ल सजायाहै ॥ ९७ ॥

ज० कामकन्दलाका बान्दीसे ॥

दो० ऐ बांदी कलहै नहीं । बता कोई तदबीर ।
उस माधो दिलदार बिन । उठती कलेजे पीर ॥

चौ० उठती कलेजे पीर धीर नहिं अब जीऊंगी मैंना । हिलकी भर भर उमगे सीना कल दिन रैन पड़ैना । पाटी करवट लऊं याद हर घड़ी कभी बिसरैना । जला रहा तन मदन कोई तदबीर बतादे भैना ॥

ढूट—मेरा दिलदार मिलादे । शक्ल उसकी दिखलादे । खुदासे दुआ कबूलूं । चेरी होकर रहूं तेरा एहसान न हर्गिज भूलूं ॥ ९८ ॥

ज० बांदीका ॥

दो० ऐ प्यारी मेरी बातको । दिलमें करलो याद ।
हकनाहक रोरो उमर । करतीहो बरबाद ॥

चौ० करतीहो बरबाद अजब गुफ्तगू गजबकी करती । हो दाना होशियार मुफ्त क्यों परदेसी पर मरती । क्या शैतान सवार जो है दमबदम हिल-कियां भरती ॥ सब वेश्यों में होय हंसी तुम जरा न दिलमें डरती ॥

ढूट—जरा तुम होश सम्हालो । न ऐसे सखुन

निकलो। हैं मतलब की हम साथी। एक मर्द की कौन वेश्या बीसों मर्द बनाती ॥ ९९ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

दो० क्या समझातीहै मुझे। ऐ बांदी दिलजान।
दिल दुश्मन माने नहीं। रहा मदन शरतान ॥

चौ०रहा मदन शरतान बाब सीने में बढता जावै।उठें विरहकी पीर धीर कैसे दिल अंदर आवै। बिन दिल-बर नहिं मिटे दर्द सब जी जाम। घबड़ावै। मिटे जिग-रका दर्द वही माधो जब दवा पिलावै ॥

टूट—मेरा दिलदार मिलादे। शक्ल उसकी दिख-लादे। खुदासे दुआ कबूलूं। चेरी होकर रहूं तेरा एहसा-न कभी नहिं भूलूं ॥ १०० ॥

ज० बांदीका।

दो किधर होश है आपका। ए प्यारी पुर नूर।
बातैं खाम ख्यालकी। करो जबां से दूर ॥

चौ० करो जबां से दूर चूर क्यों परदेशी पर होती। छोड़ो उसका जिकर किसलिये जी जामे को खोती। तुझे बीस गुलफाम मिलादूं जार २ क्यों रोती। वह ब्राह्मण क्या चीज कि जिसपै मूंह अंसुवों से धोती ॥

टूट—जरा तुम होश सम्हालो। न ऐसे सखुन

निकालो । हैं मतलबकी हम साथी । एक मर्दकी कौन वेश्या बीसों मर्द बनाती ॥ १०१ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

मांड–म्हारो दिल कब्जे में नांय बांदी अब नहिं जीऊंगी । बिरह आग तन में लगी और क्या तू बताती ज्ञान ॥ कालिब खाली ह्यां पड़ा मेरी जाना में है जान ॥ बांदी ॥ बिछुरतही दुखदे गये पिय सुखको ले गये संग । कंठ हमारे डाल गये सखि कालो बिहर भुजंग ॥ बांदी ॥ दिल दुश्मन माने नहीं और मुझको न सब्रो करार । कोई मेरा बस प्यारा मिला दे वह माधो दिलदार ॥ बांदी ॥ दिल में हमारे झूम रही है वो सूरत माकूल ॥ ब्रह्मा कहें पल युग सम बीते क्या तू बढ़ाती तूल ॥ बांदी अब नहिं ॥ १०२ ॥

ज० जंदीरा ॥

मांड–मत रोरो खोवै जान प्यारी मेरा कहना मानोजी । इश्क दिवानी ना बनै प्यारी कहना लो मेरा मान ॥ इश्क बुरा आजारहै प्यारी होवोगी हैरान ॥ प्यारी ॥ हम वेश्यों के लाखों प्यारी होते हैं दिलजान। देखें जिसे जरदार जान दिलसे उसपै कुरबान ॥ प्यारी ॥ उसका जिकर मतलावो प्यारी क्यों होती गमगीन । बीस तुझे गुलफाम मिलाऊं एकसे एक

हसीन ॥ प्यारी ॥ बादल कहें मत तू घवडावे धीरज दिल में आन ॥ बंदी खलीफाके सिसरे सुन दुश्मनहै हैरान ॥ प्यारी मेरा कहना मानोजी॥१०३ ॥

ज० कामकन्दलाका ॥

दादरा– मैं उसपर कुरवान बांदी ।

आग लगाऊं वेश्यापनमें रोंकले अपनी जवान ॥बांदी ॥ तनमन धन वही प्राण पियारा वह दिलवर दिलजान ॥ बांदी ॥ उसके विन इक पल नहिं जीऊं सांची दिलमें मान ॥बांदी॥ प्यारे शारदासे तू मिलादे भूलूं न कभी एहसान ॥ बांदी ॥ १०४ ॥

ज० बांदीका ॥

दादरा–प्यारी मत रोरोके आंसू वहाना ।

लाख कहूं तू एक ना माने । करती है अपने मनका माना ॥ प्यारी ॥ इन बांतों में होगी खरावी । नाहक दिलको करती दिवाना ॥ प्यारी ॥ इश्क बुरा जंजाल जाल है। जान बूझ मत गलारी फंसाना ॥प्यारी॥ मान कहा ले जाऊं बलिहारी। अब तू जिकर ना उसकी लाना ॥ प्यारी ॥ तुझे वीस गुलफाम मिलाऊं । नूरमें जिनके हूर लजाना ॥ प्यारी ॥ बंदी खलीफाके सुनके दादरे । शैदीने बस हारी माना ॥ प्यारी मत ॥ १०५ ॥

ज० कामकन्दलाका॥

दो० सुन बांदी तेरी बातको दिलमें उठत हिलोर।
विरह विथाकी पीरतन दिन २ करती जोर॥

चौ० दिन २ करती जोर मदन मेरा लहेराय रहाहै। पिय बिछुरनका सदमा बांदी अब नाहिं जात सहाहै। क्या वहेलाती बातों में बस तेरा ज्ञान कहां है॥ वही प्राण प्यारा मेरी नजरों में झूम रहा है॥

टूट—मेरा दिलदार मिलादे। शक्ल उसकी दिखलादे। खुदासे दुआ कबूलूं। चेरी होकर रहूं तेरा एहसान न हर्गिज भूलूं॥ १०६॥

ज० बांदीका॥

दो० समझाया तुमको बहोत मेरी न मानी एक।
जिद्द आपनी ठानती ये नाहिं अच्छी टेक॥

चौ० ये नहिं अच्छी टेक नतीजा बुरा इश्कका होता। इश्क कहेर दरियामें हरदम खावोगी गम गोता। टले न किस्मत लिखा जोहै लिखदिया खुदा मोहोता। करो लाख तदबीर मगर नहिं पढ़ पुराना तोता॥

टूट—जरा तुम होश सम्हालो। न ऐसे मग्धुन निकालो। हैं मतलबकी हम साथी। एक मर्दकी कौन वेश्या वीसों मर्द बनाती॥ १०७॥

ज० मालका॥

दोहा—कामकंदला को रही बांदी उन समुझाय।

इत द्वारे पर वैद्यने दी अवाजको आय ॥

न्द–आवाजदीनी आयकरके वैद मैं भरपूर हूं । हरएक
रजकी दवाकरने में वहोत मशहूर हूं ॥गर हो मरज
ोई किसी के मुझको वतलावै सही । जल्द होजावै
हत देदूं दवा उसको वही ॥ बादल कहैं विक्रमने
ारे पै यह जाके पुकारा है । श्याम सुन्दरका हमेशः
ता मुझको सहारा है ॥ १०८ ॥

ज० बांदीका ॥ धुन पछाहीं ॥

तुमसे बतलाऊं प्यारे आज मैं सुन वैद हमारे ।
ारी मेरी बीमार पड़ी है हुआ कोई आजार ।
लके कोई तुम दवा पिलादो है वो वहोत
ाचार । गर अच्छी होजाय बीमारी तो समझूं
शियार । इतना दूंगी इनाम कभी तुम जावना दूजे
ारजी ॥ सुन वैद हमारे ॥ १०९॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥ धुन पछाही॥

चलके दिखलादो बांदी उसको क्या है बीमारी ।
री प्यारीको कौन मर्ज है नब्ज देख अजमाऊं ।
आ जौनसा रोग वही मैं उसको दवा पिलाऊं ।
र कोई आसेब हुआ तो झार फूंक बतलाऊं । होय
र्ज आराम आपसे इनाम भारी पाऊंजी ॥ क्या है
ामारी ॥ ११० ॥

ज० कामकन्दलाका ॥धुन पछाहीं ॥

तू क्या जाने है मेरे मर्जको सुन वैद हमारे ॥ मुझे इश्क आजार है छाया। नजरों मे गुलबदन समाया। बिन उसके दिल है घबड़ाया। तू है वैद गवांर। वही मुझे आ दवा पिलावे। जभी मिटे आजारजी ॥ सुन वैद हमारे ॥ १११ ॥

ज० राजा विक्रमका ॥ धुन पछाहीं ॥

सांची ये मानो मेरी बातको जो मैं बतलाऊं। था माकूल इलाज तुम्हारा। माधोनल वह प्राण पियारा। सहा रंज गम उसने सारा। जंगल के दरम्यान। तडफ २ कर तेरे गम में देदी अपनी जानजी ॥ जो मैं बतलाऊं ॥ ११२ ॥

ज० शायरका ॥

दो० सुनकर इतनी बातको कामकन्दला नार।
तन मन की सुधना रही खाई धरण पछार ॥

छंद—धरती पै खाय पछाड़ वो बेहोश होकर गिरगई। सब बदन ठंढा पड़ गया पुतली दृगनकी फिरगई ॥ दम लबों पर आगया रुकरुक नब्ज चलने लगी। खाखा पछाड़ें रोवती माता जो थी उसकी सगी ॥ बांदी सकल रोवें खड़ी हा दैव दुःख अपार है। हा नाव औघट डूबती पर भंवर बिच मंझधार है।

नाथ हम हैं अनाथ तुमहीं हाथ गहिरक्षा करो ।
एक तेरोई है भरोसा आय अब संकठ हरो ॥
हाल देख तमाम विक्रमसेन डगर अपनी लिया ।
मैं अपने आयकर दरवानीको आज्ञा दिया ॥
कर लिवा लावो अभी माधोनल जिसका नाम
। वादलके बन्दीने किया झगड़ा यहीं पै तमाम
॥ ११२ ॥

ज० दरवानका ॥

दो० माधोनल तुम से कहूं । मानो हमारी बात॥
राजा बुलाया है तुम्हें। सो करनी है कछु बात॥

ज० माधोनलका राजा विक्रमसे ॥

दो० याद आपने किस लिये। किया गरीब नेवाज ।
जल्द बजालाऊं हुकुम । जो कुछ होवे आज॥

ज० राजा विक्रमादित्यका ॥

दो० हाल आपसे क्या कहूं । मोसे कहो न जाय।
अनहोनी इक होगई तुम से देंव बताय ॥
चौ०तुमसे देंव बताय बात कुछ होनहार नहिं
नीका । बना बनाया काज आज सब पड़गया प्यारे
फीका । लिखा जौन विध रेख वही होवैगा यती
सतीका । मती करे अफ़सोस कोई बस चलता नहीं
किसीका ॥

टूट—हती जो प्राण पियारी। कामकन्दला तुम्हारी। हुई वह तुमसे न्यारी। तड़फ तड़फकर तेरे गममें मुल्के अदम सिधारी ॥ ११६ ॥

ज० शायरका ॥

दो० सुनकर विक्रमके वचन पेचताव गश खाय ।
मुर्छित ह्वै धरनी गिरेउ रह्यो नैन जल छाय ॥

लावनी—होकर बेहोश माधोनल गिरा धरनपै। रुक गई नब्ज जर्दी छागई वदन पै ॥ मेरी जान मौतका बनगया वह महेमान । हा प्यारी कहि कालिब सेती हुई रवाना जान॥ यह देख हाल विक्रम मनमेंपछ-ताया । क्या जान बूझकर मैंने पाप कमाया । मेरी जान किया वीरोंको उस दम याद । आकर हाजिर हुये कहा क्या होताहै इरशाद ॥ राजाने कहा तुम मेरा हुक्म बजावो । पातालसे जाकर जल्दी अमृत लावो। मेरी जान इस वखतहै पवड़ाती जान । माधो-नल जी उठे तुम्हारा होगा बड़ा एहसान ॥ अगिया कोयला अमृत लेकर दोऊ आये। और हाथ जोड़ राजाको सीस नवाये। मेरी जान तुरत राजा मनमें हर्षाय । बांह पकड़ि दोउनको अपनी छाती लिया लगाय । लेकर अमृत माधो के मुखमें डाला । उठ बैठा माधो झट पट होश सम्हाला । मेरी जान

नृपति आनन्द बढायाजी । माधो को ले संग महल रंडीके आयाजी ॥ देखा तो महलमें रोते सब नरनारि। और कामकन्दला पड़ी पलंग पै उघारी। मेरी जान नृपति अमृत मुखमें दियाडार । राम २ कहि उठी मनहुं सोवत सों जागी नार ॥ देखा तो खड़ा सामने प्राणपति पाया । और साथमें उसके वैद जो था कल आया । मेरी जान तुरत उठि छाती लिया लगाय । बांह पकड़ि पीतम प्यारे की बार २ बलिजाय ॥ कुर्सी मंगवा कर वैद को उसमें बिठाया । मुख्तसिर हाल सब पूंछा ओर बताया । मेरी जान नृपतिके चरनन गई लिपटाय । मैं तुमपर कुरबान जिन्होंने पीतम दिया मिलाय ॥ राजाने कहा कुछ रोज सबर दिल कीजे । और खुश होकर रुखसत हमको अब दीजे । मेरी जान आपने लश्कर जाऊं जी । और कामसेन से जाय जोर अपनो अजमाऊंजी ॥ मैं कामसेनसे करूं जंग डट २ के । और सीस मुंड भुज गिरें धरनि कट २ के । मेरी जान किलेको करदूं चकना चूर । और मुश्क बांधि माधो के सामने मेटूं सकल गरूर ॥ हर तरह नृपति समझाकर लशकर आया । और द्वारपालसे धामन को बुलवाया । मेरी जान लिखा

खत कागज कलम संगाय । कहा जबानी हालये कहना कामसेनसे जाय ॥ है तुमने किया अपमान जो माधोनलका । नहिं जरा खौफ माना विक्रम के अदलका । मेरी जान नृपति विक्रम आया दल साजि । नव्बे लाख लश्कर ले सिंह सम रहा धूरे पै गाजि ॥ जो चहो कुशल तो कामकन्दला दीजै । नहिं फजर होत सामान युद्ध का कीजै । मेरी जान जो मर्दई का वाना तुम मांहि । गहौ हाथ शमशेर कि दो में एक आंक रहि जाय ॥ यह सुन धामन चल हुआ देवढ़ी पर आया । और द्वारपालसे आकर हाल जनाया । मेरी जान चेले वादलके वंदी नाम। कहें शारदा प्रसाद तूलको करते यहीं तमाम ॥ ११७

ज० धामनका ।

दो० द्वारपाल मेरी वातको । राजासे कहि देहु ।
विक्रम का धामन खड़ा। आज्ञा हमको देहु ॥

चौ० आज्ञा हमको देहु नृपति का खत लेकर के आया । कहूं जवानी हाल नृपति ने जो कुछ है फर्माया । वड़ा जरूरी काम जिसलिये विक्रम मुझे पठाया । जवाव लेकर लौट जाऊंगा तुमसे साफ वताया ॥

टट—जाय कर हाल जनावो। न इसमें देर लगावो ।

होगा ऐहसान तुम्हारा। मुझको होती देर आपसे कहा हाल मैं सारा ॥ ११८ ॥

ज० द्वारपालका राजासे ॥

दो० हे भूपति मेरी अरज श्रवण कीजिये आज।
विक्रम का धामन खड़ा। आज्ञाहो महराज ॥

छंद— आज्ञा जो होवै आपकी जाकर लिवा-लाऊं उसे । विक्रम उसे भेजा जरूरी कामहै कुछ आपसे ॥ कहताहै खत लायाहूं मैं विक्रमने भेजाहै सही । और मुंहजबानी हाल कहना है कि जो विक्रम कही ॥ बादल कहै होवे हुकुम हाजिर करूं दर बारमें । देउढी पै है धामन खड़ा यह अर्जहै सरकारमें ॥ ११९ ॥

ज० राजा कामसेनका ॥

दो० सेना मेरी बात को । दिलमें कर मजबूत ॥
जल्द लिवा लावो उसे है विक्रमका दुत ।

ज० द्वारपालका धामनसे ॥

दो० ए धामन तुमसे कहूं मान हमारी बात ।
हुक्म हुआ सरकारका चलो हमारे साथ ॥

ज० धामनका राजासे ॥

दो० खता हमारी माफहो महाराज खुश हाल ।
खत भेजा विक्रम नृपतिऔरकहाजबानीहाल ॥

चौ० कहा जवानी हाल नृपतिको गरूरहो गया भारी। किया विप्र अपमान न दिलमें दहेशत मानी हमारी। कामकन्दला दे दीजे नहीं होय निहायत ख्वारी। करूं वंस विध्वंस जक्तमेंजाहिर तेग हमारी॥

टूट—है किस दिमागमें छाया। उसे किसने बहेंकाया। जो कुछ मर्दुमी तनमें। फजर होत संग्राम हेत तेगा कर धारो रनमें॥ १२२॥

ज० राजा कामसेन का भामनसे॥

दो० सुन भामन तेरे वचन क्रोध गयो तन छाय।
अगर न होता दूत तू तो लेता सीस कटाय॥

चौ० लेता सीस कटाय बात बेअदबी की तू आके। है विक्रम क्या चीजजो मुझको रहा आज धमका के। उसे नहीं मालूम हमारे जौहर इस तेगाके। लऊं जभी शमशीर मुंड भुज वर्षादूं वर्षाके॥

टूट—कुशलजो अपनी चाहे। लौट अपने घर जावे काल उसको ले आया। जानबूझ कम अक्लने क्या सोवत सिंह जगाया॥ १२३॥

ज० कामसनका॥

दो० ऐ वजीर तुमसे कहूं जल्दी फौजन जाय।
सकल सूर सजवाय ला तुमसे कहूं समझाय॥

दादरा—तुमसे कहूं समझाय प्यारे।

वडी २ तोपैं अष्टधातुकी। चरखिन लेहु जुताय॥ प्यारे॥ कौनेउ हाथी मां अस्वारी॥ हौदा देहु कसाय॥ प्यारे॥ सभी सांडिया ओ घोड़नपे॥ काठी देहु धराय॥ प्यारे॥ डंका पिटवाय दो लश्करमें। सबको लेहु सजाय॥ प्यारे॥ जिरह टोप बखतर सब पहिनो। तेगा नहिं अनि-याय॥ प्यारे॥ दो दो कम्मर बांधो सिरोही। ढालन लेहु उठाय॥ प्यारे॥ जितने आये हैं उज्जैनी। मूड़न लेहु कटाय॥ प्यारे॥ घेरिके मारो जान नपावैं। यश जग में होजाय॥ प्यारे॥ चीज न समझूं मैं विक्रमको। देऊं साफ बताय॥ प्यारे॥ एक दिन मरना है सबही को। नाम अमर होजाय॥ प्यारे॥ जो कोई जूझे समर भूमिमें। यश जहांन जाय छाय॥ प्यारे॥ देहों जगीरें मैं लड़िकनको। सात जन्मलौं खांय॥ प्यारे॥ जीति कै आवो जो विक्रमसे। तलबैं देहु बढ़ाय॥ प्यारे॥ लाज हमारी हाथ तुह्मारे। यह समझो चित लाय॥ प्यारे॥ रामदुलारे के सुनके दादरे। दुश्मन गयो घवड़ाय॥ प्यारे॥ १२४॥

ज० शायरका॥

दो० क्रोधवन्त भूपति लख्योधामन भज्यो तुरन्त।

कामसेन इतमें सकल सेनासज्यो अनन्त ॥

लावनी—इत कामसेन अपना लश्कर सजवाया। उतधामननें विक्रम से खबर जनाया। महाराज सजी सेना दोऊ तर्फ विशाल। हांथी घोड़ा सुखपाल पालकी सजे वीर विकाल॥ इत कामसेन मारू डंका बजवाया। उत विक्रमने फौजें आगे को बढ़ाया। महाराज फौज अब बिच दोऊ मिलजांय। दोऊ तर्फ वीरनने अपने मुर्चा दिये जमाय॥ १२५ ॥

ज० कामसेनका॥

दो०कौन कहां से आयेहो कौनजात क्या नाम।
किस कारण दल साजिके।खड़े हेत संग्राम॥

चौ०खड़े हेत संग्राम आपको क्या दिमाग चढ़ आया। कामसेन राजाका तुमने नाम नहीं सुनपाया। जो कालहु विकाल काल सन्मुख मेरे चढ़ आया। अपने भुज बल जीति पताका दसो दिगन फहराया॥

टूट—खैरियत अपनी चाहो। लौटि अपने घर जावो। काल तुमको ले आया। जान बूझ कम अकल तुमने सोवत सिंह जगाया॥ १२६ ॥

ज० विक्रमादित्यका।

दो० क्या तुझको घमका रहा कामसेन महिपाल।

कायर मत जानो मुझे हम क्षत्रीके लाल ॥

चौ० हम क्षत्री के लाल नाम विक्रम क्या सुना नहींहै । अक्षय तेग समर में मेरी चहुं दिशि छाय रही है । को जग ओटन हार वार बतलाऊं तुह्मे सहीहै । एक घड़ी में दल समेत लोटा नृप परे महीहै ॥

टूट—न मारो शेखी बढ़के । तेगकर लऊ सम्हर के । जो अपनी चहौ भलाई । कामकन्दला माधो-नलको दीजे मिटे लड़ाई ॥ १२७ ॥

ज० शायरका ॥

दो० सुनकर विक्रमके वचन खैंचदस्त शमशीर ।
हल्ला कीन्हों फौजमें सजग होउ सब वीर ॥

छंद—होवो सजग सब वीर अब कुछ उचित अनुचित मत डरो । धर २ पछाड़ो एक एक को तेगसों अद्धाकरो ॥ कोई भागके जाने न पावै घेरके मारो सही । ये सुन शकल रणसूर खींची तेग कम्मरसे वही ॥लागी चलन तलवार खट२ चटा पट दोऊ ओरसे । हल्ला किया एकदम सकल यक एक भिड़ गये ज़ोरसे ॥

लावनी—दोऊ ओर समर में छूटन लागे गोला । जैसे बादलसे बर्षे चहुं दिशि ओला । महाराज एक

गोलामें उड़े हजार । पता खोज मिटजाय नेस्त नाबूद होंय असवार ॥ बन्दूकें चहुं दिशि रहीं मेह वर्षा के । मानो घन गर्जत झड़ी लगाई आके । महाराज तीर और बर्छी सैफ कटार । विछुवा भाले लगें ज्वानके निकसि जात वा पार ॥ चलरही तेग तिर शूल दोऊ दल खट खट । नौजवां सूर गिरते धरणी पै कट कट।महाराज सुभट भट लडें प्रचारि प्रचारि। कायर कूयर भजें आपने डारि डारि हथियारा ॥माधोनल ने इत कीन्हा तेग प्रबल है। एकलाख सुभट इक छिनमें किया कतलहै । महाराज विक्रमने किया भयंकर मार । कामसेन के भजे सिपाही डार डार हथियार ॥

॥ धुन अल्हा ॥

भजत सिपाही कामसेन जब देखा हाथी दिया बढ़ाय ॥ हांक मारि विक्रमके ऊपर अपनी वार जमाई आय । मदनादित्य और माधोनल ने दोउन लई सिरोही काढ़ि ॥ झपटि एक पै एक आपनी दोऊ घातैं रहे निहारि ॥ दन्तवक्र और शत्रुनाशन दोनो लडें प्रचारि प्रचारि ॥ दीर्घ बाहु और युधार्जीन मो खट खट चलन लागि तलवार ॥

वज्रायुद्ध अरिमर्दन सन्मुख अपना घोड़ा दिया बढ़ाय॥ दलथम्भन मेघाडम्बर पै भाला तुर्त नचाया आय॥ लेऊना रावत रणन्द्रने वज्रनाभ पै दिया चलाय॥ ढालरोंपि दई गेंड़े वाली अपनी ले गये चोट बचाय॥ देदे पानी रजपूतनको फिर पीछे से लिया लौटाय॥ भगे सिपाही जो थे उसदम सब अपने मुचैन गये आय॥ सम्हारि सूरमा गे दोऊ तर्फा झूमिकै चलनलागि तलवार॥ खट खट २ तेगा बाजै ऊना चलै विलायत क्यार॥ चले सिरोही मानासाही फर्रा वर्दमान अराय॥ चले कटारी बूंदी बाली भाला रहे फरहरा खाय॥ हाथीके संगहाथी भिड़गये औ असवार से असवार॥ पैदलके संग पैदल भिड़गये बिछुवा चलै लहाउर क्यार॥ दोऊ दलमें सैफ चल रही चोटैं पडैं झड़ाक २॥जिरह टोप बख्तर फौलादी टूटैं बन्द तडाक २॥महाघोर संग्राम होरहा कोई न सूझे अपन विरान॥ धरती पाटि गई लोथिन से ऐसी कठिन चली किरपान॥ कटि २ मुंड गिरैं धरती पै उठि २ रुंड करैं तलवार॥ देत अवाज सकल भटयोधा धरु २ मारु पछारु २॥ नदी बहि चली या लोहू की हाथी मगरासे उतरांय॥ जंबुक काक

गीध कुत्ता सब लोथी पकड़ि २ कें खांय॥ इत विक्र-
मने कामसेन पै अपना कियो झड़ाका जाय ॥ कटि
अस्वारी गई हाथी की भूपति दीन्हो ढाल उठाय ॥
ढाल फाटि गई गेंडा वाली सुवरण फूल गिरे झन्नाय॥
घाव आयगया यह सीनेपै कामसेन मुर्छित होजाय ॥
रेशम रस्साको मंगवाया तुरतै दंड लिया बंधवाय ॥
यह गति देखी जब राजाकी फौजें सब भगीं होजांय ॥
बंद लडाई यह करवाई लश्कर कूंच किया कर
वाय ॥ डेरा पड गये तम्बुन में जीतका डंका दिया
बजाय ॥अपने२ तम्बुन जाके क्षत्रिन छोरधरे हथियार॥
चढी रसोइयां यह ज्वाननकी क्षत्रीगावें मंगलाचार॥
मुर्छा जागी कामसेनकी मनमें बहोत गये घबडाय ॥
हांथ जोड़ विक्रमसे बोले माफ खता मेरी होजाय ॥
जितना हाल हुआ यहतांपै कालीचरणने दिया सुनाय
॥ भूलचूक कुछ इसमें होवै शायर लेवें आप बनाय ॥

टूट—मुश्क खुलवाय अगारी । दिलासा दीन्हो
भारी । पास आदने बैठाया । जैसी करनी किया उसी
का फल तुमने भरपाया ॥ १२८ ॥

ज० कामसेनका

दो० मानो हमारी साफ़ हो राजनपति महाराज ।
उन्द बजालाऊं हुकम जो कुछ होवै आज ॥

गीध कुत्ता सब लोथी पकड़ि २ कैं खांय॥ इत विक्रमने कामसेन पै अपना कियो झड़ाका जाय ॥ कटि अस्वारी गई हाथी की भूपति दीन्हो ढाल उठाय ॥ ढाल फाटि गई गैंडा वाली सुवरण फूल गिरे झन्नाय॥ घाव आयगया यह सीनेपै कामसेन मुर्छित होजाय ॥ रेशम रस्साको मंगवाया तुरतै दंड लिया बंधवाय ॥ यह गति देखी जब राजाकी फौजें सब भगी होजांय ॥ बंद लडाई यह करवाई लश्कर कूंच दिया करवाय ॥ डेरा पड गये तम्बुन में जीतका डंका दिया वजाय ॥अपने२ तम्बुन जाके क्षत्रिन छोरधेरे हथियार॥ चढी रसोइयां यह ज्वानन्की क्षत्रीगावें मंगलाचार ॥ मुर्छा जागी कामसेनकी मनमें वहोत गये घबडाय ॥ हांथ जोड़ विक्रमसे बोले माफ खता मेरी होजाय ॥ जितना हाल हुआ यहनां पै कालीचरणने दिया सुनाय ॥ भूलचूक कुछ इसमें होवै शायर लेवैं आप बनाय ॥

छूट–मुश्क खुलवाय अगारी । दिलासा दीन्हो भारी । पास आपने बैठाया । जैसी करनी किया उसी का फल तुमने भरपाया ॥ १२८ ॥

ज० कामसेनका ॥

दो० खता हमारी माफदो राजनपति महाराज ।
जल्द बजालाउं हुकुम जो कुछ होवे आज ॥

वज्रायुद्ध अरिमर्दन सन्मुख अपना घोड़ा दिया बढाय ॥ दलथम्भन मेघाडम्बर पै भाला तुर्त नचाया आय ॥ लेऊना रावत रणन्द्रने वज्रनाभ पै दिया चलाय ॥ ढालरोंपि दई गेंड़े वाली अपनी ले गये चोट बचाय ॥ देदे पानी रजपूतनको फिर पीछे से लिया लौटाय ॥ भगे सिपाही जो थे उसदम सब अपने मुर्चन गये आय ॥ सम्हारि सूरमा गे दोऊ तर्फा झूमिकै चलनलागि तलवार ॥ खट खट २ तेगा बाजै ऊना चलै विलायत क्यार ॥ चले सिरोही मानासाही फर्रा वर्दमान अर्राय ॥ चले कटारी बूंदी बाली भाला रहे फरहरा खाय ॥ हाथीके संगहाथी भिड़गये औ असवोर से असवार ॥ पैदल के संग पैदल भिड़गये बिछुवा चलै लहाउर क्यार ॥ दोऊ दलमें सैफ चल रही चोटैं पडैं झड़ाक २॥जिरह टोप बख्तर फौलादी टूटैं बन्द तडाक २ ॥महाघोर संग्राम होरहा कोई न सूझे अपन बिरान॥ धरती पाटि गई लोथिन से ऐसी कठिन चली किरपान ॥ कटि २ मुंड गिरैं धरती पै उठि २ रुंड करैं तलवार ॥ देत अवाज सकल भटयोधा धरु २ मारु पछारु २ ॥ नदी बहि चली या लोहू की हाथी मगरासे उतरांय॥ जंबुक काक

वज्रायुद्ध अरिमर्दन सन्मुख अपना घोड़ा दिया बढाय ॥ दलथम्भन मेघाडम्बर पै भाला तुर्त नचाया आय ॥ लेऊना रावत रणेन्द्रने वज्रनाभ पै दिया चलाय ॥ ढालरोंपि दई गेंड़े वाली अपनी ले गये चोट बचाय ॥ देदे पानी रजपूतनको फिर पीछे से लिया लौटाय ॥ भगे सिपाही जो थे उसदम सब अपने मुर्चन गये आय ॥ सम्हारि सूरमा गे दोऊ तर्फा झूमिकै चलनलागि तलवार ॥ खट खट २ तेगा बाजै ऊना चलै विलायत क्यार ॥ चले सिरोही मानासाही फर्रा बर्दमान अर्राय ॥ चले कटारी बूंदी बाली भाला रहे फरहरा खाय ॥ हाथीके संगहाथी भिड़गये औ असवार से असवार ॥ पैदल के संग पैदल भिड़गये बिछुवा चलै लहाउर क्यार ॥ दोऊ दलमें सैफ चल रही चोटैं पड़ैं झड़ाक २॥जिरह टोप बख्तर फौलादी टूटैं बन्द तडाक २ ॥महाघोर संग्राम होरहा कोई न सूझै अपन बिरान॥ धरती पाटि गई लोथिन से ऐसी कठिन चली किरपान ॥ कटि २ मुंड गिरैं धरती पै उठि २ रुंड करैं तलवार ॥ देत अवाज सकल भटयोधा धरु २ मारु पछारु २ ॥ नदी बहि चली या लोहू की हाथी मगरासे उतरांय॥ जंबुक काक

गीध कुत्ता सब लोथी पकड़ि २ कैं खांय॥ इत विक्रमने कामसेन पै अपना कियो झड़ाका जाय ॥ कटि अम्बारी गई हाथी की भूपति दीन्हो ढाल उठाय ॥ ढाल फाटि गई गैंडा वाली सुवरण फूल गिरे झन्नाय॥ घाव आयगया यह सीनेपै कामसेन मुर्छित होजाय ॥ रेशम रस्साको मंगवाया तुरतै दंड लिया बंधवाय ॥ यह गति देखी जब राजाकी फौजें सब भगीं होजांय ॥ बंद लडाई यह करवाई लश्कर कूंच दिया करवाय ॥ डेरा पड गये तम्बुन में जीतका डंका दिया बजाय ॥अपने२ तम्बुन जाके क्षत्रिन छोरधरे हथियार॥ चढी रसोइयां यह ज्वाननकी क्षत्रीगावें मंगलाचार॥ मुर्छा जागी कामसेनकी मनमें वहोत गये घवडाय ॥ हांथ जोड़ विक्रमसे बोले माफ खता मेरी होजाय ॥ जितना हाल हुआ यहनां पै कालीचरणने दिया सुनाय ॥ भूलचूक कुछ इसमें होवे शायर लेवैं आप बनाय ॥

टूट–मुश्क खुलवाय अगारी । दिलासा दीन्हो भारी । पास आपने बैठाया । जैसी करनी किया उसी का फल तुमने भरपाया ॥ १२८ ॥

ज० कामसेनका ॥

दो० खता हमारी माफहो राजनपति महाराज ।
जल्द बजालाऊं हुकुम जो कुछ होवे आज ॥

चौ० जो कुछ होवै आज मुझे मंजुर जो कुछ फर्माया । ब्राह्मणका अपमान किया उसका फल मैंने पाया । होनहार नहिं मिटे आपसे मैंने जंग मचाया। गया सकल परिवार आपका खुद कैदी बन आया ।

टूट—रहेम अब हम पर लावो । मुश्क मेरी खुल-वावो । खुदासे दुआ कबूलूं । मैं ताउम्र आपका हर्गिज यह एहसान न भूलूं ॥ १२९ ॥

ज० विक्रमादित्यका ॥

दो० दइखोलिदी नृपतिकी किया बहोत सा प्यार।
अपने पास बिठाकहा कामसेन सरदार ॥

चौ० कामसेन सरदार आपकुछ दिलमें रंजनकीजे। जो विधनेलिख दिया वही होता नहिं एक तिल छीजे । आधी राज्य देइ माधो को उनको खुशकर लीजे । कामकन्दला देदीजे निष्कंटक राज्य करीजे ॥

टूट—आपने महेलन जावो । नदिलमें दहेशत खावो । कहा यह मेरा मानो । माधोनलको आप हमेशह छोटा भाई जानो ॥ १३०॥

ज० शायरका रगत खड़ी ॥

दो० कामसेन घर जायकर कामकन्दला लिवाय ।
वीर विक्रमादित्यकी नजर गुजारी आय ॥
माधो को प्यारी मिली ज्यों शूलीके बाद।

ऐसेही खासो आमकी । पूरी होय मुराद ॥

ख्याल—मिले प्रेमसे दोऊ परस्पर मन आनन्द बढाया है । कामकन्दला ले माधोनल वतन आपने आया है ॥ टेक ॥

कहूं हाल गर्दिस किस्मतने क्या क्या नाच नचायाथा । सहा रंज गम अलम चाह चक्करमें कदम बढाया था । वियाबां जंगल उजाड़ बस्ती हर एक मंझाया था । पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चहुं दिश खाक उडाया था । फिरा भटकता मुल्क २ कामावति नगरी आया है ॥ कामकन्दला ॥ कामसेन भूपतिकी डेउढी परजा अरज गुजारी है । जाकर यह कहि देहु विप्र एक ठाढ़ा पवंरि तुम्हारीहै । द्वारपाल से पाय हुक्म राजा की सभा निहारीहै । नाच हो रहाथा प्यारीका देखा नजर पसारी है । कामसेन सन्मान वहोत विध कर निज पास विठाया है ॥कामकन्दला॥ पखावजी का ऐव देख राजासे साफ वताया था । खुश होकर राजाने मुझको खिलत सकल पहिनाया था । इस प्यारीने इल्म हुनर जौहर कमाल दिखलाया था । देख हुनर जौहर जमाल दिलमें ए चक्कर खाया था । सकल खिलत प्यारी को वख्शदी नृपसे जो कुछ पाया है ॥ कामकन्दला ॥

कामसेन लखि हाल काल सम गुस्सा अतिही कीन्हा है । कहे वहोत वद सखुन मुझे फिर हुक्म दार का दीन्हा है । कहा मैंने हरचंद रसाई तनक न मेरी कीन्हा है । सौंप मुझे जल्लादों को दिल दिमाग ठंढा कीन्हा है । इसी प्यारीने रिशवत देकर मेरी जान वचाया है ॥ कामकन्दला ॥ संग प्यारी के महल में आकर रुखसत मैंने पाया था । जाय शहर उज्जैन में मंदिर में लिखके चिप काया था । भेज दूतियां विक्रमने मुझको निज पास बुलाया था ॥ पूंछ मेरा अहेवाल आपना लश्कर कूंच कराया था । कामसेन से जंग जीति प्यारीको हमने पाया है ॥ कामकन्दला ॥ अव प्यारी कोलेकर के हम अपने वतन को जाते हैं । जल्शे में मौजूद उन्हें हम सव को सीस नवाते हैं । डाल गले गल वांह यार प्यारी को गले लगाते हैं । हाथ जोड परमेश्वरसे से यही हम दुआ मनाते हैं । वर आवै उम्मेद सभीकी जैसी हमने पाया है ॥ कामकन्दला ॥ रिसाल गिरने कहा ख्याल तुर्रे को चंगपै फौराया । वादल अब्दुल गफूरने यह स्वांग नया कथके गाया ॥ वंदी खलीफा कुंवरसिंहसे दुश्मन नहीं फतेह पाया ॥ वेनीमाधो

कहें जिन्हों पै रहे शारदाकी दायाः ॥ कहा ख्याल जिन अजव रंगीला सुन शैदी चकरायाहै ॥ कामकन्दला ले माधोनल वतन आपने आयाहै ॥